बाचार्य हरिषेण प्रणीत

धम्मपरिक्खा

(विस्तृत प्रस्तावना, व्याकरणात्मक विवेचन तथा माचानुवाद सहित)

संपावक

डॉ. भागचन्द्र जैन "मास्कर"

पी-एच. डी., डी. सिट्.

वस्यक्ष, पालि-प्राकृत विभाग, नागपुर विश्वविद्यालय

सह-संपादक

प्रो. माधव रणदिवे

मूतपूर्व पालि-प्राकृत विभाग प्रमुख, शिवाजी आर्टस कालेज, सातारा

सन्मति रिसर्च इन्स्टीटघुट आफ इन्डोलॉनी नागपुर

1990

मानव संसाधन विभाग, शिक्षा मन्त्रालय द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता के अन्तर्गत प्रकाशित

@ संपादक : डॉ. भागचन्द्र जैन "मास्कर"

सहसंपादक : प्रो. माधव रणदिवे

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 1990

प्रतियां : 1000

प्रकाशक: सन्मित रिसर्च इन्स्टोटचूट आफ इन्डोलांजी (आलोक प्रकाशन) न्यू एक्सटेंशन एरिया, सदर, नागपुर-440 001

मुद्रक : राष्ट्राकृष्ण प्रिटिंग घेस, साईनगर 1, श्रेमनगर नागपुर-440 002

मूल्य :

जैनदर्शन और साहित्य के

मर्मज्ञ मनीषी

चित्र - चूडामणि

दिग्वासी विश्वसंत

आचार्य विद्यासागरजी महाराज

को

सादर समपित

विषय-सूची

बंगेची प्रस्तावना	i-xi
उपस्थापना	8-880
प्रम्य परिचय	8-19
धर्मपरीक्षा नामक अनेक ग्रन्थ, धर्मपरीक्षा की पृष्ठभूमि, धर्मपरीक्षा का उद्देश्य	
संपादन परिश्वय	2-88
प्रति परिचय, पाठ संपादन पद्धति	
ग्रन्थकार परिश्रय	£ \$-99
हरिषेण नाम के अनेक किव, धम्मपरिक्खा के रचियता हरिषेण, समय, हरिषेण के पूर्ववर्ती किव, हरिषेण के समकालीन किव, हरिषेण की धम्मपरिक्खा और अमितगित की धमंपरीक्षा की तुलना	
विषय परिचय	३३-७९
प्रथम संधि-मनोवेग और पवनवेग कथा, मश्रुविन्दु दृष्टान्त; द्वितीय संधि: पटना की ओर प्रस्थान, षोडश मृद्ठि न्याय, दस मूखों की कथा-रक्तमूढ, द्विष्टम्ढ, मनोमूढ व्युद्याही मूढ; तृतीय संधि: पिरतद्वित मूढ, वार मूखं; खतुर्थ संधि: बिलवन्धन (अकल्पनाचार्य मृनि) कथा, मार्जार कथा, मण्डपकीशिक और छाया कथा, तिलोत्तमा कथा; पंचम संधि: शिशनग्छेदन कथा, खर-शिरश्छेदन कथा, जलशिला और वानरनृत्य कथा, कमण्डल और गज कथा, पौराणिक कथाओं पर प्रश्न- विन्ह, छठी संधि: लोक-स्वरूप वर्णन; सप्तम संधि: बृहत्कुमारिका कथा, मागीरणी और गांधारी कथा, मय ऋषि कोपीन कथा और मंदोदरि, पाराशार ऋषि	
	सम्य परिचय धर्मपरीक्षा नामक अनेक ग्रन्थ, धर्मपरीक्षा की पृष्ठभूमि, धर्मपरीक्षा का उद्देश्य संपादन परिचय प्रति परिचय, पाठ संपादन पद्धित ग्रन्थकार परिचय हरिषेण नाम के अनेक किन, धर्मपरिक्खा के रचिता हरिषेण, समय, हरिषेण के पुर्ववर्ती किन, हरिषेण के समकालीन किन, हरिषेण की धर्मपरिक्खा और अमितगित की धर्मपरीक्षा की तुलना विवय परिचय प्रथम संधि-मनोवेग और पवनवेग कथा, मश्रुविन्दु दृष्टान्त; द्वितीय संधि: पटना की ओर प्रस्थान, षोडण मृद्दि न्याय, दस मूखों की कथा-रक्तमूढ, दिष्टमूढ, मनोमूढ व्युद्ग्राही मूढ; तृतीय संधि: पित्तद्धित मूढ, चार मूखं; चतुर्थ संधि: बिलवन्धन (अकल्पनाचार्य मृति) कथा, मार्जार कथा, मण्डपकीक्षिक और छाया कथा, तिलोत्तमा कथा; पंचम संधि: शिश्नव्छेदन कथा, कर-शिरश्छेदन कथा, जलशिला और वानरनृत्य कथा, कमण्डल और गज कथा, पौराणिक कथाओं पर प्रथन- चिन्ह, छठी संधि: लोक-स्वरूप वर्णन; सप्तम संधि: बृहत्कुमारिका कथा, मार्गीरथी और गोधारी कथा,

और योजनगन्धा कथा, उद्दालक और चन्द्रमती कथा, अच्छम संद्रि: कर्णोत्पत्ति कथा, पाण्डव कथा, महाभारत कथा समीक्षा, भूगाल कथा, विद्याघर वंशीत्पत्ति कथा. राक्षस वंशोत्पत्ति कथा, वानर वंशोत्पत्ति कथा; नवम संधि: कविट्ठखादन कथा, रावण दस शिर कथा, दिध-मुख और जरासंघ कथा, पौराणिक कथाओं की समीक्षा, धर्म का महत्व, दसम संधि: कुलकर व्यवस्था, तीथँकर ऋषभदेव और संस्कृति संचालन, पवनवेग का हृदय परिवर्तन, श्रावकन्नत; ग्यारहवीं संधि: श्रावकन्नतों का फल, रान्निभोजन कथा, अतिथिदान न्नत कथा; लेखक प्रमस्ति.

	4 111/01	
ч.	कथावस्तु का महाकाग्यस्व, भाषा और शैली	69-60
€.	मिथकीय कथातत्व तथा कथानक रुढियां-	60-68
6.	वैदिक आख्यानों का प्रारूप	68-64
	मण्डप कीशिक कथा, तिलोत्तमा कथा, शिश्नश्छेदन कथा, खरशिरश्छेदन कथा, भागीरथी और गांधारी कथा, पराशर ऋषि और योजनगंधा कथा, उदालक और चन्द्रमती कथा, रावण की दशानन कथा.	
۷.	जैन पौराणिक विशेषतार्ये	64-68
	दिधमुख और जरासंघ कथा, निजन्धारी कथायें, जैन साहित्य में रामकथा, दोनों जैन परम्पराओं मे भेदक तत्त्व, वैदिक और जैन परम्परा में कुछ मूलभेद, जैन परम्परा की कुछ मूलभूत विशेषतायें - यथार्थवाद, मानव चरित्र, भ्रातृत्व मक्ति, जैनत्व	
۹.	समसामायिक व्यवस्था	98-94
₹o,	जैनधर्म और दर्शन	९५–९६
११.	आप्तस्वरूप, श्रावकवत धम्मपरिक्खा का व्याकरणात्मक विवेचन १. खण्डात्मक स्विनम विचार-स्वर विवेचन, स्वर विकार, व्यञ्जन परिवर्तन और विकार तथा उनके उदाहरण, समीकरण, संयुक्त व्यंजन परिवर्तन, २. अधिखण्डात्मक स्विनम विचार। शब्द साधक	९७ − १ १ ०
	प्रणाली, पूर्वप्रत्यय, परप्रत्यय, समास, रूप साधक प्रणाली, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, संख्या वाचक शब्द,	

संख्यावाचक विशेषण, तद्धित प्रत्यय, किया रूप

मूल धम्मपरिक्खा	१-१६0
१- पढमो संधि	१ –१२
२. बीओ संधि	1 3-20
१. तइअ संधि	4 2-8 2
४. चउत्थ संधि	¥ ३ -५९
५. पंचम संधि	60-03
६. छट्ठ संधि	७४-७६
७. सत्तमो संघि	< 9- ? • •
८. अट्ठमो संधि	800-648
९. नवमो संधि	११५-१३१
१०. दहमो संधि	883-883
११. ए यारहमो संधि	683-640
विशिष्ट शब्द-सूची	१ -१६

Introduction

Logical discussions and debates had paramount impositionation tance in ancient India for the purpose of spreading and propagation of one's own religious and philosophical speculations amongst the societies. Therefore the rules and regulations in this context were formed by various sects and sagraments according to their views and convenience. The Vadashila Brahmanas were the leaders of the debaters who used the forms of Vada, Jalpa, Vitanda, Chhala, Jali and Nigrahasthana to gain trumph over the opponents by right or wrong means. All these debaters are named Takki or Takkika in Pali and Prakrit literature.

The Buddhist tradition also could not escape being influenced by this practice. The old logical compend like the Upayahrdaya, Tarkashastra, etc. appear to have allowed the use of qubbles (chhala), analogues (jati) etc. for the specific purpose of protecting the Buddhist order. The Jainas, on the other hand, lay more stress on truth and non-violence. They think of the Vitanda (वित्यका) as Vitandabhasa (वित्यकाभाग). Akalanka rejects even the Asadhananga (असावनांग) and Adosodbhavana (अवोचोच्यावन) in view of the facts that they were themselves the subjects of discussion. He then says: a defendent should himself indicate the real defects in the established theory of disputant and then set up his own theory. Thus he should consider each item from the point of view of truth and non-violence. All the Jaina philosophers followed this tradion to the best of their efforts.

Note: The Discritical marks could not be used by the Press due to certain reasons. The readers are, therefore, requested to kindly bear the inconvenience caused. However, some important words have been given in Devanagari Script.

^{1.} Nyayasutra, 4-2-50-9.

² Vadanyaya, p. 1

^{3.} Nyayavinishcaya, Vol. 2. p. 384

^{4.} Ashtashati-Ashtasahasri, p. 87

Harishena is a prominent philosopher and poet who not only followed the said tradition but also criticised the Vedic mythological stories in somewhat different manner. He adopted the satirical style to defend his own view through submitting correct stories found in Jain tradition in parallel ways. The epic is written in such an interesting way that strived to prove them irreliable through truth and non-violent approach. The author investigates the real defects in opponent's theories, in his memorial work Dhammaparikkha.

Various Dharmaparikshas

The subject of Dharmapariksha (धर्मपरीक्षा) has been so much popular that inspired the Acharyas to compose the texts in different languages by glimmering their literary radiance. Hence various Dharmaparikshas are available in the Shastrabhandaras throughout the parts of India. We may enumerate here some of them that can be distinguished with some specific details;—

- 1. DP., in Prakrit, by Jairam (जयराम) which is mentioned by Harishena in his Dhamma-parikkha (A. D. 988), but not found so far.
- Dp. in Apabhramsha, by Harishena (Sam. 1044, A. D. 988), the proposed text which will be dealt with in detail afterwards.
- DP., in Sanskrit, by Amitagati, the pupil of Madhavasena; it was completed within two months in 1945 verses with 21 Paricchedas (Sam. 1070, A D. 1014) based on either Jairama's or Harishena's Dhammaparikkha.
- 4. DP., in Kannada, by Vrattavilasa (বুলবিলাম) (A. D. 1160) based on Amitagati's DP. It was transformed in Kannada prose by Chandrasagar in Shaka S. 1770.
- 5. DP., in Sanskrit, by Saubhagyasagar (सीमाग्यसागर) (Sam. 1571, A. D 1515), the pupil of Labdhisagar (A. D. 1515) in 16 chapters.
- DP., in Sanskrit, by Padmasagaragani, the pupil of Tapagacchiya Dharmasagar (Sam. 1584, A. D. 1515) in 1474 verses very closed to Amitagati's DP.
- 7. DP. in Sanskrit, by Jinamandanagani (15th c. A. D.), the pupil of Samasundaragani.
- 8 DP., in Apabhramsha, by Shrutakirti (16th c. A. D.), the

- pupil of Tribhuvanakirti of Balatkaragana (बजारकार्यक)
- 9. DP., in Sanskrit, by Ramachandra (17th c. A. D.), in 900 verses.
- 10. DP., in Sanskrit, by Manavijayagani (18th c. A. D.), the pupil of Tapagacchiya Jayavijayagani.
- 11. DP., in Sanskrit, by Parshvakirti (17th c A. D.)
- 12. DP. in Sanskrit, by Vishalakirti (Shak. Sam 1729).
- 13. DP., in Sanskrit-Kannada, by Nayasena (A. D. 1125), the pupil of Narendrasena
- 14. DP., in Hindi, by Manohar (Sam. 1775) in 3000 verses.
- 15. DP., in Sanskrit, by Vadisingh (16th c. A D.).
- 16. DP., in Sanskrit, by Yashovijaya (Sam. 1720).
- 17. DP., in Sanskrit, by Devavijaya.
- 18. DP., in Marathi, by Devendrakirti (17th c. A. D.).

Of these, the DP. of Amitagati has been more studied by the scholars. Mironow N. wrote a book entitled 'Die Dhaima Pariksha des Amitagatis' with critical approach published from Leipzig in 1903. It was also translated in Hindi by Shri Pannalal Bakaliwal in 1901 and in Marathi by Pt. Bahubali Sharma in 1931 (Sangali). But no work has been done so far on the Harishena's Dhammaparikkha except an article of Dr. A. N. Upadhye published in Annals, B. O. R. I. 75, pp. 592-608.

Background of the Dhammaparikkha

The mediaeval period may be acknowledged as the period of logical discussion which entered even into spirictual and religious field. As a result, Acharyas composed their examination-based literature. Alambanapariksha (आलम्बनपरीका) and Trikalapariksha (जिन्नलपरिका) of Dignaga, Sambandhapariksha (जन्मलपरिका) of Dharmakirti, Pramanapariksha (जनमाणरीका) and Laghupramanapariksha (जनमाणपरीका) of Dharmottara, Shrutipariksha (जनिपरिका) of Kalyanarakshia, Pramanapariksha, '(अमाणपरीका) Aptapariksha (जनपरीका, Patrapariksha, Satyasashanapariksha (जनपरीका) of Vidyananda may be mentioned in this respect. Dharmapariksha (अनेपरीका) also follows the tradition and examines the views of other traditions but with somewhat different style. Vadakatha (जायक्या) the soul of Dharmapariksha was adopted by practically all the Acharyas like 'Samantabhadra, Siddnasena, Akalanka, Hari-

bhadra etc. As a matter of fact, this style is not much found in the early Jain literature But in later period, as Jainism had to face the conflicts with Virashaivas, Lingayatas, Buddhists and Vedio sects, the Jaina authors too started the refutation of others' views.

Around tenth century, the vedic mythology and rituals became main target for Jaina thinkers. Haribhadra was the leader of this style who composed the Dhurtakhyana (ध्रांक्सान) and refuted the hypothetical stories and superstitions of the Vedic culture. Dharmapariksha followed the Dhurtakhyana (ध्रांक्यान) in toto. There are so many other texts also like Samayparikshe (समयपरीक्षे), Shastrasara (सारमसार) etc. which refutes such fabricated elements occurred in non-Jain sects.

The main object of the Dharmapariksha is to vaninish the wrong views Micchattabhava avagannahi (निकासभाव अवन्याही, 11.26) from mind. Such hypothetical notions creat the obsticals in spiritual development. The Jainacharyas refute them with progressive attitude and self realization and establish the right path without dishonouring the others' views. Amitagati clearly writes:

न बुद्धिगर्वेण न पञ्चपातनो प्रयान्यशास्त्रार्थं विवेश्वनं कृतं ।
मभैष धर्मं सिवसीस्थवायिके परीक्षितुं केवलमृश्यितः भ्रमः ॥ 10 ॥
अहारि कि केशवर्णकराविभिः व्यतारि कि वस्तु जिनेन चार्थिनः ।
स्तुवे जिनं येन निषिध्य तानहं बुधा न कुवंन्ति निर्थंका कियाम् ॥ 11 ॥
विमृष्य मार्गं कुगतिप्रवर्तकं भ्रमन्तु सम्तः सुगतिप्रवर्तकं ।
विराय माभृदक्षिलागतापकः परोपतायो नरकादिनामिनाम् ॥ 12 ॥

The irreliable Pauranika stories are found in the commentaries on the Prakrit scriptural narrative literature. As a matter of fact, they are found in Scriptural explainatory literature. The Niryukli and Bhashya literature refers more to such stories with ironical remarks. Acharya Haribhadrasuri utilized the Pauranic and folk tales in the Samaraiccakaha (अगरहण्याहा) Dhurtakhyana (वृत्ताहण्या) and the commentaries on the Avashyaka and Dassvalkalika Sutra to remove the wrong views and establish the morality thereupou.

Editotlal Work

The present edition of the Dhammapariickha of Harishena has been prepared on the basis of two MSS, preserved in the

Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. Their description is as follows:—

MS. A

It bears the No. 617/36 of 1875-76, written in good handwriting and appears as if printed. It contains 75 pages. Only first three pages have in the middle the space for the thread and not in any other page. The edges are brittle, the paper also shows signs of earlier age, and now and then Padimatras are used in its writing. The Ms. begins with ' अ नमी दीवरामाय' in red ink. Number of Kadavakas and Dandas (11) are also written in neat hand-writing in black ink, somewhere a half line also is bru hed by white ink. The explanation of any word is not written in the margin on any page. Every page has 11 lines and last 75th one has only 6 lines. Every line contains 38 to 44 letters except Dandas (11) and no. of Kadavakas.

MS. B

It bears the No. 1009 of 1887-91. It is written in black ink and not red ink is used anywhere. One, two letters or 1/4, 1/2 or a line is brushed by white or black ink It is written not in very good hand-writing Every page contains 8 lines, but some have 9 lines also. Every line has 28 to 32 letters excepting Dandas and No of Kadavakas. The Ms. has 138 folios. Page No. 137 is partly broken and folio No. 4 is missing. We find the explanation of words etc.. with the sign in the mirgin on the top, bottom, right or left side in Sanskrit. It has unwritten space on folios 56a, 57, 69 and 69a, with gaps in the text. This is comparatively modern Ms. as indicated by the paper and hand-writing. It bears a date Samvat 1595 written by different person in different hand-writing on the last page which indicates that the Ms. is older than this date.

Both the Mss. together supply the complete text. They are quite independent and not the copies of each other. We find that the first Ms. is more correct and hence it is treated as an ideal one for our editing work. However, the second Ms. has been utilized for deciding the recentons, While editing we have followed the following method:—

- 1. न is made ण, as मनर, घमनाहणू etc.
- 2. व for ब, as वित्यारें बोहिलएण ejc.

- 3. पाइ for पाई
- 4. इकार and बोकार are made for half एकार and ओकार respectively.
- 5. Utilization of अभृति and वस्ति
- 6. इ and ए in the कारकारत्ययं of तृतिया as सप्तमी विभिन्तिs and पूर्वकालिक कुदल्त words.

There are so many Harishenas who composed the work in Jainism. Some of them are as follows:-

- 1. Harishena, the author of the Samudragupta Prayaga Prashasti समृद्दगुरत प्रयाग प्रशस्ति (A. D. 345)
- 2. Harishena, the author of the Dhammaparikkha in Apabhramsha (Sam 1044).
- 3. Harishena, the author of the Suktavali (सूनतावली) (12th c. A. D)
- 4. Harishena, the author of the Jagatasundariyogamaladhikara. (अवतस्वरं योग मालाधिकार)
- 5. Harishena as mentioned in the Vasavasena's Yashodharacharitam alongwith Prabhanjana (8th c. A. D.)
- 6. Harishena, the author of the Ashtanhikatha (अब्टान्हिक्या)
- 7. Harishena, the author of the Vrhatkatha (10th c. A. D.)

Of these, Harishena or Buddha Harishena is the author of the proposed Dhammaparikkha in Apabhramsha as the colophon says itself. He was from Mevada. His parents were Govardhana-Gunavati. He left Cittoda and came to Acalapur on some business where he composed the Dhamma parikkha in Sam. 1044 (A D. 988). This is said in the opening and the concluding Kadavakas, Sandhi XI, Kada. 26-27. Harishena was the pupil of Siddhasena (XI, Kada. 25). He must have written some more Granthas as he said for himself the "Vibudha Vishrutakavi" in the same Kadavaka.

Amongst his predecessors, Harishena mentions Caturmukha, Pushpadanta, Svayambhu, Budha Siddhasena, and Jayarama (1.1.). He belongs to the 10 c. A. D. when Tomar dynesty was ruling over the country.

He refers to Dinara (दोजार which has been in current upto the 12th c. A. D. (3.10) He also appears to have supported Devasena (10th c A. D.) that the Buddha had eaten meat and

fish and as a result he was resticated from the Parsvanatha Sangha Hence the Buddha established his own religion called Buddhism (10.10). The author also refers to Kapalavratas (4.17) which became more popular in around tenth century. On the basis of these references, Harishena can be assigned to the 10th c, A D. His contemporary Acharyas may be Amrtachandra, Ramasen, Somadeva, Amitagati, Dhavalakavi, Virakavi, Nayanandi, Camundaraya, Viranandi, Padmanandi, Haricandra, Mallishena, Vadiraja, Aryanandi, Dhanapala, Vagbhatta etc.

Harishena composed his Dhammaparikkha in Sam. 1044, After 26 years, Amitagati (Second) wrote his Dharmaparikha in Sam 1070. One belongs to Mewada and the other one to Malawa Both the texts show remarkable agreement. It is most possible that Amitagati had Harishena's Dhammaparikkha before him while composing his Dharmapariksha, Harishena's division is mora natural into Sandhis than Amitagati's division into Sargas One is descriptive and the other one is rather figurative. Harishena gives in details the Lokasthiti (Sandhi VII), Ramakatha (Sandhi VIII) and Ratribhojanakatha (Sandhi Xi), while Amitagati does not devote many verses to these subjects.

We have submitted a detailed account of the subject matter with compa ative approach in Hindi introduction. Looking to it, it appears that Amitagati must have composed his Dharmapariksha on tha basis of some Prakrit work and that Prakrit work may be either of Jayarama or of Harishena. Even language and style are sometimes similar to that of Harishena's DP. Amitagati has through mastery over his expression. However he could not avoid the use of Prakrit words like Hatta, (3.6) Jemati, (5), Grahila (13.23), Kacara (15.23) etc.

As regards the division of Sandhis of Dhammaparikkha and Paricchedas of Dharmapariksha, they can be comparatively studied in the light of corresponding topics as follows:—

First Sandhi :- H.1.1 .. A.1.1-16; 2 = 1.17-20; 3 = 1.21-27;

H. Refers to Kadavakas of Harishena's Dhammaparikkha and the A. refers to incorrespondence with the Paricchedas of the Amitagati's Dharmapariksha, alongwith its verses.

4 = 1.28-31; 5 = 1.32-36; 6-7 = 1.37-47; 8 = 148-55; 9 = 1.56-57; 10=1.58-65; 11=1.66; 12 = 1.67-70; 13 = 2.1-7; 14 = 2.8-21; 15 = 2.22-79-89; 46 = 2.90-95; 17 = 3.1-26; 18-20 = 3.27-43.

- Second Sandhi :- 1 = 3.44-58; 2-3 = 3.58-68: 4-6 = 3.69-95; 7-8=4.1-39; 9=4.40-46; 10-16=4.47-76-95, 5.1-76; 16-1/ = 5.75-97; 18-23 = 6.1-95; 24 = 7.1-19.
- Third Sandhi :- 1 = 7.20-28; 2-3 = 7 29-62; 4-6 = 7.63-96; 7=8.1-9; 8=8.10-21; 9=8.22-34; 10=8 35-49; 11 = 8.50-73; 12-13 = 8 92-95; 14 = 9 4-20, 15 = 9.21-43; 16 = 9.44-49; 17-19 = 9 50-95; 20 = 10.1-20; 21 = 10.21-40; 22 = 10-41-51.
- Fourth Sandhi: 1-2 = 10.52-59; 3-4 = 10 66-74; 5-6 = 10.75-100; 7 = 11.1-8; 8-9 = 11.9-25; 10-12 = 11. 26-28; 13-16 = 11.29-47; 17 = 11.48-58; 18 = 11.59-65; 19 = 11.66-82; 20 = 11 73-93; 21 = 11.94-95; 22 = 12 10-15; 23 = 12-16-26.
- Fifth Sandhi :- 1 = 12.27-29; 2-6 = 12.30-33; 7 = 12.34-52; 8-9=12-53-76; 10-11=12.77-92; 12=12.93-97; 13=13.1-7-17; 14-15=13.18-36; 16-17=13. 37-53; 18-20=13.54-102.
- Sixth Sandhi :- 1-18 = Lokasvarupa is not found in A'S Dharmapariksha.
- Seventh Sandhi :- 1 = 14.1-10; 2 = 14 11-23; 3-4 = 14.24-32; 5 = 14-33-38; 6 = 14.39-45; 7-8 = 14-46-54; 9 = 14.55-61; 10=14-62-67; 11-13=15.68-80; 14-15=14-81-91; 16-17=14-92-101; 18=15.1-15
- Eighth Sandhi :- 1 = 15.17-21; 2 | 13.22-31; 3 = 15.32-41; 4-5 = 15.42-55; 6 = 15.56-66 in detailed; 7 = 15.67-74; 8-9 = 15.75-94; 10 = 15.95-98; 11 = 16,1-21; 12 = 186t in A; 13-22 = not in A.
- Minth Sandhi :- 1 = 16.22-27; 2-3 = 10-28-43; 4-5 = 16.44-57; 6-10 = 16.58-84; 11-12 = 16.85-93; 13 = not found in A : 14 = 16 99-100; 15-17=16.99-100; 18-25 = 16.102-104 not in detailed in A.

The subject matter of the 17th Pariocheda is not found in Dhammaparikkha:

| 1 = 18.1-21; 2 = 18.22-29; 3-10 = 18.27-84;

11-12=18.85-100; 13=19.1-11; 14=19.12; 15-16=19.13-101 in detailed in A.

Giaventh Sandhi- 1-2=not found in A.; 3-10=20.1-12; 11-21=20.13-52; 22=20.53-64; 23-27=20.65-90.

The camparision leads the impression that Amitagati borrowed the subject matter from Harishena and composed his Dharmaparikaha within two months (A. 20. 90.) Managarga submits fabricated tales before the Brahmanas and when they do not believe on them, he puts forth the parallel itories from the vedas and Puranas and satisfies them. Harishena adopts the descriptive method and therefore does not stand much on traditional approach towards the women, friend, world, wealth, etc. as done by Amitagati. He never leaves the story incompleted in moving from one Sandhi to another as offenly does Amitagati.

From imagination and language point of view also, both the works (an be compared. For instance:— H 1.19 = A. 3.36-37; H. 2.3=A. 3.61; H. 2.5=A. 3.85; H 11=A 4 84-85; H. 2 15=A 5.59; H. 2 16=A. 5.82-85; H 3 9=A. 8.22-34 Harishena may have followed Jayarama's Dhammaparikkha as he himself said in beginning of his work. But unless the Jairama's Dhammaparikkha is found, the nature of borrowing elements cannot be decided. Another remarkable point is that Amitagati included the Purvapaksha (the arguments of the opponent) into his work as his own verses with slightly changes, but Harishena did it under the heading "Tathoktam". For instance:— H. 4.1 = A 10.58-59; H. 5.7 = A. 11.8; H. 4.7 = 11.12; H. 5.9 = A. 12.72-73; H. 5.17 = Not found in A.; H. 7.5=A. 14.38; H. 7.6=A 14.49; H. 7.8=A, 14.50; H. 8.6 = A. 15.94; H. 9.25 = A. Not found in the same form.

Subject Matter

The Dhammaparikkha is a satiric text which critically examines the Pauranic tales and Vedic superstitions prevelent at that time. It is divided into eleven Sandhis which contain 2.28 Radavakas in 2070 Shlokapramana The whole text is interconnected with one object and so many fabricated stories.

There may not be one hero but the individuality of all the heroes of the Pauranic stories have been identified properly on their own accord. Considering the characteristics of the text one may, of course, call it an epic composed in different metres like भूजपूर्वा, रजदा, यसा, यस But the मजदिका is mainly used throughout the text.

The story says that there were two intimate friends, one Missawegs, the son of king Jitashatru, and the other one Pavanavegs, the son of Vijayapuri king. Manovegs was religious minded following Jainism while the other one Pavanavegs was just opposit to him following Vedic religion. Both the friends go to Pataliputra where Manovega narrates in Vadashala the Pauranic stories before the Brahmanas and strive to prove them irreliable, false and unbelievable. In this context, several Pauranic stories have been narrated. For instance, मण्डवकीशिक कथा (4.7.12), तिसोक्तम कथा (4.13), शियानप्रदेश कथा (5.1), वरशिर्ष्रदेश कथा (5.6-7), भागीरथी and मान्वारी कथा (7.9), पाराभर ऋषि and योजनयन्त्रा कथा (7.14), उद्दालक and चन्त्रमती कथा (7.16.7), राजण दशानन कथा (8.13.1) etc. Hearing the right form of these stories, Pavanavega becomes the follower of Jainism.

During criticising the Pauranie tales, Harishena submits their own forms according to Jain tradition and questions obout Vishau (3.21), Vishau's sensuality (4.9-12), relation between Brahma and Tilottama (4.13-16), stories related to Brahma and Vishau (5.16-20), etc. Harishena also explained the Ramakatha (8.11) and other Pauranic tales (6.4-5); 9.11-12-14, 18-25, 17th Sandhi) विश्वान - जरासन्त्र क्या (9.6-10) and some fabricated tales like मार्वार क्या (4.3-7), क्यांक्या-वागर त्रव क्या (5.89), क्यांक्य गणक्या (5.10-12), बृह्युक्य क्या (7.2-6), कविवृठ क्या (9.1-3) etc. Exaggeration element has been removed from these stories and made their humanatarian exposition. Thus the अम्मपरिक्या may be treated as an epic (महाकाव्य) are though it is not formed under the purview of the traditional characteristics. It is composed with साम्बरस.

in course of discussion, Harisheus also explained the nature of जाप्त and वीतरान परमात्मन् (4.23, 5.18-20, 9.43, 48.25), प्राचनस्त, अन्द्रमुलसूग, वट्समें, शिक्षांचल, रासिक्षोचनस्थाग, सल्लेखना, जिनमेदिरसमेन etc. in Ninth Sandhi.

This is the abridged form of Hindi introduction. The grammatical pecuiarities of Apabhramsha of the text can be seen there in the last part of the introduction. Its language is very simple and sometimes does not even follow the rules of Apabhransha grammar. The parallel stories are also traced out from the Vedas and Puranas and they are mentioned in the Hindi introduction. The readers may go through it for detailed study.

The Dhammaparikkha of Harishena is edited for the first time on the basis of two manuscripts. I am indebted for the warm cooperation of Prof. M. S. Randive, former Head of the Department of Pali and Prakrit, Shivaji Arts College, Satara in the form of coping the Text while editing.

We are grateful to the Government of India, Ministry of Human Resource Development, Department of Education who extended its financial assistace for the publication of the Dhammaparikkha.

New Extention Area, Sadar NAGPUR-440001. Dated: Dipavali, 18-10-1990 Bhagchandra Jain Bhaskar
Head of the Department of
Pali and Parkrit,
Nagour University.

उपस्थापना

१. ग्रन्थ-परिचय

प्राचीन काल में वाद, विवाद, शास्त्रार्थ आदि के माध्यम से अपने धर्म की प्रतिष्ठा और प्रचार-प्रसार की पोजना बनाना और उसे कार्योन्वित करना एक साधारण और सर्वमान्य बात थी। इसलिए शास्त्रार्थ के नियम, प्रतिनियम भी बनते-बिगडते रहे। उसका भी दार्योनिक क्षेत्र में एक अपना महस्त्र और इतिहास है। सुत्तिनियत में बाह्मणों को 'बादशीला' कहा गया है। इससे पता चलता है कि वादपरम्परा का प्रारम्भ बाह्मण वर्ग से हुआ है और चूँकि वे अध्येता थे, वाद करना उनका स्वभाव हो गया था। बाद, जल्प और वितण्डा तथा छन, जाति और निग्रहम्थान जैसे साधनों का प्रयोग न्यायपरम्परा में होता रहा है। वहां कहा गया है कि जिस प्रकार खेत की रक्षा के लिए काँटेदार बाडी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार तत्वसरक्षण के लिए जल्प और वितण्डा में छन, जाति आदि का प्रयोग अनुचित नहीं है।

धमंपरीक्षा (धम्म परिक्खा) इसी प्रकार का एक ऐसा ध्यंग्य प्रधान ग्रम्थ है जिसमें शास्त्रार्थ के मध्यम से परपक्ष—खण्डन और स्वपक्ष—नण्डन किया ग्रमा है। पौराणिक कथाओं की समीक्षा का आधार लेकर किन ने इस काव्य में मनोरजकता ला दी है और पौराणिक कथाओं को अविश्वसनीय सिद्ध कर किया है। इसके अध्ययन से यह तथ्य प्रमाणित होता है कि जैन परम्परा ने छल, जाति आदि के प्रयोग का कभी भी समर्थन नहीं किया। सिद्ध सुन ने 'वाद-दिशिषाका' और अकलंक ने 'अष्टशती-अष्टसहली' में यह स्पष्ट किया है कि वादी का कर्तव्य है कि वह प्रतिवादी के सिद्धान्तों में वास्तिषक किया की ओर संकेत करे और फिर अपने मत की स्थापना करे। सरय और अहिसा के आधार पर ही हर दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

१. धमपरीक्षा नामक अनेक प्रन्य

धर्मप्रीक्षा का विषय बहुत लोकप्रिय रहा है। आजायों ने उस विषय की अपनी-अपनी काव्य-प्रतिका से आकलित किया है। उस नाम से जिन प्रन्थों की जानकारी मिस सकी है, वह इस प्रकार है-

^{1.} न्यायसूत्र, 4-2-50

1. जयरामकृत धर्मपरीका

प्रस्तुत विषय का कदासित यह प्राचीनतम प्रन्य है जिसका उल्लेख हरिषेण ने अपने अपश्रंण प्रन्य धम्मपरिक्खा में किया है। यह प्रन्य प्राकृत गाया—प्रवस्त में लिखा गया होगा। हरिषेण की धर्म-परीक्षा सं. 1044 (A. D. 988) में लिखी गई थी। जयरामकृत धर्मपरीक्षा इसके कितने पहले लिखी गई होगी, कह सकता कठिन है। वह अभी तक अपाध्य है। उनके जीवनकाल आदि के विषय में भी कोई जानकारी नहीं मिलती।

2. अमितगति इत धर्मपरीका

यह उपलब्ध धर्मपरीक्षा प्रत्यों में प्राचीनतम है। इसकी भाषा संस्कृत है और 1945 घलोकों में निबद्ध तथा इक्कीस परिच्छेदों में विभन्त है। इसमें कटपटांग पौराणिक कथाओं को सयुक्तिक व समानान्तर कृतिम कथाओं के माध्यम से खण्डित किया गया है। इसके रचियता अभितर्गत द्वितोय हैं जो काष्ठासंघ—माधुरसंघ के आचार्य थे। इनकी गुरु—परम्परा इस प्रकार है— थीरसेन—देवसेन—अमितर्गत प्रथम—नेमिषेण—माध्यसेन—अमितर्गत (द्वितीय)। अमरकीति के 'छक्कमोवएस' के अनुसार अमितर्गति को थिन्य परम्परा इस प्रकार है- शान्तिषेण-अमरसेन-श्रीसेन—चन्द्रकीर्ति—अमरकीति।

अमितगित धारानरेश भोज के सभारत थे। धर्मपरीक्षा की रचना उन्होंने मात्र दो माह में की थी। उ इसका रचनाकाल है वि सं 1070 (ई. 1014)। अमितगित ने अपनी धर्मपरीक्षा जयराब अथवा हरिषेण की धर्मपरीक्षा (ई. 988) के आधार पर की होगी। इनके अन्य प्रन्य हैं— सुमाधितरत्नसंदोह, उपासकाचार, पंचसंग्रह, आराधना, भावना द्वात्रिशितका, चन्द्रप्रज्ञन्ति, साद्धंहयद्वीप—प्रज्ञारित एवं व्याख्याप्रज्ञन्ति। 4

जा जयरामें असि विरहय गाह-पर्वधि । साहित धम्मपरिन्ख सा पद्धिवाशिध ।। 1. 1

जिनरत्नकोश, पृ. 189. ग्यारहवीं All India Oriental Conference,
 1941 (हैदराबाद) में पठित डॉ. आ. नै. उपाध्ये का लेख "हरिषेण's धर्मपरीक्षा in अपश्रंष' Annals B. O. R. 1-75, PP. 592.

अमितगतिरिवेदं स्वस्य मासद्वयेन ।
 प्रयित विशदकीर्तिः काष्यमृद्भृतदोषम् ।।

^{4.} जिनरत्नकोश, P. 190, हिन्दी अनुवाद, जैन प्रत्य रत्नाकर कार्यालय, वस्वई, 1908; जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी, कलकत्ता, 1908; बिण्टर-नित्स, हिस्ट्री बाफ इन्डियन सिटरेचर, भाग 2, P. 563; एन, मिरोनेव, डि धर्मपरीक्षा डेस अमितगति, लाइण्डिन, 1908.

3. पृत्तविसासकृत धर्मपरीकाः

इसके रवियत कन्न ड कि वृत्तिविलास हैं जिनका समय ई. 1160 निर्धा-रित किया गया है। आर. नरसिंहाचार्य ने उनकी गृदपरम्परा का उल्लेख इस प्रकार किया है- प्रती भूभकीति-सिद्धांती माधवनन्दि- यति भानुकीति-धर्म-भूषण-अमरकीति-वागीश्वर-अभयसूरि। यह धर्मपरीक्षा कन्नड भाषा में चन्पू भैली में रिवत लिलत काव्य है जो दश आश्वासों में विभक्त है। इस पर श्वा. सं. 1770 में चन्द्र सागर ने कन्नड गद्य में टीका निखी है। वृत्तविलास की यह धर्मपरीक्षा अमितगित की धर्मपरीक्षा पर आधारित है।

'नरसिंहाचार्य ने 1904 (मैंगलोर) में प्राप्तकाव्यमाला कर्नाटक कविचरित्ते' में इस ग्रन्थ का कुछ माग प्रकाशित किया था।

4. सीमाग्यसायर कृत धर्मवरीका

इसकी रचना श्रीपाल चरित्र के रचयिता लिखसागरसूरि (सं. 1557) के शिष्य सीभाग्यसागर ने सं. 1571 (ई. 1515) में की जिसका संशोधन अनन्तहंस ने किया। यह प्रन्थ संस्कृत भाषा में है और सोलह परिष्छंदों में विभक्त है।

5. यब्मसागरगणिकृत धर्मेंपरीकाः

यह तपागच्छीय धर्मसायर के शिष्य पद्मसागरगणि की रचना है जिसे उन्होंने सं. 1645 (ई. 1589) में लिखी। इसमें कुल 1474 मलोक हैं जिनमें लगभग 1250 तो अमितगति की धर्मपरीक्षा से आकलित किये गये है। कथा तो वही है पर प्रवेताम्बर मतानुसार जहां कहीं परिवर्तन कर दिया गया है फिर भी दिगम्बर सिद्धांत उसमें बच्चे रहू गये है।

6. जिनमण्डमगणिकृत धर्मपरीका⁴

तपागच्छीय सोमसुन्दर के जिन्म जिनमण्डमगणि (15 की ज्ञताब्दी का

- जिनरत्नकोश, P. 190; मुक्तिविमल जैन प्रन्थाना, प्रन्थांक 13, अहमवाबाद.
- जिनरत्नकोश, P. 190; देवचंद्र लाल भाई पुस्तक (सं. 15). बंबई, 1913; हेमचन्द्र सभा, पाटन, सं. 1978
- तुलनार्थ दृष्टक्य- जैन हितेषी भाग 13, p. 314. बादि में प्रकाशित प. जुगल किशोर मुख्तार का लेख "धर्मपरीका की परीका," जैन सहित्यनी संक्षिप्त इतिहास, P. 586, टिप्पण 513.
- 4. जिनरत्नकोश, P. 190; जैन बात्मस्तन्वं समा (सं. 97), भावनगर, सं.

वन्तिम रसक) ने 1800 ग्रन्थात प्रमाण धर्मपरीका की रचना की । उनके कुनारपाल प्रथम्ब (सं. 1412) तथा आद्वनुणसंग्रहविवरण (सं. 1498) ग्रन्थ भी उपसम्ब होते हैं।

7. जुलकीति कृत धर्मपरीका

महारक मृतकीति निन्दसंघ बलारकारगण और सरस्वतीयच्छ के विद्वान, देवेन्त्रकीति के प्रसिद्ध और विभूतनकीति के सिष्ट्य थे। उनका समय नि॰ की धोनहनीं खती सिद्ध होती है। वे सासवा के निवासी थे। उन्हाने धर्मपरीक्षा की रचना वि. सं. 15 2 (ई. 1496) में अपभ्रंग में की। इसके अविदिक्त उनके हरिनंशपुराण, परपेष्ठी प्रकाशसार और योगसार प्रन्थ सी उपलब्ध है।

- 8. पारवेकीति कृत बर्मपरीका (17 वी जताब्दी) 11
- 9. रामचंत्र कृत वर्मवरीका

पूज्यबादान्वयी पदमनन्दी के शिष्य रामश्रंत (17 वीं सताब्दी) ने देव-चन्द्र के अनुरोध पर संस्कृत में बर्मपरीक्षा की रचना 900 एकीक प्रमाण में की ।

10. मानविजयनचि कृत धर्मपरीका

तपागच्छीय जयि जयगणि के शिष्य मानविजयगणि (वि. की 18 वीं शताब्दी) ने अपने शिष्य देवविजय के लिए संस्कृत में रचना की ।

- 11. विशालकीति कृत धर्मपरीका (शक सं. 1729)
- 12. नवसेन कृत वर्मवरीका

नरेन्द्रसेन के झिच्य नयसेन ने ई. सन् 1125 में संस्कृत-कन्नड निश्नित धर्म-परीक्षा प्रस्य लिखा। वे धारवाड़ जिले के मलगुन्दा नामक गांव के निवासी थे और 'नैविश्यस्वकवर्ती' कहलाते थे। धर्मपरीक्षा के ब्रातिरिक्त उनके दो और प्रस्थ मिलते हैं- धर्मामृत और कन्नड ब्याकरण।

13. पनोहर कृत वर्मपरीका

कि मनोहर धामपुर के निवासी और आसू साह के स्नेह भाजन थे। उन्होंने हीरामणि के उपदेश तथा सालिवाहण खादि के अनुरोध से धर्मवरीक्षा की रचना सं. 1775 में की। इसमें हिन्दों के 3000 पक्ष हैं।

14. बाबिसिह रिवत वर्नपरीका (लगभग 16 वीं शताब्दी)

- 1. जिनरत्नकोश, P. 190.
- 2. जिनरत्नकोश पृ. 190.
- 3. जैन साहित्य का नृहद् इतिहास, भाग 6, डॉ. मुलाबभंद्र चौधरी, वाराणसी 1973, P. 275

15. वेडीविजय क्रुस समेपरीका

अपने मिच्य देविजय के लिए यगं।विजय ने लगमग वि. सं. 1720 में धर्मपरीक्षा की रचना संस्कृत में की । ये तपागच्छीय नयविजय के शिष्य ये ।

16. बेपतेन कृत धर्मपरीका

17: हरियेण इत अर्मपरीका

हरिषेण ने सं. 1044 (ई. 988) में अपश्रंश में धर्मपरीक्षा की रचना की ग्यारह संधियों में । इसके विषय में हम आगे विस्तार से लिखेंगें ।

इनके जितियन सी धर्मपरीक्षा नामक कृतियां सण्डारों में और भी
मुरिक्षित हंगी। देवेन्द्रकीर्ति (17 वी शताब्दी की धर्मपरीक्षा भराठी में
उपनब्ध है। गुजराती में भी धर्मपरीक्षा ग्रन्थों की रचना हुई होगी। इससे
ऐसा नगता है कि धर्मपरीक्षा काफी नोकप्रिय प्रन्थ रहा होगा। इन समूची
धर्मपरीक्षाओं में। अमितगित की धर्मपरीक्षा का सर्वाधिक अध्ययन हुआ है।
Mironow N. ने 1903 में "Die Dharma Pariksha des Amitagati"
प्रन्य Leipzig से प्रकाशित किया था जिसमें उन्होंने भाषा, विषय, छन्द आदि
का समीक्षात्मक अध्ययन किया है। Mironow के पूर्व डॉ. विन्टरनित्स ने भी
सन् 1701 में A Hisiory of Indian Literature, Vol. No. 2 में इस ग्रन्थ
के विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है। धर्मपरीक्षा का हिन्दी अनुवाद भी 1901 में
श्री पन्नालाल बाकलीवाल ने किया जिसे उन्होंने जैन हितेषी पुस्तकालय बम्बई से
प्रकाशित कराया। इसी का मराठी अनुवाद पं. बाहुबली शर्मा ने सन् 1931 में
सांगली से प्रकाशित किया। डॉ. उपाध्ये ने भी ग्यारहवें प्राच्य विद्या सम्मेलन
हैदराबाद में "हरिषेण की धर्मपरीक्षा" निवन्ध में इस पर कुछ प्रकाश डाला था।

२. धर्मपरीका की पृष्ठमूमि

इतिहास का मध्यकाल ज्ञान प्रधान रहा है। वहा हर क्षेत्र ताकिकता से समय विकाई देता है। आवरण और अध्यारम का क्षेत्र भी तर्कणा प्रतित से उपर नहीं सका। इसलिए इस युग का साहित्य परीक्षा प्रधान साहित्य विकाई देता है। उवाहरण तौर पर विग्नाग की आसम्बन्ध रीक्षा, निकालपरीक्षा, धर्म-कीर्ति की सम्बन्ध परीक्षा, धर्मोत्तर की प्रभाणपरीक्षा, कम्पाणपरीक्षा, क्षेत्रमाणपरीक्षा, क्षेत्रमाणपरीक्षा, क्षेत्रमाणपरीक्षा, क्षेत्रमाणपरीक्षा, क्षेत्रमाणपरीक्षा, क्षेत्रमाणपरीक्षा, क्षेत्रमाणपरीक्षा, सत्यमासनपरीक्षा, क्षेर विज्ञानक की प्रमाणपरीक्षा, सत्यमासनपरीक्षा जैसे परीक्षान्त प्रन्यों का विष्ठिण उल्लेख किया जा सकता है। इन प्रन्यों में एक संप्रवाय का आवार्य दूसरे सम्प्रदाय के विज्ञानतों की तार्किक क्षेत्र से परीक्षा करता है। इस संवर्ष में परीक्षा के स्थान पर मीमांक्षा क्ष्य का की प्रयोग हुआ है और मीमांक्षा क्ष्योग्वार्तिक, बारममीमांसा

आदि जैसे वार्मनिक ग्रन्थों की रचना की गई है। धर्मपरीक्षा भी इसी प्रकार का ग्रन्थ है जिसमें जैनेतर, विशेवतः वैदिक दर्शन, का तार्किक ढंग से परीक्षण किया गया है।

धर्मपरीक्षा की पृष्ठभूमि में बाद कथा का भाव रहा है जैसे समन्तभद्र, सिद्धसेन, अकलंक, हरिभद्र आदि आचार्यों ने बड़ी विद्वत्ता के साथ अपने प्रत्यों में अपनाया है। कुन्दकुन्द, पम्प, रस्न आदि ने जैनेतर दर्मनों का बर्णन किया है पर किसी के विरोध में कुछ भी नहीं कहा है। परंतु उत्तरकाल में उन्हें इस परम्परा को तोड़ देना पड़ा। जैनक्षमं के राजाओं को आध्य मिलना बन्द हो गया। बीरगैंकों और लिगायतों ने भी जैनधर्मको नष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। फलतः धीरे-धीरे वाद साहित्य की रचना होने लगी। उदाहरणः नयसेन के धर्मामृत (सन् 1112) में सम्यग्दर्शन के अंगों पर प्रस्तुत कथाओं में जैनाचार का पालन करनेवाले जैनेतरों को भ्रष्ट होते हुए बताया है।

ब्रह्मणैव ने वैलोक्यवूड़ामणि स्तोत में वृक्ष, समुद्र, नदी, सूर्य आदि की पूजा का खण्डन किया है और समयपरीक्षे में अन्धविश्वासों का खण्डन करते हुए द्यावतार, स्वयम्भू आदि की आलीचना की है। इसी तरह वृत्तिवलास (सन् 1360) ने चम्पूर्णली में लिखी धमंपरीक्षा में वैदिक आख्यानों की तीत्र भस्तेना की है। यह संस्कृत धमंपरीक्षा का अनुवाद-सा है। शास्त्रसार में मिध्यावाद का खण्डन कर सम्यक्ष्य की स्थापना की गई है। संस्कृत और प्राकृत में इस प्रकार के अनेक प्रन्थ मिलते हैं। धमंरीक्षा भी इसी पृष्ठभूमि पर लिखी कथा है जिसमें जैनेतर दार्थनिक सिद्धान्तों और उपासना पद्धतियों पर तीत्र प्रकृत किया गया है। धूर्ताख्यान की पृष्ठभूमि पर रची गई धमंपरीक्षा नि:सन्देष्ट एक प्रभावक रचना सिद्ध हुई है।

३. धर्मपरीक्षा का उद्देश्य

हरिषेण की धर्मपरीक्षा का उद्देश्य है मिण्यात्व भाव को स्पष्ट करना (मिण्छत्तभाव अवगण्णित्, 11.26)। मिण्यात्व से यहां तात्पर्य है, ऐसे सिद्धान्त जिनसे व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास अवश्व हो जाता है। ऐसे सिद्धान्तों का समुक्तिक और स्वानुभूतिक खण्डन कर सम्यक्त्व की स्थापना की जाती है। व्यक्ति मिण्या मार्ग को छोड़ दे और सम्यक् मार्ग को ग्रहण कर से यही आवायों का मुख्य उद्देश्य रहा है। वहां किसी धर्म के अपमान करने का कोई भाव नहीं है।

अमितयति ने अपने मन्तव्य को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने लिखा है- मैंने इस प्रन्थ में जैनेतर मतों का जो सी खण्डन किया है वह बौद्धिक अभिमान अयवा पक्षपातपूर्वक नहीं किया है। उस खण्डन के पीछे यही उद्देश्य रहा है कि जो धर्म शिवसुखप्रदाता है उस धर्म का प्रहण उसकी पूरी परीक्षा करके ही होता चाहिए। बिल्णु और महादेव ने न मेरा गुछ बिनाड़ा है और न जिनेन्द्र भगवान ने मुझे कुछ दिया है। मेरा तो केवल यही निवेदन है कि जो सस्पुरुष है वे कुगति की प्रवृत्ति कराने वाले मार्ग (धर्म) को छोड़कर सुगति में ले जाने वाले मार्ग का आश्रय करें जिससे वे नरकादि दु:खों से मुक्त हो सकें।

न बुद्धिगर्वेण न पक्षपाततो मयान्यशास्त्रार्थं विवेचनं कृतं ।
ममैव धमै शिवसौख्यवायिके परीक्षितुं केवलमुस्थितः भ्रमः ॥ 10 ॥
अहारि कि केशवर्शकरादिभिः व्यतारि कि वस्तु जिनेन वार्थिनः ।
स्तुवे जिने येन निषिध्य तानहं बुधा न कुर्वन्ति निर्धंकां कियाम् ॥ ॥ ॥
विमुच्य मामै कुगतिप्रवर्तकं श्रयन्तु सन्तः सुगतिप्रवर्तकं ।
विराय माभूदेखिलांगतापकः परीपतापो नरकादिगामिनाम् ॥ 12 ॥

अतः धर्मपरीक्षा में प्रस्तुत विषय को मीमांसापूर्वक ग्रहण किया जाना चाहिए। उसके लेखन के पीछे किसी धर्म विशेष का अपमान करने का भाव आचार्यों के मन में कभी नहीं रहा है। प्राणी का कल्याण मात्र करना उनका उद्देश्य रहा है। इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर धर्मपरोक्षा की रचना हुई है। धर्म जैसे सर्वसाधारण और प्रमुखतम तस्व की परीक्षा करके ही उसे धारण किया जाना चाहिए।

बर्मपरीक्षा की इसी परम्परा में प्रस्तुत ग्रन्थ में पौराणिक कथाओं की बेतुकी वातों को उद्घाटित कर उन्हें निर्मंक किया अविश्वसनीय सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है। ऐसी कथायें आगमिक व्याख्या साहित्य में अधिक मिलती हैं। निर्मृक्ति और पाष्य साहित्य में ब्राह्मणों की अतिरंजित पौराणिक आख्यानों पर तीव व्यंग्य, पूर्वों के मनोरंजक आख्यान तथा साधुओं को धर्म में स्थिर रखने के लिए लोक प्रचलित कथाओं के विविध रूप मिलते हैं। प्राष्ट्रत कथा साहित्य का उद्गम वस्तुतः आगम साहित्य से ही हुमा है। टीका साहित्य में यह प्रवृत्ति और अधिक दृष्टिगोचर होती है। आआर्य इरिभव सूरि ने वायश्यक और ध्यवैकालिक सूत्रों पर टीका लिखते समय तथा समरा-इण्च कहा और घूर्ताख्यान जैसे जैन कथा प्रन्थों की रचना करते समय इस बात का अधिक ध्यान रखा है कि लौकिक आख्यानों का अधिकतम उपयोग मिण्यास्य को दूर करने तथा नैतिकता को प्रतिष्काणित करने में किया जाये।

माइन्त कवा साहित्य का समय लगभग नतुर्व शतान्त्री से प्रारम्भ होता है और समह्वीं शतान्त्री में समाप्त होता है। इस बीच के साहित्य में कथा, बन्तर्समा, आध्यान, बृष्टास्त,संवाद, चरित, पश्नीस्तर, प्रहेसिका, सूनित, बहाबत, बीत साझि समाहित किये वये हैं। इन कथाओं को हरिश्वद सूरि ने बार धार्यों (धर्च, काम, धर्म और संकीर्ण) में तथा उद्योतन सूरि ने तीन धार्यों (धर्म, बर्च बीर काम) में विभाजित किया है। पुनः धर्मकथा चार भागों में विभक्त है— आक्षेपणी, विक्षेपणी, सवेदनी और निर्वेदिनो। उत्तरकाल में इन कथा धार्मों को और भी विभाजित किया गया है।

इस समय तक वैरिक आख्यानों का विकास भी प्रारंभ हो नया था। 'इतिहास पुराणाम्यां वेद समुखंहयेत्' के रूप में पौराणिक शैंकी प्रचलित हुई जिसमें असीत कथाओं के साथ ही ववादित प्रवृत्तियों और परिस्थितियों के अमुरूप उनमें परिवर्तन और परिवर्धन किया गया। अतिसयोक्ति मौली का अपूर्ण उपयोग किया गया। उदाहरणार्थं पुरूरवा और उर्वशी का सहरास काल ऋ वेद में चार वर्ष माना गया है पर पीराणिक वर्णन मे उसे इकसठ हजार वर्ष कर दिया गया है। जनवर्ग को आकर्षित कर उसे धर्म में स्थिर करने के लिए इस साधन का प्रयोग किया गया। इन अाख्यानों का सम्बन्ध अनुभूति से असे ही रहा हो पर उनमें अतिरंजना का तत्व बहुत अधिक जुड़ गया। वह तस्य पुराणों का अंग बन गया ओर कालान्तर में उसने स्वतन्त्र और पृथक रूप में अपना विकास कर लिया। पुराण ओर इतिहास संवलित हो गवा अर अति-रंजना के सत्व में इतिहास तत्व पीछे रह गया। आख्यान, उपाज्यान, गाया और कल्यों द्वारा योनों तत्त्वो को विकसित किया गया और इन खब्दों का भी स्वतन्त्र विक्लेचण प्रारंम हुआ। कौटिल्य अर्थशास्त्र कोर महाभारत ने पुराणों को श्रद्धेय और अतन्यं घोषित कर दिया। वैदिक आख्यानं। की पृष्ठभूमि में ही विष्णु-पुराण, वायुपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, मत्स्यपुराण, रामायण और महाभारत जैसे ग्रम्थो की रचना हुई है। इनके प्रतिसंस्करण भी प्राप्त होने सुगे । समीक्षारमक दृष्टि से देखा जाये तो नगमग सातवी शताब्दी तक अब्टादश् पुराण ओर महा-काव्य की परिसीमा निश्चित हो चुकी थी।

हरिश्रद्र सूरि को ये पौराणिक आह्यान सरलतापूर्वक उपलब्ध हो गर्म । वे स्वयं वैदिक पण्डित थे। जैनधमं में दोक्षित होने पर उसके प्रवित्याल और व्यावहारिक तत्त्वों ने हरिश्रद्र के मन को आन्दोलित कर दिया और पौराणिक आह्यानों की अतिरिजित शैली ने अविश्वसनीयता को और गहरा बना दिया। उन्होंने आयमिक टीकाओं मे इन आह्यानों पर प्रश्नविन्ह खड़ा कर दिया। धूर्तांच्याने में तं। उन्होंने रामायण, महाभारत और पौराणिक आह्यानों पर जो

संपादक डाँ ए. एन. उपाध्ये, सिन्धी जैन प्रत्यमासा, सध्यई, 1944 संयक्तिककाषार्थं का संस्कृत अूलेक्यान जैनग्रन्थ प्रकाशक सम्बा, पाजनगर द्वारा 1945 में प्रकाशित श्रुमा ।

कराश व्यं व्यं विशेषात्मक वंग से कसा है उससे उसकी वस्त्यां वीर अधिवस्तिनीयता वीर अधिवस्ति वह जाती है। निशीष विशेष चूर्वी में पुरतक्षाणग (पीठिका, पू- 105) के उस्लेख से यह माना जा सकता है कि हरिभव्र के पूर्व की इन अवगर्ग का उपहास का कारण बनाया गया था। पर इसका सबस प्रयोग हरिभव्र ने ही किया है। उन्होंने धूर्ताव्यान में पांच धूर्तावरोमिष-मूसशी, कंडरीक, एसावाड, सब और खण्डयाणा के माध्यम से इन अविश्वस्तिय पीराणिक अध्यानों को प्रस्तुत किया अपनी करियत अनुमूल कथानों के सहारे।

हरिषेण की धर्मपरीक्षा (श्रम्मपरिक्षा) इसी धूर्ताख्यान के पदिक्तीं पर चलनेवाली अन्छी कृति है। इसमें भी मनोवेग अपने अभिन्न मिन पदनवेग से इसी प्रकार की कल्पित कथाओं का सहारा लेकर महाधारत और पौराणिक आज्याना का उपहास करता है। इस युग के अन्य खैनानाओं ने भी सब-तव अने प्रन्थों में इन कथाओं का पुरजोर खण्डन किया है। वसुदेवहिण्डी आदि कथा प्रन्था में यह प्रवृत्ति दृष्टच्य है। नन्दीसूल में रामायण, महाभारत आदि जैसे प्रन्था की मिध्यालास्त्रों में परिगणित किया गया है। दार्थिक की प्रस्तुत 'सम्मारिक्या' भी उसी परम्परा में अनुस्यूत एक अन्ध्रंत महाभारत कृति है जिसना संपादन प्रथम बार हो रहा है।

२. संपादन परिचय

१. प्रति परिचय

अभितगति की धर्मपरीका से भी पूर्व हरिषेण ने अपर्श्वता में घम्मपरिक्खा की रचना की यो। इसकी दो हस्तिलिखत प्रतियां कण्डारकर ओरियन्टल रिसर्व इन्स्टीटपूट, पूना में सुश्कित हैं। इन प्रतियों का परिचय इस प्रकार है-

i) 되信 A

इस पाण्डुलिपि का पुराना नं. है 617/1875-76 और नया तम्बर है 36 १ लेखन स्वच्छ ओर शुद्ध है। इसके कुल पश्चे 75 है। अध्यम तीन पश्चों में आने के लिए कुछ स्थान छोड़ दिया क्या है। प्रति का प्रारम्भ "ॐ नमो वीतरागाय" से होता है। यह लाल स्याही में है जेप पूरी पाण्डुलिपि काली स्याही में लिखी गई है। हाजिपे में कोई टिप्पण नहीं है। प्रत्येक पृष्ठ में भ्यारह पंक्तियां है। हर पंक्ति में 38 से लेकर 44 जकार है। इसमें जादि-अन्त में कोई समय प्रश्नस्ति नहीं है। यह पाण्डुलिपि किसी पुरानी पाण्डुलिपि के आधारपर तैयार की गई है। लिपि अधिक पुरानी दिखाई नहीं देती। इसके पर्ध 56 a, 57, 69 अलिखात-से हैं। कायल करवे रंग का है।

ii) um B

संह पूरी पाण्ड्रसियि काली स्थाही में लिखी गई है। इसका नं. है 1009/1887-91. यह पाण्ड्रसियि प्रवम पाण्ड्रसिय से अपेक्षाइत पुरानी दिखती है। इसके पक्षों के किमारे कुछ टूट से गर्थ है और कागज भी कुछ पुराना अधिक विखाई देने लगा है। इसमें कुल पखे 138 है। अंतिम पन्ना कुछ टूट गर्था है और बीबा पन्ना गुम गर्या है। स्याही ठीक है, अक्षर सुन्दर और सुवाच्य है। प्रत्येक पन्ने में आठ या नौ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में सगभग 28 से 32 अक्षर है। होशियों में जहां कहीं कुछ टिप्पण भी मिल जाते हैं संस्कृत में।

इस पाण्डुलिपि के परना 138 A पर निम्नलिखित प्रशस्ति मिलती है-

'संबत् 1595 वर्षे पोषधमासे शुक्सपक्षे पंचमीतिथी व मंगलवारे मघानक्षत्रे वि. (१) कुलनामजोगो ॥ अथ कसय । मोजाबाद वास्तव्ये राजाधिराज क व या ह क व र क्रमें वंदराज्यप्रवर्तमाने ।

इसके बाद अंतिय पृष्ठ पर किसी दूसरी की हस्तिनिय में निखा है-श्री.
मृतसंघे षट्टारक श्री पद्मनंदि, तत्पट्टे म. शुमचंद्र, तत्पट्टे भ. जिनचंद्र, तत्पट्टे
भ. प्रधाचंद्र, मण्डलाचार्यं भ. रत्मकीति, तित्शब्य मण्डलाचार्यं त्रिभुवनकीति
तदाम्नामे खण्डेलवालाखये अजमेरागोले सं. सूजू तत्पुत्र टेहक, धार्या लाजी तयोः
पुत्र छीतर भार्या सुना इ. रक्षायां ज्ञानावणीं कर्मक्षयं निमित्तं लिखाण्य ॥ मृति
देवनंदि योग्य दात्वव्यं ॥ मुक्तं भूयात् ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

लगता है, यह प्रति सं. 1595 के पूर्व की होगी। बाद में प्रशस्तिभाग किसी और ने जोड़ दिया है। इसकी अपेक्षा प्रथम पाण्डुलिपि अधिक शुद्ध है। इस-लिए हमने उसी को आदर्श प्रति माना है।

२. पाठ-संपादन पद्धति

1- इन दोनों प्रतियों के माध्यम से प्रस्तुत संपादन को पूरा किया गया है। दोनों का अध्ययन करने से यह भी तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि वे एक दूसरी पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि नहीं है, बल्कि स्वतन्त्र पाण्डुलिपियों से उनकी प्रतिलिपियों की प्रतिलिपि नहीं है, बल्कि स्वतन्त्र पाण्डुलिपियों से उनकी प्रतिलिपियों की गई हैं। हमने प्रति A को आदर्श प्रति माना है और उसे पूरा और स्पष्ट करने के लिए प्रति B का सहारा लिया है। इनकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं ~

- 2. अदि और मध्य न को ण । जैसे णवर, घणवाहणु आदि.
- 3. व को व । वैसे वित्वारें, वोस्लिएण आदि । प्रति A में जहां कहीं व अवस्य मिलता है पर उसे भी व कर दिया गया है।
- 4. चाई की चाइ।

- 5. थ दोनों पाण्डुलिपियों में धिलता है।
- 6. न महीं महीं मिलता है पर उसे भी ण कर दिया है !
- 7. मुद्रण की सुविधा की दृष्टि से वर्ष एकार ओकार को कमणः इकार और ओकार कर दिया है। जैसे मिए, कुंतिहि, समुरहो, महीयित, भारहो, मासिविणु आदि-
- 8. यश्रुति और वश्रुति का वशास्थान प्रवीम
- 9. तृतिया एवं सप्तमी विभवितयों के कारण प्रत्ययों तथा पूर्वकालिक इदात शक्दों में इ तथा ए की स्वीकार किया गया है।

३. ग्रन्थकार परिचय

१. हरियंण नाम के अनेक कथि

हरिषेण नाम के अनेक आचाय हैं जिन्होंने जैन साहित्य की विविध विधाओं पर ग्रन्थ -रचना की है । उदाहरणार्थ-1

- 1) समृद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति के लेखक हरिवेण (ई.सन्. 345)
- 2) अपश्रंशग्रन्थ धम्मपरिक्खा के रचिता (वि. सं. 1044) । इसके विषय में हम विस्तार से बाद में सिखेंगे।
- कर्पूर प्रकार या सुक्तावली के रचयिता हरिषेण त्रिषिटशलाका पुरुष-चरित के रचयिता वक्त सेन के त्रिष्य ये (12 वीं सताब्दी) ।
- 4) जगत्मुन्दरीयोगमलाधिकार के रचयिता हरिषेण
- 5) प्रभंजन के साथ वासवसेन के यसोधरवरित में उल्लिखित हरिषेण। उद्योतनसूरि की कुवलयमाला (ई. सन् 778) में प्रभंजन का उल्लिख किया गया है।
- 6) अध्यान्तिकाकथा का रचियता हरिषेण जिनकी गुढ परम्परा है— रत्नकीति, वेमकीति; सीलसूषण, गुणचन्द्र, हरिषेण।
- 7) वृह्तकथाकोस का रचिता हरियेण को पुन्नाटसंघीम जिनसेन प्रथम की परंपरा में हुए हैं। अतः उनका समय ई. सन् की दशमी सताब्दी का मध्य भाग है।

सॉ. ए. एक उपस्थी, बृहत् नयाकोस, प्रस्तवना, P. 117-119.;
 भारतीय विद्या भवन, बम्बई, 1943

२. धम्मवरिक्सा के रचविता हरिवेश

धम्मपरिक्खा के रक्षयिता हरिषेण मेबाण में स्थित चित्रकृट (चित्रीड़) के निवासी थे। वे श्री छजीर (बोजपुर) से छद्मृत धनकड वंश के थे। मविस-यश्तकहा के रचयिता यहस्वी कवि धनपाल ने भी इसी वंश की सुशोभित किया था। इसी कुल में हरि नामक कोई प्रतिष्ठित कलाकार भी ये। उनके पुत्र और हरिवेण के पिता का नाम गोबर्धन और माता का नाम गुणवती था। पुत्र हरिषेण गुणगणनिधि और कुल गगन दिवाकर था। उन्होंने किसी कारणवश, कदाचित् व्यापारितिमित्त (णियकण्जें) चित्तीड् छोडकर अचलपुर पहुंच गये। वहीं उन्होंने छन्द, अलंकार का अध्ययन किया और धम्मपरिक्खा की रचना की। कवि ने स्वयं की, 'बिव्ह-कइ-विस्सुइ' कहा है। ग्रम्मपरिक्खा की प्रशस्ति में उन्होंने लिखा है-

द्वत नेवाड-देसिजण संकृति पाव-करिद-कूंभदारण-हरि तासु पुरत पर-णारि-सहोयर गोबहरणु जामें उपग्णव तहो गोवर्ढणाम् पिय गुणवह ताए अणिउ हरिषेण-णाम सूउ तहि छन्दालंकार पसाहिय जे मज्झस्य मणुय आयण्णहि तें सम्मत्त जेण मस् खिज्जइ

सिरिउजउर-णिग्यम-धारकड तृलि। जाउ कलाहि कुसलु णामें हरि। ग्ण गण-णिहि क्ल-गयण-दिवायक। जो सम्मत्तरयण-संपुष्णव । जा जिणवर-पय णिच्च वि पणवइ। जो संजाउ विवृह-कइ-विस्सुत । सिरि चित्तरस चहवि अवास उरहो गउ णिय-कज्बे जिणहर पउरहो। ध्रम्मपरिष्य एह तें साहिय। ते मिच्छत्त-भाउ अवगण्गहि । केवलणाणु ताण उप्पज्जइ।

घत्ता- तहो पुण् केवलणाणहो जैयपमाणहो जीव-पएसिंह सुहडिउ । बाहा-रहिउ अणंतउ अइसयवंतउ मोरख-सूनख-फल् पयडियउ ॥26॥

धम्मपरिक्खा की रचना दि. सं. 1044 में हुई जैसा कि निम्न कड़वक (क 11.27) की पंक्तियों से सिख होता है।

विक्कम-णिय-परिवर्तिए कालए वक्गयए-श्रास-सहस-चलतालए। इउ उपप्ण्यु भविय-जण-सुहुयक उंगरहिय-धम्मासय-सायक ।

बुध हरिषेण के गुरु का नाम सिद्धसेन रहा होया जैसा कि उन्होंने धम्म-परिनखा की ग्यारहवीं सन्धि के कडवक 25 के अन्त में लिखा है-

सिबसेण-पम वंदिह दुविकाउ णिदहि जिया हरियेण मर्वता । तींह थिय ते बाग-सहयर कय सम्मायर विविह-सुहद्दं पावंता ॥ ॥ 25 ॥ इसके बतिरिक्त हरिषेण के विषय में और कुछ भी नहीं मिलता । उन्होंने अपने आपको "विवृध विश्वतकवि" कहा है । इससे यह अनुमान तो किया ही जा सकता है कि उन्होंने कुछ और भी ग्रन्थ लिखे होंगे जो किन्ही भण्डारों में छिपे पड़े हों।

समय

जहां तक कवि के समय का प्रश्न है, वह उपर्युक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि हरिषेण ने अपना ग्रन्थ वि. सं. 1044 (ई. सन् 988) में लिखा था। क्षीरमुडकथा के प्रसंग्र में उन्होंने सागरदत्त नामक वणिक का उल्लेख किया है जो समुद्र पारकर चोल (१) द्वीप गया और वहां तोगर राजा से मिला। उसने तोमर को दुग्ध-दिव मिश्रित व्यंजन जिलाये जिससे आकृष्ट होकर तोमर ने उस गाय की कामना की (3.4)। यहां हरिषेण ने 'णालिएर पुष्य हो गड दीपहों तो लिखा है पर चील द्वीप का स्पष्टतः उल्लेख नहीं किया है। अभित-गति ने अपनी धर्मपरीक्षा (7.64) में अवस्य यह जोड़ दिया है। तीमरवंशीय क्षतिय विस्ली की हो अपना मूल स्थान मानते हैं। चंबल की तीमरों ने सन् 736 ई. में अपना राज्य हरियाणा क्षेत्र में स्थापित किया था। वे ई. सन् 1192 तक ढिल्लिका को राजधानी बताकर राज्य करते रहे। मार्च 1192 ई. में ताराईन के निगियक युद्ध में चाहड्पालदेव तीमर की मृत्यु के साथ तीमरों का दिल्ली साम्राज्य समाप्त हो गया और फिर ग्वालियर तोमर इतिहास प्रारम्म हुआ। हरिषेण और अमितगति ने तीमर का उल्लेख तो किया है पर उस वंश के किसी सम्राट्का नामोल्लेख नहीं किया। साथ ही दक्षिणवर्ती चोल राज्य में तीमर का प्रवेश हुता हो ऐसा कोई उल्लेख भी मुझे देखने नहीं मिला। हो सकता है, किसी युद्ध में कोई तोयर सम्राट हार गया हो, वह यों ही बोल दीप में पहुंच गया हो ओर बिना किसी प्रवत्न किये ही वह अपना राज्य वापिस लेना चाहता हो। इसी घटना को हरिषेण ने क्षीरमूढ कथा में कहकर उसकी इच्छा को मुर्खता किया उपहासास्पद कह दिया हो। जो भी हो, हरिषेण काल सीमरकाल रहा है इसमें कोई संदेह नहीं है।

इसी प्रकार हरिषेण ने तृतीय संधि के दसवें कडवक में दीणार और पल का उल्लेख किया है। दीणार का उल्लेख लगभग बारहवीं शताब्दी तक मिलता है। राजधेखर की राजतरंगणी में भी दीणार का सुन्दर वर्णन उपलब्ध है। पर यह उल्लेख हरिषेण के समय की निश्चित करने में अधिक सहायक नहीं हो पाता। कुल मिलाकर हम मही कह सकते हैं कि हरिषेण दसवीं शताब्दी के महाकवि थे।

दर्शनसार में देवसेन ने कहा कि है कि तीर्थं कर पार्श्वनाथ के तीर्थं में मुदीदन और उनके पुत्र महात्मा बुद्ध थे। बुध्य ने संघ में रहकर मतस्य, मांस

बादि का भक्षण करना प्रारंभ कर दिया । फलतः उन्हें संब से निष्कासित कर दिया गया। बाद में उन्होंने संघ से पृथक् होकर अपने अलग धर्म की स्थापना कर ली जिसे बौद्धमं कहा जाने लगा। यह प्रसंग धम्मपरिक्या की दसवीं संधि के दशवें कडवक में हरिषेण ने उद्धृत किया है। देवसेन का भी समय लगभग दशकों माताब्दी माना जाता है। हरिषेण और देवसेन इस दृष्टि से समकासीन कवि सिद्ध होते है।

३. हरियेण के पूर्ववर्ती कथि

हरिषेण ने अपने पूर्ववर्ती कवियों में चतुर्मुख, पुब्पदम्त, स्वयंभू, बुध सिद्ध-सेन और जयराम का उल्लेख किया है। धर्मपरीक्षा के प्रारंभ में हो-

> सिद्धि पुरेधिहि कंतु सुद्धें तंजु-मण-वयणें। भत्तिए जिणु पणवेबि चितिउ बृह-हि वेणे ।।

मणुयजिम्म बुद्धिए कितिज्जइ तं करंत अवियाणिय आरिस चउम्हं कव्वविरयणि सयंम् वि तिष्णि वि ओग्ग जेण त सीसइ जो समंभू सो देउ पहाणउ पुष्फयंतु णवि माणुसु वृच्चइ ते एवंबिह हुउं जहु माणउ मध्य करंतु केम णवि लज्जमि तो वि जिणिद-धम्म-अणुराएं

मणहरु जाइ कब्दु ण रहज्जह। हासु लहिंह भड रणि गय-पोरिस। पुष्फवंदु अण्णाणु णिसंभिवि । चडमुह मुहे थिय ताव सरासइ। अह कह जोयालोय-वियाणउ। जो सरसइए कयावि ण मुख्यह । तह छंदालंकार-विहणउ। तह विसेस पिय-जणु किह रंजिम । ब्धसिरि-सिक्सेण-सुपसाए । करमि सयं जि णलिणि-दल-थिउजलु अणुहरेए णिश्वमि मुत्ताहलु ।

घता-जा अवरामें आसि विरद्य याह-पर्वधि । साहिम धम्मवरिक्ख सा पढि हिया-बंधि ।

वतुर्म्ख

हरिषेण ने जिन महकवियों का उल्लेख किया है उनमें चतुर्मुख का नाम शीर्षस्थ है। लगता है, वे अपभ्रंश के कदाचित् प्राचीनतम कवि रहे हैं। यही कारण है कि स्वयंभू ने अपने पजमचरिज, रिहणेमिचरिज और स्वयंभूछन्द में तथा पुरुषदन्त ने अपने महापुराण में उनका बड़े सम्मान के साथ उल्लेख किया है। पुष्पवन्त ने तो यहां तक लिखा है कि चतुर्मुख के तो चार मुख हैं, उनके क्षागे सुकवित्व क्या कहा जाये-चउमुहहु चवारि मुहाहि जहि, सुकद तणु सीसउ काई तर्डि (महायुराण, 69 वीं संधि)। स्वयंभू ने कहा कि चतुर्मुख ने छर्डनिका, क्षिपदी और अवस्तें से जटित पद्धहियां दी हैं (रिट्ठणेमिनरिङ) ! उनके वजमवरिज का वह उल्लेख भी स्मरणीय है जहां कहा क्या है कि वतुर्व के

सन्दों को साज भी कोई नहीं पा सकता है। गोग्रह्कया वर्णन में-चउनुह एव व गोग्यह सहाए। इन सभी उद्धरणों से यह स्टब्ट है कि चतुर्मृत्व महाकवि स्वयंष् ते भी पूर्ववर्ती होना चाहिए। कहा जाता है कि उनकी तीन प्रमृत्व कृतियां अपभंग भाषा यें किसी गई हैं- पउमचरिस, रिट्ठणेमिचरिस तथा पंचमीचरिस । धक्त कि ने हरिबंगपुराण में उनके एक और ग्रन्थ का उल्लेख किया है-'हरि पाण्डवानां कथा'। दुर्भाग्यवश महाकवि का अभी तक कोई भी ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हुआ है। कि का समय विक्रम की आठवीं भताब्दी है। हरिषेण ने उनके मुख में सरस्वती का निवास बताकर उनका सम्मान किया है।

स्वयंभवेष

स्वयंभूदेव के पिता का नाम मारुसदेव और माता का नाम पिट्नमी था। उनकी तीन पित्नयां थीं— आदित्यदेवी, अमृताम्बा और मुख्या । इन तीनों ने किन के प्रत्यों को लिखने में काफी सहायता की थी। किन के पिता भी किन ये। उनके लड़के विभुवन स्वयंभू भी अपने पिता के समान ही प्रतिभा संपन्त महाकिष थे। उन्होंने भी अपने पिता के प्रत्यों को पूर्ण करने में अपनी प्रतिभा का उपयोग किया था। किन मूलतः की शल प्रदेश के थे। बाद में उन्हें राष्ट्र-कृट राजा भुव का मन्त्री मान्यखेट ले गया था। हरिष्ण ने उन्हें लोकालोक में निश्रत माना है।

महाकवि ने पजमचिरिज और रिट्डणेमिकरिज में जिन पूर्ववर्ती किवयों का जन्लेख किया है उनमें रिविषणाचार्य सबसे बाद के हैं। रिविषण ने पदमचिरत की रचना वि. सं. 734 में की अतः स्वयंभू की पूर्व कालाविध वि. की लगभग 8 वीं भती होगी। इसी तरह महाकि पुष्पदन्त ने स्वयंभू का जल्लेख अपने महापुराण में किया है। महापुराण की रचना वि. सं. 1016 में हुई थी। अतएव स्वयंभू की उत्तरकालाविध वि. सं. 1016 है। जयकीति और असग ने स्वयंभू का जल्लेख किया है। अतः कि का समय नवमी मताब्दी होना चाहिए। महाकि की तीन विभाल रचनायें उपलब्ध है— पजमचिरज, रिट्ठणेमिचरिज, और स्वयंभू छन्द। इनके अतिरिक्त तीन और यन्य जनके नाम पर जल्लिखत है-सोद्धयचरिज, पंचमिचरिज और स्वयंभू ध्याकरण। कि के सभी पन्य भाषा, विषय और शैकी की दृष्टि से अनुपम हैं। रामकथा को नदी मानकर जमे जन्होंने बहुत सरस बना दिया है।

पुष्पवन्स

महाकवि पुष्पदन्त भी स्वयंभू के समान मूलतः ब्राह्मय ये पर जैनसमं की विशेषता देखकर वे जैनसमंपरायण हो गये थे। उनके पिता का नाम केशवशट्ट कीर माता का नाम मुख्यादेनी था। वे बड़े स्वाभिमानी और स्पष्टवस्ता थे। बहुपुराण के सन्त में दी गई प्रवस्ति से उनके व्यक्तित्व की एक सनक मिल

जाती है। बिमानमेर, कविकुलितलक, सरस्वतीनिसय और काव्यपिसंस्त जैसे उपाधिनामों से भी कवि के व्यक्तित्व का पता कलता है। वे राष्ट्रकृट के अंतिम सम्राट् कृष्ण तृतीय के महामास्य भरत द्वारा सम्मानित थे। भरत ही उन्हें विवर्ष से मान्यखेट ले गये और उन्हीं की प्रेरणा से मान्यखेट में महापुराण को रचना हुई थी। हरिषेण ने उनकी मानवीयता तथा विद्वारा का ससम्मान उल्लेख किया है।

महाकि पुष्पदन्त के समकालीन राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीय रहे हैं। धवसा और जयधवला प्रत्यों का भी उन्होंने उल्लेख किया है। जयधवलाटीका वीरसेन ने अमोधवर्ष प्रथम वि. सं. 894 (A. D. 837) के आसपास की थी। हिरिषेण के शिष्य जयसेन ने वि. सं. 1044 में उनका उल्लेख किया है। अतः महाकिव का समय वि. सं. 894 और 1044 के बीच तो होना ही चाहिए। धनपाल में पाइयलच्छी नाममाला में वि सं. 1029 में मालव नरेन्द्र द्वारा की गई मान्यखेट की लूट का उल्लेख है। पुष्पदन्त ने भी इस घटना का उल्लेख किया है। सगता है इस लूट को उन्होंने स्वयं देखा है और वे उसके बाद भी मान्यखेट में रहे हैं। अतः महाकिव का समय ई. सन् की दसवी शताब्दी होना चाहिए।

पुष्पदन्त की तीन रचनाये उपलब्ध हैं— महापुराण, णायकुमारचरिउ और जसहरचरिउ । ये तीनों ग्रन्थ रस, अलंकार और प्रकृतिचित्रण की दृष्टि से बेजोड़ हैं। उपमा और रूपक की भौती से किय की विदग्धता का पता चलता है। देशी भाषा के शब्दों का बड़ा मुन्दर प्रयोग उन्होंने अपने ग्रन्थ। में किया है।

बुध सिद्धसेन

हरिषेण ने बुध सिद्धसेन का उल्लेख (11.25) इस प्रकार से किया है जैसे वे उनके गुरु रहे हों--

भत्ता- सिद्धसेण-पय बंदींह दुक्किड णिवींह जिण हरिषेण गर्वता । तींह पिय ते खग-सत्यर कय धम्मानर विविह-सुहद्दे पार्वता ।।

धम्मपरिश्वा के प्रारम्भ में भी उन्होंने बुध सिद्धसेन के 'प्रसाद' का उल्लेख किया है। हरिषेण के अतिरिक्त अन्यत्र बुध सिद्धसेन का उल्लेख देखने में नहां आया।

जबराम

हरियेण ने लिखा हैं कि जिसं धम्मपरिक्या की किन जयराम ने गाया प्रयंध में लिखा या उसी की उन्होंने पढ़िया छन्य में लिखा दिया है। इससे ऐसा सगता है कि 'बम्मपरिक्या' का प्रारम्भ जयराम ने किया था। परन्तु यह ग्रम्थ क्षमी तक जयलका नहीं हुआ। सतः इसके विषय में कुछ नी कहना संश्रम नहीं है। कि वयराम का उस्लेख भी अन्यक नहीं मिलता। इतनः अवश्य है कि हरिवेण ने जयराम की धर्मपरीक्षा के आधार पर ही अपनी धर्मपरीक्षा की रचना की हीगी।

४. हरियेण के समकालीन कवि

व्याचार्य हरिषेण का समय दणवीं शताबदी के मध्यभाग से लेकर ग्यारहणीं शताबदी के प्रारंभिक दणक तक होना चाहिए। इस बीच अनेक महान् किन्न और दार्श्विक हुए हैं। पुरुषार्थ सिद्धभूषाय जादि प्रन्थां के रचिता अमृतक्व, तत्वानुशासन के रचिता रामसेन, यमस्तिककचम्मू के रचिता सोमवेब, अर्थ-परीक्षा के रचिता जिनतगति, हरिवंशपुराण के रचिता अवसक्ति, अम्मूस्वरीम के रचिता जीनतगति, हरिवंशपुराण के रचिता अवसक्ति, अम्मूस्वरीम के रचिता वीरकित, सुदंसणचरित्र के रचिता नमनंति आदि महाकित हरिषेण के समकालीन थे। दशवी-ग्यारहवी शताब्दी के और भी धुंरग्नर कित हुए हैं जिन्होंने संस्कृत और अपभंग में प्रन्थ-रचना की है। उन प्रन्यों की खैली भी लगभग एक जैसी ही है।

देवसेन, रिवकीर्ति, आर्यनन्दी, मुनि रामसिंह, पद्मकीर्ति, इन्द्रनन्दि, वादिराज, वीरनन्दि, चामुण्डराय, पद्मनन्दि, धबस, नरेन्द्रसेन, मस्सिवेण, धनपास, वाग्भट्ट, हरिचन्द्र आदि महाकवियों ने अपनी साहिस्यिक प्रतिमा का परिचय हरिवेण के काल में ही दिया है।

५. हरिषेण को धम्मपरिक्या और अमितमति को धर्मपरीका की तुलना

हरिषेण की धम्मपरिक्षा ई. सन् 1044 में समाप्त हुई और इसके 26 वर्ष बाद अभितगित (द्वितीय) की धमंपरीक्षा वि. स. 1070 में पूर्ण हुई । अभितमित मालवा के निवासी रहे हैं। उनका पंचसंग्रह धार के समीपवर्ती गांव 'मसीद-किलोदा' में लिखा गया था। इनकी गुरुपरम्परा बीरसेन-देवसेन-अमितगित प्रथम (योगसार प्राभृतकार)-नेमिषेण-माधवसेन-अमितगित द्वितीय। पण्डित विश्वेषवरनाथ ने असितगित द्वितीय को वाक्पसिराज मुञ्ज की सभा के एक रस्त के रूप में प्रतिष्ठित किया है। ' सुभाषित रस्त संदोह' की समाप्ति मुंज के ही राजकाल में वि. सं. 1050 में हुई। किया के निम्नलिखित ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं- धमंपरीक्षा, सुभायितरहनसवोह, उपासकाखार, पंचसंग्रह, आराधना, भावना हानिश्वतिका, जन्द्रप्रविद्वति, सार्वेद्वयद्वीपप्रकृष्ति और व्याख्याप्रकृष्ति।

हरिषेण की धम्मपरिक्या अपभ्रंत्रकेली में व्यारह सन्धियों में पूर्ण हुई।

संवत्सराणां विवते सहस्रे ससन्तती विक्रमपाधिवस्य ।
 इदं निषिध्यान्यसर्तं समाप्तं जिनेन्द्रवर्मामृतयुवितशास्त्रम् ॥
 वर्मपरीक्षा, प्रवस्ति भाग, क्लोक 20

^{2.} चारत के प्राचीन राववंत, प्रयम भाग, बन्बई सन् 1920, P. 101

इसमें हुम कड़बक 238 है जो मिल्ल भिल्ल अपर्श्नंत छन्दों में लिखे गये हैं। कुल प्रम्य 2 78 हैं। ये मेवाइ निवासी हैं। मेवाड और मालवा में कोई विशेष दूरी नहीं है। दोनों समकालीन भी है। अमितगति की घ. प. से हरिषेण की घ.प. पहले लिखी गई। बतः अधिक सम्भावना यह है कि अमितगति के सामने हरिषेण की ध. प. रही होगी। हरिषेण की घ. प. विवरणात्मक अधिक है जबिक अमितगति एक कृताल कवि के रूप में आलंकारिक सैली में प्रत्येक तत्व का वर्णन करते हैं। हरिवेण ने सप्तम संधि में लोक स्वरूप की तथा अब्दम संधि में जैन परम्परानत रामकथा को कुछ विस्तार से लिखा है जबकि अभितनित ने क्छेक क्लोकों में ही उसे निपटा दिया है। हरिषेण ने अन्तिम संधि में रात्रि भोजन-क्या का विस्तार किया है पर अभितगति उसको सिद्धान्त रूप उल्लिखित करके बागे वह गये। इसी तरह अमितगति ने जैन सिदान्त, नीतितत्व, प्रकृतिचित्रण, बादि को जिस जाकर्षक और काव्यात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है वह हरिषेण नहीं कर सके । हरियेण का सन्धि विभाजन अमितगति के अध्याय विभाजन से अधिक युक्ति-संगत है। इत विशेषताओं ओर विभिन्नताओं के बावजूद लगता है, हरिषेण की धम्मपरिक्खा अमितगति की धमंपरीक्षा का आधारभूत ग्रन्य रहा होगा । इन दोमों ग्रम्थों की विषयगत तुलना हम नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं-

हरिषेण की धम्मपरिक्का प्रथम सन्धि अमितगति की धर्मपरीका

कडवक	शलोफ
1. पूर्ववर्ती कवियों का उल्लेख	प्रथम परिच्छेर-]. 16
2. जम्बूद्वीप वर्णन	1.17-20
3. विजयार्ध पर्वत वर्णन	1.21-27
4. वैजयन्ती नगरी वर्णन	1.28-31
5. राजा जितवास् वर्णन	1.32-36
6-7. जितशतु की पत्नी वायुवेगा और पुत मनोवेग	1.37-47
 मनोवेग का मित्र पवनवेग, विजयापुरी नगरी 	1.48-55. प्रियापुरी नगरी
के राजा का पुत्र । उसका जैन मंदिर के वर्षानार्य गमन	का राजपुत्र
9. जंगल में मुनिदर्शन । अवन्ति देश का वर्णन	1.56-57
10. उज्जैयिनी नगरी का वर्णन	1.58-65
11. उज्जैयिनी के वन का वर्णन	1.66
 बन में बिराबित बैन मृति का वर्णन और उनसे प्रश्न 	1.67-70 प्रथम परिच्छेद समाप्त और
13. संसार वर्णन-मधुनिन्दु वृष्टान्त	2.1-7 दिलीय परि. प्रारंभ

14. मझबिन्द्र कवा समाप्त

15. धर्म का प्रभाव

2.8-2! वहां इस क्या में कुछ अन्तर है पर विस्तार समान है। 2.72-79 यहां इसका विस्तार अधिक हैं। यहीं बोगिराज द्वारा कुशल प्रश्न

16. मृति से प्रश्न और उनका उत्तर । पवनवेग के मिध्यात्व को दूर करने का मार्ग बताना ।

2.90-95 दितीय परिच्छेट समाप्त ।

की विशेषता पूर्वक दोनों

भी हैं 2.80-89.

17. मनोवेग और पवनवेग के बीच संवाद । मनीवेग तुतीय परिच्छेद । मितता द्वारा जिनदर्शन की बात कहकर पाटलिपुत्र का जल्लेख करना।

के बीच संवाद 3.1-26 3.27-43

18. पाटलिपुत्र की विशेषतायें । बाद में

19-20, ववनवेग ने ममोबेग से कौतुक प्रदर्शन करने का आग्रह किया /

वितीय संधि

तानों मिलों का पटना—गमन

2-3. दोनों कूमारों का रूप वर्णन और उनका वादशाला में प्रवेश

4-6 शास्त्रार्थ विष्रगण का एकत्रित होना और उनसे कुमारों का संवाद

7-8. षोडश-मुक्कि न्याय की प्रसिद्धि

9. दस मुढों की कवा

10-16. रस्त मृह समा (1) बहुधान्यक ओर उसकी 4.47-76-95 चतुर्व पत्नी सुन्दरी और कूरगी के बीच

16-17. ब्रिक्ट मुद्र कथा (2) स्कन्ध और वक । वक ने बरने के बाद स्कल्ध पर आक्रमण किया।

3.44-58

3.58-68 काञ्यात्मक तत्व अधिक है

3.69-95 तृतीय परिच्छेद समाप्त

4.1-39

4.40-46

परिच्छेद समाप्त। यहां स्त्रियों के स्वभाव का वर्णन विस्तार है जो हरिवेण की घ.प. में नहीं है। 15.1-76 5.77-97 संसार का विस्तृत विवय को हरियेण की ब. प. में नहीं है।

38-23. सुनी मूझ खबा(\$)-कंठोष्ठनगर में मूत-. मिल बाह्मण, उसकी परनी यसा और सिष्य यस । बाह्मण के जाने पर दोनों में संबन्ध । बाह्मण का आयमन । वह दोनों को खोजने निकला पर यसा परनी और यस शिष्य को उस बाह्मण ने नहीं पहचान पाया

श्रहों भी संसार का जिन्ह है, तारी और कामूकता का भी 6.1-95

24. व्युक्ताही बृह कमा (4) - दुर्धर राजा जसका बानी जात्यन्य पुत्र । लोहदण्ड से उसपर प्रहार करना 7.1-19

तृतीय सन्धि

	•	
1.	पिलहूचित मूद कथा (5)	7,20-28
	आस मृह क्या (6)	7.29-62
	शीर युद्ध कथा (7)	7.63-96
7.	अनुव मूड कथा (8) गजरथ और मंत्री का संवाद	8,1-9
8.	धन की महिमा	8.10-21 हरिषेण ने विस्तार नहीं किया
9.	खेत की चंदन लकड़ी काटना बौर फिर कोवों बोना	8.22-34
10.	चंदन का बेचना और दु:खी होना	8.35-49
11.	वंदनत्यागी मूर्खं की कथा (9) मथुरा नरेश उपशान्तमन को पित्तज्वर और उसकी शान्ति कथा	8.50-73
12-	-13 चार मूचों की कथा (10) सर्वाधिक मूर्च कोन है, इसका निम्चम करना	8.92-95
14.	 प्रथम मूर्व कथा—मूषक द्वारा आंख का जलाया जाना और विवनेक्षण नाम रखन 	9.4 -20
15	 द्वितीय मूर्च क्या-दोनों परिनयों ने दोनों पैर तोड़ दिये और उसका कूटहंसनति नाम रख दिया । 	9.21-43

तृतीय मृत्री कथा-दस पुत्रों की कर्त में अपनी 9.44-49 संपति चोरों को सटा देना 17-19. चतुर्थं मुखं कथा-गल्लस्कोट कथा 9.50-95 मनीवेग का प्रश्न-विष्य के संदर्भ में 10.1-20 20. विष्णु पर प्रश्न चिन्ह 10.21-40 21. 22. बाह्मणों की निक्तर कर मनीवेग 10.41-51 वादशासा से बाहर आया चत्रवं संधि 1-2. विष्णु कथा-अकंपनाचार्यं कथा 10.52-65 मार्जार बेचने के लिए मनोवेग वादशाला 10.66 - 743. पहुंचा 5-6. मार्जार के दोष और गुण। कूपमण्ड्क, कृतक 10.75-100 बिधर और बिलष्टभृत्य जैसे के सामने सत्त्व की बात न कहना मण्डप कोशिक कथा 7. 11.1 - 8मण्डप कौशिक की पूत्री छाया और महादेव 11.9-25 पहां गंगा का 8. का संवन्ध । महादेव का गंगा से भी प्रसंग मात्र एक क्लाक में है। पर हरिषेण ने इसका संबन्ध विस्तार किया है। 10-12. हरि (विष्णु) की कामुकता और कुटण 11.26-28 का सुन्दर रूप 13-16. ब्रह्मा और तिलोत्तमा का प्रेम सम्बन्ध 11.29-47 बह्या ने महादेव को शाप दिया 17. 11.48-48 बह्या की रीछनी से जांबव नामक पूत्र। 18. 11.59-65 इन्द्र ने भी गौतम ऋषि की पत्नी का उपभोग किया। यमराज के पास छाया पुत्री के रखने का संकल्प 19. यमराज ने खाया को पत्नी बनाया । अपन 11.66-82 ने भी छाया का उपभोग करना चाहा। 20. प्रच्छन्त रूप से छाया के साथ अनिवेद 11.73-93 का रमण। छाया द्वारा उसका उदरस्य किया जाता । यमराज ते दोनों की उदरस्य

कर सिया

21,	पवनदेव का देवों को निमन्त्रण । अग्निदेव का प्रगट होना और भय से वृक्षों-सिलाव में छिप जाना	
22	यमराज और जिन्तिदेव के देवत्व पर प्रश्न चिन्द । मार्जार के दोष की स्वीकृति क्यों नहीं ?	12.10–15
23.	आप्त का स्वरूप-वीतरागता व निष्कामता	12.16-26
	पंचम संधि	
1.	देवों में ऋदियों का होना	12.27-29
2-6.	शिष्टनच्छेदन कथा	12.30-33
7.	स्वर शिरश्छेदन कथा	12.34-52
8-9.	जल पर तैरती शिला तथा बातरनृत्य कथा	12.53–76
10-11.	कमण्डलु में हाची का प्रवेश और उसमें से उसका निर्ममन	12.77–92
12.	विप्रगण द्वारा आश्चर्य-व्यक्त	12.93-97
	किया जाना	13.1-6
13.	युधिष्ठिर द्वारा रसातल से वस करोड़ सेना और शेषनाग सहित सप्तर्षियों को ले आना	13.7–17
14-15	अगस्त्य और ब्रह्मा की सुष्टि कथा	13.18-36
16-17	ब्रह्मा, विष्णु आदि की कथाओं पर प्रश्नचिन् ह	13.37-53
18-20	जिनेन्द्र गुणों की विशेषता	13.54-102 यहां और भी पौराणिक कथाओं का उल्लेख है।
	वष्ठ सन्धि	
1–18	इस संधि में लोकस्वरूप का विस्तृत वर्णन है।	अमितवति ने इसे बिलकुल छोड़ दिया है

सप्तम संधि

1.	मनोबेश ने पटना की अन्य बादचाला में 14.1-10	
	पहुंचकर अपनी कथा कड़ी	
2.	में साकेत नगरी की बृहाकुमारिका का पुत्र हूं। पिता के मात्र स्पर्श से मेरा जन्म हुआ बारह वर्ष तक दुष्काल के मय से गर्भ में ही रहा।	
3-4	बाद में चून्हे के पास जन्म होते ही मैंने भोजन मांगा। फलतः मा ने मुझे घर से निष्कासित कर दिया।	14.24-32
5,	घर से निकलकर मैंने एक वर्ष तक तपस्या 14.33-38 की। साकेत में मैंने मां को पुनर्विवाहित देखा	
6.	पुराणानुसार पत्नी किन्हीं विशेष परिस्थितियों में विवाह कर सकती है।	12.39-45
7-8	पुराण का अर्थ कहने पर भय व्यक्त किया	14.46-54
9.	मागीरणी से भगीरण और गांवारी से सी पुत्रों की उत्पत्ति कथा	14.35-61
10.	गर्भस्य अभिमन्यु के समान उसने भी तपस्वियों के बचन सुने	14.62-67
11-13	बारह वर्ष तक गर्भस्य रहना भी प्रामाणिक है। यम की कन्या ने अपना गर्भ सात हजार वर्ष तक रखा। बाद में उसी गर्भ से रावण का पुत्र इन्द्रजीत हुआ।	15.68 –8 0
1415	पारागर और योजनगन्ध कथा	14.81-91
16-17	उदालक और चन्द्रमुखी कथा	14.92-101
18.	समापन	15.1-15
	अष्टम सन्धि	
1.	जैन पुराणानुसार कर्ण कथा । विश्वित्र वीर्य के तीन पुत्र-श्रृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर	15,17-21

2.	पाण्यु और चिलांगद के बीच संवाद	15.22-31
3.	कर्ण कथा-कुन्ती के साथ पाण्डु का विवाह	15.32-41
4-5.	युधिष्ठिर बाहि पाण्डवों का मोक्ष समन	15.42-55
6.	व्यास का गंगास्तान और फिर ताम्रभाजन का न मिलना	15.56-66 यहां पुराणों की समीक्षा जैन दृष्टिकीण से की गई है जी हरिषेण ने नहीं की।
7.	मनोवेग पटना की एक और अन्य बादकाला में पहुंचे	15.57-74
8-9.	बीढ भिक्षुओं को श्रृगाल द्वारा आकाश में उठा ले जाना	15. 75–94
10.	रामचंद्रजी का वनदास से लेकर श्रीलंका में प्रवेश	15.95-98
11.	समीक्षात्मक समापन	16.1-21 यहां यह समीक्षा अधिक विस्तृत है।
12.	विद्याधरत्रंगोत्पत्ति कथा	अभितगति ने इसना वर्णन नहीं किया
13-15.	राक्षस वंशोत्पत्ति कथा	
16-21.	वानर वंशोत्पत्ति कथा	•
22.	समीक्षात्मक समापन	**
	नवम सन्धि	
1.	मनोवेग ने पुनः पौराणिक कथाओं की व्याख्या की	16.22-27
2-3.	कविट्ठबादन कया	19.22-37-43
4-5.	इस कथा की समीक्षा	16.44-57 यहां अधिक विस्तृत समीका है।
6-10.	द्धिमुख और जरासंध कथा। विना धड़ के व्यक्ति का शिर एक दूसरे छड़े पर गिरने पर जड़ जाना	16.58-84

11-12. समीक्षा-जब जरासंघ का घडु जुड़ सकता 16.85-93 है ती हमारा धड़ क्यों नहीं जुड़ सकता? आद में परलोक में पिता को भोजन मिल सकता है तो हमारा पेट क्यों नहीं भर सकता ?

13. गुदेव, कृशास्त्र, कुगुरु की जगह मुदेव, स्मास्य और सुगुर का महत्व

यहां यह वर्गन नहीं मिलता ।

14. वैदिक पूराणों की समीक्षा

16.99~100

15-17, बलि और रावण का प्रसंग अध्यत्प

1--25, पौराणिक समीक्षा के साथ जैनेन्द्रदेव की विशेषता, धर्म का महत्त्व आदि वर्णित है

16.102-104 यहां यह विस्तार से नहीं है।

बशम संधि

17 वें परिष्छेट में वेसों की अपीरषेयता. जातियाध. स्नानवाद, म्तत्ववाद, अकर्मवाद, सब्टिकर्तस्व आदि का खण्डन है और भारमा का अस्तित्व, कर्म-वाव आदि की सिक्रिकी गई है। हरिषेण की ध. प. में यह सब नहीं है।

1. उत्सपिणी-अवसपिणी काल, चौदह कूलकर 18.1-21

2. अंतिम कुलकर के पुत्र ऋषभदेव, उनका विवाह, पूत्र, पुत्रियां

18.22-29

ऋषमवेद का तप वर्णन । उनके साथ 3-10. वीक्षित राजाओं का पय-भ्रब्ट होना तथा निध्यास्य का उदय

18 27-84

11-12, पवनवेग का जैन धर्म की ओर झुकाद बोर उनका उक्कीयनी में जैन मृति के पास पहुंचना

18.85-100

13. मृनिचंड के पास पहुंचकर मनीवेच ने पबनवेग की बत देने का निवेदन दिया।

19_1-11

14. श्रावक वर्ती का वर्णन । अब्दमूल गुण व बारह वत 19.12

15. चार शिक्षावत-सामाविक, प्रोवधोपनास, अतिथिसंविभाग, भोगोपकोगपरिमाण। सल्लेखना, रातिभोजनस्वाग, जिनमंदिर-वर्धन, जिनमृद्रिय है।

19.13-101 इसमें अधिक विस्तृत विवेचन है।

पवनवेग द्वारा श्रावक वतों का ग्रहण ।
 इसमें रातिभोजन त्याग भी है ।

ग्यारहवीं सन्धि

1. भेवाइ का वर्णन

2. मेबाह की उज्जैयिनी का वर्णन

3-10. निशि भोजन कथा

11-21. आहार दान कथा

22. पंचणमोकार मंत्र जप, फल, अतिथि संविभाग, अभयदान आदि कथायें

23-27. अंत में हरिषेण प्रशस्ति और धर्मपरीक्षा चिखने का उद्देश्य।

यह वर्णन यहां नहीं है।

20.1-12 रात्रिमोजन कथा नहीं है । उसके दुष्परिणाम अवश्य दिये है । 20.23-52 प्रांषधीपवास, आहारदान आदि का वर्णन स्पष्ट व्यसन त्याग ।

53-63 स्थारह प्रतिमाओं का वर्णन । 64-80 सम्य-खर्णन आदि का वर्णन ।

81-90 पवनवेग का जैन-धर्म में दीक्षित होना, धर्मपरीका का उद्देश्य प्रशस्तिभाग में दिया गया है।

इन दोनों धर्मपरीक्षाओं की तुलना करने पर यह सहजता पूर्व क समझ में आ जाता है कि अभितगित ने विषय सामग्री हरिषेण से ली और उसे अपनी प्रतिभा से विस्तार देकर दो माह में ही अपनी अमंपरीक्षा को समाप्त कर दिया (अभितगितिरिवेदं स्वस्य मासद्वयेन, प्रथित विषयकीतिः काल्यमुब्मूतदोषम्,ं 20-90)। भैली भी दोनों की समान है। मनोवेग कल्पित कथायें बनाकर विषयण के समझ प्रस्तुत करता है और जब दे उन कथाओं पर विश्वास नहीं करते सो मुरन्त लगमग वंसी हो कथायें पुराणों से निकालकर उपस्पित कर देता है।

हरियेण काव्यात्मक वर्णन के चक्कर में न पड़कर विवरणात्मक मैली की अपनात हैं। इसलिए वे अमितगति के समान न परम्परागत स्वियों की अधिक निन्दा करते हैं. न मिन्नता के अधिक गुण गाते हैं, न संसार के दोष बताते हुए अधिक समय तक रकते हैं और न धन की महिमा का गुणगान करते हैं। वे तो द्वतगति से पौराणिक कथाओं को कहते हुए आगे बढ़ते जाते हैं उन्हांने सप्तम सिंध में लोक स्वरूप का, आठवीं संधि में रामकथा का तथा ग्यारहवीं सिंध में रामिक्या के अध्ययन के संवर्ण में ही उन्लेख मात्र कर निपटा विया है। संधिगत विषय के अध्ययन से हरिषेण की एक यह विशेषता वृष्टव्य है कि उन्होंने सिंध-विभाजन का जो वैज्ञानिक तरीका अपनाया है वह अधितगिंस के परिच्छेद विभाजन में विखाई नहीं देता। अमितगित तो कथा को बीच में ही छोड़कर परिच्छेद परिवर्तन कर देते हैं पर हरिषेण ने ऐसा नहीं किया।

दोनों धर्मपरीक्षाओं की भाव और भाषा की दृष्टि से भी तुलना की जा सकती है। जहां उन्होंने पारम्परिक सैली को अपनामा है।

हरिखेण की धम्मपरिक्खा

- 1) तं अवराहं खमसु वराहं तो हसिकणं मध्वेयेणं। भणिओ मित्तो तं परश्रुत्तो साया णेहिय अप्पाणे हिय (11.19)
- 2) हा हा कुमार पच्चक्छ मार (2.3)
- इस दुण्णि वि दुग्गय-तण्य-तण् गिण्हेविण् लक्कड-भारमिणं।
 आइय गृह पूर णिएवि मए
 वाग्य ग च जायए वायमए।। 2.5
- गिद्धण जाणेविणु जारएहिं तिष्य आगमणासंकिएहिं।

अमितगति की धर्मपरीक्षा

यस्यां धर्मेभिय त्यम्त्याः तत्र भद्र चिरं स्थित । अभितव्यं ममाशेषं दुविनीतस्य तस्त्याः ॥ उनतं पवनवेगेन हसित्या शुद्धचेतसाः । को धृतीं भुवने धृतें वैष्यते न वशंवदैः ॥

जातः तामो द्विद्या नूनिन्धं भावन्त काष्यन (3.61)

सं जगाद खचराङ्गजस्ततो मद्र निर्वेनशरीरभूरहं। आगतोऽस्मि तृष्काष्ठविक्रयं कर्तुमस्र नगरे गरीयसि।। 3.85 पत्युरागमनम्बेत्य विटीधैः सा विमुख्य सकलानि धनानि। मुक्ती झड रित झाडे वि केम मुख्यते स्म बवरी द्य्युवर्त-यरियक्त पंथि थिय वोरि जेम । स्तस्करैरिव फलाति पथिस् विय-पिय-बागमणु मुणंतियाए सा विबुध्य वियत्तासम्बत्ता किछ पवसिय-पिय-तिय-बेसु ताए।।2।। कल्पितोरतमस्तीजनवेणा ।

मुख्यते स्म बदरी वय्युवर्त-स्तस्करीरिव फलाति परिषस्या ।) सा विबुध्य वियतानमकाल कल्पितोस्तमसतीजनवेषा । तिष्ठतिस्म भवने त्रपमाणा वञ्चना हि सहजा बनितानाम् ॥ 8.44-85

- 5) भणिउ तेण भी णिमुणाहि गहवइ छाया इब धुगेज्ज महिला-मर । 2.15
- 6) मणित ताय संसारे असारए

 को वि ण कासु वि दुह गनयारए।

 मुय-मणुएं सह अस्यु ण गच्छह

 सयणु मसाणु जाम अणुगच्छह।

 धम्माहम्मु णवर अणुलग्गठ

 गच्छह जीवह सुह-दुह-संगठ।

 इय जाणेवि ताय वाणुल्लठ
 चितिष्जद सुपस्ते अहमल्लठ।

 इट्ठ-देत णिय-मणि भाहम्जइ

 सुह-मह-गमणु जेण पाविष्जह।

 -2.16

चौरीव स्वार्णतिमध्या वहि ज्वालेव तापिका। छायेव दुर्गहा योषा सन्ध्येव क्षणरागिणी ॥ 5,59 तं निजगाद तदीयतन्ज-स्तात विश्वेहि विश्वद्यमनास्त्वम् । कंचन धर्ममपाकृतदोषं यो विद्याति परत्र सुखानि । पुलकलन धनादिषु मध्ये कीऽपि न याति समं परलोके। कमं विद्याय कृतं स्वयमेकं कर्त्मलं सुखदु:खगतानि ॥ कोऽपि परो न निजोऽस्ति दूरन्ते जनमधने भ्रमतां बहुमार्गे ! इत्यमवेत्य विमुख्य क्वृद्धि तात हितं कुरु किंचन कार्यम ।। मोहपाम्य सुहृत्तन्जादौ देहि यनं द्विजसाधुजनेभ्यः। संस्मर कंचन देवमधीष्टं येन पति लगसे सुखदात्रीम ।। 5, 82-85 8, 22-34

7) 3.9

अमितगित की धर्मपरोक्षा का आधारभूत कोई भाइत अथवा अपश्रंश में लिखा ग्रन्थ अवश्य होना चाहिए। अन्यया दो माह में इतना बड़ा ग्रन्थ कैसे वन सकता था। Mironow ने भी अपने अध्ययन में इस संभावना को पुष्ट किया है। चीहार (7.63), संकराट मट (8.10) जैसे शब्द किसी श्राहत ग्रन्थ से ही गृहीत हो सकते हैं। इसी तरह योचा की व्युत्परित जब्, जोष् से खोजने की भी क्या जावश्यकता थी——

यतो जोषयति क्षित्रं विश्वं योषा ततो मता। विवद्याति यतः कोद्यं मामिनी भण्यते ततः ॥ यतम्छादयते दोर्षस्ततः स्त्री कथ्यते वृद्धः ॥ विनीयते यतम्बत्तमेतस्यां विलया ततः ॥

अमितगित की धर्मपरीज्ञा जिस प्रकार मात्र दो माह में तैयार हो गई थी उसी प्रकार उनकी संस्कृत आराधना ओर संस्कृत पंचसंग्रह पत्य भी लगभग चार-चार माह में रच लिये गये थे जो क्रमशः क्रिवार्य की प्राकृत भगवती आराधना और प्राकृत पंचसंग्रह का संस्कृत संक्षिप्त अनुवाद मात्र है। यह उनके संस्कृत भाषा पर असाधारण अधिकार का फल था आर आश्वकित होने का प्रमाण भी। धम्मपरिक्खा के प्रारंभ में भी उन्होंने यह स्पष्ट लिखा है कि उनके पूर्व किव जयराम ने धर्मपरीक्षा को गाया छन्द में निबद्ध किया था और उसी को उन्होंने पद्ध डिया छन्द में किखा है। जयराम का यन्य अभी तक अनुपल्य है। इसलिए उसके विषय में कुछ भी कहना उचित नहीं होगा पर इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि अमितगित ने प्राकृत में लिखे जयराम के प्रन्थ को भी अपना आधार बनाया होगा। इसके समर्थन में एक और प्रमाण रखा जाता है कि अमितगित ने धर्मपरीक्षा में हुट (3.6), जेमित (5 39, 7.5). ग्रहिन (13.23), कचार (15.23), जैसे प्राकृत शब्दों को समाहित किया है जबकि हरिषेण ने ऐसे स्थलों में क्रमश: 1.17, 2.24 (शव भुजह), 2.18, 5.14, 8.1 कडवकां में इन शब्दों का उपयोग नहीं किया है।

इससे यह लगता है कि अमितगित के समय जयराम की धम्मपरिक्खा और कदाचित् हरिषेण की भी धम्मपरिक्खा रही होनी चाहिए। अमितगित ने जिस नगरी को प्रियापुरी(1.48)और संगालो कहा है, हरिषेण ने उन्हें क्रमशः विजयापुरी (विजयाउरी) (1.8) तथा मंगालो (2.7) शब्द दिये हैं। हरिषेण ने जयराम का उल्लेख बहुत साब्दा में कर दिया है जबकि अमितगित ने ऐसा कोई उल्लेख नहीं किया। अतः जब तक जयराम की प्राकृत धम्मपरिक्खा उपलब्ध नहीं होती तथ तक यह अनुमान मात लगाया जा सकता है कि अमितगित और हरिषेण, वोनें ने उसे अपना आधार बनाया है। पर चूँकि हरिषेण की अपभ्रंग धम्मारिक्खा उपलब्ध है अतः यह अनुमान लगाना अनुचित नहीं होगा कि अमितगित के समक्ष यह प्रन्थ भी रहा होगा। पूर्वोक्त परिच्छेदगत विमाजित विषय सामगी से भी यह स्पब्द हो जाता है कि ओमतगित ने हरिषेण के विषय को थिस्तार मात्र दिया है।

साधारणतः यह नियम रहा है कि पूर्वपक्ष प्रस्तुत करते समय मूल उद्धरण उपस्थित किये जाने चाहिए। हरिवेण ने तथोक्तं कहकर इस परम्परा का पालन किया है पर अमित्तगति ने उन्हें अपनी इच्छानुसार परिवर्तित रूप में प्रस्थ के मूल रूप में समाहित कर दिया है। उदाहरणार्थ

हिन्वेण की धम्मपरिक्खा (4.1) में तथा चोक्तम् —

मत्स्यः कूर्मी वराहश्च नार्रासहोऽय वामनः । रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः करकी च ते वश ।। अक्षराक्षरिमर्गुक्तं जन्ममृत्युविवर्जितं । अध्ययं सत्यसंकर्षं विष्णुध्यायी न सीवति ॥

अमितगित ने इन्हें इस प्रकार दिया है——
व्यापिन निष्कल ध्येयं जरामरणसूदनम् ।
अच्छेद्यमव्ययं देवं विष्णुं ध्यायम् सीवति ॥
मीनः कूर्मः पृषुः पोत्री नारसिहोऽय वामनः ।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की दश स्मृताः ॥ 10.58–9.

2) हरिषेण की DP. 5.7 में अपुत्रस्य गतिर्मास्ति स्वगों नैव च नैव च । तस्मात् पुत्रमुखं बृष्ट्वा पश्चाद्भवति भिक्षुकः ॥¹

इसे अमितगति ने इस प्रकार लिखा है-अपुत्रस्य गतिनीस्ति स्वर्गो न तपसो यतः। ततः पुत्रमुखं दृष्ट्वा श्रेयसे कियते तपः॥ 11.8

हरिषेण ने D.P 4.7 मैं—
निष्टे मृते प्रविजित निर्माबे च पिति पती ।
पञ्चस्वापरसु नारीणां पितरन्यो विधीयते ॥

अमितगति में यह इस प्रकार मिलता है-पत्यी प्रविति क्लीबे प्रनष्टे पतिते मृते । पञ्चस्वापरसु नारीणां पतिरन्यो विश्वीयते ॥ 11.12

4) हरिषेण D.P 4-9 मेंका त्वं सुन्दरि जान्हवी किमिह ते भर्ता हरी जन्वयं
अम्भस्त्वं किल वेषि मन्मथरसं जानात्ययं ते पति: ।
स्वामिन्सस्यमिदं न हि प्रियतमे सस्यं कृतः कामिनां
इस्येवं हरजान्हवीगिरिसुतासंजल्पनं पातु व:।।

^{1.} Cf. यशस्तिलकचम्पू (वम्बई, 1903), भाग 2, P. 286 पर यह श्लोक उद्घृत हुआ है।

^{2.} पाराशर स्मृति, 4.28 मनुस्मृति, गुजरायी श्रेस, बम्बई, 1913, P-9, पलीक 126

अमितगति की DP. में इससे मिलता-जुसता कोई श्लोक दिखाई नहीं दिया।

5) हरिषेण के DP. 5.12 में —

अङ्गुल्या कः कपाटं प्रहरित कृष्टिले माधवः कि वसन्तो

नो पक्री कि कुलालो न हि धरिणधरः कि द्विजिन्हः फणीन्दः ।

नाहं बोराहिमदी किमसि खगपतिनों हरिः कि कपीणः

इस्येवं गोपवध्वा चतरममिहतः मात बक्वकपाणिः ॥

6) हरिषेण की DP. 5.9 में – तथा चोनतं तेन –

> अश्रद्धेयं न वक्तच्यं प्रत्यक्षमपि यद्भवेत् । यथा वानरसंगीतं तथा सा प्लबते शिला ॥

अमिनगति DP. में यह इस प्रकार में मिलता है——
तथा वानरसंगीतं त्वयादिण नने विभी।
तरन्ती सिलने दृष्टा सा शिलापि मया तथा।
अश्रद्धेयं न नन्तव्यं प्रत्यक्षमपि वीक्षितं।
जानानैः पण्डितैनुंनं बृतान्तं नृषमन्त्रिणोः ॥ 12.72-3.

7) हरिषेण DP. 5.17 में -भो भो भुजंगतरपत्लवलोलिजन्हे बन्धू कपुष्पदलसिमलोहितासे । पृष्ठामि ते पवनभोजनकोमलाङ्गी काचित्वया गरदचन्द्रमुखी न दृष्टा ।।

अमितगति ने इसे छोड दिया है

8) हरिषेग DP. 7.5 में

अद्भिर्वाचापि वत्ता या यदि पूर्ववरी मृतः । सा चेदक्षतयोतिः स्यास्पृतः संस्कारमहेति ॥

अभितगति DP. 14.38 में कुछ परिवर्तन के साथ यह छन्द इस प्रकार है-एकदा परिणीतापि विपन्ने दैवयोगतः। भर्नर्यं कत्योनिः स्त्री पुनः संस्कारमहंति।।

2. वशिष्ठ स्मृति, 17.64

^{1.} सुमानितरत्न माण्डागार (दशावतार, १-38, श्लोक 166), बम्बई, 1891 में यह श्लोक कुछ परिवर्तन के साथ उद्धृत है।

9) हरिषेण DP. 7.6 में-

अवटी वर्षाण्युदीकोत बाह्यणी पतितं पति । अप्रसूतः च चत्वारि परतोऽन्यं समाचरेत् ॥

अमितगित DP. 14.39 में इस प्रकार हैप्रतीक्षेताच्ट वर्षाणि प्रमुता वनिता सती।
अप्रमुतात्र चरवारि प्रोषिते सति मतंरि ॥

10) हरिषेण DP. 7-8 मेंपुराणं मानवो धर्मः साङ्गो वेदिषचिकित्सकम् ।
आज्ञासिद्धानि चत्वारि न हन्तव्यानि हेत्थि. ॥¹

अमितगति DP 14.49 में इसे इसी रूप में उद्घृत कर दिया है।

(11) हरिषेण DP. 7.8 में—
मानवं व्यासवासिष्ठं वचनं वेदसंयुक्तम्।
अप्रमाणं सुयो बूयात् स भवेदब्रह्मघातकः ॥

अमितगति DP 14.50 में इस प्रकार मिलता हैमनुष्यासविशिष्ठानां वचनं वेदसंयुतम् ।
अप्रामाण्यतः पुंसो ब्रह्महत्या दुवतरा ।।

(12) हरिषेण DP. 8,6 में गतानुगतिको लोको न लोकः पारमाधिकः।
पश्य लोकस्य मुखंत्यं हारितं तास्रभाजनम्।।

अमितगति DP 15 64 में इस प्रकार मिलता हैवृष्ट्यानुसारिभिलोंकैः परमायैविवारिभिः।
तथा स्वं हायेते कार्यं तथा मे तास्रभाजनम्॥

(13) हरिषेण DP. 9.25 में—
प्राणाधातानिवृत्तिः परधनहरणे संयमः सत्यवावयं
काले शक्त्या प्रदानं युवितजनकवामूकमावः परेषाम्।
तृष्णास्रोतीविमक्यो गुरुषु च विनतिः सर्वसत्यानुकम्पाः
सामान्यं सर्वशास्त्रेष्वनुपहतमतिः श्रेयसामेष पन्याः ॥

विमतगति ने इसी रूप में इन्हें प्रदेण नहीं किया है।

^{1.} यश्वस्तिलकचम्पू, भाग 2, P. 119 पर उद्धृत; मनुस्मृति, 12.110-11

मशस्तिलकबन्पू, भाग 2, P. 99 तथा सुभावितरस्य भाण्डागार, P. 282 (श्लोक 1056) पर कुछ परिवर्तन के साथ ये श्लोक उव्धृत हुए हैं। भतंहरि नीतिशतक, 54

- 14) हरिवेच DP. 10.9 में-
- स्वयमेवागतां नारीं यो न कामयते नरः । बह्यहत्या भवेश्तस्य पूर्वं बह्याबवीदिवस् ।।
- मातरमृपैहि स्वसारमृपैहि पुतार्यी न कामार्थी ।।
 अमितगित में यह चपलब्ध नहीं है।

४. विषय-परिचय

१. प्रथम संधि

बुध हरिषेण शुद्ध मन, वचन, काय से मिस्त पूर्वेक जिमेन्द्र भगवान को प्रणाम कर धर्मपरीक्षा रचने की प्रतिज्ञा करते हैं। उसके बाद वे अपने पूर्ववर्ती कियों में चतुर्मृख, स्वयंभू और पुष्पदन्त कियों का उस्लेख करते हैं, तीनों का स्मरणकर वे यह भी कहते हैं कि चतुर्मृख के मुख में सरस्वती कभी छोड़ती नहीं। स्वयंभू लोकालोक का जाता है और पुष्पदन्त की सरस्वती कभी छोड़ती नहीं। इनकी तुलना में, आये किन अपनी विनम्नता प्रगट करते हुए कहता है, कि में छंद और अलैकार के ज्ञान से विरिहित हूँ, काव्य रचने में लज्जा का अनुभव हो रहा है किर भी जिनधमें के अनुरागवंश काव्य रचना कर रहा हूँ। बुध भी सिद्यन्तिन को प्रणाम करके यहां वे यह भी स्पष्टतः कहते हैं कि धर्मपरीक्षा पहले कित ध्यराम में याबा में रची थी। उसी कीवे पद्धिया छन्द में रच रहे हैं।।१।। इसके बाद कथा प्रारंभ होती है।

मनोवेश और प्यनवेग कथा

यहां जम्बूब्ध से जिन्हित जम्बूद्धीय है जिसमें जिनजर के वयन की तरह भरतलेन योभायमान है। उसमें रमणीय विद्याल उद्यान, नगर, प्राम आदि अपनी अनुपम शीभा से स्थित हैं। उसके मध्य विजयार्थ नामक विद्याल पर्वत है जिसमें एक सुन्दर जिनालय है जो पिलकुमीं का घर है। यह पर्वत उत्तर कीर विक्रण श्रेणी में विभाजित है। उसपर विद्याधरों के उत्तर श्रेणी में बाठ और दक्षिण श्रेणी में प्यास नगरियों विद्यामान हैं (2-3)। उन प्रवास नगरियों में एक वगरी वैद्यामी है जो कामिनी की तरह जन साधारण की बांबों सी व्याश है, विद्याल उपयनों से सुशोधित है, उत्तुंग भदनों, गोपुरों बार विद्याश से दिराजित है।। उस नगरी का राजा जित्रसम् था जिसने नीति पूर्वक अपने अनु राजाओं की पराजित किया मा। यहां विरोध।धासामंकार में राजा की अनेक विद्येवताओं का वर्षन है जिनमें सक्सीवान, सत्यिपास, दिनयी, इन्द्रिय-विद्यी और स्नुसक्सी होना प्रमुख है।।।।।

उस जितशत्र की बायुबेगा नःमकी पतिहता और रूपवती पानी ची तथः वर्नगकी तरह सुन्दर वनोबेग नाम का पुत्र या। वह पुत्र सज्जनी की प्रसन्न करने वाला और दुर्जनों को कूचलने वाला था, परधन का अपहरणकर्ता नहीं था, बारमवत् दूसरां का देखनेवाला था, बारह दतों का पालक था (6-7) । उसका पवनवेग नाम का अभिन्न मिल या जी विजयापूरी नगरी के विद्याधर राजा का पुत्र था। पदनवेग मिथ्यादब्टि बोर कुलकी या पर मनोवेग सम्याद्ब्टि और जैनव्यमित्रसम्बी था। मनोवेग पवनदेश को सन्मार्ग पर लाने के लिए चिन्तित रहता था । एक दिन वह कृतिम-अकृतिम चैत्यालयों के दर्शन करने निकल पड़ा (8) चलते चलते एक स्थान पर उसका विभान अटक गया। उसने सोचा कि उसके दिमान का किसी कर्ने ने रोका है अथवा किसी ऋदिधारी-केवलकानी मुनि का प्रभाव है। की तुहलवश उसने निर्जन जंगल में एक मुनि की देखा। वह जंगल अवन्ति देश की उरुवंगी नगरी का था। उस नगरी में एक सुन्दर उपवन था जिसमें एक निष्कलंक मुनीश्वर विराजमान ये। तुरन्त वह आकाश से उतरकर पूरे सम्मान के साथ उन्हें प्रणाम कर एक और बंठ गया और विनम्रता पूर्वक एक प्रक्त पूछा "हे मुनोन्द्र! इस असार संसार में भ्रमण करने वाले जीव को कितना सुख है और कितना दुःख है ?" (9-12)

मुनीश्वर ने सध्विन्दु का दृष्टान्त देते हुए इस प्रश्न का उत्तर दिया। उन्होंने कहा- किसी व्यक्ति ने संसार रूपी अटवी के समान महावन में प्रवेश किया। उसने यमराज के समान सुंड को ऊंची किये को बित हाथी को अपने सम्मुख आते देखा । पथिक हाथी के भय से बेतहाशा आगे भागा ओर संयोग-वमात् कुये में गिर गया। वहां बीच में ही सरस्तंब अथवा बड़की जड़ (फास?) को पकड़कर सटक गया। नीचे जब उसने देखा तो पाया कि एक विशास अजगर बीच में ओर चार भूजंग चारों कोतों में मुंह खोले पड़े हुए हैं, ऊपर देखने पर पता चला कि उसी सरस्तंब की डगास की एक बवेत और एक काना चूहा काट रहा है। उसी समय उस व्क के मूल भाग की हाथी ने जोर से हिलाया और फलतः उसमें लगी मध्मिक्खियां उस व्यक्तिको लगट गई। दुःख से कराहते हुए जैसे ही उसने ऊपर देखा कि मधुमिक्खयों के छस्ते से मधुका एक बिन्दु उसके मुंह में टपक गया (13)। वह अज्ञानी मधुबिन्दु के उस क्षणिक स्वाद से अपने आपको महासुखी मानने लगा और पुनः उसकी अभिलामा करने लगा। बस संसार में ऐसा ही सुख-दु:ब है। उस मध्किन्द्रकथा में अटवी और कूप संसार के प्रतीक हैं, पुरुष जीव का, हाबी मृत्यु का, भीलों का मार्ग अधर्म का प्रतीक है, अजगर नरक है, बृक्ष कर्मबन्ध है, सरस्तम्ब आयु है, स्वेत और अक्वेत मुचक शुक्त और कृष्णपक्ष हैं, चार मुर्जन चार कवायें हैं, मधुमिककायें शरीर के राग है मधुबिन्दु का स्वाद इन्द्रियजनित क्षणिक सुख है। इस तारियक चिन्तन के माध्यम से व्यक्ति की संसार-सागर से पार होना चाहिए। अर्थ से स्वयं और मनुज भव मिलता है और धर्म से ही शरीर निरोग होता है। 11411 धर्म के प्रभाव से व्यक्ति उत्तंग कंजन-विनिधित भवनों में निवास करता है, धर्म से विविध मणिकुष्यल धारण करता है, धर्म से विविध मणिकुष्यल धारण करता है, भहापुरुषों से म्नेह पाता है, धर्म से सर्वत पूजा होती है, धर्म के बिना उसे कुछ भी नहीं निनता। और तो क्या, जो कुछ भी मुख है, वह धर्म का ही फल है। 11511

अवसर पाकर मनंविग विद्याघर ने मूनिवर से पूछा-उसका परम मिल्ल पवनवेग अस्यन्त मिध्यादृष्टि है। वह कभी सम्यक्त्य प्राप्त कर सकेगा या नहीं? मूनिवर ने उस्तर दिया— देवों की प्रिय नगरी पटना (पुष्पनगर) में उसे ले जा कर परस्पर प्रमाणों से विरोधित अन्य मतों को प्रत्यक्षतः दिखलाकर जैन सिद्धान्तों को यदि तुम समझाओंगे तो वह सम्यव्दिष्ट हो जायेगा और कर्मवन्ध को विनव्ट करने में सक्षम होगा। यह सुनकर मनोवेग मुनिवर की चरणवन्दना-कर शोध ही विमान में बैठकर पर की आर कल पड़ा (16)। जिस विमान पर बैठकर मनोवेग गया उस विमान को पवनवेग ने देख लिया। देखते ही उसने मनोवेग से कहा-मित्र ! तुम मुझे छोड़कर कहां चले गये थे ? मैंने तुम्हें कीड़ास्थल, पर्वत, सरोवर, प्रांगण, जिनमंदिर आदि सभी स्थानों पर देखा, पर तुम विखाई नहीं दिये। जब मैं इस आर आया तो तुम आते हुए दिखाई दे गये। तुम्हारे वियोग में मैं इसर-उधर भटकता रहा।

मनोवेग ने तब कहा-मित्र इस प्रकार कुपित मत होओ। मैं मध्यनोकवर्ती जिन-वैत्यालयों के दर्गन करने गया, उनकी भक्ति-पूर्वक वन्दना की। भरत-क्षेत्र में मैने भ्रमण करते हुए स्वर्गनगरी के समान सुन्दर पार्टीलपुत्र देखा जहां चतुर्वेदों की ध्वनियां सुनकर पक्षी छिप जाते हैं (17)। उस पाटलिपुत्र में गंगा नदी के किनारे कमंडल और त्रिदण्डि को धारण किए हुए कुछ मुण्डित सन्यासी दिखाई दिये । वे हरि दृरि हरि का उच्चारण करते हुए स्नान करने में व्यस्त थे। वे ब्रह्मशाला में बैठकर वाद, जल्प, वितण्डा किया करते हैं, विष्णु-प्राण, भागवतपुराण आदि की ग्याख्या करते हैं, वेंशेषिक, मीमांसा आदि णास्त्रों का उपदेश करते रहते हैं, कहीं-कहीं प्रहच्योतियी अार कपिलमतान्यायी भी दिखाई देते हैं, अग्निहोत्रादि कर्न करते हुए बोलिय ब्राह्मण अनेक प्रकार से दाक्षिणाग्नि में हवन करते हैं, कोई बट्कमं में लीन हैं अन्य ब्रह्मचारी हैं, और कोई अक्षमाना लिये हुए कमलासन पर आसीन हैं। हे मित्र ! वहा जाकर मैंने जो कुछ भी देखा उसे तुम्हें कह दिया। फिर भी पूरा वर्णन करना संभव नही है (18) । इतनी देर तक अनुपस्थित रहा । बतः इस अविनयी का अपराध क्षमा करो। मनोबेग के ये वचन सुनकर पवनवेग ने हंसकर कहा-मिलवर ! इन कीतुकों की मुझे भी विखाओं । मझे उन्हें देखने की वड़ी उत्कंठा है । जा

यित्र होता है, वह कभी भी मित्र की प्रावंना को निष्फल नहीं जाने देता। मतः मुझे पाटलिपुत्र से कभी और मेरे दलनों का उलंबन गत करो ।।।।।। मनीवेग ने उसकी इस प्रावंना को स्वीकार कर सिवा। उसने कहा कि कस प्रातःकाल भोजन करके करेंगे। दोगों मित्रों ने मिसकर घर पर स्वादिष्ट भोजन किया और प्रावृक्ष भक्षण कर प्रसन्तिमत्त हुएं।।20।।

२. द्विलीय संधि

पटना की और प्रस्थान

दूसरे ही दिन सूथोंदय होने पर मनोवेग और पवनवेग पटना नगर की ओर चल पड़े। उन्होंने नगर के बाहर एक मनोहर उद्यान देखा। वहां हिताल, ताल, कंकेसि, हरिचंवन, कर्यूर बादि लताओं की मनमोहक मुगिन्स फैल रही थी। उसमें वे दोनों मित्र कामदेव जैसे शोधित हो रहे थे। मनोवेग ने पवनवेग से कहा कि जैसा वह कहे, वैसा ही अनुसरण करे। पवनवेग ने इसे स्वीकार कर लिया। तब दोनों मिल्ली ने मिल, कुण्डल आदि आमूषण पहनकर तथा शिर पर तृथ और काव्छ रखकर कौतुहल पूर्वक नगर में प्रवेश किया। उनको देखकर लोग विनम्नतापुर्वेक कहने वसे-ये लोग शिर पर तृथ-काव्छ रखकर वयों थूम रहे हैं? ये या तो मूढ़ हैं अथवा कीडा कर रहे हैं। मिण मुकुट धारण कर तृथ-काव्छ वेचनेवाले नहीं हैं, ये ती विद्याद्यर से लगते हैं।। 111

यह जानकर कुछ लोग यह भी विचार करने लगे कि दूसरे की चिन्ता करने का प्रयोजन क्या है? वह तो पायबन्ध का कारण है। इसी बीच जब नगर वधुओं ने उन्हें देखा तो वे काम—पीडित हो गई। वे कहने लगी— ये तो साजात् कामदेव हैं। किसी ने कहा— ऐसे तृण—काष्ठधारी सुन्दर युवकों को मैंने अभी तक नहीं देखा। किसी ने कहा सिंख, जाओ, पूछों, तृण—काष्ठ का मूल्य क्या है? जो भी मूल्य हो, दे दो। जीवन के साथ मूल्य का क्या महत्य है? इस प्रकार नगर निवासियों के वचन सुनते हुए वे दोनों कुनार बहाणाला (धारबाला) में पहुंचे और तृण—काष्ठ का भार उतारकर भेरी बजा तो तथा सिहासन पर बैठ गये। भेरी का शब्द सुनकर विप्रमण एकतित हो गये और मैं बाद कर्कगा कहते हुए उन विद्याधारों के पास पहुंच गये। 13।।

मतोत्रेग के रूप को देखकर वे सायवयांन्वित हो गये। वे कहने लगे कि यह तो खाझात् नारायण है, विष्णु परमेश्वर है पर विष्णु तो चतुर्मुख होते हैं, बह्मा है, पर बह्मा तो चर्त्वसनी होते हैं, इन्द्र है, पर इन्द्र तो सहस्रास है। इस तरह सोखकर उन्होंने कुमारों से पूछा-वया तुम वाच करोगे? कनकासन पर क्यों बैठ वये हो देश तथर में बारों नेहों के जाता हैं और सभी धर्मों के मध्येता हैं। यहां से कोई भी विद्वान वाद जीतकर वापिस नहीं यथा। तुम विक्य मिलनें। जीर सामूबणों से विभूषित हो अनक्षम, पर या तो तुम्हें वायुरीन है, या तुम विभाव वीकित हो, या कामदम्ब हो। ये अधन सुनकर मनोवेश ने कहा— आप लोग व्यर्ष ही कोछ कर रहे हैं। हम लोग तो इस सिंहासन पर कौतुकवश बैठ गये हैं। भेरी वादन भी यों ही कर दिया है। हम लोग तो तुण—काष्ठ नेवने वासे हैं। तुम्हारे पुराण और रायायण प्रत्यों में हम जैसे बहुत लोग हैं।। ई—6 ।।

बोडश मृद्ठि न्याय

विमों ने कहा- यदि पुराण में तुम्हें ऐसे पुरुष मिले हों तो बताओ, हम अवश्य विश्वास करेंगे। मनोवेग ने कहा- हम बता तो सकते हैं, पर भय लगता है। आप लोगों में कोई विचारवान् नहीं दिखाई देता। विचार रहित मूढजन सत्य कथित की भी असत्य बुद्धि से 'सोलह मुक्की न्याय' की रचना करते हैं। विप्रगण ने कहा- यह 'सोसह मुक्की स्याय' क्या है ? मनोवेग ने कहा- पुनो मैं बताता हूँ- बसम देश में मुखल्प संगाल नामक एक ग्राम है। उसमें मधुकर नामक एक गृहपति रहता था। पिता के प्रति रोष के कारण वह घर से बाहर निकल गया और आभीर देश में पहुंच गया । वहां उसने आश्चर्यपूर्वक विमाग की हुई चनों की अनेक राशियां देखीं। प्रायपति के पूछने पर उसने कहा-आश्वर्य इसलिए कि जैसे यहा चनों की राशियां हैं वैसे ही हमारे वहां मिरचों की राशियां हैं। ग्रामपति ने सोचा हमारे यहां मिरचें नहीं मिसतीं है इसका यह उपहास कर रहा है। इसलिए इसे दण्ड विया जाना चाहिए। यह मोचकर उसने मधुकर को अपने सेवकों से मस्तक पर आठ मुक्के लगवाये । सत्य वादन का यह फल जानकर वह वापिस अपने तगर संगाल पहुंचा। वहाँ उसने मिर्च की राशियां देखीं और कहा कि जैसे यहां मिरचों के ढ़ेर हैं वैसे ही आमीर देश में मैंने बनों के ढेर देखें हैं। इस कथन को उपहास मानकर यहां भी उसे आठ मुक्के खाने पड़े । तथां से यह "बोडश मुद्दिठ न्याय" प्रसिद्ध हो गया । इसका तात्पर्य है कि बिना प्रमाण के सत्य नहीं बोलना वाहिए। जो बोलता है वह असत्यभाषी की तरह दण्ड पाता है। इसी प्रकार मुखी के बीच सत्यवादी भी नहीं होना चाहिए। जाप से सत्य कहा भी जायेगा तो जाप सोग विश्वास नहीं करेंगे ॥ 7-8 ॥

यस नुर्धी की कथा

बाह्यणों ने कहा- आसीर देश वालों के समान हम लोग मूर्च नहीं हैं। तुम निश्चित्त होंकर अपनी बात कहो। मनोवेग ने कहा- रक्त, दिख्, मनोमूड, व्युद्याही, पिसहाँवत, आस्र, और, अगुद, चन्दन और बालिश (मूर्च) ये दस प्रकार के मूर्थ हैं जो पूर्वापर विचार रहित पशुओं के तुल्य हैं। इनका वर्णन इस प्रकार है-

१. रक्त मृढ कथा

रेबा नदी के दक्षिणी किनारे पर सामन्त नगर में एक बहुधान्यक नाम का ग्रामक्ट (प्रमुख) रहना था। उसकी दो सुन्दर स्त्रियां थीं-सन्दरी और कुरंगी । सुन्दरी वृद्धा थी । उसे छोडकर उसमे तरुणी कुरंगी से विवाह किया। कुछ समय बाद बहुधान्यक ने उस साध्वी पत्नी सुन्दरी की अलग कर दिया और कुरंगी के साथ भोगपूर्वक समय बिताने लगा। सुन्दरी ने इसे अपना पापकर्म का फल मानकर फान्ति पूर्वक रहने लगी (9)। इस बीच बहुधान्यक को राजा की सेना का प्रबंधक होकर वाहर जाना पडा। करीं इस बिरह की नहीं सह पाती और साथ जाने का आग्रह करती है पर बहुद्यान्यक उसके हरे जाने के भय से साथ नहीं ले जाना चाहता। अतः वह उसे समझाकर सेना के साथ चला गया और कुरंगी को सारी धन संपत्ति के साथ घर छोड गया। बहुधान्यक के जाते ही कुरंगी स्वच्छन्द हो गई। और अपने जारों के साथ काल यापन करने लगी। उनके साथ रमण करते हुए उसने अपनी सारी संपत्ति भी नष्ट कर डाली नौ-दस दिनों में ही। जब उसने पति के आगमन का समाचार सुना तो वह पतिभक्ता और धर्मनिष्ठा बनकर घर में रहने लगी। बहुधान्यक ने गाव में प्रवेश करने के पूर्व ही एक व्यक्ति के साथ कूरंगी के पास अपने आने का समाचार भेज विया। उसने कहा उस संदेशवाहक से कि प्रथम दिन का भोजन तो उथेष्ठा के साथ होना चाहिए। यह सोचकर वे दोनं सुन्दरी के पास गर्य। और कहा कि तुम्हारा पति विदेश सें वापिस आ गया है और बाज वह तुम्हारा ही स्वादिष्ट भोजन करेगा(11)। सुन्दरी ने कहा- मैं भोजन (रसोई) बनाऊंगी परन्तु तुम्हारा पति भोजन यहां नहीं करेगा, तुम्हारे घर ही करेगा। फिर भी सरलस्य भावा सुन्वरी ने षटरस भोजन तैयार किया। वह रक्त पुरुष भोजन करने के लिए सीधे सुरंगी के घर गया। निर्धना कुरंगी ने अपनी स्थिति को छिपाने के लिए ककंश और अपमानात्मक शब्दों में उसे सुन्दरी के पास जाने के लिए कहा। उसी बीच सुन्वरी ने अपना पुत्र भेजकर बहुधान्यक की निमन्त्रित किया ।। 12 ।।

कुरंगी की भयानक अकुटि को देखकर बहुधान्यक आध्वर्य में पह गया। सुन्दरी ने उसे बड़े स्नेह बीर सन्मान से षट्रसमयी भोजन कराया। फिर भी उसका मन कुरंगी की ओर सगा रहा (13)। प्रणय कुपित दृष्टि वासी कुरंगी युझ से क्यों कट हैं ? शायद उसने मुझे मलत समझ जिया है। तब खास-निश्वास करते हुए उसने कहा- मुझे कुरंगी के घर से कुछ यी ला दो। तभी भोजन बच्छा लगेगा। सुंदरी कुरंगी के पास गई और कहां कि तुम्हारे मोजन के बिना उसे मेरा स्वादिष्ट भोजन भी व्ययं लग रहा है। कुरंगी के पास तो कुछ था ही नहीं। उसने कोधित हं। उस पतने गोबर में कुछ गेहूं चने के दाने हासकर, व्यजन के कप में उसे दे दिया (14)। आसकत नहुवान्यक उसे पाकर कृतकृत्य-सा हो गया और वहा स्वादिष्ट मानकर उसे खा गया। रकत पुरुष क्या नहीं कर सकता? महिलायें सपंगति असी कुटिला होती हैं। रफत पुरुष उनके कार्यों को नहीं समझ पाता। बहुधान्यक अपने दोष-अपराध की ओर सोचता रहा (15)। पूछने पर बाह्मण ने बताया- इस कुरंगीने अपनी सारी संपत्ति अपने जारों में लुटा दी। बहुधान्यक ने यह बात कुरंगी से जाकर कह दी। कुरगी ने मट्ट पर अपने गीलापहरण का दोष लगाकर उसके विषय में भला-बुरा कहा। बहुधान्यक ने उसकी बात सही मानकर उसे निकाल दिया। स्त्री में आसक्त पुरुष स्त्री के दोष नहीं जान पाता और अपने ही हितिचिन्तक के विरुद्ध हो जाता है। (15-16)।

२. द्विष्ट मूढ कथा-

मनोवेग ने दूसरी डिप्ट मूढ कथा कही-सीराब्द्र देश के कोटि नगर में बडे मपन्न दो व्यक्ति थे- स्कन्ध और वन्न । इनमें सक्त अध्यन्त कुटिलगामी और दुखदायी था। दोनों में परस्पर विरोध था। एक बार वक्र को कोई असाध्य रोग हो गया। तब उसके पुत्र ने संसार की असारता समझाते हुए सरल प्रकृति वनकर धर्म-धारण करने का आग्रह किया। वक्र ने उसपर ध्यान नहीं दिया। वितिक कालानुरूप जानकर उसने अपने पुत्र से कहा (16)-हे बत्स, मैने स्कन्ध के विनाश का पूरा प्रयक्त किया पर उसमें सफल नही हो पाया। अब तुम इस काम को पूरा करना। ऐसा प्रयत्न करना जिससे इसका समूल विनाश हो जाये। उपाय यह है कि मेरे मर जाने पर तुम मेरे मृत शब को स्कन्ध के खेत में लकडियों के सहारे खड़ा कर देना और अपनी गाय-भैस उसके लेत में छोड़ देना। यह देखकर वह मेरे उपर आक्रमण करेगा। यह सब तुम छिपे हुए देखते रहना। जैसे ही वह आक्रमण करे, तुम जोर से चिल्लाना कि वक्र ने मेरे पिता को मार डाला। राजा यह जानकर स्कन्ध को मृत्यु दण्ड दे देगा। यह कहकर वक मर गया। पुत्र ने गलत होते हुए भी अपने पिता को आज्ञा का पालन किया। वक्र ने फलस्वरूप नरक दुःश्व पाये। द्विष्ट पुष्य अपनी हानि संवि बिना ही दूसरे को धुख देने में प्रसन्नता का अनुभव करता है (17)।

३. मनी मूड कथा

मनोवेग ने कहा— कंठोष्ट नाम का एक नगर था। वहां एक वेदपाठी पूतमति बाह्यण रहता था। उसकी वाल्यावस्था साहत्राध्यास में ही निकल गई। पचास वर्ष की अवस्था हो जाने पर कुटुम्बियों ने उसका विवाह एक तवणी यज्ञा से कर दिया । बाह्मण पण्डित के पास एक सुम्हर वज्ञ नामक तस्य बिच्य थाया । वसा उसपर मोहित हो गई। एक समय मणुरा में पुण्डरीक नामक यञ्च कराने के लिए मथुरावासियों ने भूतमति को आमन्त्रित किया। भूतमतिने बाह्यणी की समझाया - तुम वर के भीवर सीना और बहुक की बाहर सुलाना । यह सब कहकर वह मधुरा चला गया (18) । अपने पति के चले जाने पर यज्ञा कीर यज्ञ दोनों निरंकुण हो गये । खुले भाव से वे मदन-क्रीता में व्यस्त हो गये। चार माह रमण करते हुए बीत गये। एक दिन बद्ध ने खिन्न मम से कहा (19) - भट्ट जी के जाने का समय हो गया है। मेरा मन यहां से जाने का भी नहीं है बीर रहना भी कठिन हो। गया है। तुम्हें छोडकर कैसे जाऊं। यज्ञा ने कहा- तुम निश्चित रहो। एक उपाय बताती हं। हम दौनी यहां से बहत सारी संपत्ति लेकर अन्यत यसे वलेंगे। तुम दो शव ले आबी। बटुक दो शव ले आया। यज्ञा ने एक शव को भीतर और एक को बाहर रख दिया और संपत्ति लेकर दीनों बाहर निकल गये। साथ ही घर में माग लगा दी। नगर वासियों में देखा कि दो शव जले पड़े हैं। उनकी सूचना पर भूतमित आया और शोक विव्हल हो गया। वह यज्ञा और यज्ञ की प्रशंसा करता हुआ दु:खी होता रहा (20)। लोगों ने उसे संसार की अवस्था तथा स्त्री के स्वरूप का विविध क्ष्य से चित्रण करते हुए समोप्ताया। पर उसकी आसन्ति नहीं गयी। वह मुढ ब्राह्मण दो तूंबी लेकर उनमें दोनों की अस्थियां भरकर गंगाजी में प्रवाहित करने के लिए चल पढा। मार्ग में उसे यज्ञ बदुक मिल गया। बदुक ने पैरों पर गिरकर अपराध कमा करने की प्रायंना की । ब्राह्मण ने चबराकर कहा-मेरा बटुक तो जल गया और आगे बढ गया। बाद में उसे यज्ञा पत्नी भी दिख गई। उससे भी उसने यही कहा। इन दोनों को देखकर भी भूतमति माह्मण को विश्वास नहीं हुवा। यह उन्हें छोडकर दूसरे नगर में चला गया। दोनों ने सत्य स्थिति को स्पष्ट करने का प्रयतन किया फिर भी ब्राह्मण को विश्वास नहीं हुआ । बासक्त पुरुष ऐसा ही होता है (23) ।

४. व्यव्याही मूढ कथा

एक समय नंदुरहारा नामक नगरी में दुर्घट नाम का एक राजा था। उसका कारण्य नामक पुत था। वह बंदा दानी था। प्रतिदिन वह आमूषण आदि का वितरण किया करता था। यह देखकर मन्त्री को चिन्ता हुई। उसने राजा से मिलकर एक जपाय सोचा मंत्री ने नोहे के आभरण और याच्छों की मारने के लिए एक लोहे का दण्ड नाकर राजकुमार को दिया और कहा कि ये गहमें कुनकमायत हैं। इन्हें किसी को नहीं देना। यदि दोने तो तुम्हारा राज्य चला जायेगा। यदि कोई इन्हें लोहमयी बताये तो उसके हिर पर इस मोह्यण्ड का प्रहार करना। राजकुमार में उसे इबीकार किया। जो भी उससे कहता-

ये आधूषंण कोहे के हैं उसे वह लीहदण्ड से प्रहार करता। ठीक है- जिसकी अपूब्याही मित हो जाती है वह ऐसा ही कार्य करता है। जो व्यक्ति जात्यं ध के समान दूसरों के कहे तबनों पर विचार किये विना ही काम करता है वह ध्युव्याही कहसाता है (24)।

३. तृतीय तंधि

५. वित्तद्वित मूढ कथा

विपरीत भाव को जाननेवाला अर्थात् गुज को दोष और दोष को गुज मानने वाला व्यक्ति पित्तदूषित मूढ कहलाता है। इसकी लीक कथा इस प्रकार है— पित्तज्वर से आकान्त किसी व्यक्ति को शक्तर मिश्चित तुग्ध दिये जाने पर वह संसे कडुवा कहकर छोड़ देता है। इसी प्रकार पित्तदूषित व्यक्ति दुःख को सुख, सुख को दुःख मानकर उचित -अनुचित का भेद नहीं जान पाता।

६. आस मूढ पुरुष कथा

इसी तरह आसमूढ पुरुष की कथा है। अंग देश में चंपायुर नगरी के राजा न्पशेखर को उसके बंगदेशीय राजा ने एक आज्ञकल भेजा । एक आज्ञफ्स की कितने लोग जा सकेंगे यह सोचकर नृपमेखर ने उसे अपने बनमाली को शेपने के लिए दिया । यह अाम कालान्तर में बढ़ा होकर सुन्दर और स्वादिष्ट फल बेने लगा। एक दिन किसी पक्षी के मुख से सर्प की विषावत वसा संयोगवशात उसी वृक्ष के एक फल पर गिर गयी। उसके प्रमाव से वह फल समय के पूर्व ही पककर जमीन पर गिर गया। वनपाल नै उसे राजा को भेंट किया और राजा ने अपने यूवराज पुत्र को दिया । युवराज ने उसे खा लिया और विषक्रभाव के कारण वह तुरस्त दिवंगत हो गया । क्रोबांघ होकर राजा ने उस वृक्ष की कटवा दिया। वृक्ष के फलों को आम जनता ने मरने की इच्छा से बड़ी प्रसन्नता पूर्वक खाया । पर उनकी मृत्यू न होकर वे खांसी, बहमा, जरा, वमन, शूल, क्षय, श्वास आदि रोगों से मुक्त हो गये। राजा ने यह जरनकर बढ़ा पश्चास्ताप किया और कहा कि बिना पिचार किये ही उसने आभ्रवृक्ष कटवा दिया। कर्मानुसार इसकी अविवेकी बृद्धि ने ऐसा किया। मनुष्य और पनु में यही भेद है कि मनुष्य की हिताहित का विकार होता है पर पशु ऐसा विचार मही कर पाता (1.1-3) ।

७. क्षोरमूड की कथा

स्रोहार नामक देश में सामस्वत्त नाम का एक विशक् रहता था। वह सागर पार व्यापार्यमें भोल (?) द्वीप पहुंचा। मोजन-नन्दी होने के कारण सागरदत्त ने चलते समय एक सु दर गाय भी साथ ले ली। चोल द्वीप में पहुंचकर उसने कुछ भेंट के साथ तीमर नरेण से भेंट की। दूसरे दिन वह खीर ले गया और तीसरे दिन शालिधान्य का बना हुआ चावल ले गया। तीसर बादशाह द्वारा इस स्वादिष्ट भोजन के बारे में पूछे जाने पर सागरदत्त ने कहा कि यह भोजन उसकी कुलदेनी देती है। तोमर की प्रार्थना पर उसने फिर उस गाय की उसे दे दिया और बदले में अकृत सम्पत्ति लेकर वापस चला साथा।

दूसरे दिन बादशाह ने गाय के सामने पात रखकर दुग्धयाचना की। कोई फल न देखकर उसके दुःखी होने की कल्पना कर ली। तीसरे दिन उसके सामने वर्तन रखकर दिव्य भोजन की याचना की। फिर भी गाय चुपनाप खड़ी रही। यह देखकर कोधित होकर सोमर बादशाह ने उस गाय को अपनी द्वीप से बाहर निकाल दिया। उसे यह भी ज्ञान नहीं रहा कि याचना मात से कहीं दूध मिलता है। इसी प्रकार जो प्रक्रिया जाने बिना ही वस्तु—प्राप्ति करना चाहना है वह उसे कभी भी प्राप्त नहीं कर सकता। अभिमान की छोड़ बिना संसार समुद्र से पार कोई भी नहीं हो सकता, शुक्लध्यान प्राप्त नहीं कर सकता। वह तोमर बादशाह के समान प्राप्त वस्तु को भी अज्ञानतावश हाथ से खो बैठता है (1.4-6)।

८. अगुरु मुख कथा

मगध देश में गजरब नामक एक राजा था। एक दिन वह राजा अपने मंत्री के साथ कीड़ा करते हुए जंगल में काफी दूर निकल गया। वहां पहले से ही खड़े हुए पुरंग लिए एक भरय को देखकर राजा ने मंत्री से पूछा यह कौन है, किसका नौकर है और किसका पुत्र है ? मंत्री ने उत्तर दिया- यह हरि नामक मेहर (महत्तर-महार) का पुत्र हिल है। यह बारह वर्ष से नापकी क्लेशकारक सेवा कर रहा है। तब राजा ने मंत्री से कहा- तुमने अभी तक इस पयादे के क्लेश का कारण मुझसे क्यों नहीं कहा ? सप्तांग वाले राज्य में मंत्री का कर्तव्य है कि वह मृत्य के गुण-दुर्गुण की राजा से कहे (7)। तदनंतर राजा ने प्रसन्न होकर हिल से कहा-500 गांवों के साथ एक मठ तुम्हें दे रहा हूँ उससे तुम अपने बंधु-पुत्रों सहित सुबी रहोगे। हिल ने कहा-मेरा कोई परिवार नहीं है। मैं इन गांवों का क्या करूंगा ? ये गांव उन्हीं द्वारा पहणीय हैं जिनके पास हजारों भृत्य और सैनिक हों। राजा ने कहा- यांवों से ही धन की प्राप्ति होती है, भृत्य मिलते हैं, सुपुत्र, सुमित्र, सुबन्ध् सभी कूछ उपलब्ध होते हैं। धन ही सस्य का मूल है, सुख का कारण है। धन के कारण ही कायर भी बीर हो जाते हैं, अधीर भी धीर बन जाते हैं, असरय भी सत्य हो जाता है। धन से ही पुण्य होता है, धर्म रामी होता है। जो न्यन्ति संगत्तिवानु हो और धर्म रागी न हो वह चर्मपश्चमान् होने पर भी वृष्टा नहीं है, पशु के समान है ।।।।।

धन की यह महिमा जानकर तुम इन गांगों को स्वीकार करो और मुखी होंगी। हिंस ने कहा— महाराज! यदि आप चाहते हैं तो मुझे ऐसा खेत दीजिए जिसमें मैं खेती कर सकूं। उसमें वृक्ष और गड्डे वर्षेरह भी न हों। तब राजा ने मंत्री को आजा दी कि हिंस को अगुर चंदन का धन दे दो जिससे वह बंदन की लकड़ी बेचकर अपना जीवन निर्नाह कर सके। हिंस ने उसे देखकर कहा— मैंने बृझ और निरुपद्रव खेत मांगा था. यह खेत तो अंजन के समान श्याम और विस्तीण है। फिर भी जो जैसा भी है, ग्रहण कर लेना चाहिए। राजा यदि यह भी नही देता तो मैं क्या कर सकता था। इसे मैं ठीक कर लूंगा। दूसरे ही दिन हिंस ने तीक्ष्म कुठार लेकर सारा चन्दनवन काट डाला और उसे जनाकर कोदों वो बिया। यह जानकर मंत्री को बड़ा आश्चर्य हुआ। 1911

तव मंत्री के पूछने पर हिल ने कहा-मात्र एक हाथ भर का टुकड़ा जलने से बच गया है। मंत्री ने कहा उसे बाजार में जाकर बैच दो। न बाहते हुए भी हिल बाजार गया। बेचने पर ज्यापारी ने उसे पांच दोनारें दीं। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और सोचने लगा अपनी अज्ञानता पर कि उसने सारा चन्दनवन जला क्यों डाला? पश्चास्तापाग्नि से वह जलने लगा। इस प्रकार हेयोपादेय और गुण-दुर्गुण को जाने बिना जो व्यक्ति प्राप्त वस्तु को छोड़ देता है वह हिल के समान दु:खी होता है ॥।।।।

९ खंदन त्यागी की कथा

मनीवेग ने उन ब्राह्मणों को चंदन त्यागी की कथा सुनाई । सुखाधारभूत सब्दा नगरी में उपशान्तमन नामक एक राजा था। एक दिन उसे भीवण पिस्त-जबर हो गया। अनेक प्रयत्न करने के बावजूद जबर शास्त नहीं हुआ। तब मंत्री ने नगरी में यह घोषणा कराई कि जो भी व्यक्ति राजा का पित्तज्वर शान्त कर देगा उसे पारितोषिक रूप में सी गांव दिये जायेंगे। साथ ही आमुखण भी भेंट किमे जायेंगे। यह घोषणा सुनकर एक वणिक गोशीर्ष चंदन की लकड़ी लेने के लिए घर से निकल पड़ा। संयोगवम नदी के किनारे एक धोबी को गोशीर्ष चंदन का मूठा लिये उसने देखा। लकड़ी को परखकर उसने उससे मधुर स्वर में कहा कि यह नीम की लकड़ी का मूठा मुझे दे दो और इसके बदले मुझसे नीम की बहुत सारी लकड़ी ले ली। घोबी ने सहचं इसे स्वीकार कर लिया। वणिक् ने उस लकड़ी को साफकर, विसकर राजा के सारे भरीर में उसका सेप कर दिया। फलतः राजा का पित्तज्वर तुरन्त शान्त हो गया। राजा ने घोषणानुसार उसे सी गांव और विविध आभूषण मेंट किये। वह सब जानकर धीवी की अपनी मूर्बेता पर वड़ा पश्चालाप हुआ। इसीप्रकार वस्तु की पहचान किये बिना ही जो अविवेकी वस्तु का परिस्वाग कर देता है वह चंदनत्यांगी घोबी के समान दु:खी होता है माँ मा

१०. चार मूखों की कवा

बार मूर्खंजन कहीं जा रहं थे। इतने में उन्होंने एक खुत संपन्न संयमी मुनिशंख को देखा। वे मुनिशंज त्रिगृष्तिवान होने पर भी क्रमेंबन्ध से निर्मृक्त हैं, समस होकर की निर्मल हैं, पण्डितगण उनकी स्तुति करते हैं, दिखास होने पर भी आशा विरहित हैं, गृक्त हरण होने पर भी तियंक्य समूह से शोभित हैं, निर्मेख होने पर भी प्रत्यों के पिष्यह से मुक्त हैं, मद का विध्यंसन करने पर बी यद से आहत नहीं है। ऐसे सपस्वी साजक मुनिशंज की वंदना उन जारों मूर्खों ने की। मुनिशंज ने उन चारों को आशीर्वाद दिया। एक योजन जाने के बाद वे बाशों मूर्ख परस्पर झगड़ने लगे। एक ने कहा मुझे आशीर्वाद दिया था। दूसरे ने कहा मूझे आशीर्वाद दिया था। किसी तीसरे व्यक्ति के समझाने पर इस कलह को निपटाने के लिए वे मुनिशंज के पास गये और पूछा कि उन्होंने आशीर्वाद दिया था। मुनिशंज ने उत्तर दिया-जो सर्वाधिक मूर्ख हो। उसे मैंने आशीर्वाद दिया था। धुनिशंज ने उत्तर दिया-जो सर्वाधिक मूर्ख नेगर की ओर गये और नगरवासियों से यह निश्चय कराने लगे कि उनके बोच सर्वाधिक मूर्ख कीन है। नगरवासियों में से एक ने कहा कि तुन लाग अपनी-जपनी मूर्खता की कथा कही तभी यह विवाद सुलझ सकता है (11-13)।

उनमें से एक ने कहा-मेरी दो स्त्रियां हैं और दोनों ही प्रिय हैं। एक दिन रात में मैं उत्तान शयन कर रहा था। इन दोनों पित्नयों ने मेरे एक-एक हाथ को मस्त्रक के नीचे दवाकर मेरे दोनों ओर सो गई। मैंने सोते समय अपने मस्त्रक पर प्रज्वित दीपक रख लिया था। एक मूपक उस दीपक में से जलती बत्ती निकालकर ले भागा। वह बत्ती मेरी वायी आंख पर गिर गई। दुःख से व्याकुल होते हुए मैंने सोवा कि यदि दायां अथवा दायां हाथ निकालकर बस्ती बृताता हूं तो ये दोनों स्त्रियां आग जायेंगी और वे रुट्ट हो जायेंगी। फलतः उस दुःख को मैं वृपचाप सहता रहा और तभी से मैं काना हो गया हूँ। इसलिए मेरा नाम 'विषमावलोवन' हो गया है। मनोवेग ने कहा कि यदि आपके बीच ऐसा कोई पुस्त होतो कहते हुए भी भवभीत होता है। जब वह मूर्ख अपनी कथा कहकर यक यया तो दूसरे मूर्ख ने अपनी कथा कहना प्रारंभ किया।।।ई।।

उसने कहा-मेरी भी दो स्त्रियों थीं। वे बड़ी कुकप बोर भयंकर थी। एक का नाम खरी वा जो दायां पैर धोया करती भी और दूसरी का नाम भर्षिकका था जो वायां पैर धोया करती भी। एक विन खरी ने मेरा दायां पैर धोकर बांगें पैर पर रख दिया। ऋष्ठिका ने कोधित होकर मेरे पैर को मूखल से तोड़ दिया। तब खरी ने उसकी असा-बुरा कहकर बहुत डांटा और उस पर बिहों के साथ व्यक्तिचार का दोषाशेषण किया। ऋष्ठिका ने भी इसी तरह खरी पर व्यक्तिचारियों होने का बारोप किया और कहा कितरा सिर मुंबत- कर पांच भीटियां रखाकर शरानों की मासा पहनाकर नगर में मुमाया जाये तभी ठीक होगा। इस सरह कोधाविष्ट होकर उसने मेरा नायां पैर भी तोड़ दिया। सब से मेरा नाम 'कूटहूंसगित' हो गया। दूसरे मूर्ख के चुप हो जाने पर तीसरे ने अपनी कथा कहना प्रारंत किया। 11511

मेरी पत्नी रात्नी को सोते समय बोलती नहीं थी। तब हमने कहा कि जो भी हम दोनों में से बंलिया उसे भी में तले हुए गुड़ के दस पूए देने पड़ेंगे। उसने इस मर्त को स्वीकार कर लिया। एक दिन चोरों ने मुसकर हमारी सारी संपत्ति जूट ली। वह फिर हमारी पत्नी के अधोवस्त खोलने लगा तब मेरी पत्नी ने कहा कि निर्मण्ड ! तूं अभी भी देख रहा है। मेरा अधोवस्त खोले जाने पर भी जुप खड़ा है। तब मैंने हंसकर कहा कि तू अपनी मर्त हार गई अब दस पूए देना पड़ेंगे। मैंने अपनी सारी संपत्ति चोरों को लूटा दी। तभी से मेरा नाम 'बोद' पड़ गया।।।।।।

चतुर्व मूर्ज ने अपनी कया सुनाई। उसने कही-एक बार मैं अपनी पत्नी को लेने ससुराल गया। वहां मेरी सास ने बड़ा स्वादिष्ट भीजन परोसा। संकीच मे मैंने उसे छोड दिया। दूसरे दिन लगातार उस गांव की नारियों के आवागमन के कारण भोजन नहीं कर सका। तीसरे दिन सैं मुख से तडपने लगा। संयोग-वशात पर्लंग के नीचे झांका तो पाया कि वहां एक वर्तन में जल में चावल पडे हुए हैं।।।।। अवसर पाकर भृख से व्याकुल होने के कारण मैने नावलों से अपना मुँह भर लिया। इतने में मेरी पत्नी वहां आ पहुंची। लज्जावश मैंवैसे ही फूले गाल लिये चुपचाप बैठा रहा। उसने फूले गाल, मुख तथा मिचे हुए नेत्रों को देखकर घवडाकर अपनी मां से कहा कि देखी तुम्हारे दामाद की क्या हो गया है ? मां ने मृति मरणासम जानकर मेरे गालों की वबाबा पर मैं पूरी ताकत से उन्हें कठोर बनाये रखा। रोती हुई पत्नी की आवाज सुनकर गांव की अनेक महिलाएँ इकटठी हो गईं। उनमें से एक ने कहा कि सप्त माताओं की पूजा न करने के कारण यह स्थिति आई है। दूसरी ने कहा कि यह किसी देवता का रोब-दोब है। तीसरी ने कहा कर्षमूल है, कीथी ने कहा-यह तो गंडमाल है, पांचवी ने कहा यह कर्णसूचिका है, छटी ने कहा-यह गला रोग है। और भी महिलाओं ने इसी तरह अपने -अपने नाना-विध विचार व्यक्त किए ।।18।।

इसी बीच बहां पर प्रस्त्रवैद्य आ गया । महिलाओं ने उसे बुलाकर मुझे विखाया । उसने मेरे गालों की दबाकर देखा और देखा कि पर्लग के निषे तंदुल-पात्र रखा है । सारी स्थिति को समझकर उसने मेरी सासू से कहा कि इसे तन्दुल व्याधि हो गई जिसके कारण मरण भी संभावित है । तुरंत इलाज करना आवश्यक है । यदि तुम मुझे मरपूर संपत्ति होगी तो मैं तुम्हारे वामाद के प्राण बचा सकूंगा । सासू महचे तैयार हो गई । तब अस्त्रवैदा ने सस्त्र दारा मेरे गाल की फाड़कर उसमें से रक्त मिश्रित चांबल निकाले और उन्हें कीड़े कहुकर सारी महिलाओं की दिखाया। ज्ययं ही मैंने यह दुःख सहन किया। सासू ने वैद्यराज की घोतो—जोड़ा देकर बहुदिध सम्मान किया और वास्तिविकता जानने पर लोगों ने मेरा बड़ा उपहास किया। तभी से मेरा नाम 'गलस्फोट' पड़ गया।

इन चारों मूखों की कथायें सुनकर नगरवासियों ने कहा कि अब तुम लोग उसी साध के पास जाकर अपनी मूर्खता की मुद्ध करो ॥19॥

इस प्रकार चार मूर्खों की कया कही गई। मनोवेग ने कहा— हे बाह्यणी!

ये दस प्रकार के मूर्खे बताये गये। इनमें से एक भी प्रकार का मूर्खे तुम लोगों में होता मुझे बताओ। मुझे अभी भी कहने का साहस नहीं हो रहा है। आप लोग प्रायः कवाग्रही होंगे तथा जिस बक्ता के पास कोई विशेष वेश न हो, पगड़ी, चोरी, पुस्तक अथवा घोती—जोड़ा न हो, जनानुरंजनकारी भेष न हो, पावड़ी (खड़ाक) न हो, उस बक्ता का कोई भी अभिवचन आप प्रामाणिक नहीं मानते। तब बाह्यणों ने कहा—हे भद्र! भयभीत म होंगा। हम लोगों में ऐसा कोई भी मूर्ख नहीं है। तुम निश्चिन्त होकर अपनी बात मुक्ति पूर्वक कहा। सब मनोवेग ने कहा—में जो कुछ कहूँ, उस पर निष्पक्ष होकर विचार कीजिएगा। मिण मुकुटांकित हरि (विष्णु) में अपनी आस्था है या नहीं? विप्रों ने कहा— चराचर जगद्व्यापी विष्णु भगवान को कीन नहीं मानता? तब मनोबेग ने कहा— यदि आपका विष्णु ऐसा है तो नन्द गोकुल में गवालिया हं कर गायां को क्यों चराता था? तथा ग्वालिनियों के साथ रितकीडा वयों करता था? ।12011

मनीवेग ने आगे कहा— पाण्डवों की और से दुर्गीधन के पास धूल कार्यं करने के लिए वे क्यों गये ? वामन रूप धारण कर बिल राजा से पृथ्वी की याचना क्यों की ? रामावतार में कार्यों के समान सीता के विरह में संतप्त क्यों हुए ? यदि ऐसे कार्यं विराग रूप ही करते हैं तो हम जैसे दिरह पुत्रों का काष्ठ वैचने में क्या वीच है ? मनोवेग के इन स्युव्तिक बचनों को सुनकर बाह्मणों ने कहा— हमारा विष्णु तो ऐसा ही है । पुराणों में उसका ऐसा ही वर्णन मिलता है । तूने हमारे लिए चिन्तन का एक मूल दिमा है । वर्णन के बिना नेच रहते हुए भी रूप नहीं देखा जाता । मदि वह सराची है तो विराणी कैसे हो सकता है ? यदि सर्वव्यापी है तो इच्ट वियोग कैसे हो सकता है ? सर्वंश होकर कुमा—वृक्ष से खबर पूछना कैसे लग सकता है ? अल्प जीवों के समान दु:खित होकर उसने मत्स्य, कच्छप, भूकर, नृसिह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण वर्षरह अवतार किस कारण धारण किमे हैं ? वे जन्म—मरण के दु:ख निरंखन होकर कैसे सहते हैं ? ॥21॥

रस, रिवर, मांस, मेदा, बस्यि, मण्या आदि से संकुलित यह शरीर नव द्वारों से अपवित्र बस्तुओं को दूर फेंकता है। उस अपवित्र शरीर को यह परमेश्वर क्यों घारण करता है? सवंश्व होने पर भी वह क्यों पूछता है? दानवों को उत्पन्न कर फिर उसे क्यों मारता है?यदि वह तृप्त है तो भोजन क्यों करता है? यदि अमर है तो अवतार क्यों लेता है? यदि भय और कोघ से विरहित है तो शस्त्र क्यों घारण करता है? ऐसे अनेक प्रश्न हमारे मन में आने लगे हैं। अतः हे भद्र ! तुमने हमको जीत लिया है। अब तू जयलाम रूप आभूषण को पहनकर भूषित हो जाओ। हम भी विरागी देव की खोज करते हैं?

इस प्रकार मनोवेग विप्रगण को निक्तर कर उस वादमाला से बाहर आ गया 11221

४. चतुर्थ संधि

मनोदेग ने पुतः पवनवेग से कहा- हे मित्र, अभी तुमने लीकिक सामान्य देव को सुना अब संगय विनाशक अनुक्रम का स्वरूप बताते हुए हरि सर्थक के विषय में कहता हूँ। पवनवेग ! इस भारतवर्ष में छः काल यथाकम से हुए हैं— सुखमसुखमा, सुखमा, सुखमदुःखमा, दुःखमसुखमा, दुःखमा और दु खमदुःखमा। चतुर्यकाल दुःखमसुखमा में 24 तीर्थकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलभद्र, 9 वासुदेव और 9 प्रतिवासुदेव, इस तरह 63 शलाका पुरुष होते हैं। उनमें कोई मोक्ष जाते हैं और कोई नरक दुःख का अनुभव करते हैं। महापुरुषों में नारायणों में से कंसानुर और चाणूरमल्ल के शत्रु वासुदेव के पुत्र श्रीकृष्ण हुए। उन्हें पुराणों में जन्म-मृत्यु विवर्जित कहा है और साथ ही उनके वस अवतारों (मत्स्य, कूर्म, शूकर, नर्रासह, वामन, राम, परशुराम, कृष्ण, बुद्ध और कल्की) की भी चर्चा आई है। इस परस्पर-विपरीत चर्चा में यह भी कहा गया है कि जो अक्षराक्षर वितर्भुक्त, अभयरूप, सत्य संकल्प विष्णु का व्यान करता है वह सांसारिक दुःखों से मुक्त हो जाता है।। 1।।

बलियन्धन (अकम्पनाचार्य मुनि) कथा

मित्र, तुम्हें बिल-बन्धन की कथा सुनाता हूँ। एक समय बिल नामक दुष्ट बाह्मण मंत्री ने मृतियों को मारने की इच्छा से सात दिन का राज्य मांगा और मयंकर उपसर्ग किये। उस अकम्पन मृतिसंघ के इस उपसर्ग को दूर करने के लिए ऋदिधारी विच्युकुमार मृति ने बामन का रूप धारण कर बिल राजा से तीन पांच जमीन मांगकर उसे बांध लिया और मृति उपसर्ग दूर कर दिया। इस कथा को मूढ लोगों ने कुछ और ही रूप दे विया। उसी को विष्णु मानकर पुत्रा करने लगे। पुराणों में यही कथा दूसरे दूसरे रूप से मिलती है। इसें स्पष्ट करने में लिए उसने लकड़हारे का रूप छोड़ दिया।। 2।।

मार्खार क्या

मनोवेग ने पुन: पथनवेग से कहा- तुम्हें इन विरोधी कथनों से मरपूर पुराणों की बात और कहता हूँ। तत्पश्चात् उसने अपनी विद्या के प्रधाय से ऐसे बीस का रूप द्वारण किया जिसके केश बक्र थे, दाढी जाँड़ी बी, नयन लाल थे, नासिका चपटी थी, किंट भाग दृढ़ था, बाहुदण्ड प्रचण्ड बलशाली था। इसी प्रकार पवनवेग ने पीली आंखों वाले दिवर मिश्रित कटे कान बाले आंखोर का रूप धारण किया। तत्पश्चात् मनोवेग ने उस मार्जार को घड़े में रखकर उत्तर दिशा में स्थित बादशाला में प्रवेश किया और भेरी बजाकर स्वणं सिहासन पर जा बैठा। भेरी की आवाज सुनकर वादशील बाह्यण एकित हो गये। मनोवेग ने कहा- वह 'वाद' जानता ही नही। उसने तो कौतुकवश भेरी बजा दी थी। अगे उसने कहा- मैं तो मार्जार बेचने आया हूँ, मैं भील हूँ। यह कहकर वह सिहासन से उतर गया। 3 ।

बाह्यणों ने पूछा- इस मार्जार की क्या विशेषता है और इसका मृत्य क्या है ? मनोवेग ने कहा - इसकी गंध मात्र से बारह योजन तक के मूषक विनाट हो जाते है और इसका मृत्य साठ स्वर्ण पण (एक प्रकार की मुद्रा) है। बाह्यण समुदाय यह विचार करने लगा कि यह मार्जीर बहुत काम का है। एक विन में मसक जितना द्रव्य था जाते हैं उससे हजारवां भाग भी इसकी कीमल नहीं है। यह सोचकर बाह्मणों ने भिलकर उस मार्जार को साठ पण देकर खरीद लिया, मनोवेग के यह कहने पर भी कि कहीं आपको पश्चाताय न हो । बाह्यणों के पूछने पर मनोवेग ने कहा कि इसके कान रुधिरसिक्त और छिन्न इसलिए है कि एक दिन में राजिमें एक देवालय में एका । वहां बहुत अधिक मुक्क है। उन्होंने मिलकर इसके कान कृतर-कृतरकर खा लिये। उस समय मार्जार भी भवा होते के कारण अनेत होकर सो रहा था। ब्राह्मणों ने कहा-यह तुम्हारा कथन परस्पर विरोधी है। जिस माजौर के गन्ध माल से चूहे नष्ट हो जाते हैं उसी मार्जार के कान चूहे कैसे का सकते हैं ? मनीवेग ने कहा- क्या मात्र एक बोच के कारण समस्त गूण नष्ट हो जाते हैं ? ब्राह्मणों ने कहा- ही, स्या कांजी का एक बिन्दू मात्र पड़ जाने से दूध फट नहीं जाता ? मनोवेग ने कहा-एक दोष से युवा कदापि नष्ट नहीं हो बाते। क्या अंधकार से मदित सूर्य के

यहां मूल प्रति में 'पल' खस्य का प्रमोग हुआ है (कणयहो पसाई, 44) । पर यह पण होना चाहिए। यह एक नुद्रा थी जो सोवे अध्या ताबे की होती थी। पल मापने का साधन है जबकि पण मुद्रा का कास है। पल' 320 रसी का होता है।

किन्य सुप्त हो जाते है ? और फिर हम तो आपके साथ बाद-विवाद कर भी महीं सकते । बाह्यणों ने कहा-इसमें तुम्हारा कीई दोज नहीं है । यह तो मार्खार का बीच है । क्या उस दोव की दूर कर सकते हैं ? मनोवेग ने कहा-वह संग्रल है । पर आपके साथ बात करने में मुझे भय का अनुभव होता है । की व्यक्तित कूपमच्द्रक में समान अथवा कृतक बिंदर के समान अथवा निकाद्धभूत्य के समान होता है उसके सामने सत्य तत्व को प्रस्तुत करने में मूस बा बना एहता है ।

एक समय समृद्र निवासी राजहंस की देखकर किसी कूप-मय्दूक के प्राधान लुम कहाँ रहते ही? राजहंस ने कहा- समृद्र में । तेरा समृद्र कितना बढ़ा है? बहुत बड़ा है। मय्दूक ने तब हाब प्रसारकर कहा- इतना बड़ा है। राजहंस के कहा- बहुत बड़ा है। मेरे कुए से भी बड़ा है? इससे बहुत बड़ा है? प्रश्नितु मेडक ने तब भी उसे स्वीकार नहीं किया। इतक बिधर वह है जो जायम अथवा मकुन जारन की न मानकर किसी कार्य का प्रारंभ करता है। इसी तरह विलव्हमूख वह है जो राजा को दुव्हमति, तृष्वालु, कृपण जानकार भी उसे नहीं छोड़ता बीर क्लेश भोगता रहता हैं। ऐसे लोगा से तस्व की बास कहना उचित नहीं है।। 6।।

जो इन तीनों प्रकार के पुरुषों के समान कार्य-अकार्य की उपेक्षा करते हैं उनके लिए सण्यन तत्व का यथायं स्वरूप न कहे। बिना साक्ष्मी के सत्य शायण भी नहीं करना चाहिए। तभी तो 'वोडश मृद्धि न्याय' प्रसिद्ध हुआ। इस प्रकार के मूखों की पूर्वोस्त कथा भी इसी प्रकार की है। यह सुनकर बाह्मणों के कहा- हे भद्र! क्या हम लोग ऐसे मूखं है जो प्रमाण सिद्ध तथ्य की भी स्वीकार नहीं करेगे? तब मनावेग ने कहा कि वह पुराण और आगम में कथित प्रमाणों के बाधार पर ही बात करेगा। उसे क्रुप्या सुनिए।

मण्डपकोशिक और छाया कथा

कठीर तपस्या करने बासा एक मण्डपकोसिक नामक तपस्वी था। एक दिन बन्ध तपस्थियों के साथ किसी ने उसे भी भोजन पर आमन्त्रित कर लिया। तबाकथित पवित्र तपस्थियों ने उसे पंक्ति में भोजन करते हुए देखकर कोपाबिक्ट होकर वे सहसा उठ खड़े हुए। जजमान के पुछनं पर तपस्थियों ने कहा कि धोजन पंक्ति में एक पापी बैठा हुआ है। मण्डपकीशिक ने पुछा- बताइये, इसमें मेरा क्या दीव है? तपस्थियों ने कहा- तुम अयुत्रवान् ब्रह्मचारी हो। पुत्र के बिना न इहलोक न परलोक में कोई गति मिनती है। यत: सुम्हारा संसर्व की बिलत है। मोझ की इच्छा हो तो पहले मृहस्थायम स्वीकार कर दुवधान बनी ॥?॥

वन मुख्यक्रीकिक ने क्या कि मुझ कृत की की। अपनी कम्या देश ? प्रमृतिकृयों ने कहा- तुम विश्वमा को भी स्वीकार कर सकते हो। स्मृतियों में इपन्द शहा है कि पति के परवेश तसे जाने पर, मर्नमक होने पर, रोगी,बरिजी क्षा क्षा कर करे पर, काकियूत ही बाने पर तथा पर जाने पर, दा पांच क्षानकार हैं स्की के लिए इसहा पदि किया का सहसा है। अवियन की आजा हैं अन्तर ने बिद्धा के लिए गुहस्मात्कार में प्रवेश किया। क्रवर उसकी छाया नाम की एक अत्यन्त सुन्दर कामा हुई। जब वह बाठ वर्ष की ही गई तो मण्डव के मन में तीर्ययात्रा करने का विचार हुआ। पर समस्या थी कि छाया को किसके पास छीड़ा जाय । भय या कि जिसके पास भी छाड़ा जायेगा वह वत बातना सेना। इस संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति दिखाई नहीं देता जो क्त्री के पराक्षम्ख हो। यह कत्या यदि महादेव को दी जा है तो ठीक नहीं है। के बौरी पार्वती के सम्ब कैलाश पर जिवास करते हैं। सन्ध्यावन्दन के निमित्त जायी गंबा को स्त्री रूप में कीड़ा करते हुए उन्होंने देखा और काम बाग से बिद्ध हो गये। वे सोचने लगे कि यह किसकी कन्या है। यह तो उवंशी से कम वहीं है। बन्तत: उन्होंने गंगा से अपनी इच्छा ब्यक्त की । उसने कहा कि वह परपति की अभिसाषा नहीं करती और फिर तुम्हें अपनी पति से भी इस विषय में पूछ लेना चाहिए। अन्ततः महादेव ने, कर्। जाता है, गगा का सेवन कर निया। विक्तु अपनी लक्ष्मी को छोड़कर सोलह हजार गोपिया। का सेवन करते हैं। यहां उनके साथ विविध की झाओं का वर्णन निस्तता है। परन्तु पुरुषोत्तम होने पर परवाशाओं के साथ रमण करना नोभास्पद नहीं माना जा सकता। जिस बह्या ने देवांगना के नृत्यमात्र देखने के लिए अपनी तपस्या भंग कर दी वह बहुता भी मुन्तुर कन्मा की पाकर क्या नहीं करेवा ? 118-1211

तिलोत्तमा क्या

एक समय अजानक इन्द्र का आसन कंपित हो गया। तब इन्द्र ने बृहस्पति से इसका कारण पुछा। शृहस्पति ने कहा-देव! ब्रह्मा आपके राज्य लेने की इच्छा से पिछले जाद हजार वर्ष के तम कर रहे हैं, उसी तप के प्रभाव से आवका यह आसन कंपित हो प्या है। उसे बण्ड करने के लिए किसी सुम्बद स्त्री का उपयोग किया जा सकता है। तम विश्वकार्मा ने समस्त सुम्बद स्वियों जा विश्ववित्व का क्य ने तिलोक्षण नामक अन्तरा बनाई बीम उसे बहुम के पास वाकर उनके तपोधंग करने का आदेश विया। तिलोक्षण ने बज़ने पूरे हात-बाब, विश्वम और नवतसमयी नृत्य से बहुम को बाइन्टर करने का प्रयस्त किया। बहुम सुमें विशासमयी वृत्य और धंगिमाओं को देखकर जिल्लात हो यथे। वे कनी सबके जरण की बोह तो कभी जंगा व उरस्थल पह वृत्वित्वत करते, तो कथी बंधाओं में, कभी नाभि पर, कभी पीनस्तनों पर, कभी मुख पर, कभी होतन पर वृत्वित्वत

करते । जिस कें.र उसका अंग चूंगता उसी और ब्रह्मा का ध्यान चलां जाता ।
तिलींत्तमा ने ब्रह्मा की दृष्टि की आसकत जीनकर क्षंत्रमः वस्ति ज, उत्तर क्षेत्रः
तीठ गीछे नृत्य करके उसके भन की चारों तरक चूंगायां, परं सक्जावंस पंकि
को चारों आरे नहीं चूंमा सकें (13-15)। फिर विवस हीकर ब्रह्मा ने हुवेरि
वर्ष की तमस्या का फल व्यय करके प्रश्येक दिशा में एक एक नया मुंह बैनाकर
उसके रूप की निरंखने क्षा । उनकी अत्यक्षिक आसकत जानकर आकार्स में
उद्यक्त वह नृत्य करने लगी। तब ब्रह्मा ने पांच सी वर्ष की तपस्या का क्ष्में
व्यय करके पांचवां गंधे का मृह बनाया और तिलीत्तमा को बांकांसे में वैंखने
लगे। परन्तु न वे तिलोत्तमा की देख सके और मं तप ही दूरा कर सके।
राथ के वश्च होकर वे दोनों ओर से बंचित रह गयें। तिलीत्तमा अपनां नेतिक्षे
पूरा कर स्वर्ग भली गई।।186।

इधर ब्रह्मा तिलोत्तमा को खोजने लगें। मदमे से उनका मन और सम जर्जित हो गया। मार्ग-मार्ग में उन्होंने उसंकी खीज की। उनंकी यह कामुकावस्था देखकर देव उपहास करने लगे। कौधित होकर ब्रह्मा ने गये के पंचम मुख से उनको खाना प्रारंभ कर विया। देश्यण महादेव के पास दौड़े और महादेव ने आकर ब्रह्मा का वह पोचवी चिर काट लियो। ब्रह्मा ने कौधित हो कर संदोदन की यह अभिकाम दिया कि तुमंने जो ब्रह्महत्या की है इसके कारण तुम्हारे हाथ से यह बिर कभी नहीं गिरेगी। महादेव में संबंदित होकर की घान्त करने का आग्रह किया। ब्रह्मा ने तब कहा— मेरे इस मस्तक की बिंडणु भगवान जब रकत से सिचन करेंगे तभी यह बिर तुम्हारे हाथ से जिरेगा। इसके लिए तुम्हें कपालसत बारण करना पढ़ेगा। यह सुनकर महादेव बिड्णु के पास गये। इसर ब्रह्मा ने एक मृगवन में प्रवेश किया अहां उन्होंने ब्रह्मुवंसी रोखनी के साथ रमण किया।।।7।।

उस रोखनी से गुणसंपम्न वांस्य नामक पुत्र हुंबा। मण्डपकीशिक ने सोचा कि इस प्रकार के कामातुर बहुत के पास की कन्या को कैसे छोड़ा बाते ? इसी प्रकार गीतम ऋषि की स्त्री की कामातुर होकर इन्द्र ने उपभोगा। यह जानकर गीतम ऋषि ने इन्द्र की सहस्रभंग होने का अभिशाप दिया। दैवों की प्रार्थना पर फिर यह अभिशाप अनुमह स्वरूप सहस्राक्ष ही भाने के रूप में इसके विया। इस प्रकार निकाम देव इस लोक में दिखाई नहीं देते। हां, संभराय अवश्य धर्म परायण हैं। इसलिए छनके पास कन्या को छोड़ा जा सकता है।।।58।।

बंह सीचकर मंग्डेंपकी मिक ने छायां की संमर्शाम के पास छोड़ दिया और तीर्बयों में के लिए चंस पड़ां। इघर यंगेंराजें भी कामबान से विद्व हो गया। उसने छाया की स्त्री बना लिया और हरी जाने के भय से उसे उदरस्य कर सिया । एक दिन प्रवादेश ने अगिनदेश से कहा कि आजकल अगराज रितसुख में कीन हैं, एक सुन्दर म्ही के साथ । अग्निदेश ने कहा- मह । कैसे उसे प्राप्त किया जा सकता है ? प्रवादेश ने कहा- तुम विषय आसना से वश्य हो रहे हो और अंगूनि प्रकृतर हाथ प्रकृता चाहते हो । अस्तु, एक मार्ग है । यमराज नित्यकर्में करने के लिए छाया को एक प्रहुर साथ के लिए अपने उत्तर से बाहर निकालता है । अग्निवेश के लिए इतना समय पर्याप्त था । यह समय देखकर छाया के पास तब गया जब यमराज ने विश्वद्ध होने के लिए ग्रंगाजी में प्रवेण किया । 19 ।।

, अभिनदेव प्रकल्क रूप से सुन्दर गरीर खारण कर वजा पहुंच गये जहां छाया को छोड़ कर यमराज स्नान करने गये थे। यमराज के आने के पूर्व तक उसके साथ उसने खूब रमण किया। छाया ने फिर कहा कि मेरे पति यमराज के आने का समय हो गया है। यदि उसने तुम्हें देख लिया तो वह तुम्हें मार हालेगा और मेरी नासिका काट डालेगा। परन्तु कामातुर अगिनदेव वहां से नहीं गया। छाया ने तब उसे अपने उदर में रख लिया। यमराज ने भी आकर छाया को उदरस्य कर लिया। यह छाया और अग्निदेव दोनों यमराज के पेट में बन्द हो गये। इघर अग्नि के बिना ससार में भोजन बनाना, प्रदीप जलाना आदि सभी कार्य रक गये। सुरगण विकल हो गये। तब इन्द्र ने प्यमवेश से कहा- तुम अग्निदेव की खोजो। उसने कहा- सर्वंत्र खाज लिया, पर वे मिले महीं।। 20।।

एक स्थान भेष है। वहां उसे यदि पा लिया तो आपको सूचित करूंगा।
यह कहकर उसने सभी देवों को भोजन पर आमिन्दिन किया। सभी की तो
एक-एक आसन दिया पर यसराज को तीन आसन दिये। सभी को एक भाग
परासा पर यसराज को तीन भाग परासा। यह देखकर यमराज ने पूछा~ ऐसा
क्यों? पवनदेव ने कहा- पहले तुम छाया को उगलो। छाया के बाहर निकलने
पर छाया से अग्निदेव को उगलवाया। यह देखकर यमराज कोशित होकर
अग्निदेव के पीछे दीई। अग्निदेव दौड़ते-दोड़ते वृक्षों और शिलाओं मे छिन्न
गये। जाय भी बुद्धिमानों एवं प्रयोग के बिना वह प्रगट नहीं होता।। 21।।

मनीबेग ने कहा-है विश्रो! क्या आपके पुर, जो में यह कथा इसी प्रकार जिलती है? विश्रों ने इसे स्वीकार किया। यनोबेग ने कहा- जो अपने जबर में स्थित पत्नी के जबर में बैठे अिनदेव को नहीं जान सका जसका देवस्व भीर अपिन का देवस्व कहां गया? जिस प्रकार इस छोटे-से दोय के कारण इन देवों का देवस्व नहीं जाता उसी प्रकार मूणकों द्वारा मेरे मार्जार को कर्णिकानता से बड़े गुजों को कैसे जपेक्षित किया जा सकता है? विश्रों ने इस कथन की प्रशंसा की 11 22 11

ा विश्वी ने आये ने कहा- हे सह ! पुराणों की कथाओं पर जैसा-त्रेसा विश्वार करते हैं, वे वैसी-वैसी तक्यहीब सिक्ष होती जाती हैं। यनविग ने कहा-जिसका कित विश्वान को जीतने वाली रम्णियों के विश्वास से पूर्णतः मुक्त है सम्बन्ध स्वरूप को सम्बन्ध स्वरूप को पतिने वाली रम्णियों के विश्वास करते हैं। जिस काम के त्रशीकृत हो संकर ने पार्वती को किश्वीननी बनाया, विष्णु ने योखियों का उपयोग किया, बह्या ने तपस्वरण छोड़ कर तिलोसमा के नृत्य को वेखने के लिए चतुर्मृत वनाये इन्द्र को सहस्वत्र का बनाय पड़ा, यनराज ने छाया का उपयोग कर उसे अपने पेट में रखा, अस्तिवेश को कृतों और विलाओं में प्रवेश करना पड़ा ऐसे कामदेव को जिसने जीत सिया है और सुरासुरों हारा पूजित है, उस अष्टदेव की वग्दना करो। उसकी बन्दना से हो व्यक्ति मोक्ष पा सकता है। मित्र के निमित्त सनोवेग ने ये कवार्य कही।। 23।।

प्र. पंचम संधि

शिश्तरखेवन कथा

मनोवेग ने पुनः पवनवेग से कहा- है मिन्न, तुमने अभी रहादि देनों के गुणों का आख्यान सुना। ये सभी साधारण देन हैं। अणिमा, महिमा, लिमा आदि अब्द ऋदियां देनों में होती है। उनमें अधिमा नाम की निम्नकोटि की ऋदि ही इन देनों में पाई जाती है। ब्रह्मा महावेश के विवाह में पुरोहित वनकर गये थे। वहां पाणिग्रहण कराते समय पानंती के करस्पर्श मान्न से वे इतने कामपीड़ित हो गये कि उनका सुक्रपात हो गया और वे उपहास के कारण वन गये। महावेश ने नृत्य करते समय ऋषियों की कन्याओं के साथ आसिगन आदि कामुक कियायों की जिन्हें देवकर ऋषियों ने उनका सिक्तक्ष्टिम कर दिया और अभिशाद स्वरूप योगि लिंग के रूप में शिवमूर्ति की स्थापना हुई, जिसकी पूजा नहीं की जाती। शिव के ही दह, महादेब, संभु, शंकर आदि विविध रूप है। अहल्या ने इन्द्रं को, छाया ने यमराज और अपन को, कुन्ती ने सूर्य को कामवासना में प्रवृत्त किया। इस प्रकार लोक में और भी देव हैं जो कामुकता से आपूर है। प्रवश्वेग ने कहा- प्रदाराओं का उपयोग करने में स्था इन्हें सफ्जा नहीं आई? इनका देवस्व तो यों ही खला नया।

खर शिरम्छेवन कथा

मनोवेन ने नम्रे के सिरश्मेवन की कथा को स्पष्ट करते हुए कहा— ग्वारह दहों में से संतिम प्राः सास्वप्री मुनि के अंग से उत्पन्त क्येष्टा नाम की आर्थिका के नर्भ से उत्पन्न हुवा था। मूनि होने पर उग्र तपस्था के प्रधाय से वह अनेक प्रकार की विद्याओं का स्वामी हो वथा। उसे 500 बढ़ी विद्याएँ और 700 छोटी निर्धार्पे प्राप्त सुई । उन्होंने उससे पुकां स्वामी, बार्वकी स्वा क्षेत्र की नामे ? देश धूर्वधारी उस कर ने जाड सन्याओं को वेसकर मुनिपंद छोड़ विमा और उनसे विवाह कर लिया । परम्तु रतिकर्म में असमर्थ होने के सारण यह कांस-संयक्तित ही गई । तब वंद्र ने पर्वती से विवाह कर लिया । फुनतः उसकी त्रियुस-विद्या सम्ब ही गई। फिर वह बाह्यणी नामफ विद्या सिद्ध संस्ते सभा। तम बाह्यणी ने कते विगाने के लिए गीत-नृत्यादि करना प्रार्टम कर दिशी। अपर वेंखने पर उसे एक स्त्री दिखी। बाद में उसके स्थान पर एक प्रेतिभा विची और बाव में उसपर वेतुर्म्खी मनुष्य को देखा । उसके ब्रिट पर बंहरी हुआ एक मध्ये का मुख विखाई दिया जिसे उस कृद ने तुरन्त काट दिया, परम्यु वह गर्व का मख उसके हाय से नीचे नहीं गिरा । बाह्यंभी विद्या उसकी विद्या-साधना को समान्त कर वापिस चन्नी नई । तत्पत्रचात अस वह में वाराणशी नयर के समीप पर्यासन में आदढ वर्षमान स्वामी की देखकर उन्हें विद्यामनव्य जानकर उनपर घनघोर उपसर्ग विये। प्रांत:काल होने पर जब उसने उन्हें वर्धमान स्वामी समझा तो बढ़ा पश्चात्ताप किया ओर चरणवन्दमा की। फलस्वरूप वह शिर उसके हाथ से नीचे गिर गया। मनोवैंग ने कहा- मित्र. मक्ष गंबे के विरम्छेवन का तही इतिहास है। अब हम तुम्हें कुछ और कीत्र विकार है ॥ 7 ॥

क्लाशिका और पामर नृत्यं कथा

मनीवेग ने ऋषि का रूप घारण कर पश्चिम की ओर से पटना नगर में प्रवेश किमा और तृतीय वादकाला में प्रवेश कर सिंहासन पर जा बैठा और वहां वादस्थिका भेरी बजा दी। वादी विप्रगण एक सिंद हो गये और उन्होंने कहा— पुम वाद करना चाहते ही र मनीवेग ने कहा कि वह तो 'वाद' जानता ही नहीं और फिरंस्वणींसन से उतर गया। साथ ही यह भी कहा कि उसका कोई गुव नहीं है। उसने तो स्वर्थ ही तपोंस हंण किया है पर इसका कारण बताने में मुझे भय लग रहा है। फिर भी कह रहा हूँ 11811

चंतापुर के राजा नुरुष्यं से मंत्री हुरि नामक हिन्न ने वृक्ष दिन पानी में तैरती हुई एक फिला देखी। राजा ने उसपर निम्नत नहीं किया, प्रत्यूत जते ताबित किया और वंधना दिया। वसस्यमाधी मंत्री के ताब ऐसा ही होता है। क्षमा मणिने पर मंत्री को छोड़ दिया गया। मंत्री ने बदला सेने के लिए बंदरों को नृत्य-गाना सिखामा। एक दिन वन में राजा को संकेता देखकर उनका संबंदिक कराजा। राजा ने वह संजीत जुनकर उसे विकाल के लिए बंहीं। इंतने में ही के करार इसका ने वह संजीत जुनकर उसे विकाल के लिए बंहीं। इंतने में ही करार इसका ने वह संजीत जुनकर उसे विकाल के लिए वहां । इंतने में ही करार इसका ने वह संजीत है। इसे वांध लो। महमणों ने राजा की बीच किया। किर राजा के कहान पर उसे छोड़ दिया नेया। संत्री ते कहां की वीच

प्रकार से बासने कम में याजर-जूरम देखा उसी प्रकार के सैंने साम पर हैरती सिका देशी थी। यतः विद्वार्थों को प्रत्यक देखा हुता भी सम्बद्धेन वचन कभी भी यही कहना चाहिए। विद्याणों, जाप जोन भी सासी विना नृश अफेले की कही बात पर विकास नहीं करेंसे 11 9 11

कमण्डलु बीर गक्ष कथा

विश्वें ने कहा- समुक्तिक वात पर हम विकास करें । तुम अपने विषय
में कही । मणीने व ने कहा- में धीपुर के विश्वपत्तक का पुत हूं । विता ने मुखे
म्हान के पास पढ़ने के लिए घेजा। एक दिन उन्होंने मुझे हमण्डम् में जल लाने
के लिए घेजा। में बीच में ही समनवस्तों के साथ खेलने लगा। देर हो जाने
से गुढ़नी के मार के कारण में दूसरे नगर में घाग नया। एक नगर के पास
उन्मल हाथी की अवने सामने आते देखा। भय से मैं कंपिल हो उठा। मैंने
कमण्डम् को भिण्डी के बूक्ष पर रख दिया और स्वयं उसकी ठोंटी से चीलर
प्रवेश कर खिप गया। हाथी भी मेरा पीछा करते हुए कमण्डम् में पहुंच सम
और कोपानिष्ट होकर सूढ़ से मेरी छोती खीचकर फाड़ने लगा। यह क्या सी म ही मैं कमण्डम् के मुह से वाहर निकल गया। मुझे निकलता देखकर वह भी
उसी मार्ग से बाहर निकला। परन्तु उसकी पूछ का एक साम उसमें सटक गया और वह वही यिर पड़ा। यह देखकर मैंने उससे कहा- पापी, यू यही
मर । यह कहकर मैं निभंग होकर निवंस्त हो नगर में पहुंचा। वहां जिनमंदिर
में कक गया। 'मुझे वस्त्र कीन देगा" यह सीजकर विगन्तर ही बना रहा।
नगर-नगर घूमते हुए आज मैं यहा पहुंचा हूँ (10-11)।

यह सुनकर विज्ञगण हंसने लगे और कहने लगे कि तूं स्वयंभू सस्यवती है और इस प्रकार असस्य भाषण कर रहा है। भिण्डी वृक्ष पर कमण्डलू का रखा जाना और उसमें हाबी का प्रवेश होना आदि तब कुछ असंबद है। मणेविव ने साम्वयं कहा- दूसरे के दो। देखना सरल होता है। क्या तुम्हारे मत में इस प्रकार का असस्य और असमब भाषण नहीं है? क्यिमण ने कहा- यदि ऐसा है तो कहिए। हम उसे स्वीकार करेंगे। तुम निर्मण होकर कहो।। 12।।

पौराजिक कथाओं पर प्रश्नविन्हु

एक बार वृश्विष्किर ने राजसून यह के समय कहा था- क्या कोई ऐसा पुरुष है को पताल में से फलीन्य को ले माने ? तन सर्मुन ने कहा- मिर आपकी माझा हो तो में सन्तिवमों के साथ कथीकर को या सकता हूँ। तत्वरक्षात् अर्जून ने काम्बीन बनुष के द्वारा सीक्ष्म माणों से मृष्टी को मेरकर रामस्य में जाकर वस करीय सेना पहिल मेकनाय और सन्तिवहीं को के माया। मनोवेग ने कहा- है विमी, नामके पुराणों में मह उक्ष्मका है वा नहीं ? निसीं ने कहा- हाँ. ऐसा उपलब्ध है। तब मनोदेग ने कहा- बाय के सून्य छित्र हैं दस करोड़ सेना सहित वियमाय का सकता है। रखादल में से तो कायण्डन के छित्र में से हाथी की नहीं निकल सकता ? वित्रों ने कहा- ठीक है, यह मान निया। परन्तु कमण्डन में हाथी का समाना, हाथी के बार से मिण्डी बूब का न टूटना, तथा कमण्डन में हाथी की पूछ का बाल सटक जाना, यह सब कीसे संभव है? ॥ 13 ॥

मनीवेग ने पुनः कहा- क्या ग्रह सब तुम्हारे पूराणों में नहीं हैं। कहा जाता है, करांगुड़ के बराबर अवस्था मुनि ने समुद्र जल की तीन चुक्य में भरकर थी लिया। जब अगस्य मृनि के उद्दर में समुद्र का समस्त जल समा गया गों भेरे कमण्डल में हाची क्यों नहीं समा सकता । इसी धरह कहा जाता है, एक समय सारी सृष्टि समुद्र में वह गई। यह समझकर ब्रह्मा व्याकुल होनर इद्यर- उसे खोजते रहे। तब उन्होंने अलसी के पेड़ पर सरसों बराबर कमण्डल को रखे अगस्य मृनि को देखा। फिर अगस्त्य मृनि के पूछने पर ब्रह्मा ने अपनी कृष्टि खो जाने की चिन्ता व्यक्त की। अगस्य मृनि के पिन्तत वेद्यकर उस स्विट को अपने कमण्डल के भीतर रखा बताया।। 14।।

प्रह्मा ने जब देखा तो पासा कि कमण्डलु के भीतर बढवृक्ष के पत्ते पर पेट फुलाये खिल्यु भगवान सो रहे हैं। ब्रह्मा के पूछने पर विष्णु ने कहा कि तुम्हारी सृष्टि एक समुद्र में बही जाती थी। उसे मैंने अपने पेट में रख ली है। इसलिए अब निष्चित हु कर सो रहा हूँ। कृष्टि रखी होने के कारण पेट फूला है और सृष्टि सुरक्षित है। यह जानकर ब्रह्मा ने प्रसम्भता व्यक्त की। पर उन्होंने उने देखने की उत्कण्ठा अवस्य प्रकट की। विष्णु के कहने पर उन्होंने उदर में जाकर सृष्टि को देखा और विष्णु की नाभि-कमल के छिद्रमाग से बाहर निकल आये। पराचु निकलते समय वृषण के बाल का अग्रधाग अटक गया। निकलना संभव न जानकर उसी बालाग्र को कमलासन बनाकर वे बैठ गये। तभी से ब्रह्माणी का नाम 'कमलासन' प्रसिद्ध हो गया।। 15 ।

मनोबेस के पूछने पर बित्रों ने कथानक की सस्यता को स्वीकार किया ।
तब उसने कहा— जब बह्या का केंग नाकि-छित्र में जटक गया तो हायी की
पूछ का भाय कमण्डल के छित्र में कैसे नहीं जटक सकता? जब समस्त सृद्धि
सहित कमण्डल के भार से अलसी वृक्ष की माखा नहीं दूटी ती एक हाणी के
भार से भिण्डी वृक्ष कैसे दूट सकता है? जब अयस्त्य के कमण्डल में सारी
सृद्धि समा नई तो मेरे कमण्डल में मुझ सहित हाकी क्यों नहीं समा सकता?
यह भी विचारकीय है कि सारी सृष्टि को पेट में समा लेने पर विष्णु, अवस्त्य,
बह्या, आवि कहां बैठे? असती कृश किस पर कका रहा? यह सब पूर्वापर
विरोधी कथनों से भरे आपके पुराग सत्य हो सकते हैं पर हमारा कथन सत्य
नहीं ही सकता। यह कहां का भ्याय है ? 19 16 19

विव बहा सर्वश्च है तो सृष्टि कहां है, इसका झान क्यों नहीं हुआ ? जो बहा नरक से प्राणियों को खींचकर ला सकता है, वह बृषण-केश की नवीं नहीं निकास सका ? जो विष्णु प्रलय से पृथ्वी की रक्षा करता है उसने सीता-हरण को क्यों नहीं जाना ? और उसकी रक्षा क्यों नहीं की ? जो लक्ष्मण समस्त जगत को मीहित कर सकता है वह इन्द्रजीत (रावण ?) के द्वारा मोहित हीकर मामपास में कैसे बांधा गया ? जो विष्णु मारे संलार का पालक है उसे सीता का वियोग कैसे महना पड़ा ? क्षुद्धा, तृषा, भय, देख, राग, मोह, मद, रोग, चिन्ता, जन्म जरा, मृत्यु विवाद, विस्मय, गित, स्वेद, खेब, निद्रा ये अठरह दोष सभी के दुःख के कारण है। सुख चाहने वाले जीव को इन दोखों से मुक्त होना चाहिए।। 17:।

सुधा, तृषा आदि इन अठारह दोषों से और यमेंजान से बहा, बिट्यू वर्गरह देव भी पीड़ित दिखाई देते हैं। जो इनसे मुक्त हो जाते हैं वे संसार द्वारा पूजित होते हैं। कमंपटल से मुक्त हुआ जीव ही सिद्ध बुद्ध बन पाता है। जिनमें ऑहसा का शासन है वे मुनि बंदनीय हैं। देव उनकी स्तुति करते हैं। वे शोकमुक्त रहते हैं, सकल भाषाओं के जाता हैं, भामण्डल, दुन्दुभि, जामर अतिशय आदि युणों से सुसज्जित रहते हैं। उन्होंने दश धर्मों की मुन्दर ब्याख्या की है जिनका पालन कर ब्यक्ति चतुर्गतियों से छूट जाता है। पंत्रमहादत, स्ता, पंचसिति, अटटकर्म-विष्यंसन, गुप्ति, रतनत्रय, अहिंसा आदि तस्य धर्म के अंग है। इसी धर्म को आगमझ गुरु ने प्रकाशित किया है। ऐसे सक्ते गुरु जिनम्बदेव के गुणस्मरण मात्र से सारे कर्म और दोष नष्ट हो जाते है।।18-20।।

६. छठी संधि

मनोवेग वहां से निकलकर दूसरे उपवन में चला गया। वहां पवनवेग को उसने लोकस्वरूप के विषय में समझाया। यह लोक अनादिनिधन है, कविमाशी है, निक्रमल है, चौदह राजू प्रमाण है। अधोलोक वेतासन (अधं मृदंगाकाण) सवृत्त है, मध्यलोक की आकृति खड़े हुए अर्धमृदंग के ऊर्ध्वभाग के सवृत्र है और ऊर्ध्वभीक की आकृति खड़े हुए मृदंग के सवृत्त है। जीव यहीं तिलाक में भ्रमण करता है। अधोलोक में सात पृथिवियां हैं— रत्नप्रभा, मर्भराभमा, बालूप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा, और महातमःप्रभा। इन सातों पृथिवियों में बीरासी लाख विल है— प्रथम में 30 लाख, दितीय में 25 लाख, तृतीय में 15 लाख, खुर्च में 10 लाख, पंचम में 3 लाख, और छठ में 68 कम एक लाख प्रकीर्मक विल हैं। सातवीं पृथ्वी में नियम से प्रकीर्मक विल नहीं है। बीय पृथिवियों में उत्वस होते मरते रहते हैं। हिसक असत्यवादी, परद्रम्य का अपहरण करने वाले, परस्वी सेयन करने वाले, परबंधन कर परिग्रह करने वाले इन

नरकों में अस्यन्त दु:ख पाते हैं। कितने ही नाटकी जीव लोह के कड़ाहों में रखे गरम तेल में फेंके जाते हैं, कितने ही प्रज्वलित अग्नि में पका दिमें जाते हैं। जिस-एव धन से चक, बाम, नोमर आदि विविध तीक्ष्ण अस्त्र नारिकयों के खिर पर गिरते हैं। परस्थी में असमत रहने वाले जीकों के बरीरों में अतिक्षय तम्त्र लीहममी युवती की मूर्ति को दृढ़ना से लगाते हैं। कितने ही नारकी करोंत से फाड़े जाते हैं और भयंकर भालों ने वेधे जाते हैं। इस प्रकार अनेकानक सहनों से खिन नारिकयों का करीर फिर से मिल जाता है। उनका अकाल मरण नहीं होता।।।—2।।

असुर, नाय आदि के भेद से मकनवासी देव दस प्रकार के होते हैं। ये सभी देव स्वर्णकान्ति से संपन्न सुगन्धित निश्वास से युक्त, वन्द्रसदृश महाकान्ति वाले नित्य ही कुमार रहते हैं। रोग और जरा से मुक्त, अनुपम बल-बीयं से परिपूर्ण, अणिमा आदि अब्द ऋद्धियों से युक्त, विविध आभूषण में सिज्जत ये देव आहारक और अनाहारक दोनों प्रकार के होते हैं (3)। रत्नप्रमा नरक से च्यूत हांकर मवनवासी देव हजार योखन ऊपर निवास करते हैं। भवनवासी देवों में असुरकुमार देवों के चौसठ लाख, नायकुमार के चौर सी लाख, सुपर्ण कुमार के बहत्तर लाख, दीपकुमार, उदिधकुमार, स्तनितकुमार, विद्युतकुमार, दिक्कुमार और अग्निकृमार के 76-76 लाख तथा वायुकुमार देवों के 96 लाख भवन है। इन दस कुलों के सभी भवनों का सम्मिलित योग 772(0000) है (3-4)।

इसके बाद ज्यन्तर देव आठ प्रकार के होते हैं – किन्नर, किम्पुरुष, महोरण, गन्धर्य, यहा, राक्षस, भूत, पिशाच। इनके असंख्य प्रमाण भवन है। तिर्यंच लोक, मध्यत्रोक, द्वीप, समुद्र, मानुसोत्तर पर्वत, अढाई द्वीप, स्वयंभूरमण आदि स्थानों पर जनका निवास रहता है (5)।

वैमानिक देवों के सोसह भेद हैं— सौधर्य, ईशान, सनत्कुमार, माहेन्द्र, बह्य, बह्यात्तर, सान्तव, कापिष्ठ, श्रुक्त, महाशुक्त, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण और अच्युत । इन स्वर्गों में दो प्रकार के पटल है-कल्प और कल्पातीत । कल्प कोई बारह मानता है बीर कोई सोलह । हरिखेण सोलह कल्प मानते हैं, पैवेयक, अनुदिश और अनुत्तर ये तीन कल्पातीत पटल हैं । ब्रह्मोत्तर, कापिष्ठ, श्रुक्त और श्रातार को छोड़कर शेष बारह कल्प हैं । इनसे कपर कल्पातीत विमान हैं जिनमें नव ग्रंवेयक, नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमान हैं । ये सभी विमान कमशः कपर अपर हैं । सौधर्म-ईशान, सानरकुमार-माहेन्द्र, ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, लांतव-कापिष्ठ, श्रुक्त-महाशुक्त, सतार-सहस्रार इन छह युग्नली के बारह स्वर्गों में, आनत प्राणत, अरण-अच्युत स्वर्गों में, नव अनुदिश विमानों और विजय, वैश्वयन्त, जयन्त, अपराजित तथा सर्वायंशिद्ध इन पोच अनुतर

विमानों में वैमानिक देव रहते हैं (5-8) । ये विमान सुवर्ण भित्तियों से युक्त, नाना मणि-मानाओं से सहित, चन्द्रकांत और सूर्यकांत मणियों से भाषित, विविध घटिकाओं से संयुक्त, कुसुममालाओं से मुक्त, वोपुर, उपवनों सहित, अकृतिम चिनवीस्थालय से परिपूर्ण हैं (9)।

पृथ्वीतल पर असंख्य जिनभवन हैं। पंचमेत, उनके चार वन (पाण्डु, सोमंनस, नन्दन और भड़णाल) हैं, णालमली जम्बू, बृक्षादि हैं, गजदन्तिगरी हैं, खारों दिशाओं में कुलपर्वत हैं, मानुदोलर पर्वतस्थ जिनालय हैं, नंदीम्बद्वीपरंथ जिनालय हैं (10)। नारिकयों के पटलों के अनुसार उनकी आयुं और ऊँचाई है। नारिकयों की उस्कृष्ट आयु तम से पहले में एक सागर, दूसरे में तीन सागर, तीसरे में सात सागर, चौथे में दस सागर, पांचें में सलह सागर, छठ्ठे मे बावीस सागर और सातवें मे तेतीस सागर है। व्यन्तर देव द्वीप, पर्वत, समुद्ध, देश, ग्राम, नगर, गली, बाग, वन आदि स्थानों में रहते हैं (11-18)।

इस संधि में देवों, मनुष्यों और नारिकयों की आयु, ऊंचाई, भवन आदि का वर्णन मिलता है। इसे जिलोक प्रशस्ति आदि प्रन्यों में देखा जा सकता है।

७. सप्तम संधि

उपकार निमित्त से जिलोक का वर्णन कर मनोवेग ने पबनवेग से कहामिन्न, अभी तुम्हें पुराणों की कुछ और कबाये बताता हूँ। यह कहकर
ऋषिवेष को छोड़कर और तपस्वी वेष की धारणकर उन्होंने पटना नगर में
उत्तर दिशा की ओर से प्रवेश किया। वहां बह्मशाला में पहुँचकर भेरी बजा
दो और सिहासन पर बंठ गया। भेरी की आवाज सुनकर वादशील बाह्मण
एकतित हो गये और वहने लगे- तुम कहां से आये हो और किस विषय पर
वाव करना चाहते हो? मनोवेग ने कहा- हम लोग अमण करते हुए पिछले
गांव से आये हैं। व्याकरपणास्त्र वगरह कुछ भी नहीं जानते। ब्रह्मण ने कहाउपहास मत कीजिए। सही बताइये- कहां से आये हो, कहां जा रहे हो, तुम्हारे
गुरु का नाम क्या है, माता पिता कौन है ? मनोवेग ने कहा- यदि आप
विचारवन्त हैं तो सुनिये, में कह रहा हूँ।। 1।।

वृहत्कुमारिका कथा

साकेत नगर में बृह्त्कुमारिका नामक मेरी माता को मेरे नाना ने मेरे विसा को दी। विवाह के समय बजे हुए बाखों की आवाज सुनकर एक हाथी उस स्तंत्र को तोड़कर माग निकला। उससे घबड़ाकर कोग इसर—उसर भागने सगे। यर भी भागा। भागते समय उसके सक्के से बधु नीचे गिर पड़ी और बेहोग हो गई। लोगों के आक्षेप के अब से मेरा पिता कही भाग गया और अभी तक नहीं बाया। लगभग हेड माह बाद पिता के स्पर्ध माज से उस्पन्न

हुया गर्भ दिखाई देने लगा। मेरी मालामही ने पूछ'- मेरे कुल में यह किसका लांछन है ? उसने उत्तर दिया- मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं है !! 2 !! हानी के भय से भायते समय दर के अंगस्तरों के सिवाय आज तक मैंने किसी भी पर- पुरुष का स्पर्ण नहीं किया। प्रसक्ताल समीप आ गया। इसके बाद मेरे नाता के घर कितने ही तपस्वी आये। आहार चहुण के बाद मेरे नाता के पूछने पर उन्होंने पहा कि इस देश में बारह वर्ष का दुव्कास पड़िया। इस कारण हम लोग उस स्थान पर जा रहे हैं जहां सुभिक्ष है । उन्होंने यह भी कहा कि तू भी हमारे साथ चल। यहा पूर्वी क्यों मरता है। मैंने भी सोचा, वहां तो बारह साल का दुमिश पड़ेगा। मैं गर्भ से निकलकर भूख से क्यों पीडित होऊँ। फलत: दुब्कास तक मैं गर्भस्थ में ही रहा।

दुर्मिक्ष दूर हं ने पर तपस्वी मेरे घर आये और नानाकी बताया कि अब वे अपने देश वापिय जा रहे हैं। उनके वचन सुनकर मैं भी गर्भ से बाहर निकलने लगा। उस समय मेरी माता चून्हें के समीप बैठी थीं। प्रसव वेदना से वे बही अचेत हो गई। मैं गर्भ से निकलकर वही चून्हें की राख में गिर गया। बारह वर्ष का भूखा होने के कारण मैंने माता से भोजन मांगा। उस समय मेरे नाना ने उनसे कहा— आपने ऐमा बालक कभी देखा है जो उत्पन्न होते ही भोजन मांगे ? उन्होंने कहा—यह अपने घर में अमंगल है। इसे घर से बाहर की जिए। अन्यदा घर में निरन्तर विक्त होते रहेंगे। तब मेरी माता ने कहा—यहां तू मुझे बड़ा दु:खदायी है। अत: सुम अब यम के घर जाओ। वे ही तुम्हें भोजन देंगे। 4।

तत्पश्चात् में अपने देह में भरम लगाकर फिर मुड़ाकर घर से निकल गया और तपस्थियों के पास पहुंच गया। उनके साथ रहरर मैंने धनधीर तपस्था की। एक विन में साकेत गया तो वहां देखा कि मेरी मां ने दूसरा विवाह कर लिया है। इस विवय में तपस्वियों से पूछा तो उन्होंने कहा कि यदि पहला पति मर जाता है तो अक्षतयोति वह स्वी दूसरा विवाह कर सकती है (5)। यदि पति विदेश गया हो तो असूता स्तो आठ वर्ष तक और अप्रसूता चार वर्ष तक अपने पनि के आने की प्रतीक्षा कर दूसरा विवाह कर सकती है (शियोष पित्थित में पाच विवाह करने में भी दोष नहीं है, जैसा प्रोपदी ने किया था।। अ्थासादि ऋषियों के ये वचन सुनकर मैंने अपनी माता को निर्वोच मान निया। फिर मैंन एक वर्ष तक पुनः तपस्या की। बाद में ती बंबाजा करते हुए आज आपके नगर में आया हूँ। यही मेरा परिचय है (6, 1

मेरी इन बातों को सुनकर ब्राह्मणों ने कहा- तू ये असंभव और आगम विरुद्ध वार्ते क्यों कर रहा है ? मनाविय ने कहा- ये विरुद्ध नहीं हैं, ऋषि भाषित हैं। आप यदि सुनना चाहें तो मैं सप्रमाण ,बता सकता हैं, पर श्री भयभीत हूँ। आप निष्पक्ष हो सुनें तो कहूंगा। ब्राह्मणों ने कहा- बताओ, यह सब कहां तक ठीक है (7)। मनीबेग ने कहा- पुराण, मानश्वर्म (मनुस्पृति में कियत धर्म), अंग सहित बेद और चिकित्सा ये चार आज्ञासिद्ध हैं। तक से इनका खण्डन नहीं करना चाहिए। ये मनु, ब्यास ऋषि के बचन हैं। इनका खण्डन करने बाला ध्रह्मणानी होता है। सबोच बचनों में प्रशन करना निषिद्ध है। बाह्मणों ने कहा- माल बचन के कहने में पाप नहीं लगता। 'तौकण खड्ग' कहने से जिब्हा नहीं जलती और उष्ण अग्नि कहने से मुख नहीं जलता। अतः तुम निर्मय हीकर पुराण बचनों का अर्थ करी। इम उसे विचार पूर्वक प्रहण करेंगे (8)।

भागीरथी और गांधारी कथा

मनोवेग ने कहा- भागीरथी नाम की वो स्त्रियां एक ही स्थान पर सोती थीं। उन दोनों के स्पर्श मात्र से एक गर्भवती हो गई और उसका समीरथ नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। यदि स्त्री के स्पर्श मात्र से गर्भ रह सकता है तो पुरुष के स्पर्श मात्र से मेरी माता को गर्भ कैंसे नहीं रह सकता? इसी प्रकार गांधारी का विवाह सृतराष्ट्र के साथ निश्चित हुआ। उसके वो माह पूर्व ही वह रजस्वला हो गई। चतुर्थ दिन उसने स्नान करके फनस बुझ का आलिगन किया। फलतः वह गर्भवती हो गई। वृद्धिगत उदर देखकर विवाह तुरन्त कर दिया गया। उदरस्थ फनस फल से ही एक सी पुत्र उत्पन्न हुए (9)।

मनोवेग के कहने पर बाह्यणों ने यह स्वीकार कर लिया कि उनके पुराणों में इस प्रकार का वर्णन मिलता है। तब मनोवेग ने कहा- यदि फनस के आलिंगन से पुत्रों की उत्पित हो सकती है तो मेरी माता के पुरुष के स्पर्ध मात्र से पुत्र की उत्पित को बाप असत्य कैसे मान सकते हैं। जहां तक बारह वर्ष तक माता के गर्भ में रहने का प्रवन है, वह भी व्यर्थ है। कहा जाता है, अर्जुन ने सुमद्रा को चक्रक्यूह की रचना का वर्णन किया था जिसे अभिमन्यु ने सुना था, तब मैंने तपस्थियों के बचन क्यों नहीं सुने? (10)

मय ऋषि कोपीन कषा और संबोदरि

इसी तरह बारह वर्ष तक गर्भ में रहने बाली बात भी प्रमाणित हो जाती है। एक समय वस नामक मुनि ने अपनी कोपीन एक तालाब में घोई। उस कोपीन में लगा हुआ बीर्य जल में बिर गया जिसे एक मेंडकी ने पी लिया। उसके पीने से मेंडकी गर्भवती हो गई। यथासमय उसके वर्ष से एक सुन्दर कन्या उत्पन्न हुई (11)। परन्तु मेंडकी ने उसे कमल के पत्ते पर रख दिया यह सोचकर कि यह शुभ्मसाथा कन्या उसकी जाति की नहीं। जब मय (यम) मृनि वहां आया तो उसने उस सुंदरी की दुरन्त है। पहचान लिया कि यह मेरे:वीर्य

से उत्पन्न हुई है। ऐसा समझकर उस पुत्री को ग्रहण किया और उसका ढंग से पासन-पोषण किया। तरुणी होने पर उस कन्याने रजस्वलावस्था में पिता के बीर्य से संसी कोपीन को पहिनकर स्नान किया। स्नान करते समय उस कोपीन में लगे हुए बीर्य का एक बिन्दु उसके गर्भ में चला गया और वह गर्भवती हो गई। मुनि ने यह जानकर उस कर्या का गर्म अपने तपोबल से स्तंमित कर दिया (12)। वह गर्स सात हजार वर्ष तक उस कन्या में थना रहा। बाद मे उस सुन्दरी को संकाञ्चिपति रावक ने मदोदरि के नाम से स्वीकारा। उसी से फिर इन्ब्रजीत नामक पुत्र उत्पन्न हुआ (13) । अर्थात् इन्द्रजीत वस्तुतः सात हजार वर्ष पूर्व ही गर्भ मे आ चुका था। मनोवेग ने कहा कि जब वह सात हुजार वर्ष तक गर्भ भें रह सकता है तो क्या मैं बारह वर्ष नहीं रह सकता ? तुम दूसरों के दोष मानते हो पर स्वयं के दोष को नही देखते। यह सुनकर ब्राह्मणों ने कहा- यह वात भी हम स्वीकार किये लेते हैं। पर तुम यह बताओ कि उत्पन्न होते ही तुमने तपोग्रहण कैसे किया ? तथा तुम्हारी मां परिणीता होते हुए भी कन्या कैसे कहलायी ? मनोवेग ने उत्तर दिया – सुनिए।

पराशर ऋषि और योजनगन्धा कथा

प्राशर नाम के ऋषिवर ने कभी पूर्वकाल में किसी कार्यवश् गगा नदी की पार किया। नौका चलाने वाली **धीवर वालिका** थी जो अत्यन्ते सुदर नेत्रा वाली पीनस्तनी थी। उसका नाम मस्स्यगंधा था। पराशर उसके रूप पर आसवत ही गये, मदन बाणीं से विद्व हो गये और उससे रति-याचना करने लगे। धीवर कन्या सत्यवती तपस्वी के अभिमाप के भय से इस नीचकृत्य करने के लिए तैयार तो ही गई पर उसे शमं और निन्ता का भय बना ही रहा। इसे दूर करने के लिए पराशर ने दिन में ही अपने तपस्तेज के प्रभाव से घनधीर अधिकार भरी राजि कर दी और मस्स्यनंद्धा के स्थान पर उसका शरीर स्मन्धित कर दिया और वह योजनगन्धा हो गई। वह अटा-जूट से अलकृता, उत्तमांगी, विद्रुम-कुण्डला भूषणों से संसक्ता, बह्मसूत्रघारिणी भी बन गई और फिर उन्ही पराशर ऋषि ने स्वतन्त्रता पूर्वक उससे सभीग किया। योजन-गन्धा ने पराशर ऋषि से वर माना तब वह अक्षतयोनि बनी रही (14-15)। उसी बीवर कन्या से व्यास ऋषि का जन्म हुआ। बाद में उसी का विवाह भीव्य पितामह के पिता महाराजा शास्त्रं से हुआ । व्यास की ही हैपायन और कृष्य कहने लगे। योजनगन्या किया सत्यवती के गर्म से उत्पन्न सान्तन के पुत्र विविश्ववीयं निःसंतान मरे। अतः माता की बाला से विविश्ववीयं की अभ्यका जीर अझ्बालिका नामक विधवा परिनयों से नियोग कर इन्होंने क्रमशः शृतराख्ट्र और पाष्ट्र को उत्पन्न किया । व्यास तपस्त्री बन गये । पाण्ड्र ने कुन्ती का वरण किया। बरण करने के पूर्व ही कुन्ती ने सूर्य के सहवास से कर्ण को उत्पन्न किया।

मनीवेग ने कहा— व्यास जी जन्म लेते ही तपस्त्री हो गये तो मैं तपस्त्री क्यों नहीं हो सकता? व्यास जी के उत्पन्न हो जाने पर भी योजनगन्धा 'अक्षतयोंनि' बनी रही। कर्ण को उत्पन्न करने पर भी कुन्ती कन्या बनी रही नो मेरी माता कन्या रहे इसमें आपको सदेह क्यों हो रहा हैं? (15)

उद्दालक और चन्द्रमती कथा

पूर्वकाल में उद्दालक नामक ऋषि ने अपने तप के प्रभाव से सुरेन्द्र को भी कंपित कर दिया था। एक बार उनका वीयें स्वप्नावस्था में स्वलित ही गया जिसे गंगाजी मे कमलपक्ष पर स्थापित कर दिया गया। उसी दिन रघुराजा की पुत्री जन्त्रमती रजस्यला होने के बाद चतुर्थ स्नान करने के लिए गंगास्नान की भायी। उसने स्नान करते समय वह वीर्यसहित कमल सुध लिया जिससे तत्क्षण गर्भाधान हो गया (16) । यह बृत्तान्त चन्द्रमती की माता ने रखुराजा से कहा। उसने क्रोधवश चन्द्रमती को जंगल में छुडवा दिया। वहां उसने तृष्विन्दु नामक ऋषि के तपीवन में नागकेषु नामक पूत्र की जन्म दिया और उसी समय अपने पिता को खोजने की आजा देकर उसे मंज्या में रखकर गंगा में प्रवाहित कर दिया । सयोगवनात् स्नान करते समय उद्दालक ने मंज्या की देखा और उसे पकडकर खोला तो पाया कि वह उसी का पुत्र है। चन्द्रमती भी पुत्र को खोजती हुई वही पहुंच गई। उद्दालक ने उससे बिवाह करने की इच्छा व्यक्त की, परन्तु चन्द्रमती पिता की अनुमति पूर्वक ही विवाह करने की तैयार हुई। उदालक ने तुरन्त रधु के पास जाकर स्वीकृति ते ली और पून: कुमारी करके चन्द्रमती के साथ विवाह कर लिया। यह कया कहने के बाद मनीवेग ने कहा कि जब पुत होते हुए भी चन्द्रमती कन्यां रहं सकती है तो मेरी माता को कन्या मानने में आपको कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए (17)।

बाद में वादशाला से निकलने पर मनोवेंग ने अपने अभिन्न मित्र पवनवेग से कहा- आक्तां है, ये पुराब परस्पर विरुद्ध और असंभवनीय बातों पर कोई विचार नहीं करते। फनस वृक्ष के आलियन से यदि स्त्री के पुत्र होता तो मनुष्य के स्पर्धमान्न से केलें भी फलने लगती। गों के संग से गों का गर्भवती हो जाना, मेंकृकी से अनुष्य की उत्पत्ति होता, शुक्र के स्पर्ध मान्न से सन्तान होना, सात हजार वर्ष तक मंदोवरि द्वारा गर्भ को बनाय रखना, रितकाल में ही प्रत्र का जायकू होना और उसे जंगल में भेज देना; शुक्र सहित कमल के सूधने से गर्भाद्यान हो जाना, आदि जैसी बेतुकी बार्ते इन पुराणों में ही मिलती हैं। ये सब उपहास के कारण हैं। अपनी विवेक बृद्धि से इन कथाओं की सत्यता-असत्यता पर गंभीरता पूर्वक विचार करो। यह सुनकर पवनवेग निक्तर हो गया।

द. अष्टम संधि

कर्णोत्यस्ति कथा

मनोवेग ने पवनवेग से कहा- जैन पुराणों के अनुसार कर्ण की उत्पत्ति की कथा इस प्रकार है। सोमप्रम नाम का एक राजा था। उसके दो पूत्र ये-शान्तन् और विचित्रवीयं । विचित्रवीर्यं के तीन पुत्र हुए- जात्यन्य धृतराब्द्र, पाण्डु जीर विदुर। पाण्डु पाण्डुरोग से पीड़ित ये और रित संसर्ग करने की उनकी क्षमता नहीं थी। एक दिन किसी मनोहर उपवन में कीड़ा करते हुए उसने लता मण्डप में पड़ी हुई एक काममुद्रिका (अंगुठी) देखी। पाण्डु उसे अपनी अंगुलि में डालकर देख ही रहा या कि उसका मानिक विद्याधर चित्रागद बहां आ पहुंचा । पाण्डु ने तुरन्त उसे वापिस कर दीया (।) । पाण्डु ने पूछा-भित्र, तुम जिल्ल मन दिखाई दे रहे हो, शरीर भी कुश लग रहा है। इसका कारण क्या है ? उत्तर में पाण्डु ने कहा- मित्र, सूर्यपुर राजा अन्धकवृष्टि की अतिसुन्दरी कन्या कुल्ती है। पहले उसने उसका विवाह मेरे साथ करने का निश्चय किया या परन्तु मुझे पाण्डुरांग देखकर अब उसका विदार बदल गया है। अब मैं उसकी वियोगाग्नि से संतप्त हूँ। तब चित्रांगद ने कहा मेरी इस काममुद्रिका को पहन लो जिससे तुम कामदेव के समान मुन्दर होकर उसका उपसोग कर सकते हो। जब वह गर्भवती हो जायेगी तो अन्ध न्यृष्टि राजा उसे तुम्हें दे देंगें (2)।

प्रावह उस अंगूठी को पहिनकर अपने ससुर के घर गया। वहां प्रच्छक्त होकर कुन्ती से मिला। कुन्ती उसे देखकर कंपित हो गई। सुन्दर गरीर देखकर अनुरक्त हो गई। पाण्डु ने उसका सात दिन तक उपभाग किया जिससे कुन्ती गर्भवती हो गई। तब पाण्डु वहां से वापिस आ यया। कुन्ती को गर्भवती जानकर उसकी भाता ने गृप्त रूप से उसकी प्रसृति कराई। सुन्दर लक्षणों से गृप्त पुत्र तृत्रा जिसे उसने मंजूबा में रखकर गंगाओं में प्रवाहित कर दिया। उसे बंधापुर नरेश आदित्य ने पकड़ शिया। उद्यादित करने पर उसे एक सुन्दर सासक विखा। वह अपने हाथों से अपने कणं पकड़े हुए था। आदित्य पुत्रहीन था। अतः उसने उसका 'कर्जं नाम रखकर उसे अपना पुत्र स्वीकार कर सिया। आवित्य के देहावसान के बाद बंधापुर का राजा कर्णं ही हुआ। इसर कुन्ती को पाण्यु में आसक्त जानकर उसका विवाह पाण्डु के साथ कर दिया गया। माही का भी विवाह पाण्डु के साथ ही गया।

वाष्ट्रव कथा

श्वास्त्राम् का विवाह यान्वार नरेक की पुत्री नांवादी के साव हुआ। वुनीसनांविक सी पुत्र धृतराष्ट्र और गांधारी से हुए और युविष्ठिर, भीम और

अर्जुन कुन्ती से तथा नकुल और सहदेव माद्री से उत्पन्न हुए। आदित्यज कर्ण के साथ सी पुत्र प्रतिनारायण जरासिन्धु के अनुसायी में तथा पंत्र—पाण्डव नारायण अिक्कण की सेवा में रहते में। वुर्योशनादि की पराजित कर पाण्डवों ने अपना राज्य वाणिस लिया (4)। चिरकाल तक राज्य करने के काई क्ष्मिक्त की निल्मिक्षा ग्रहण कर ली। सुख-पुःख मान-अपमान और शत्रु-निक्क से समझौती होकर शान्त चिता से वावीस परीवहों को और मयंकर उपसर्गों की सहते हुंए शत्रुंजय पर्वत से युविष्ठिर भीम और अर्जुन ने मोक्ष प्राप्त किया तथा नकुस और सहदेव सर्वार्थ सिद्धि पहुंचे। वे भी दूसरे भव में मोक्ष प्राप्त कर लेंगे। इस प्रकार कर्ण की उत्पत्ति—कथा उपलब्ध होती है। वह सूर्य का पुत्र नहीं है। यदि धातु रहित देवों के द्वारा स्त्रियां नर को उत्पन्न करनी है तो पाषाण के द्वारा पृथ्वी में आन्यादिक उत्पन्न होता चाहिए। संसार में सभी प्रकार के संबंध होते हैं, अधित संबंध नहीं होते। स्त्री का संविभाग अविश्वसनोय है। योजनगन्धा धीवरी का पुत्र व्यास दूसरा होगा और सत्यवती पुत्र व्यास दूसरा होगा। नाम साम्य के कारण लोगों ने अलीक को अपना लिया (5)।

महाभारत कथा समीक्षा

महाभागत में स्थास ऋषि ने कदासित् यह सोसा होगा कि विरद्धार्थ प्रतिपादन करने वाला उनका बनाया असंबद्ध गास्त्र महाभारत भी प्रसिद्ध हो जायेगा। ऐसा सीचकर व्यासजी ने गंगा के किनारे अपना ताम्रपत्र बालुपुञ्ज में गाड़कर स्नानार्थ गंगाजी में उतर गये। उनका अनुकरण कर बहुत लीग इसी तग्ह बालुपुञ्ज बनाकर गंगास्नान करने लगे। गंगास्नान से वाणिस आने पर व्यासजी ने असख्य बालुकापुञ्ज देखे और अपना ताम्रभाजन नहीं वाज सके। समस्त लोक को मूख समझकर उन्होंने बलीक पढ़ा कि जो लीग परमार्थ का विचार न कर दूसरों का अनुकरण करते हैं वे मेरे ताम्रभजन की तरह अपना कार्य नष्ट कर सेते हैं। इस मिष्याज्ञानी ससार में गायद ही कोई विचारवान् होगा। अतः मेरा यह विदद्ध गास्त्र भी लोक में आदरणीय हो जायेगा। यह सोचकर व्यास जी बड़े प्रसन्न हुए (6)।

यह कहकर मनीवेग ने हंसकर पुनः कहा पत्रनदेग से कि इसी प्रशार की कुछ और पौराणिक कथायें सुनाता हूँ। यह कहकर मनःवेग ने रक्ताम्बर भेष घारणकर पंचम द्वार से पटना में प्रवेश किया और वादशाला में जाकर चेरो बजाकर स्वर्णासन पर बैठ गया। ब्राह्मण के बाने पर उसने बही पूर्ववत् अज्ञानसा बताई। उनके बाग्रह पर उसी प्रकार युनः मनोवेग ने अपनी बात कही (7)।

श्वाम क्या

इन दोनों पूर्व देशवर्ती विकासपुर के उपासक हैं, भगवान वृद्ध के भक्त हैं।

एक दिन बीढ विक्षुओं ने बिहार में अपने चीवर सूखने डाल दिसे और हन वीनों की लाठी देकर उनकी रक्षार्य खड़ा कर दिया। इतने में दो प्रुगाल आये। उनको देखकर हम सोग मयवीत होकर स्तूप (हीले) पर चढ़ गये। हसारा विल्लाना सुनकर बौद्ध मिक्ष दौड़े पर म्युगाल हम दोनों सहित उस टीले को लेकर जाकाच में उड़ ग्ये (8)। बसीस योजन दूर पहुंचकर उन प्रवासों ने दीलें को जमीन पर रखा ओर हम लोगों का मक्षण करने के लिए उद्यत हुए। इसी वीच दो शस्त्रधारी मिकारियों को उन्होंने देखा और भगमीत होकर वे वहां से माग गर्ये। तत्पत्रचात् हम लोग उन शिकारियों के साथ सिंब नामक देश में आकर विचार करने लगे कि न देश जानते हैं, न विदेश । यहां क्या करेंगे ? इससे तो अच्छा यही है कि इम बुद्ध भाषित तप करना प्रारम कर हैं। रक्त चीवर हैं ही, किर पर बाल भी छोटे छोटे हैं। इन्हीं के माध्यम से भर घर मोजन करते रहेंगे । यह सोचकर वैसा ही करते-करते इस नगर में बहुत समय के बाद पहुंच पाये। यह सुनकर बाह्मणों ने कहा कि सुम लोग तपस्वी होते हुए भी मूठ बोल रहे हो। मनोवेग ने कहा- यदि आप हमारे इन वचनों को झूठ मानते हैं तो आपके पुराणों में भी इसी तरह जो असत्य और बेतुकी बातें हैं उन्हें भी मुठ मानना पड़ेगा। बाह्मणों ने कहा- यदि ऐसा है तो तुम निर्मय होकर कहा (9)। मनोवेग ने तब कहा- सुनो।

लक्ष्मण — सीता सिंहत भगवान राम ने वनवास स्वीकार किया। खर द्रणणिंद रामसों को मारकर वे वन में रहते थे। तब राबच ने छब्मवेषी स्वणं हिरण का रूप धारणकर रामचन्द्रजी को सुभाकर, सीता का हरण कर लंका चना गया। बाद में बनशाली बासी को मारकर वानरों सिंहत सुगीव को राजा बनाया। सीता की खोज में हन्मान को भेजा। हनुमान ने संका में सीता को देखकर रामचन्द्रजी से कहा। रामचंद्रजी ने हनुमान को संका के विष्वंसन का भावेश दिया। बंदरों ने बड़े बड़े पर्वतों और शिलाखण्डों को उखाड़कर सेतु बनाया और सुगीव सेना सिंहत श्रीलंका में प्रदेश किया (10)।

मनीवेग ने कहा— रामचन्द्रजी का चरित्र रामायण में इसी प्रकार है या नहीं? बाह्यणों ने कहा— रामायण की इस कथा को कीन अस्वीकार कर छकता है? तब मनोवेग ने कहा— पडितवर, एक—एक बंदर पांच—पांच पवंतों नीला के साम आकाशमार्ग में ले जावें तो बड़े—बड़े प्रकृगाल पदि एक छोटे-से टीले को उठाकर आकाश में ले जावें तो क्या उसे असत्य मानेंगे? तुम्हारा कथन सही है और हमारा कथन झूटा है, यह विचारशूम्यता का ही खोतक है। इसी तरह न सुन्नीव बानर था और न रावण राक्षस था। ये सभी बानरवंशी और राक्षसवंशी वें (11)।

विद्याधर वंशीत्यसि कथा

इसके बाद लेखक ने राक्षस वंशादि के विषय में कुछ विस्तार से महा है। प्रथम जिनेश्वर की प्रणामकर घरत ने राज्य संचालन का प्रारंभ कर दिया। धमनान काविभाध भी देश-देशास्तर भ्रमण करते रहे। कच्छ, महाकच्छ आदि देशों के राज्य तनकी स्तुति करने आते रहे। उन्होंने भगवान से उपदेश आदि देने की प्रार्थना की। लोगों के आने से कीलाहल उत्पन्न हुआ जिमसे घरणेन्द्र का आसन कंपित हो गया। वह समझ गया कि यह भगविज्ञनेन्द्र के आने ना संकेत है। घरणेन्द्र अपने विद्यावल से सुन्दर रूप धारणकर भगवान के पास पहुंचा। सुर, नर, विद्यावरों ने भगवान की पूजा की। इस्वाकुवंण की उत्पत्ति भ. आदिनाथ से ही हुई। वहां निम, विनिध्न को धरणेन्द्र ने विद्यावर्ष देशे। इन कोनों के वंशा में उत्पन्न पुरुष विद्यावर्ष होने के कारण विद्यावर कहलाये। इसमें विद्युद्द , वृदरथ आदि संकडों विद्यावर हुए (12)।

राक्षस वंशोत्पत्ति भया

इसके बाद ऋषभदेव का युग समाप्त हुआ और अजितमाय का युग आया। अजितनाथ के ही पूत्र सगर चक्रवर्ती थे । इक्ष्माकूबंग के समाप्त होने पर उससे राशसबंश की उरपित हुई। भरतक्षेत्र के विजयार्थ की दक्षिण श्रेणी में एक श्वक्रवाल नाम का नगर है। उसमें पूर्णधन नामक विश्वाधर राजा था। असने विहायस्तिसक नगर के राजा स्लोचन से उमकी कन्या उत्पलमती मागी पर उसने वह कत्या सगर की दे दी। सुनोचन के पुत्र सहस्रनयन की विद्याधरी वह अधिपति बना दिया। सहस्र यन ने पूर्णमेघ की मार डाला और उसके पुन्न मेघबाहन को निष्कासित कर दिया । मेघबाहन भयवीत होकर अजितनाय के समवगरण में पहुंचा। इन्द्र ने मेघवाहन से उसके भय का कारण पूछा। मेघबाहन ने कहा-सगर का सहयोग लेकर सहस्रनयन ने मेरे वंश का जन्मलन कर विया है और इसी भय से मैं हंस-विमान से उडकर यहां आया हैं। इस बीच मध-वाहन का पीछा करते हुए सहस्रनयन भी समबसरक में पहुंच गया अहं कार के साथ । परन्तु भ. का प्रभामण्डल देखकर उसका अहकार चूर-पुर हा गया। उसने अजितनाथ को प्रणाम किया। सहस्रनयन और मेखबाहन बीनों पारस्परिक वैरमाय को छोड़कर भगवान के चरणों में बैठ गवे। तब गणधर ने भगवान के इन दोनों के वैर का कारण पूछते हुए जनके भवास्तरों को जानने की इच्छा ध्यक्त की । अपने भवान्तर जानकर मैंघवाहन और सहस्रनयन दोनीं परस्पर मिल बन गये। राक्षसों के इन्द्र भीम जीर सुभीम भी मेनबाहन से स्नेह करने खये (3-14)।

षाक्षसेन्द्र भीम और सुभीम ने स्नेहवंश नेषकाहन की श्रीफल जैसे आकार शाली भीमंका का राज्य सौंप दिया। यह श्रीलंका तील गोजन संबी और 8: योजन चौड़ी नगरी है जिसमें राक्षसवंक्षियों का निवास है। उन्होंने उसे हार, अलकार और राक्षसी विद्या भी दी। इन सधी को लंकर वह जिक्ट्राचल के नीचे बसी धीर्लका में पहुंचा और वहां राज्य करने लगा। राजा रितमयूख की पुत्री सुप्रका से उसका निवाह हुवा और उससे महारक्ष नामक पुत्र उत्पन्न हुंजा। कालान्तर में मेचवाहन ने महारक्ष को राज्याभिष्यक्ष कर्म दीक्षा धारणकर भी। महारक्ष की पत्नी विमलामा से तीन पुत्र हुए- अमररक्ष, उवधिरक्ष और समुख्या। महारक्ष की इसी सम्तान-परम्परा में मनोवेग नामक राक्षस के राजस नामक प्रभावशाली पुत्री हुआ जिससे राक्षस वंश्व की उत्पत्ति हुई। राजस से आदित्यकीति और बृहत्कीर्ति हुए। इसी परम्परा में मृतिसुद्रत तीर्य काल में सुगीव, भाली, सुमाली, दमानन (रावण), कुम्मकर्ण, विभीषण, चन्द्रनसा, इम्ब्रजीत और मेधवाहन आवि विद्याघर भी हुए (1)।

बानर बशोस्पत्ति कथा

विजयाधै पर्वत की दक्षिण श्रेणी में मैचपुर नामक नगर था। उसका अतीन नामक राजा था । उसका श्रीकण्ड नामक पुत्र या और महामनोहरदेवी नामक बहित थी। इसी तरह रत्नपुर नगर में पुष्पोत्तर नामक राजा था और उसका पदमोस्तर नामक पुत्र और पदमाभा नामक पुत्री थी। श्रोकण्ठ ने अपनी बहिन पद्मोलर को न देकर विमलकीति को दी। इससे पुष्प त्रर को धित हो गया। पारस्परिक दर्शन से श्रीकण्ठ और पद्माभा में प्रेम हो गया। यह जानकर पुष्पोत्तर और भी कांधित हो उठा और उनका पीछा किया। श्रीकण्ठ उसे आते देखकर अपने बहनोई विमलकीर्ति (कीतिधवल) की शरण में श्रोलंका पहुंचा। विमलकीर्ति के प्रयास से युद्ध टल गया और दोनों का विवाह हो गया। तब श्रीकार से विमलकीति ने कहा-विजयार्ध पर्वत पर तुम्हारे अनेक शत् हैं। अत: अब तुम यही रहो । यह कहकर महाबृद्धिमान आनन्द नामक मन्त्री से विचार-विमर्श कर उसे बामरहीप दे दिया । श्रीकण्ठ ससैन्य वानरद्वीप पर राज्य करने सल पड़ा। वानग्द्वीप के मध्य किष्कु नामक पर्वत मिला। उसपर विविध प्रकार के सुन्दर वृक्ष दिखाई दिये। श्रीकण्ठ वहां इच्छानुसार कीड़ा करता रहा। तदनन्तर वहां उसने कीड़ा करते हुए प्रसम्रचिरत अनेक वानरों को देखा। उनके साथ भी उसने अपना समय विनाया। बाद में उसी पर्वत पर उसने स्वर्गपूरी जैसा किष्कपुर नामक नगर बसाया और बही पद्माधा प्रिया के साय राज्य करने लगा (16)।

तदनन्तर श्रीकष्ठ ने वद्धकष्ठ को राज्य देकर मृतिदीक्षा से ली। इसी वंशपरम्परा में समरमण नामक राजा हुआ। उसने मुणवती से दिवाह किया। विवाह के समय अनेक प्रकार के चिन्नों के साथ बानरों के भी विविध चिन्न विद्याप्तरियों ने बनाये। उन वानरों के चिन्नों की देखकर मुणवती भय से कंपित हो गयी, मूछित हो गयी। उसकी यह अबस्या देखकर अमरप्रभ ने वानर-चित्र बनाने वाने को दिण्डल करना चाहा पर वृद्ध मन्त्री ने यह उनझाया कि ये चानर कुलपरम्परा से मांगलिक चिन्ह के रूप में प्रयुक्त होते नाथे हैं। इन्हीं के नामपर वानरद्वीप है। श्रीकण्ठ इन दानरों से अस्यस्त प्रेम करते थे। अमरप्रभ यह सुनकर सन्तुष्ट हुआ और वानरों के चिन्ह बनवाकर मुकुट में घारण किया, ध्वजाओं में चित्रित किया। अमरप्रभ के पुत्र कपिकेतु आदि ने भी वानरों को मांगलिक प्रतीक मानकर उनका आदर किया। इसी से वानरवस चला। रावण सुपीव, निम, विनमि आदि विदास इसी बानरवंश से संबद हैं (17)।

किष्कत्या नगरी में वालि, युक्तीव विद्यापर थे। उनकी श्रीप्रणा नामक विहिन थी। श्रीप्रणा को रावण अपनाना जाहता था पर वाली तैयार नहीं हुआ। युद्ध का समय आया तो उसने संसार के स्वभाव का परिज्ञानकर जैन थीका घारण कर ली। फिर सुप्रीव ने श्रीप्रणा को रावण के पास पहुंचा विया। खरदूवण ने रावण को बहिन चन्द्रनखा का अपहरण कर लिया। एक बार मुनि वाली के प्रताप से रावण का पुष्पक विमान अकाश में वक गया। तब दशानन ने कैशाश पर्वत को उखाइकर ममुद्ध में फेंबना चाहा। पर काली सुनि ने पर्वत को अपने पर के अंगूठे से दबा दिया जिससे दशानन विचलित हो गया। चूंकि ममार को अपने प्राप्त से शब्दायमान कर दिया था, इसलिए दशानन को तभी से रात्रण कहा जाने नगा। वाली का यह प्रभाव आनकर दशानन ने उसे प्रणाम किया और विपत्ति से मुनित पाई।

अग्निशिख नामक राजा ने मुग्नीय के साथ अपनी पुत्री मुतारा का विवाह किया। साहसगित विद्याधर भी तारा के साथ विवाह करना चाहता था पर उमकी अल्पायु जानकर अग्निशिख ने उसे तारा नहीं दी। बाद में रावण के साथ सहस्ररिण का युद्ध हुआ और फिर सहस्ररिण ने मुनिदीक्षा धारण कर ली। बाली जैसे महामृनि दारा सुग्नीय की पत्नी तारा के हरण को बात जो वैदिक पुराणों में कही गई है, कहां तक ठीक है? सहस्रगति ने मुतारा की पाने के लिए हिमवत पर्वत पर विद्या-सिद्धि प्राप्त करना प्रारंभ कर दिया (18)।

एक दिन जब मुग्नीय बनकीड़ा के लिए गया या सहस्रगति ने विश्वाबल से उसकी प्यारी पत्नी सारा का हरण करने का विधार कर सुग्नीय जैसा ही रूप धारण कर तारा के पास पहुंच गया। इतने में सुग्नीय भी वहां बनकीड़ा से वापिस हो गया। वहां बहु अपने ही समान कृतिय सुग्नीय को तारा के पास बैठा देखकर कोधित हो गया। बोनों युद्ध की तैयारी करने सगी। सभी लीग समक्ष्य देखकर किंकतंत्र्य विमूह हो गये। अंग कृतिय सुग्नीय के पास गया और अगद अपनी माता,तारा के कहने पर सुग्नीय के पास गया। सात सात अजीहिणी सेना दोनों के पास पहुंच नई। बालि के युन्न चन्द्ररिक (सिस्किकरण)

ने वह प्रतिक्षा की कि जो भी तारा के अवन-द्वार पर जस्येमा वह मेरी तलवार से मार विया जायेना। यह सुनकर सस्य सुनीव विराधित के माध्यम से राम के पास पहुंचा। राम ने उसकी सहायता का बचा विया। इतिम सुनीव के साथ राम, नक्ष्मण खौर संस्य सुनीव का युद्ध हुआ। इतिम सुनीव ने संस्य सुनीव की शायल कर नगर में प्रवेश किया। फिर उसका युद्ध राम से हुआ। राम को देखकर ही उसकी वैताली विचा लूप्त हो गई और वह यथार्थ सहसगित के रूप में आ श्या और राम के साथ युद्ध करने लगा। राम ने अन्ततः उसका वध कर दिया। सुनीव की तारा मिल गई और वह उसके साथ रमण करने लगा। रक्षण करते करते 'सात दिन में सीता को खोज निकार्यूगा' यह प्रतिका भी वह भूण गया। लक्ष्मण ने जाकर उसकी उसकी प्रतिक्रा का स्मरण कराया। इसके पूर्व सुनीव से बार-यूवण का युद्ध हुआ था और सुनीव पाताललंका चला गया था। वाद में वह राम के पास सहायतार्थ आया था। जाम्बूनव ने उसकी सहायता की थी (19-21)।

इस प्रकार परदु: व हारक राम के कारण सुप्रीव की अपनी पर्ती से पुनिमलन हुआ। राम ने बिट सुप्रीव को मारकर सत्य सुप्रीव का दु: ब हरण किया। परसारारमण का वैसा ही फल होता है खेला बिट सुप्रीव को मिला। ताराहरण इसी रूप में प्रसिद्ध है। पवनवेग को वैदिक पुराणों में प्रसिद्ध ताराहरण अयुवत प्रतीत हुआ। वानर उनका हरण करें यह तब्यसंगत नहीं सगता (22)।

९. नवम संधि

मनोवेग मै पवनवेग से कहा कि इसी तरह की कुछ और वेतुकी पौराणिक कथायें तुम्हें बताता हूँ। यह कहकर उसने श्वेताम्बर केष धारणकर पटना नगर के छठे द्वार से प्रवेश किया और भेरी बजाकर सिहासन पर बैठ गया। ब्राह्मधा बाद करने आये और उससे नाम, गुब, देन आदि के बिष्य में पूर्ववत् पूछने लगे और मनोवेग ने पूर्ववत् ही उस्तर दिया। बाह्मणों के आग्रह करने पर मनोवेग ने अपनी कथा मुनाई।

कविट्ठणारम कथा

हम सोग ग्वाले के लडके हैं। किसी अय से अयवीत होकर स्वयं ही यह तप ग्रहण किया है। हमारे पिता आभीर देश के मोट्टणु गांव के रहने वाले हैं जोर भेड़ों (सुदुरस्तेनु) को पालने का अपवसाय करते हैं। एक दिन भेड़ों की रक्षा करने वाला नीकर ज्वरप्रस्त हो गया तो हमारे पिता ने हम दोनों भाइयों को वन में भेजा (1)। उस वन में एक संदर कवीठों से लदा कवीठ वृक्ष देखा। मैंने अपने भाई से कहा- तुम भेड़ों को देखों, मैं कवीठ खाकर साता हूँ और पुन्हों भी से आर्कना। भाई के वन जाने पर मैंने देखा कि कवीठ का पेड़ बहुत केंचा है। उन पर चढ़ना संभव नहीं है। तब सैने अपने हाब से शिर की काटकर पेड़ पर फेंक दिया। शिर ने कवीट खाकर मेरी असा-पृष्ति की और बहुत सारे फेल दोनों को तोड़े बिना ही नीचे गिरा दिये। मेरी मुझा-पूर्ति देखकर शिर पेड़ पर से नीचे गिरकर मेरे शरीर में पुन: जुड़ गया। फिर मैं उन कवीठों को लेकर माई को खोजने निकल पड़ा। वहां देखा तो माई सो रहा या और भेड़ों का कुछ भी पता नहीं था (2)।

भाई को जगाकर मैंने पूछा तो उसने कहा- मुझे भेड़ों के विषय में कुछ भी पता नहीं है। मैं तो यहां पेड़ के नीचे सो गया था। इसा भीच में कहां गई, नहीं मालूम। यह जानकर मैं बहुत भयचीत हो गया और भाई से कहां कि अब हम लोग घर कैसे जायेंगे बिना मेड़ों के। पिताजी कोशित होंगे और पीटेंगे। अतः अपने देश न जाकर बवेतान्यर साधु का मैंच धारण कर, शिर मृड़ाकर, जंबल और लाठी (करवण्ड) लेकर आज हम आपके नगर में आये हैं। यह हमारा मुल परम्परागत धर्म है। इसमें पूरा मुख भी है। बाह्मां ने कहा-नुम लोग तपस्वी का भेष धारण किये हो और असस्य बोलते हो (3)।

रावण दस शिर कथा

श्वेतपटधारी मनोबेग ने कहा- रावण ने तिलीकाधिपति शिव की विविध भावों से अर्चना की और अपने नी मस्तक काटकर वर माचना की। फिर बीस हाथों से उसने दिव्यताद हस्तक नामक संगीत पैदा किया। तब महादेव ने पार्थनी की ओर से अपनी दृष्टि हटाकर उसकी ओर देखा और वरवान दिया। रावण ने उसी से अपनी दृष्टि हटाकर उसकी ओर देखा और वरवान दिया। रावण ने उसी से अपने किरों को अपने कंधों पर चिपका लिया (4)। रामायण में यह सब लिखा है या नहीं? जब रावण के कटे हुए नी शिर संघटित ही सकते हैं तो क्या मेरा एक शिर संघटित नहीं हो सकता? यदि जिब में किर खोड़ने की प्रकित होती तो तपस्वियों द्वारा काटा गया अपना सिंग नहीं जोड़ लेते? यह सब माद अम है (5)।

र्वाप्तमुख और जरासम्ब कवा

मनीवेप ने पुन: अन्य पुराणों की भी इसी तरह की वेतुकी बातों को स्पष्ट किया। उसने कहा-श्रीमित्रा नामक ब्राह्मणी के ब्रह्ममुख नामक पुत्र था। उनका केवल मस्तक था, हाथ-पैर नहीं था। वह श्रुति-वेद का बाता और धर्म का आवरणक था। एक दिन अगस्य मुनि को आया हुआ देखकर उसने उनसे विनम्न अनुरोध किया कि हे नृतिवर, आप कृपया मेरे घर भोजन कीजिए। अवस्त्य युनि ने कहा- तुम्हारा घर कहा है ? घरवाला बही कहलाता है जिसमें महिला हो। तुम्हारे पिता का चर तुम्हारा घर नहीं है। अतः कुमाराबस्था में वान महीं विया जा सकता है। सब विवस्ता के अपने भाता-पिता से कहा कि वे उसका विवाह कर दें। माता-पिता ने कहा-तुम्हें अपनी पुत्री कीन देगा? फिर घी प्रयत्न करके बहुत सारा धन-पैसा देकर किसी निर्धंय की पुत्री के साथ विवाह कर दिया (6) ।

दिधमुख ने माता-पिता से कहा- मैं तो अशरीरि होने के कारण कुछ कर नहीं सकता अतः उसका भरण-पोषण आपको ही करना होगा। माता-पिता ने कहा-जो हमारे पास अर्थ संचित या वह तुम्हारे विवाह में समाप्त हो गया। अतः क्षव तम अपनी पतनी का भरण-पोषण स्वयं करो। दिधम् स ने अपनी पत्नी से कहा- माता- पिता ने अपने को घर से निकास दिया है। अब बाहर रहकर जीवन ध्यतीत किया जाये । असम्मान पूर्वक जीना भी कोई जीना है। यह सब सोचकर पत्नी ने दिखास का मस्तक छोकें में रखकर सभी की दिखाते हुए नगर-ग्राम में व्यने-फिरने लगी और बांजन-वस्त मांगती हुई उज्जीवनी नगरी में पहंची। वहां अपने पति सहित उस छोंके को कैरों की झाड़ी पर अथवा जुआड़ी घर की बंटी पर (टिटामंबिर) श्वकर वह नगर में भिक्षा के लिए चली गई। इसी बीच बहां दो जुआरियों में युद्ध हो गया। दोनां ने एक दूसरे के बार काट दिये (7) । दोनों जुड़ारियों के वे सिर नोचे गिर गये । उनकी तलवारों के लगने से दिश्रम्य का छींका भी नीचे कटकर गिर गया। वह गिरते ही एक घड़े पर नि:संधिक्य लग गया। शिर के जुड़ जाने से वह काम करने में भी समर्थ हो गया। मनोबेग ने कहा कि क्या वाल्मीकि का यह वर्णन सही है ? ब्राह्मणों ने कहा-यह बिलकुल सही है। तब मनोवेग ने कहा-यदि दिध मुख का शिर जुड सकता है तो मेरे शिर के जुड़ने में आपको सन्देह क्यों हो रहा है ? रावण ने तलवार से अंगद के दो दुकड़े कर दिये फिर हनुमान ने उन्हें केंसे जोड़ दिया। एक दानपति ने पूत्र-प्राप्ति के निमित्त देवी की उपासना की। देवी ने प्रमन्न होकर एक गोली बी और कहा कि यदि इस गोली को तुम अपनी परनी को खिला दोगे तो उसे पुत्रदश्न की प्राप्ति होगी (8)।

दानवेन्द्र की दो पत्निया थीं। उसने दोनों को माधी-माधी गोली दे दी। फलतः दोनों वर्भवती हो गई। पूर्णमास होने पर उन्हें सम्मण-मधींग पुत हुए। तब उन दोनों ने उन्हें निर्थक समझकर फेंक दिया। जरा (बृड्की) नाम की देवी ने उन दोनों खण्डों को मिलाया तो दोनों खण्डों से एक पुत्र हो गया। बहु बड़ा प्रसिद्ध मोद्धा बना। उसी को जरासन्य राजा के नाम से लाग जानने लगे (9-10)।

पाराधिक कंबाओं की समीका

हे बाह्यकों, जब बाव रहित सरीर के दो भाग जुड़कर एक हो गये तो भेरा मस्तक बसी समय का- कटा होने पर भी नयों नहीं जुड़ सकेवा? पार्वती का पुत्र कार्तिकेय (बढानन) छ: भागों से ओड़कर बनाया बवा है तब मेरे कटें हुए मिर का जुड़ना संभव क्यों नहीं ? अंगद, जरासंध आंधि कथाओं में कहां तक प्रामाणिकता हो सकती है ! तुम्हारी बात सही और मेरी बांत यलत, ऐसा क्यों ? बाह्मणों ने कहा— वह मान भी लिया जाये, पर यह कैसे हो सकता है कि तेरा किट (मुण्ड) वृक्ष पर फल खाये और नीचे तेरा पेट घर जाये? मेनोवेग ने कहा— इस लोक में विम्न आद के समय मोजन करते हैं और परलाक में अशरीरी पिता, पितामहादि की तृष्ति होती है तो मेरा मरीर मुण्ड के अधिक निकट रहते मेरी तृष्ति और उदर पूर्ति क्यों नहीं हो सकती ? कविट्ठखादन भी कैसे असस्य कहा जा सकता है ? रावण सादि की कथाये भी इसी तरह असबस्य मलापमाल हैं (॥)।

विवार करने लगे। निकल्तर भी हो गये और सोजने लुमे— सुमास्त्र, सुप्रमं और सुनिंग (सुदेव) मोक्ष के कारण है। जहां स्वभावतः विरोध हो वहां इतमें मेल कैसे हो सकता है? जहां सुधमं होता है वहां कमं नहीं रहता, जहां सहिसा होती है वहां हिमा भाव नहीं होगा। अठारह बोधों से मुक्त अपरिग्रही सुदेव सम्यक्तानधारी होकर मोक्ष प्राप्त करते हैं। जिन्हें स्व और पर का भेदिवान नहीं होता तथा सुदेव, सुशास्त्र, सुगृष्ठ उपलब्ध नहीं होते उन्हें साधारिक कुषों से मुक्त नहीं मिल पातो (12)। यह निध्यत जानकर व्यक्ति कुदेव, कुशास्त्र और कुगुष्ठ को छोड़ देता है, उनकी भिक्त से दूर हो जाता है। नरकित्यंच गित के दुःख भी उससे छूट जाते हैं। जहां जिनदेव और जिनगुष्ठ तथा जिनशास्त्र हैं वहां व्यक्ति मोक्ष पा लेता है। मोक्ष का लक्ष्य बनाये बिना रक्त-बस्त्र पहिनना, जटाजूट धारण करना, मासोपवास करना, चंद्रायण व्रत रखना, दण्ड धारण करना, शिर मुंडन करना अदि सब कुछ मात्र शरीर को प्रताइना है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के बिना मुक्त प्राप्त नहीं हो सकती (13)।

पुराणों में इसी तरह की और भी बेतुकी बाते हैं। सीम्रमं स्वयं के निर्वाण इन्द्र को दूषित वता दिया जबकि इन्द्र नामका कोई विद्यासर दूषित हुआ था। जो सीम्रमं स्वामी इन्द्र सत्ताबीस कोटि देवों द्वारा पूर्णित है, सभी सुर-असुर जिसकी सेवा करते हैं वह सहस्था से दूषित कैंसे हो सकता है? और फिर देव और ममुख्यनी का संबन्ध कभी नहीं हो सकता। सहस्रयोनि की बात कहना भी विचित्र सथता है। कुन्ती द्वारा कर्ण को सूर्य के संपर्क से पैदा करना आदि कथन भी इसी प्रकार असत्यता से भरे हुए हैं (14)।

इक्ताकुनंशीय प्रतियासुदेव चरासंख अतुस तेजधारक या, वालि भी चरमदेही ये बिनका राम द्वारा क्य क्ताया गया। एक समय कैलाश पर्वत पर वालि मृति ज्यानस्य थे । वहीं से रावय का विमान निकला और वह अडक गया। इसके क्षारण रावण विद्यावस से जैसास पर्वर्त को उठाकर समुद्र में फेंडने के सिए तस्पर हुत्या। वास्त्रियुद्धि में अपने पैर के अंगूटे से कैसास पर्वत को दक्षा विद्या विद्यस पुंची होकर रावण री पढ़ा। ऐसे बास्त्रियुद्धि तथा रावण के विषय में ज्यास ऋषि में काफी कटपटांग सिक्स विद्या है (16)।

रायण की बहु अवस्था देखकर मंदोदिर सब से कंपित हो गई। उसने अपने वित रावण की बीर से अमायाचना की। रावण की बानकवाय का यह फल था। बाली वरनकदीरी था। उसके क्षिपय में सुदीय की पहली की बोर कुन्विट रखने जैसी बात को बोड़ देना निश्चित रूप से बसरय क्रयन है। रावण बीसवें तीर्थंकर मृतिसुत्रतनाथ के समय हुआ और रह चीबीसवें तीर्थंकर महावीर के समय हुआ। इन दोनों का सम्बन्ध कैसे बोड़ा जा सकता है (17)?

धर्म का नहस्य

इसी तरह हरि बीर हर में भी भेद नहीं किया। यदि हिंसा ते ही स्वर्ग-मोक मिलता है तो सीग दू: ब सहन क्यों करेंगे ? यदि वृक्ष के नीचे ही फल निल जाता है ती वृक्ष पर चढ़ने की आवश्यकता ही क्या है ? उत्तम कमा से धर्म होता है। मार्वव से अभिमान का वमन होता है, आर्जव से कुटिलता, सत्य से हितमाथी विधनैवाला असत्य कवन, शीच से लोभकवाय, संयम से जीवरक्षा, सम्यक् तय से निरर्यंक आतपन, त्याग से आरंग, आकिवन से गरीर मोह, बहा-चर्य से कामवासना शान्त होती है। इस प्रकार जिनमूनियों के संसर्ग से निर्मल वस धर्मी की उत्पति हीती है। अतः व्यक्ति की हिंसा आदि भाषों से दूर रहना चाहिए (8-20)। बारह भावनाओं का अनुवितन शाक्वत मुख की उपलब्धि के लिए आवश्यक है। यह जीव नव नास तक गर्भ में रहा और फिर इसी प्रकार जन्म-मरण की प्रक्रिया में वीड्ता रहा। अनेक बार स्वर्ग में पहुंचा, कीरसमुद्र-जल लाकर अभिषेक किया, समवगरण में गया फिर भी मुक्ति प्राप्त नहीं कर पाया। सुर-नर जिनकै पंचकस्याणक करते हैं, चौतीस ब्रतिशय और आठ प्रातिहार्य जिनके होते हैं, जो विभुवन के नेज हैं, निमंत मणि रत्न हैं, अज्ञानाम्धकार के विनाशक है, पब्रियुवों को जिन्होंने बूर कर दिया है ऐसे जिनेन्द्र देव की खपासना माश्यत 'सुखबायी है (21-25))।

१०. वसम संधि

चुलकर व्यवस्था

पुन: उपयन पहुंचकर मनोवेत ने मित्र प्यमवेन से प्रश्न किया - सर्व क्या है ? मनोवेग ने उत्तर विया - सुनी। इस भरतकेत्र में दो काल होते हैं -प्रसाविणी और मनविष्णी। प्रस्मेक काल के छः मेदे होते हैं - पुत्रमा - सुक्रमा, संख्या, सुख्या-दुःख्या, दुःखमासुख्या, दुःखमा, व दुःखमा-वुःखमा। ये मेच उत्सिंपनीकास के हैं और इन छहीं कास के न्यतीत हों जाने पर एक कद्वकास होता है। अपसीपणी कास में इनका कम उत्दां हो जाता है। अपसीपणी कास में इनका कम उत्दां हो जाता है। अपसीपणी कास में इनका कम उत्दां हो जाता है। अपसीपणी कहा जाता है। यहां मस्यन्त सुन्दर हती-पुष्ट यूगल पैदा होता है और उसके उत्पष्प होते ही उसके माता-पिता काल कवित्तत हो जाते हैं। तीसरे काल में बौदह कुलकर उत्पण्न हीते हैं। वे कर्मभूमि की व्यवस्था बताते हुए असि मसि, कृषि, वाधिक्य क्या और शिक्ष्म की व्यवस्था बताते हुए असि मसि, कृषि, वाधिक्य विद्या और शिक्ष्म की शिक्षा देते हैं। चौदह कुलकरों के नाम है- प्रतिस्थित, सन्मित, स्रोमंकर, स्रामंकर मार्थिकर स्रोमंकर स्रामंकर मार्थिकर स्रोमंकर स्रामंकर स्रोमंकर स्रामंकर स्रामंकर स्रामंकर स्रोमंकर स्रो

तीर्थंकर ऋषभवेय और संस्कृति संचालन

पहले जीव युगल रूप में उत्पन्न होते ये और वैसे ही ज्युत होते ये। वे युगल 49 कितों में समस्त भीत प्रेशन से समर्थ हो जाते थे। कत्सहम झीरे-श्रीरे समाप्त होते गये और संतिम जुनकर श्रावसदेय ने कर्मभूमि का पाठ पढ़ाते हुए वह्तिशाओं भी जिसा दी। इन्द्र ने कच्छ राजा की वन्दा और सुनन्दा के साथ उनका विवाह कर विया। उन दोनों स्तियो से उनको साह्यी और युक्यरी नामक हो कल्याओं दथा सी पुत्र हुए (2)।

क्षांतरह कोबानी ही सागर तक उन्होंने राज्य किया। एक दिन भगवान के सन्मुख वेषियों का मृत्य हो रहा था। उस समय नायत-नायते नीलांजना देवी अदृश्य हो गई, चल बसी। यह देखकार भगवान ऋषमदेव को संसार से बैराव्य हो गई, चल बसी। यह देखकार भगवान ऋषमदेव को संसार से बैराव्य हो गया। फलता अपने राज्य की भरत के लिए सम्मित कर निर्माय वीका ग्रहण कर ली। पुस्पह परिवहों को झेनले हुए उन्होंने निकृत्ति मार्च की सार्वकता पाई (3)। भगवान के साथ ही अत्यान्य राज्यओं ने भी सप्प्रसूच किया। पर्न्तु बोड़े ही समय बाव पयन्नव्य होने लगे। उनका आवश्य विश्वित्त हो वया। विस्ती देवता में उनके विश्वव्यर स्वस्य का व्यान कराकर इस विश्वित्तता से मृकत होने का आग्रह किया। यह सुनकर कितने ही नरेन्द्र सफने घर वावित्त हो वये, कितने ही अपायुक जवादि पीते हुए संकोषन्य पाद्यव्य प्रेय से ही बने रहे और कुलेश भरत वक्षवर्ती के भय से भगवान का साथ नहीं छोड़ सके। कच्छ महाक्ष्य भरत वक्षवर्ती के भय से भगवान का साथ नहीं छोड़ सके। कच्छ महाक्ष्य पाद्य से बहाया। यादीनि से संक्ष्यमत की प्रक्षय करना, वक्षक पहिनमा ही सम्बद्धिय सर्व बहाया। यादीनि से संक्ष्यमत की प्रक्षय हो गये। क्ष्यवान क्ष्यप्रेय विश्वय प्रक्षय विद्या प्रवास प्रकार व्यवस्थ प्रकार व्यवस्थ के प्रभाव विद्या प्रवास प्रवास प्रवास व्यवस्थ हो गये। व्यवस्थ के प्रभाव विद्या प्रवास प्रवास प्रवास प्रवास विद्या । प्रवास के प्रभाव के प्रभाव

से हस्तिनापुर के राजा श्रीयांस ने आहारे विश्व पूर्वक उन्हें इस्तुरस का भोजन कराया। उस समय भरत नक्षवर्ती ने रत्नसम से मुक्त उत्तम आवर्तों को साह्य मं वर्ण के रूप में स्थापित किया। परन्तु कासान्तर में वे अपने कुलसम को भूस गर्म और पाखण्डमय आवरण करने लगे। अववमेश्व, नरसेश्व, राजमूम सादि मश्च करने लगे। सारस, मेहण्ड आदि पिछयों को मारकर भक्षण करने लगे, रीहित मण्ड आवि को भी मारकर खाने लगे। गोमेश्व, पश्चमेश्व, पश्चहों आदि हिसक कार्यों में अवृत्त हो गये। अभक्ष्य भक्षण महापान, परवारासेवन आदि वंसे पहित कार्य करने लगे। वेद अञ्चल्ण प्रमाण है, अविनाती है यह मानने लगे। वासुदेव कृष्ण के शव को छः माह तक भात्मोह के कारण छः माह तक रखे रहे, इसलिए कंकासम्बत प्रारंख हो गया।

इसी प्रकार तीयंकर यार्थनाय की तीयं में सुद्धोदन राजा हुए। उन्होंने भी अगुदाहार लेना प्रारंभ कर दिया। मछली, मांस आदि प्रक्षण करना भी उन्होंने विहित मान लिया। फिर जिन गासन से पृथक् होकर उन्होंने बोद्धधमं की स्थापना की (4-10)।

प्रमिवेग का द्वय परिवर्तन

इस प्रकार धर्मपथ पाकर और निष्यास्य का वर्णन सुनकर पवनवेग ने मनोबेग से कहा— मिलवर, अभी तक मैं अन्धकार में था। अब मुझे विवेक रक्षना होगा। तुम मेरे परममित्र हो, परमस्वामी हो, बंधु हो, गृह हो, मेरा मिण्यात्व तुमने दूर कर विया है, दुलंभ सम्यक्शवरत्त की प्राप्ति तुम्हारे कारण हुई है, मैं अब जैन धर्म प्रहण करना चाहता हूँ। वे लोग धन्य है जो जिनेन्द्र के गुणों का श्रवण करते हैं, जिनधर्म का पालन करते हैं और विमन्न चित्त में परोपकार के बाब को लिये रहते हैं। यह सोचकर उन्होंने उज्जीयिनी नगरी में केवलक्षानी मुनि के पास पहुंचने का निष्णय किया (12)।

यह निश्चय कर दिब्याभूषणों से युक्त वे बोनों दिश्य किमान से निर्मंस ज्ञानी मुनिजंद (जिनमित?) के पास पहुंचे। उन्हें प्रणामकर वे उनके पास बैठ गये। मनीवेग ने मुनिराज से कहा— यह हमारा परमित्र पवनवेग है। पाटलिपुत्र में वेव-पुराणों की सत्य-असत्य कवाओं को सुनकर मिण्यात्व की जोर से इसका मन विरक्त हो नया है और इसने सम्यक्त्व प्रहण कर लिया है। अब इसे ऐसा उपदेश वीजिए जिससे यह जताभरण से भूषित हो जाये (13)। मूनिवर ने उसके निवेदन पर पवनवेग को आवक्त तों का वर्णन किया।

भावकवत

हे पवनवेण, तुम अब आवक्षत्रसों को प्रहण करो। अहिंसा, सत्य, अस्तेव, प्रश्चार्य और अपरिप्रह इन पंचाणुवतों का पालन करो। पंच उचन्वर प्रश्नी

(वड़, पीपर, कटहल, गूलर, उमरफल) की मत खाओ। मधुधसण, मखपान तथा मांस घक्षण मत करो, इन आठ मूल गुणों का पालन करो। विग्वत, देखवत और अनवंदण्ड व्रव तथा चार शिकांवतों की ग्रहण करो। चार शिकांवतों में प्रथम हैं—जिनवन्दना। संयम धारण करने के लिए तथा गुढ साब प्राप्त करने के लिए उत्तर विशा में मुंह करके जिन प्रतिमा के सामने खड़े होकर कियापूर्वक जिनवन्दना करो। यही सामाधिक है। विन में तीन बार सामाधिक करना उसका उत्तम प्रकार है और दी बार तथा एक बार सामाधिक करना कमशः मध्यम तथा खबन्य प्रकार है। सप्तमी और त्रयोदशी के प्रातःकाशीन मोजन के बाद अध्वमी और चतुर्वशी का उपवास करना, रात्रिशोजन न कर प्रोषद्योपवास करना। कृषि वाणिज्य से मुक्त रहना भी उपवास है। प्रोषधीपवास का तास्पर्य है— पर्व के दिनों चारों प्रकार का खाहारत्याग करना और प्रोषध का अर्थ है— दिन में एक बार सोजन करना। श्रावकों और मुनियों को गुढ़:हार देना अतिथिसंविधानवत है। इस प्रकार तीन शिकांवत हैं (14)।

भूमिशयन, स्त्रीपरिहरण, जिनसदिर गमन, जिनपूजन भी इन ततों के पालन करने के लिए आवश्यक है— स्नान कर, प्रामुक जल लेकर, शुद्ध वस्त्र पहिन कर अध्दिवध पूजन करना चाहिए। भोगोपभोग परिमाण वृत्त चतुर्थ शिक्षावत है। मरणकाल में बाह्य और आभ्यन्तर परिग्रह को छोड़कर मुभ मान से मृत्यूवरण करना सल्लेखना है। इसे भी चतुर्थ शिक्षावत माना जाता है। रात्रिभोजन स्थाग भी चार शिक्षावतों में संमितित किया जाता है (15)।

मधुनिम्दु का उदाहरण पीछे दिया है। ससार में यथार्थ सुख नहीं है, मधु-विन्दु जैसा क्षणिक सुख मात्र है, सुखाशास है। मरद्रव्यहरण में मूर्यु हो जाती है, परदारारमण में दु:ख प्राप्त होता है, बहुपरिग्रही होने पर निद्रा नहीं जाती। मह सब दहलोक के दु:ख है। परलोक के दु:खों का वर्णन ही क्या क्या जाये! वे तो दहलोक के कृत्यों पर निर्भर करते हैं। यह सुनकर पवनवेंग ने सहर्ष आवक्त्रत ग्रहण किये।

११. ग्यारहबीं संधि

इन श्रावकवरों का फल है बिमत सुख और शान्ति। इसका उदाहरण यह विया गया है। जम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र में मेवाड़ नाम का एक देश है। वह बड़ा सुन्दर है। उसमें उण्जीयनी नाम, की एक सुन्दर नगरी है। उसमें पांच सी विशाल जिनमंदिर है। उस नगरी में बानरकुल स्वतन्त्रता पूर्वक विचरण करते हैं। मन-मोहक निर्झार हैं, कामिनियां कीड़ारत हैं, विशाकवैंक कूप-तझ्य है (2)। यहां प्रश्वंड नामक राजा और उसकी प्रियमौरी नामक महारानी थी। उसके सीपास मामक मन्त्री और उसकी खनमति नाम की पत्नी यी। वह एक विन रात्रि में जिन्नविदे के दर्शन करने नई। फिर पुत्रों ने राक्षिमीजन मांगा प्र छन्निति में उन्हें रात में घोजन नहीं दिया बल्कि उन्हें रात्रिघोडम त्याय का बाबह किया। फसरा उन्हें कालान्तर में विपूल संपत्तिलाभ हुआ (3)।

एड क्यानुद्धार वावक कुन्दर तसर है। प्राचार बीर वीपुरी से बुसविकत है। पर क्यां प्रस दीव है और वह मह कि विनास में का पासन सीन वहां नहीं करते हैं, विवयसम्बद्ध हैं। वहां का समा प्रचन्त है को सतुओं से तिय वावकर है। यहां एक क्षिप् सामा जिसके पास समार धतसंपत्ति की। उसी सबर में एक वेतान जाना को क्यान मानि सावकर तृत्य करता था। उसी स्वत्य में एक वेतान जाना को क्यान मानि सावकर तृत्य करता था। उसी क्षित्य को प्रसामकर उसे राविक्षोक्त कराकर उसके सारे धन का अकहरण कर किया (4-6)। विवक् ने सह वृद्धान्त राजा से कहा। राजा ने उस नेताक को विवत किया बीद कपिक ने राविक्षोक्त का व्याग किया। वाविक्षोक्त करने से पश्च-पक्षी योनि मिलती है। जन्म-जन्मान्तर तक दृ:ब प्राप्त होते है। इस संदर्भ में यहां अनेक छोटी-छोटी कथायें दी गई हैं (8-10)।

अक्षिक्तिया कर कथा के संदर्भ में नागश्री द्वारा विये वये मुनियों को आहारवान का फल बणित है। एंक्यामोकार मंत्रस्य के फल का भी अल्मेख है। अध्ययन, औषविद्यान आदि से संबद्ध कथायें भी यहां संक्षेप में है। ये कमार्थ अल्मेख में बुड़ी हुई हैं (11-22)। बाद में विद्यासतों की महिमा का आह्यान करते हुए मानव जीवन में जिनधर्म की उपयागिता के संदर्भ में इवि अपने कियार व्यक्त करते हुए कहता है कि उसका पालक अहिसक, विनयी और भैदविशानी होता है (23-25)।

क्ल में हरियेण कवि ने अपनी प्रशस्ति और धर्मपरीक्षा लिखने का उद्देग्य स्पद्ध किया है। उन्होंने लिखा है- मेदाद में स्पित चिनकूट (चित्तौड़) का में निवासी हूं उजीर (ओजपुर) से उद्मृत धर्मकड़ मेरा नंश है। इसी वंश में हृदि नामक एक कलाकार थे। उनके पुत्र गोवधंन हुए और गोवधंन का पुत्र में हृदियेण हूं। मेरी माता का खाम गुम्ब्या है। महीं किसी ने अपने वो विशेषण दिये हैं- गूज्यणिनिध और कुल गगन विवाकर। मैं किसी कारणवश्च जिलोड़ से ख्यायपुर पहुंचा और वहीं छन्य-वर्णकार का परित्रान कर धम्मपरिक्या की रुप्ता की। किसी ने स्पर्य की किस्कुर-कर-बिस्सुक भी कहा है (26)। इसके पूर्व के कडवक में किसी ने सिखसेन की चरणकरना की है।

सम्मारित्या की काना नि. सं. 1044 में हुई । बुध इरियेण ने सोका कि तो किसी प्राय की कानद करे, कान्यान की अभिन्न करे, परनुत्व दूर करे वह सम्ब है । वही क्षीपक्ष सम्मार्थश्या की श्रमक की है । जो उसे करितवाय से पहेंगा, निमंत्रित होकर अगण करेगा उसका तन जान्त हो जायेगा (27) । इस प्रकार बुध हरियेण इत सम्मर्पीरमधा की स्वारहवीं संधि यहां समाप्त हो जाती है।

५. क्यावस्तु का महाकाम्बस्य ब्रावा खोद शेली

हिर्येण ने अपनी अध्यापरिषया गारह समियाँ में यूरी भी है। जानेक संधि में स्वयम समूह से सत्तावीस कडवम है और कुम नक्कम हैं 230 -1-20, 11 -- 20, 111 -- 22, 14 -- 22, 14 -- 24, 17 -- 20, 14 -- 18, 18, 18 -- 22, 18 -- 25, 17 -- 17, और 18 -- 27, यूम कडवमों का हुम कल्म करीन प्रमाण है 2010, इनमें वैरानिक आक्यानों की समीका करने का मूल उद्देश्य वाथि से अस्त तक रहता है। इस दृष्टि से सारी तमियां विषय की नप्ता से पारक्षियां में अस्त तक रहता है। इस दृष्टि से सारी तमियां विषय की नपता से पारक्षियां में विश्वा नाकों के अपितस्य की स्वयं स्वयं में ही महो पर अस्तर्ववाओं में विश्वा नाकों के अपितस्य की स्वयं स्वयं मिया प्या है। ये नामक पौराणिक क्षेत्र में विश्वा है। काव्य में साम्त रस है, एक्सों में विश्वा है, यतुर्व्यवां की य्यास्थान प्रमिक्त है, सज्जन-दुर्वन प्रसंसा है, प्राइतिक चित्रण है। इन सारी वृद्धियों से व्यवप्रिक्ता को बहाकाव्य की श्री में वैठाने में मुझे कोई संकोच नहीं हो रहा है। महाकाव्य की वंतर्वा परिभाषा के साने में एकाब बिन्तु पर भने ही हमारा निव्वर्व वेस न बाता हो पर समग्र वृद्धि से देखे जाने पर प्रस्तुत ग्रन्थ को महाकाव्य की संत्रा दी जा समग्री है।

विजयाधैयनेत, (1.3), बैजयन्ती मगरी (1.4), धवस्ति देश (1.9), उज्जैंगिनी नगरी (1.10-11), पाटलिपुत्र वर्णन (1.18), मनोदेश धीर पवनवेन का कप वर्णन (2.2-3) जिनेन्द्र गुंधों की विशेषतायें (5.18-20), बेबाइ वर्णन (11.1) आदि प्रसंगों में सुन्दर काव्यस्य दिखाई देता है।

धम्मपरिक्झा की साथा प्रतिमाजित और मैली प्रमावक है। जिस विषय की एक श्लोक में समितगति ने कहा है उसी को इरिपेंग ने एक पद में कह दिया है। किन की यह लंकिया बैली कही दूसर नहीं हुई बस्कि उसने अनायस्यक विस्तार को कम किया है। लोक प्रचलित शब्दों और मुहावरों का प्रयोग करके कान्य में और भी सरसता ला ही है। इसलिए यह कान्य 'मनोहर' दन गया है। सुरविष्यु (45), एवं (4.6), गुरुषरणारिवास (2-23) वैसे कुछ संस्कृत सन्य भी स्थावत इस महाकाष्य में प्रयुक्त हुए हैं।

वस्मपरिक्या की रचना प्रमुख कप से सोखड़ माजिक पक्तिटिका (पदिविधा) छवों में हुई है। बीच-नीम सें मूजंगप्रमात, रजयो साथि छन्दों का भी प्रधोप हुन्म है। समझूत मासिक और वार्षिक छन्दों ने काम्स में और भी सरसदा सा वी है। बचा के साथ ही कहीं-कहीं भूवक भी सिस बाते हैं।

६. मिथकीय कथा तस्य तथा कथामक रुढियां

सम्मापित्तवा में कोई एक कथा नहीं हैं बिल्क अनेक ऐसी कथाओं का अवक्षम है जो या ती पीराणिक हैं या फिर उन्हें अविश्वसनीय सिद्ध करने के लिए केल्पत कथाओं का आध्य लिया गया है। ये पुराक्ष्मायें जोकानुपूरित और अलब्य से खंगिककता से संक्लिप्ट रहती हैं। धीरे-धीरे अन्धिकश्वास और अलब्य से उनकी कथाकपता दबती बली जाती है और रहस्यात्मकता तथा लाकाणिकता का आबरण बढ़ता चला जाता है। प्राचीन साहित्य में उपलब्ध देवता, राक्षस, यन्धवें, यक्ष, किन्नर आदि से संबद्ध कथानक इसो कोटि में आते हैं। इन्हीं को आज मियक कहा जाने लगा है। उनका आबिर्माव कले ही विवादयस्त हो पर इसमें किसी को संबेह नहीं होगा कि जब इस प्रकार की पुरा कथाएँ भाषा का माध्यम नेती हैं तब वे एकांगी, तकहीन और मिय्या जान पड़ती है। पीराणिक कथाएं, निजन्धरी कथायें और दस्त कथायें ऐसी ही मियकीय कथायें हैं जिन्ह,ने प्रतीक विधान और विश्वयाजना के परिपृष्टि में सप्रेषणीय तत्त्व को आये बढ़ाया है।

श्रीमती लेंगर ने ऐसी कथाओं को धर्म के साथ जोड़कर उनकी जित-प्राकृतिकता को स्वीकार किया है। कितपय विद्वानों ने ऐसी कथाओं के पीछे ऐतिहासिकता को भी खोजने का आग्रह किया है। ऐसी ही कथाओं को साहित्य-कार अपनी कल्पनाशनित से समृद्ध कर उन्हें अभिव्यक्ति का साधन बना लेता है। सारे वैदिक आख्यान ऐसे ही मिथकीय तत्त्व हैं जिनपर साहित्य की एक लम्बी परम्परा खड़ी हुई है। जैन और बीद साहित्य में भी ऐसी कथाओं की कमी नहीं है। सृष्टि, मृत्यु, लिपि, पकंत, नगर, जगत, जीवन, पणु, पक्षी आदि संबद्ध कथायें लगमग सभी धर्मों और धर्मग्रम्थों में उपलब्ध होती है। उन्हीं कथाओं पर विशास महाकाव्यों किया प्रबन्काव्यों की रचना होती रही है। प्रवित तत्त्व से आदृत होकर इन कथाओं ने जन साधारण में अपनी स कर्मियता सी पा ली है।

वैदिक साहित्य के अध्ययन से यह पता चलता है कि मूलतः तीन देव ये— बह्मा, विष्णु और महेखा। इन तीनों देवताओं के साथ मिनत के रूप में कममः सरस्वती, सक्ष्मी तथा गौरी संबद्ध हैं। बाद में यजुर्वेद में देवताओं की संख्या बारह हो गई है— अग्नि, सूर्य, चल्द्र, वात, वसन, कद्र, आदित्य, मक्त, विश्वदेव, इन्द्र, बृहस्पति और वदण। यहीं फिर अवतारकस्पना ने जन्म लिया। इन सभी से मूलन कल्पनाओं के साथ नियक कथाएँ बनती रहीं। पन्नु, पिनयों का संबन्ध भी प्रतीकात्मक रूप में उनसे जुड़ता गया। स्वर्ग, नरक तथा विविश्व भीषोत्मिक विश्वज्ञ ने एक नयीं परम्परा प्रारम्भ कर दी। इन सभी मिथक कथाओं ने मिनकर नैतिक-अनैतिक तस्य की व्याख्या समाज को दी और सांस्कृतिक तस्यों से मिश्चित हीकर समाज रचना में अमूल्य सहयोग दिया।

हरियेण की धर्मपरीक्षा में ऐसी ही मियक कवाओं का बाहुल्य है। उनका विश्लेषण करनेपर निम्नलिखित प्रमुख मियकीय कवातस्य तथा कथानक रूढियां वृष्टिषत होती हैं-

- 1. बप्राकृतिक, अतिप्राकृतिक तया अमानवीय तस्व
- 2. खाश्चवंकारी कल्पनायें
- 3. लोक-ममोरंजक चित्रण
- 4. मोक-कथाओं का रूपान्तरण
- 5. सोकानुरंजन
- 6. कौतुहल प्रवर्शन
- 7. कामुकता और श्वंगारिकता
- 8. अन्तर्कथारमकता
- 9. पूर्वजन्मसंस्कार
- 10. सोक जीवन चित्रण
- 11. लीककल्याण भावना
- 12. धर्म अदात्मक तस्य की पृष्ठभूमि में अताकिकता
- 13. उपदेशास्मकता
- 14. परम्परा का संवर्धम
- 15. लोक विश्वास
- 16 तंत्र मंत्रात्मकता
- 17. ऋदि-सिदि और समत्कार प्रदर्शन
- 18. अविश्वसमीयता और अतिरंजनता
- 19. लोकवित्त को बान्दोलित करना
- 20. मिध्यारव का स्पष्टीकरण
- 21. सण्जन-दर्जन संगति का फल

इन मियकीय तस्यों के आधार पर धम्मपरिक्का में समागत कतिपय वैदिक आक्यानों को यथाकर में प्रस्तुत करना उपयोगी होगा। इस वृष्टि से अब हम इन आक्यानों पर कि ञ्चित् प्रकाण उसते हैं।

७. वैदिक आख्यामों का प्रारूप

भव्छप क्षीशिक कथा (4.7-12)

इस कथा का संबन्ध 'अपुत्रस्य गतिनीस्ति सिद्धान्त' से है जो आरण्यक सीर स्पनिषयों में प्रतिफलित हुआ। मण्डप कौश्चिक मूसतः बहावारी ये पर वृद्धावस्था में इस सिद्धान्त के कारण ऋषियों ने उनको निष्कासित कर दिया । फसत: किसी विश्ववा से उन्होंने संबन्ध किया और उससे छाया नाम की सुम्दर किया हुई । इसी प्रसंग में शिव का और गंगा शारीरिक सम्बन्ध बताया है ।

पुराणों के अनुसार छावा विश्वकर्मा की पुत्नी और संज्ञा की अनुवरी थीं। संज्ञा सूर्य की पत्नी और यम तथा यमुना की माता थी। सूर्य का तेज न सहन करने के कारण वह अपने पुत्रों को छाया के पास छोड़कर पिता के घर चली गई। छाया ने इन पुत्रों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। फलतः उसे उसने विकलोग होने का अभिशाप दिया। पुराणानुसार गंगा हिमालय की पुत्री है। ऐसी प्रसिद्धि है कि गंगा पहले स्त्रगं में थी। सगर के पुत्रों की रक्षा की दृष्टि से भगीरथ उसे पृथ्वी पर ले आये। इसलिए उसे 'भागीरथी' कहा गया। गगा जब स्वगं से गिरी थी तब पृथ्वी वह न जाये यह सोचकर शंकर ने उसे अपनी जटा में रोक रखा था। गंगा को इसी से शंकर की पत्नी कहा गया है।

तिलोत्तमा कथा (4.13)

विश्वकर्मा ने ब्रह्मा की आज्ञा से विश्व मुन्दरी अप्सरा सिलोसमा का निर्माण किया। दे इन्द्र ने उसे ब्रह्मा के पास उनकी तपस्या भंग करने के लिए भेजा। तिलोसमा ने अपने रूप से ब्रह्मा को आकृष्ट कर लिया। मस्स्यपुराण के अनुसार इनके चार मुख थे जिनसे नतंकी तिलोस्तमा के रूप को निहारते थे। उसके आकाश में जाने पर उन्होंने अपना पंचम मुख गर्छ का बनाया। देवों ने उपहास किया तब उन्हें खाने के लिए ब्रह्मा ने कोपवज्ञ इसी पंचम मुख का उपयोग किया। यह देखकर महादेव ने उस मुख को काट दिया। बाद में कहा जाता है कि ब्रह्मा ने रीछनी के साथ संभोग किया जिससे जांबव नामक पुत्र हुआ। के ब्रह्मा के साथ ऐसी अनेक कथायें जुड़ी हुई हैं। कहा जाता है, सरस्वती, साविती, गायती श्रद्धा और मेघा इन पांच पुत्रियों में से सर्वाधिक सुन्दरी पुत्री गायती पर वे आसकत हो गये। बहु मगी बनकर भाग गई। ब्रह्मा किर मृग बनकर उसके पीछ दौड़े। तब शिव ने मृगबधिक का रूप खारण कर उन्हें रोका (ब्रह्मपुराण, 102)। अन्ततः पुत्री गायती ब्रह्मा की पत्नी बनी (भागवत. 1–18.14; 3-8, 27–32; 9–1.24; 29–44; 10–3.6, 8.13–26)।

भागनतपुराण, 8-13 8-10; मस्स्य. 11.5-9; 248.73; वायु. 84.39-77.

^{2.} बहुत. 3.59! 32-77; भागवत. 6-6-41.

^{3.} वायु. 42.39-40; 71-5;

^{4.} महाभारत, आदिपर्व, 210.4-8;

^{5.} भागवतः 1-3.2; मत्स्यपुराणः 1.14; 2.36; 260.40; महाभारत, वनपर्वं, 276.6-7; पौराणिक कोम

इन्द्र भी तिलीत्तमा के रूप से मोहित होकर सहस्रानेत्र हो गये (महाभारत, आदिएकं, 210.27)। गौतम ऋषि की पत्नी अहत्या पर इन्द्र ने बलात्कार किया था। फलतः विश्वामित्र के शाप से उनके अण्डकोश समाप्त हो गये (महाः शान्तिपवं 342.23)। यम ने भी छाया तथा सप्तिथयों की परिनयों का उपभोग किया (महाः वनपवं, 224-33-38)। यमराज, मदत और अिनदेव भी कामवासना से देख हुए विना नहीं बच सके।

शिश्मश्खेदम कथा (5.1)

बह्मा महादेव के विवाह में पुरोहित बने। वहां पार्वती के करस्पर्म माल से उनका वीर्यस्थलन हो गया (महा. अनु. 85-9-192)। महादेव ने ऋषि-कल्याओं के नृत्य करते समय उनका आलिंगन किया जिससे कृषित होकर ऋषियों ने उनका शिश्नच्छेदन कर दिया (महा. सौष्तिक, 17.21)। अगिन और वायु ने खिब के वोर्य को धारण किया (वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, 36.5-29)। इसी तरह अहल्या ने इन्द्र को, छाया ने यमराज और अग्नि को और कुन्ती ने सूर्य को कामवासना में प्रवृत्त किया।

चरशिररछेदन कया (5.6-7)

इस कथा का सम्बन्ध ठद्र से है। सृष्टि के प्रारंग में बह्या की भीहों से उत्पन्न ये एक क्रोधारमक देवता हैं जिनसे भूत, प्रेत, पिशाचादि उत्पन्न माने जाते हैं। इनकी संख्या ग्यारह है— अज, एकपाद, अहिब्र्ज्ज्य, पिनाकी, अपराजित, त्यम्बक, महेम्बर, वृषाकि, शम्भ, हरण और ईश्वर। मरुण और क्र्मपुराण में कुछ और ही नाम मिलते हैं। शिवपुराण (7.24) के अनुसार वैश्यों को समाप्त करने के लिए शिव ग्यारह रुद्धों के रूप में समुधा के यर्भ से उत्पन्न हुए। ये ग्यारह रुद्ध हैं— कपाली, पिगल, भीम, बिलोहित. शस्त्रभृत, अभय, अजपाद, अहिब्रुज्य, शंभ, भव और विरूपात । सरिश्चरछेदन कथा का सम्बन्ध कवाचित् अन्तिम रुद्ध से रहा है। इस कथा मे आयी चतुर्मुख और पंचममुख की कल्पना तिलोस्तमा के रूप को देखने के प्रसंग में उत्लिखित कर ही दी गई है (महाभारत, खादिपर्व, 210-22-28) उसी का मुछ परिवर्तित रूप इसमें मिलता है।

राजमूय यज्ञ से पूर्व जरासंघ को जीतना आवश्यक था। युधिष्ठिर जब निरुत्साहित विखे तो अर्जुन ने तदयं उत्साहित करने के लिए गण्डीव धमुष के द्वारा तीक्ण बाणों से पूर्वी को मेसकर रसातस में जाकर दस करोड़ सेना सहित शेषनाग और सप्तिथियों को ले आये (महाभारत, समापर्व. 16-3) इसी का उल्लेख हरिषेण ने किया है (5-13)।

ऋग्वेद (7.33-13) के अनुसार अगस्त्य ऋषि मित्र-वरण के पुत्र ये। उर्वशी को देखकर जब के कामपीड़ित हुए तो उनके वीर्यपाठ से अगस्त्य ऋषि का जन्म कुष्य (महा-कान्ति, 342.51) । सन्तान पाने की कामना से उन्होंने चीपामुझ को उत्पन्न विधा और उसी की बाद में अपनी पत्नी बनाया। उसी के दुब्स्यु पूज का जन्म हुआ (महा-चनपर्व, 96-99)। तारक तथा दूसरे असुरी द्वारा संसार का कट देखकर एक बार असस्य समुद्र को चुस्तु में सरकर पी गर्म जिससे उनका नाम 'समुद्रचुनक' और 'पीताब्धि' पढ़ गया (भागवत. 4-1-36; महा. यन 105.3-6)। कमग्रस्तु और घट से इनकी उत्पत्ति हुई मी । स्थिट को उन्होंने कमग्रस्तु में समाहित कर लिया था (भाग. 6-18.5; बह्मा, 4-5-38; मस्त्य. 61.21-31; 2 1.29; 202.1) बह्मा की मूर्ति चतुर्मुख, पद्मासनासीन और सरस्वती तथा सावित्री से युक्त होती है (मत्स्य. 260.40; 266.42; 284.6)।

षायीरबी और गांधारी कथा (7.9-10)

भगीरण राजा अंगुमन के पुत्र विसीम का पुत्र था। अपने पितरो-सगरपुत्रों का उद्धार करने के लिए वह गंगा को पृथ्वी पर ले आया। उसी गंगा ने पाताल लोक में पहुंचकर सगर पुत्रों का उद्धार किया। भगीरण की पुत्री होने के कारण गंगा भागीरणी कहलाई। वही भागीरणी राजा के उठ पर बैठने के कारण उवंशी कहलाई। भगीरण की उत्पत्ति दो स्त्रियों के परस्पर स्पत्रं मास से हुई थी (महा. बन, 25 108.9; क्षिवपुराण 11.12; भागवत. 9.9.2-13; ब्रह्मा. 3.54.48-51; वायु 47.49 आदि.)।

गांधारी के निषय में ऐसी ही कथा प्रथमित है। गांधारी फनस वृक्ष का अस्मिन करने से गर्भवती हो गई। व्यास से सी पुत्रों की याचना वह पहले ही कर चुकों थी। गांधारी के गर्भ से एक मांस पिण्ड का प्रावुधांव हुआ जिसके सी दुकड़े किये गये और उन्हीं टुकड़ों से दुगोंबन आदि सी पुत्रों की उत्पत्ति हुई (महा. बावि. 114-8; 115.119; भाग. 9.22.26; मत्स्य. 50.47-48; आदि)।

मंदोवरि मय दानव तथा रंगा की पुत्री थी। पुराणानुसार मयएक प्रसिद्ध दानव था (बास्मिकी रामायण, 52.8—12)। उसकी बीर्य मिश्रित कोपीन का जक्षपान करने से मेंडकी गर्भवती हुई जिसे, कहा जाता है मय सात, हजार वर्ष तक स्तिम्पत किये रखा। बाद में उससे मंदोदिर उत्पन्न हुई (पाग. 7.18)। वही बाद में रावण की पस्ती बनी। इसी से फिर वही इन्त्रजित नामक पुत्र के माम से प्रसिद्ध हुआ (महा. चन. 285.8)।

पराशर ऋषि जीर योजननंशा (7.14-15)

पराक्षर ऋषि वसिष्ट के पौत्र और सक्ति तथा अवृश्यन्ती सस्यवती के पुत्र ये। बारह वर्षों तक माठा के गर्भ में रहुकर उन्होंने वेदाम्यास किया या सम्ब तेते ही वे तपस्ती हो धये में (महा, खावि. 176-15) । श्रीवर कम्या सारवकी पर खासकत हीने के कारण उन्होंने उसे मत्स्वगन्या से योजनवन्या और अक्षतमीनि का वरदान दिया । इसी के वर्ष से ब्यास ऋषि का बन्य हुंसा । इसी का विवाह चीव्य पितामह के पिता शान्तन से हुसा (महा, आदि. 63.70-84; श्रह्मा. 4.4.65-6; वायु. 61.47 मादि ।

उद्दालक और चन्द्रमती कथा

उद्दालक आयोदधीम्य ऋषि के शिष्य अरुणि पांचाल का ही दूसरा नाम है। इन्ही का पुत्र अच्टावक था। स्वप्न में स्वालित हुए इनके वीर्य को गंगा में एक कमल पर रख दिया गया जिसे रघू की पत्नी चन्द्रमती ने सूंच लिया जिससे तत्क्षण गर्भाधान हो गया। उससे तृणविन्दु ऋषि के आश्रम में नागकेतु का जन्म हुआ। कहा जाता है उद्दालक ने वहीं चन्द्रमती में उसकी कुनारी बनाकर विवाह कर लिया (महा. आदि. 3.21-32; वन, 132.1-9; बायू. 41.44; वाल्मीकि रामा उत्तरकाण्ड, सर्ग 2.3)।

रावच की वसानम कथा (7.16-17)

रावण विश्ववा का पुत्र या। तपस्या से प्रभावित होकर इसे जिब से वब शिर मिले (महा. बन. 275.16-25)। यही किर उसने अपने कंछों पर जिएका लिये। उसने अपनी ही पुलवधु नलकूबर की पश्नी रंभा से हठात् संभोग किया। इसी तरह पुंजिकस्थला नामक अप्सरा से भी बलात्कार किया जिसके कारण बह्या ने उसके सिर के सी टुकड़े हो जाने का अभिशाप दिया (बा. रा. युद्ध काण्ड, 13.11-14, सर्ग 111)

द. जैन पौराणिक विशेषतार्थे

हरिषेण ने धर्मपरीक्षा में पौराणिक कपाओं की यणास्मान जैन दुष्टिकोण से समीक्षा की है। जिमलगित की धर्मपरीक्षा में यह समीक्षा और अधिक गहराई से मिलती है। उवाहरणार्थ— बिष्णु पर प्रश्तिचन्ह (H. 3.21; A. 10.21-40; विष्णु की कामुकता (H. 4.9-12; A. 11.26-28), ब्रह्मा और तिलोस्तमा का सम्बन्ध ,H. 4.13-16; A. 11.29-47), ब्रह्मा और विष्णु की कथाओं पर प्रश्तिचन्ह (H. 3. 16-20; A. 13.37-102; 15. 56-66), राम कथा समीक्षा (H. 8.11; A. 16.1-21), पौराणिक कथाओं की ग्याब्यात्मक समीक्षा (H. 9.4-5; A. 16.44-57; H. 9.11-12; A. 16.58-84; H. 9.14; A. 16.99-100; H. 9.18-25; A. 16. 102-104; 17 वां परिकार : इवमें की गई पौराणिक समीका को विषयवस्तु में पाठक देख सकते हैं। उसे यहां दुहराने की वावश्वकता नहीं है।

इस समीका को देखने से इतनी बात तो स्वव्ह हो जाती है कि जैनायायों

ने वैदिक पुराणगत अतिरंजित तथों को व्यावहारिक स्तर पर खड़े होकर नकार विवा है और उन्हें मानवीय तत्वों के आधार पर मोड़ दिया है। इतना अवश्य है कि महापुरवों की व्यक्तित्व—म्हंखला से जुड़कर इन कथाओं ने विद्याघरी कथाओं के रूप में अतिरंजित तस्यों को किसी सीमा तक बनाये भी रखा है। इस अस्वामाविकता को दूर करने के लिए आचारों ने पूर्वोपाजित कमों के फल को प्रविश्वत किया है। पौराणिक आख्यान महाकाव्यों के साथ ही प्रेमास्थानक काव्यों की भी इसी से मिलती—जुलती एक लम्बी श्रंखला जैन साहित्य में मिलती है।

लगभग सारी पौराणिक कथाओं का आकलन रामायण और महाभारत के आख्यानकों में समाहित हो जाते हैं। रामायण को पद्मचरित तथा महाभारत को हरिवंश अथवा पाण्डव पुराण के रूप में व्याख्यायित किया गया है। त्रेसठ महाशक्षाका पुरुष तथा विशिष्ट जैन नायक—नायिकाओं के चरित भी इन्हीं पौराणिक कथाओं की सीमा में आ जाते हैं। महाभारत के पात्रों में हरिवंश कुलोत्पन्न बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ और श्रीकृष्ण तथा उनके समकालीन पाण्डव और कौरवों का वर्णन है तथा रामायण के पात्र उनसे पूर्ववर्ती बीसवें तीर्थंकर मृनिसुत्रतमाथ के काल में हुए हैं। महाभारत कथा को अपेक्षा रामकथा में परिवर्तन जैन परम्परा में अधिक हुआ है। अतः उस पर कुछ विशेष चर्चा आवश्यकता है।

यधिमुख और जरासन्ध कथा (9.6-10)

विश्वमुख नामक एक बाह्मण पुत्र (या नागवंशी) था। उसका केवल मस्तक था, हाथ-पैर नही थे। अगस्त्य मुनि के आग्रह पर उसने किसी तरह निधंन कन्या से विवाह किया। वह कन्या उसको छीकों पर रखकर भिक्षा मांगने लगी। जरा नाम की राक्षसी ने उस मस्तक के दोनों खण्ड़ों को जोड़ विया जिससे उसका नाम जरासन्ध हो गया। (भाग. 9,22-8; 10.50-21; 71-3; 72-42; चण्डकीशिक मुनि द्वारा कृषा पूर्वक दिये गये फल का माताओं द्वारा मक्षण किये जाने पर पर उसका जम्म हुआ था (महा. समा. 17.29)। बृहद्रथ ने आम दिया जिसे चण्डकीशिक ने आधा-आधा अपनी दोनों पत्तियों को खिला दिया। फलतः दोनों ने आधे-आग्रे बालक को जन्म दिया। दोनों ने उन्हें चौराहे पर फिक्रवा दिया। चन्हीं दोनों को जरा राक्षसी ने जोड़ दिया (महा. समाप्त, 14.29-70)। 1

इन सभी के उद्धरणों के लिये वेखिए— महाभारत की नामानुक्रमणिका, गोखपुर, सं. 2016; पौराणिक कोश, वाराणसी; भारतीय मिथक कोश, डॉ. उथा पुरी विद्यावावस्पति, विल्ली, 1986; वैदिक कोश—सूर्यकान्त, भाराजसी, 1963 ।

निबन्धरी कवार्ये

पौराणिक संवर्षों में इन आख्यानों को देखा जाये तो पाठक को पुराणों के स्वस्प का सहस्ता पूर्वक बाभास हो जायेगा। उनमें अतिरंजनाओं से परी घटनाओं का बहुत्य है जिनपर विश्वास करना कठिन हो जाता है। मनोवेग ने ऐसे ही कतिपय आख्यानों का उत्लेख किया है और उनका खण्डन करने के लिए निजंश री अयवा उन्हों से मिलती-जुलतों कस्पित कथाओं की रचना कर मनोवेग ने वादशासाओं में विप्रों के सामने प्रस्तुत की। ऐसी कथाओं में मार्जार कथा (4·3-7), जल शिला और वानर नृश्य कथा (5.8-9), फमण्डल और गजक्या (5.13-12), वृह्तकुमारिका कथा, (7·2-6), और कविट्ठ खादन कथा (9·1-3) प्रमुख कथाये हैं। मनोवेग ने इन कथाओं की समीक्षा करने के पूर्व दस मूखं कथायें प्रस्तुन की। ग्रन्थ की प्रारम्भिक, द्वितीय और सुतीय सन्धियों में और उन्हें मध्विन्दु का दृष्टान्त देकर मिथ्यात्व भाव की भूमिका पर संपुष्ट किया।

जैन साहित्य में राम कथा

धम्मपरिनखा में राम-रावण कथा का भी उल्लेख जाया है। जादिकवि वाल्मीकि के गब्दों में "रामो विग्रह्वान् धमंः" राम धमं की प्रत्यक्ष मूर्ति हैं। इस धमं मूर्ति का पौराणिक व्यक्तित्व सीजन्य और शौरं-कीयं के कारण जन-मानस का श्रद्धास्पद प्रेरणास्रोत रहा है। ऐसे अजेय व्यक्तित्व को किसी धमं, समाज अथवा राष्ट्र की कठोर सीमा में बांधना हमारा कदाग्रह होगा। इसलिए रामकथा देश-विदेश के कण कण में मिश्रित हो चुकी है और उसका ऐक्य रूप पाना संभव नहीं है। भारतीय साहिश्यकार ने हर नये यूग में उसे नया काव्यात्मक परिधान दिया और प्रतीक का एक ऐसा लीकप्रिय माध्यम बनाया जिसे यवेच्छ कल्पनाओं की क्वी से यूगधर्म के बनुसार चित्रित किया जा सके।

जैन परम्परा में 63 शलाका पुरुष माने जाते हैं जिनमें 24 तीर्थंकर 12 वक्तवर्ती, 9 वलदेव, 9 वासुदेव और 9 प्रति-वासुदेव परिगणित हैं। इनमें राम, आठवें बलदेव और लक्ष्मण, आठवें वासुदेव तथा रावण, आठवें प्रतिवासुदेव हैं। वासुदेव सर्वय प्रतिवासुदेव का चातक हुआ करता है।

जैनाचार्यों ने रामकथा पर पर्याप्त साहित्य मृजन किया है । इसमें पतिवृषध की तिलोय पण्यति, विभनसूरि का परमवरिय, संबदास की वासुदेवहिण्डी, रिविषेण का पद्मपुराण, मोतावार्य का चरप्तश्रसहापुरिसचरिय गुजमद्र का उत्तर-पुराण, हरिभद्र का वृहत्कथाकोष, पुज्यदन्त का महापुराण, मद्रेश्वर की कहावली, बौर हेयचन्द्र का त्रिशिष्टिशलाका पुरुष चरित प्रमुख हैं । हिन्दी में तो और अधिक सिखा यया है । इन प्रन्थों में रामकथा के मुखतः वो क्य मिसते हैं

श्रवम रूप विमल सूरि के पद्मक्षरिय में मिलता है जिसका बनुकरण रिवर्वण, स्वयम्मू, बीलरवार्य, भारेश्वर, हेमवान्द, धतेश्वर, देवविव्य और देवविद्य ने किया है और दिवीय रूप मिलता है गुणभन्न के उत्तरपुराण में जिसका अनुसरण पुष्पवन्त और कृष्णवास ने किया है। इन दोनों क्यों की संक्षिप्त कथा कमा कमा कमा है। इन दोनों क्यों की संक्षिप्त कथा कमा कमा कमा इस प्रकार है। इनमें प्रवय क्य इस प्रकार है-

विश्विका के राजा रहनकार के तीन पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्रों के नाम थे। रावण, कुम्मकर्ण और विभीषण तथा पुत्री का नाम था चन्त्रनछा। ये सभी राजस्वंस के थे। राजस नहीं थे, विद्याधर जाति के मानव थे। इन्द्र, बद्धम आदि देवता भी यहां विद्याधर ही बताये गर्ने हैं। रावण का सम्बन्ध मन्दोदरि से और चन्द्रनखा का सम्बन्ध करदूषण से होता है। चन्द्रनखा की पुत्री बनंबकुसुमा के साथ हनुमान विवाहे जाते हैं। इन सभी को जैन धमं का पासन करनेवासा बताया गया है।

रावण की मृत्यु दशरथ व जनक की सन्तान के हाय होगी यह जानकर विभीषण दोनों को मारने आता है। इसर नारद दसरथ और जनक दोनों को सचेत कर देते हैं। फलस्वरूप वे अपने पुतले महल में छोड़कर अन्यत्र अले जाते हैं। विभीषण उन्हें सही मानकर मारकर चला जाता है। दशरथ कैकेशी के स्वयम्बर में जाते हैं और उसे अपनी पत्नी बनाते हैं। बाद में होने बाले युद्ध में कैकेशी दशरथ की भरपुर सहायता करती है। इसलिए दशरथ उसे एक अरदान देते हैं। जनक के भामण्डल नाम का पुत्र और सीता नाम की पुत्री होती है। चन्द्रयति नाम का विद्याघर भी मण्डल को हर से जाता है। युवक होने पर नारद सीता के प्रति मोह उत्पन्न कराता है। चन्द्रयति जनक से भी मण्डल के लिए सीता की याचना करता है। जनक इसकें पूर्व ही उनके यज्ञ की रक्षा करने वाले दशरथ पुत्र राम की सीता देने का संकल्प कर चुके थे। इस असमंबस को दूर करने के लिए चन्द्रयति एक अनुव देकर सीता स्वयम्बर का आयोजन कराता है। उसमें राम अनुव चढ़ाकर सीता का वरण करते ह। साब ही सीता और भामण्डल का बहिन—माई के रूप में मिलन होता है।

वसरम और भरत को दीकित होता जानकर दोनों से संयोग बनाये रखने की वृष्टि से कैंकेयी वसरम से वर प्रदान के उपसक्य में भरत को राज्य देने के सिए कहती है। राम भरत की समझाकर उसे राज्याभिषक्त करते हैं और स्वयं सक्ष्मण तथा सीता के साथ बनवास के लिए प्रस्थान करते हैं। क्यराजिता और सुमिता का पुत-वियोगजन्य हु: ध वेसकर कैंकेयी सन्तप्त हो जाती है और राम को सौटाने का प्रयत्न करती है। परन्तु राम प्रतिक्षा पर बटल रहते हैं। इसी वनवास में बनेक राजाओं का मान नवेंन करते हुए वे वण्डकारण्य पहुंच जाते हैं। सक्ष्मम की वीरता तथा सुन्दरता से प्रभावित होकर उसे अनेक राजा अपनी कत्या दान करते हैं।

एक समय देविक तलवार की खाँक्त देखने से सदमय झुरमुट काटता है। परन्तु बसावधानता बसात् कम्मुक का किर कट जाता है। जम्मुक की नाता पन्त्रनवा दु:वित होती है परन्तु राम-लक्ष्मण के रूप की देखकर सीहित हो जाती है और प्रजय प्रस्ताव रखती है। असफल होने पर बाद्भण से युद्ध होता है। रावण भी सहयोग के लिए पहुंचता है। सीता के रूप पर मृग्ध होकर बह सिहनाद कर उसे हरण कर तेता है। सीता न पाक्र राम विह्नल हो जाते हैं।

इधर विट-सुग्रीय की पराजित कर वानर सुग्रीय की जसकी पत्नी तारा बापिस कराते हैं। सुग्रीय के आवेशानुसार हनुमान सीता की खोज करने लंका आते हैं। सदमण द्वारा रायण का वध होता है और राम, लक्मण तथा सीता अयोध्या वापिस पहुंचते हैं।

तत्पश्चात् घरत और कैकेयी जिन दीक्षा प्रहण करते हैं। राम स्वयं राज्यासीन न होकर लक्ष्मण को अधिष्यत करते हैं। कुछ समय बाद सीता गर्भवती होती है परन्तु लोकापवाद से उसका निष्कासन कर दिया जाता है। संगोनवश पुण्यरीकपुर का राजा सीता को विहन रूप में वालन, पोचण तथा संरक्षण करता है। वही लवण और अंकुश का जन्म होता है। कालास्तर में राम से इन दोनों वक्षों का युद्ध होता है और उसी के अन्त में पिता-पुत्र मिलन हो जाता है। सीता अग्नि-परीक्षा में निष्क्षकंक सिद्ध हो जाती है परन्तु वह गृहस्थावस्था में प्रविष्ट न होकर जिन दीक्षा धारण करती है और तपकर सोलहवें स्वर्ग में उत्पन्न होती है। लक्ष्मण के आकस्मिक मरण से राम उन्मत्त से हो जाते हैं और लक्ष्मण का शव केकर इधर उधर मटकते हैं। मनोदेग शान्त होने पर जिन दीक्षा लेकर निर्वाण प्राप्त करते हैं। इन्हीं प्रवंगों में अनेक उपकथायों वाती है जिनका अनेक दृष्टियों से महस्य उपलक्षित होता है।

रामकथा की दूसरी परम्परा मिसती है गुणधर के असरपूराण में जिसका अनुगमण किया है पुष्पदन्त और कृष्णदास ने। इस परम्परा के अनुंसार दशर्थ की चार पत्नियां थीं। प्रथम युवाला और कैकेयी थे दो पत्नियां थीं जिनसे क्रमणः राम और सक्ष्मण उत्पन्न हुए। बाव में दो विवाह और हुए जिनसे भरत और शकुण पैदा हुए।

सीता जन्म के विश्वम में यहां बताया गया है कि रावण ने एक समय बिमतवेश की पुत्ती मणिमति की तपस्या में विष्क उपस्थित करने का प्रयस्त किया। यणिमति ने निषान बांधा कि मैं ब्रागामी जन्म में मन्वोयरि की पुत्री होकं और रावण के वध का कारण वनूं। ज्योतिवियों से यह बात जानने पर रावण उस बासिका को मञ्जूषा में रखकर मारीय से मिश्रिला में गड़वा दिया ! किसी की इस चमाते समय वह मंजूषा मिली । जनक ने उस बालिका की पाला-पोसा और सीता नाम रखा । बाद में यह रक्षा करने के बाद राम का सम्बन्ध बीता से होता है। बनमास काल में रावण सीता का रूप देखकर मृग्ध हो जाता है। मारीय स्वर्णमृग का रूप धारणकर राम को दूर अना ने जाता है। इस बीच रावण सीता का हरण कर लेता है।

अन्त में सीता के आठ पुत्र बतायें हैं। वहां सीता-स्थाग का तो कीई जल्लेख है ही नहीं। यह अवश्य बताया है कि जिन दीक्षा लेकर सीता स्वर्ग गई और राम ने निर्माण पाया।

बोनों जैन परम्पराओं में भेदक तत्व

- विमलसूरि के लक्ष्मण सुमिता के पुत्र है, तथा भरत कैकेशी के, परन्तु गुणधर ने लक्ष्मण को कैकेशी सुत बताया है। विमलसूरि ने राम को अपराजित पुत्र सिखा है परन्तु गुणधर ने सुबला पुत्र ।
- विमलसूरि की सीता जनकपुत्री है परन्तु गुगधर ने सीता को मन्दोदरि से उत्पक्ष निका है।
- विमलसूरि के राम एक ही पत्नी वाले हैं परन्तु गुणघर ने राम के सात विवाह और करवाये हैं।
- 4. विसलसूरि ने वाल्मीकि की तरह राम का राज्यामिनेक और कैकेयी के कारण उनका बनवास लिखा है परन्तु गुणधर ने इस दोनों प्रसंगों की प्राय: छोड़—सा दिया है।
- 5. विमलसूरि ने सीता हरण का कारण रावण का उनके रूप पर मुख ही जाना बताया परन्तु गुणधर ने इस प्रसंग को उपस्थित करने में नारद की कारण रूप में उपस्थित किया है।
- सीता की अग्निपरीका का उल्लेख विमलसूरि ने तो किया है परन्तु गुणघर ने सीता-स्थाय का प्रसंग ही नहीं रखा।
- विमलसूरि की सीता, लवण और अंकुश इत दो पुत्रों की माता है परन्तु गुणझर ने सीता के बाठ पुत्र बताये हैं।

वैदिक परम्परा खोर जैन परम्परा में कुछ नूलमेंब

- शीता का एक सहोदर जामण्डल वा जो जज्ञानता और परिस्थितियों वस सीता से ही विवाह करने का इच्छुक या। दास्मीकि रामायण में यह प्रसंग है ही नहीं।
- 2. यहारका के पुरस्कार स्वरूप अनक ने राम की सीता देने का निश्चय पहले

ही कर रका था। सीता-स्वयम्बर को बाद में हुआ। वैदिक रामायण में ऐसा नहीं है।

- राम का बनवास स्वेच्छानुसार सोलह वर्ष का चा परन्तु दाल्मीकि के रामायण में बनवास का कारण कैंकेगी की आपित की और यह बनवास चौदह वर्ष का था।
- राम बन-गमन पर दशरय ने जिन दीक्षा ली, उनकी मृत्यु नहीं हुई।
 जबिक वैदिक रामायण में दशरय की मृत्यु बतायी गई है।
- 5. वनमाला आदि अनेक उपाख्यानों का वाल्मीकि रामामण में अभाव है।
- 6. जैन रामामण में शूपंणका के स्थानपर चन्द्रमकी नाम दिया है और उसे रावण की बहन तथा खरदूषण की पत्नी बताया है। नाक काटने का प्रसंग सी बहां नहीं मिलता।
- 7. जैन परम्परा में लंका दहन का उल्लेख नहीं है।
- कैकेयी का स्वयम्बर, राम द्वारा अनेक राजाओं को अपने आधीन करना तथा लव-कुश का राम से युद्ध होना वाल्मीकि रामायण में नहीं।

जैन परम्परा की कुछ मुलमूत विशेषतायें

जैनाचायों ने इन परम्पराओं को अतर्कसंगत और अविश्वसमीय घटमाओं से दूर रखने का प्रयस्न किया और उन्हें यथार्थबाद के आधार पर बृद्धिसगत बनाया। इसके साथ ही मानव-चरित को अधिक से अधिक ऊंचा उठाने का भी संकल्प किया।

१. यथायंवाद

- 1. रायण वस्तुतः राक्षसं नहीं या, वह तो हम आप जैसा मानव था। उसका मूल वंश विद्याधर था जो विद्याओं का स्वामी था, आकाशगामिनी आदि अनेकानेक विद्यार्थे जिन वंशजों के पास रहा करती थी। इसी वश से राक्षस और वानर वंश का उद्भव हुआ।
- 2. राक्षस बंश की उत्पत्ति तब हुई जब विद्याघर वंशीय राजा मेथवाहन को शंकादि द्वीपों का राज्य दिया गया। इन द्वीपों की रक्षा करने के कारण उसके बंशजों को राक्षस वंशीय कहा गया है।
- 3. हुनुसात वर्गरह कोई बन्दर वहीं ये। यें दो विद्या सम्पन्न मानव ये जो वानर कुल में उत्पन्न हुए ये। इस वंश्व का प्रारम्भ अमरप्रम से हुआ है जिसने वानर आकृति को राज्यविन्ह की मान्यता दी और उस राज्यविन्ह को अपने सकृट आदि में अंकित कराया।

- 4. रावण के वश मृंह नहीं ये किन्तु उसके हारमें उसी की वश आकृतियां विखाई दी यी। इसीलिए वशानन नाम पड़ा।
- 5. परारय के साथ कोई देवासुरों का संप्राम नहीं हुआ। यह संप्राम तो कैंकेयी स्वयस्वर के बाद उसमें पराजित राजकुमारों से हुआ था।
- 6. सीता की उत्पत्ति न पृथ्वी से हुई, ने किसी कमल से और न अग्नि अथवा किसी ऋषि से । बहु तो गुढ़ वीय -रजजात कथ्या थी ।
- 7. हनुमान ने कीई पर्वत नहीं उठाया था। वे तो विशल्या नामक एक स्त्री चिकित्सक को वायस सक्ष्मण की चिकित्सा के लिए से आये थे।
- 8. ये मात्र अन्धिविश्वास और आन्ति उत्पन्न करने वाली कथाये हैं कि कुम्मकर्ण छह माह सोला था और करोड़ों महिष खाता था। कूर्म ने यदि पृथ्वी को धारण किया तो उस समय उसके स्वयं का आधार क्या रहा होगा? राम यदि त्रिमुबन भर माप करके भी अधिक होते हैं तो रावण सीता को कहां ले जा सकता है? रावण का पुत्र इन्द्रजित अपने पिता से किस प्रकार अवस्था में बढ़ा रहा? विभीषण आज भी कैसे जीवित है?

इस प्रकार के और भी अनेंक प्रश्न हैं। वस्तुत: ये कथाये निराधार हैं। सच बात तो यह है कि इस प्रकार की कथाओं का आकलन वैदिक, जैन और बौद्ध तीनों धाराओं में मिलता है। यह सब कायव भिनतवश ही होता रहा होगा।

२. मानव चरित्र

जैनाचार्यों ने स्त्री-पुरुष के चरित्र को परिस्थितियों के अनुसार निखारने का प्रयत्न किया है।

उदारता

वनरण की अपयश से बचाने के लिए दाम स्वेष्छा से कनवास जाने की दुष्छा ज्यक्त करते हैं। मरत के लिए भी जिन तीक्षा घारण न कर प्रजा पालन करने के लिए आवेश देते हैं। विद्या साधन में मन्न राषण को विभीषण के सुनाने पर भी डिगाते नहीं। जिन्न परीक्षा के बाद सीता से राम जनायाचना करते हैं। वालि—वध का प्रसंग उपस्थित ही नहीं होने देते। सदमण भरत वर्षरह की नष्ट करने के लिए कहते हैं परन्तु राम ऐसा न करने के लिए सदमण की समझाते हैं। विनश्य के पार जसगून्य प्रदेश में एक बाह्मण ने रामादि सभी के गृह प्रदेश के सवय प्रशा—बुरा कहा। सदमण जब उसे मारने तैयार हो जाते हैं तब राम कहते हैं कि स्वत्रण बाह्मण बादि हन्तस्थ मही हैं—

सममा व बहाणां विश्व गो पसु इत्यो या वालया बृड्डा । बद वि हु कुंपन्ति दोसं तह विश्व ए ए न हन्तव्या म इसी तरह राम वालिकित्य राजा से सहपूर्ति नामक म्लेक्ड राजा को बन्धन मुक्त करने के जिए कहते हैं।

चात्रवमित

स्रतिवीर्यं भरतं से बुद्धं करना नाहता था। वनसाला ने आकर राम की इस बात की सूचना दी। राम चिन्तित हो उठे। चनमाला ने सान्द्रवना दी और जाकर वितिवीर्यं की नृत्यं करते समय पकड़ लिया। राम उसे जिनमन्दिर में ले बाये। जिन भगवान की पूजन की और उससे कहा— तुम धरत के भृत्यं क्यं रहकर की मल में रहो— "मरहस्त होहि पिच्चो. गच्छ सुम कोसला नयरी।" गाई के प्रति यह ममत्य प्रतिकृत परिस्थितियों में भी बनाये रखना बहुत बड़ी जात है। लक्ष्मण भी इसी प्रकार राम के प्रति और गुरुजनों के प्रति भी सदैवं विनयी रहते हैं।

अन्य विशेवतार्थे

रावण को भी जैनाचार्यों ने एक प्रखर विद्वान और व्यक्ति केता के रूप में चित्रित किया है। उपरम्भा का प्रणय-प्रस्ताव दुकरा कर रावण एक बावर्ष प्रस्तुत करता है। रावण का वत था- "अपसन्ना परमहिला न यं भोत्तक्वा मुरूवा वि"। इंसीलिए सीता का हठात उपमोग उसते नहीं किया।

जैनाचारों ने वालि और सुपीय के बीच कोई क्लो विषयक संबर्ध का उल्लेख नहीं किया। इसलिए वालि पर कोई चारित विषयक साव्छन नहीं है। हमुपान के चरित की भी उनके कार्यों से उज्जवल बनाने का प्रयस्न किया गया है।

कैकेयो अपने विवोगी जीवन को स्वस्य बनाये रखने के लिए भरत को राज्याधिलिक्त करने का प्रस्ताव करती है। परन्तु परिणाम देखकर अस्यन्त पश्चालाय करती है। अन्तवः राम को वापिस बुलाने के लिए जाती है और राम से वारी स्वभाव की चंचलता का जाक्यान करती है।

सीता का चरित भी उसत है। अग्नि परीक्षा के समय राम को उद्बोध करती है। राम के सामर आग्नह करने पर भी गृहस्थावस्था में न आकर जिन-यीक्षा के मेती है।

७. खेनस्य

समूची रामकचा को जिस प्रकार जाल्मीकि ने हिन्तुरब से रंग दी है उसी प्रकार बैनाबारों ने जैनत्व उसमें कूट कूट कर घर दिया है। राम दर्शन के व्यास कृषिन से कहा जाता कि को सनुबक्त सारण करने वाला हो, जिसे जिला भोषत सर्व में विश्वास हो, सुसील हो, राम उसका अनेक प्रव्यों द्वारा सन्मान करते हैं -- सो पूक्कविं पुरिसो पउमेण अणेगदक्वेण, यतमचरिम-35-38.

जिनमक्त वज्रकर्ण का राम-सक्षमण ने पक्ष तिया। पज्रमणिय में कहा नया है कि रामगिरि जिसे हम बाज रामटेक के नाम से जानते हैं, पर रामजन्त्र जी ने जैन चीत्यालय बनवाये थे। इस नगर का परिकर मन हर वा जो वंग-स्थमपुर के स्वामी सुरप्रभ के अधिकार में था। दण्डकारण्य में जैन वासनधारी मृनियों का बाबास बताया गया है। जरायु ने भी, कहा जाता है, जैन वत लिये थे। रावण भी प्रतिदिन जिनेन्त्र पूजन करने वाला महाविद्वान महातमा था। जैनममें विभव को जड़-चेतव रूप से अनादि-अनन्त मानता है किन्तु उसका विकास कालचक के बारोह-अवरोह कम से उत्सिपिणी-अवस्पिणी रूप में परिवर्तनमीजता लिये हुए है। इसी कम में वंगों, मनुओं और वंगानुचरितों का भी वर्णन जैन परभ्परा में मिलता है। लोक स्वरूप का वर्णन भी इसी प्रसंग में जैनाचायों ने वपने पीराणिक मन्यों में किया है। लोकतत्वों को अपनी परम्परा में रंग देने की यह परंपरा उस समय सभी संप्रदायों में प्रचलित थी। जैनाचायों ने भी इस परम्परा का सच्छा अनुकरण किया है। वह इतिहास-संमत कहा तक है, कहना कठिन है।

६. समसामाधिक अवस्था

किन की समसामाधिक अवस्था उसके साहित्य में प्रतिविन्धित हुए जिना नहीं रहती । हरिषेण की धम्मपरिक्खा यद्यपि विवरणात्मक रचना है जिसमें उन्होंने पौराणिक आख्यानों की समीक्षा की है फिर भी यत्र—तत्र समसामाधिक अवस्था का चित्रण उपलब्ध हो जाता है। उसमें उन्होंने अपनी यात्रा के प्रसंग में भौगोलिक स्थिति का चित्रण कर पर्वत और वनों, तथा देशों और नगरों के सामान्य रूप को प्रस्तुत किया है तो साथ ही सामाजिक और धार्मिक स्थिति के कपर भी किञ्चित् प्रकास डाला है। दसवीं—ध्यारहवीं सदी का भारत किस अवस्था में था, विभोषतः धार्मिक क्षेत्र में, इसकी एक झलक धम्मपरिक्खा में विद्याई दे खाती है।

कया का प्रारम्भ अजातसन् से होता है। यहां उसे जितकन कहा स्या है। हम जानते हैं, जैनधर्म का उपलब्ध ययाप इतिहास मगध से आरम्भ होता है। महाबीर और बुद्धकालीन राजा सेणिक बिम्बिसार राज्यकान्ति के उपरान्त शिशु नागवंश का प्रथम नरेश हुआ जो तीर्यंकर महाबीर का अनन्य भक्त था। महाबीर का उपवेश राजग्रह की पर्वत म्हंबलाओं में से एक पर्वत विजयार्थ पर होता रहा। श्रेणिक उसी नगन्न का सम्राट्था। वैद्यारी नरेश वेटक की पुत्री उसकी महारानी वेशना का पुत्र अजातसन्तु कुणिक हुआ जिसने कोशस, कौशान्त्री, वस्स जादि देशों पर कुसलता पूर्वक आधिपस्य किया । अवन्ती राजा चम्बप्रधोत की पुत्री वासवदसा से वस्सनरेक्ष उदयन ने विवाह किया था। पंषय-चतुर्य भती ई. पू. में अवन्ती जनपद मीर्य साम्राज्य में संमिलित था और उज्जैयिनी मम्ब साम्राज्य के पश्चिम प्रान्त की राजधानी थी। मन्यकाल में यह नगरी मालवा प्रदेश की राजधानी बन गई। इस नगरी से जैन संस्कृति का गहरा संवन्ध रहा है।

हरिषेण ने जितमञ्जू को अवन्ती का सम्राट् बनाया है और उसी के पुत्र परम जिनमनत मनौवेग को धम्मपरिक्खा का नायक बताया है। नायक इस अर्थ में कि अपने अभिन्न मिल पवनवेग को सम्यक्त मार्ग पर लाने के लिए वह प्रारंभ से अंत तक प्रयत्न करता है। इसी अवन्ती प्रदेश की उज्जीयेनी नगरी के समीपवर्ती वन में मनोवेग ध्यानस्थ जैन मूनि से पवनवेग की धर्मान्तरित करने का मार्ग जान-समझ लेता है और फिर दोनों मिल तवनुसार पाटलिपुत्र पहुंचते हैं। इस घटना के उल्लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि जितमञ्जू (अजातमञ्जू) का राज्य मगध और अवन्ती पर समान रूप से था। सारी कथा पाटलिपुत्र के इदीगर्द भूमती रहती है। दोनों प्रदेशों में जैन संस्कृति समृद्ध रूप में प्रतिष्ठित ज्ञात होती है।

मनोवेग और पवनवेब दोनों पाटलिपुत्र की चारों दिशाओं में स्थित वाद-शालाओं में जाकर वैदिक-पौराणिक आक्यानों की समीक्षा और परीक्षा करते हैं। इसी वौरान मनोवेग मसयदेश, आभीरदेश, रेवा नदी, सौराष्ट्र प्रदेश, मथुरा, अंग, चंपापुरी, जोल द्वीप, साकेत आदि प्रदेशों और नगरों का वर्णन करता है और पाटलिपुत्र में ही पवनवेस का हृदय परिवर्तन कर मनोवेग अपने उहेंश्य को पूरा कर लेता है। इसी संदर्भ में आचार्य ने जैन तत्वदर्शन को प्रस्तुत किया है।

१०. जैन धर्म-दर्भन

वान्तर स्वकृष

धम्मपरिक्वा का भूल उद्देश्य आप्त-स्वरूप की मीमांसा करना रहा है। पौराणिक आख्यानों के आधार पर बहाा, विष्णु, महेश, इन्त्र, पाराक्षर आदि महादेशों बीर ऋषियों की विषय वासनाओं की समीक्षा कर उन्हें बाप्त स्वरूप की सीमा से बाहर कर दिया है। आप्त का अर्थ है- निर्धोंच, परभ विश्व ये, केवलकानी बीतराम परमास्मा । हरिषण ने कामवासना आदि से मुक्त देव को

बाप्तेनोक्छिमदोषेच सर्वजेनागमेजिनः । मन्तिक्यं नियागेन नान्यया ह्याप्तता भवेत् ।। रत्नकरण्ड्यावकाचार, 5; नियमसार, 1-5;

साप्त कहा है। उसमें सूघा, तृषा, बुढापा, रोग, जन्म, मरण, सथ, गर्थ, राग, द्वेप, मोह, चिन्ता, रांत, विचाद, खेद, स्वेद, निद्रा और आक्ष्यों ये अठारह दोष नहीं रहते हैं। वे मामण्डस, दुन्दुमि, चामर आदि अनिशय गूणों से अलंहत होते हैं। उनके गुणों का अनुस्मरण और पूजन साम्रक के कमीं का विनामक होता है। इसी संदर्भ में महाकवि ने कमा, मार्दन, आर्जन, गीम, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिञ्चल्य, बहाचर्य और अपरियह इन दस धर्मों का तथा अनित्य, अभरण, संसार आदि बारह भावनायों का वर्णन किया है।

बाबक वर

पवनवेग का ह्वय परिवर्तन होने के बाद उसे आवक वर्तों का स्वरूप समझाया जाता है। कवा का प्रारंभ और अन्त उज्जीयनी से होता है। यहीं मुनिवन्त्र ने उसे आवक वर्त दियें और फिर जैनधमं में दीक्षित कर लिया। पवनवेग ने स्वयं धर्म के सम्यक् स्वरूप की समझकर दीक्षा लेने का आग्रह मुनिवर से किया।

इस प्रसंग में बारह वतों का जो वर्णन धम्मपरिक्का में मिलता है वह उसकी परम्परा की वृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। नवम संधि में अष्ट मूल गुणों का उल्लेख है— अहिंसा, सत्य, अस्तेय, बहा वर्ण और अपरिग्रह ये पांच अणुन्नत तथा मध, मांस और मधू का त्याग। जैसा हम जानते हैं, अष्टमूल गुण परम्परा समन्तमन्न से प्रारंभ होती है। उनके पूर्ववर्ती कुन्दकुन्द ने पृथक् रूप से उसका कोई उल्लेख नहीं किया। पूज्यवाद अकलंक और विद्यानन्त ने भी कुन्दकुन्द का अनुकरण किया!। संभवतः समन्तमन्न के समय मदा, मांस, मधु का सेवन अधिक होने सना होगा। रविषेण (व सं.734) ने दोनों का समन्तय कर सावक न्नतों के साथ ही मख, मांस, मधु का वर्णन किया और खूत, रान्निभोजन तथा वेश्यागमन को भी छोड़ने का आग्रह किया। हरिषेण ने रान्निभोजन स्थाय पर भी समान रूप से बस दिया है। ग्यारहवीं सन्धि में तो रान्निभोजन कथा का भी वर्णन किया है।

अध्यम् गृण परंपरा से ही विकसित होकर षट्कमों की स्थापना की गई। भगविजनसेनाथार्य ने पूजा, वार्ता, दान, स्वाध्याय, संगम और तफ को आवक के कुलधमं के रूप में स्वाधित किया है। हरियेण ने इनका यथास्थान विवेषन किया है। पर इससे अधिक उन्होंने शिक्षादतों को अधिक महस्य दिया है। कुन्वकुन्द ने सामायिक, प्रोवध, अतिथिपूजा और सस्सेखना को शिक्षयत माना है। भगवती आराधना में सस्सेखना के स्थानपर भागोपभोग परिमाणवत और कॉर्तिकेय ने देशावंकातिक रखा। जनास्वासी ने सामायिक

^{1.} सम्बद्धिका, 4-23; 5.18-20; 9.13, 18-25.

प्रोवधीपवास, उपयाय, परिकोग, परिमाण और अतिविसंविधाय वस विये । हरिवेश ने खिक्षानसों का नामीरलेख किया है— सामायिक, प्रोपकीपवास, राजियोजन-स्वाम और मोगोपभोग परिमाणवस । स्वता है, आमार्य ने क्लिन-मंदिर वर्शन की स्वतन्त्र स्थान देकर उसको अधिक महत्व विद्यां है। भूमिश्यम, स्त्रीपरिहरण, जिनपूजन और सस्लेखना का भी यहां उस्सेख हुआ है। इनमें सस्लेखना की भी बतुर्व जिलावस के रूप में स्वीकार है।

११. धम्मपरिक्खा का व्याकरणात्मक विश्वेचन

धन्मारिक्या भौरसेनी किया नागर अपश्रंश में शिखी होति है। देसकी संक्षिप्त विशेषतार्थे इस प्रकार हैं-

प्रयुक्त स्वर: अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, न्हस्व ए, ओ, न्हस्य ओ, अनुस्वार एवं अनुनासिक

प्रयुक्त व्यंजन: क्, ख्, ग्, म्, य, ख, ग्, म,

द, द, ब, ब, म,

Q, Q, Q, Q, H, H,

य्, र्, स्, व् स्, ह्

जाषाविज्ञान की दृष्टि से इन्हें हम इस प्रकार विभाजिस कर सकते हैं-

- १) खण्डात्मक स्वतिम
 - i) स्वर
 - ii) व्यञ्जन
- 2) अधिकण्डात्मक स्वतिम
 - i) अनुनासिकवा
 - ii) सुरलहर
 - iii)बलाबात
- 1. खण्डारमफ स्वनिव पिवेधन

स्पर विवेचन

स्वरों का वर्षीकरण दीन आधारों पर किया जा सकता है, यथा-

- 1) जिह्वा का व्यवद्व भाग
 - i) वस स्थर- इ. ई. ए
 - ii) पश्य स्वर- था, उ, अ, ओ
 - iii) मध्यस्वर- ब

- 2) जिह्ना के व्यवहत माग की ऊंचाई
 - 1) संवृत्त- इ, ई, छ, क
 - 2) अर्धसंस्त- ए, जो
 - 3) अर्ध विवृत् अ
 - 4) विव्या- भा
- 3) बोष्ठ की स्थिति
 - i) वर्त्त्रित- जो, क
 - ji) अन्तित्त- इ, ई, ए

भाग (काल और कीमल तालु की वृष्टि से अम्मपरिक्खा के स्वरों की तीन भागों में विस्थित किया जा सकता है-

मूल स्वर- i) व्हस्ब- अ, इ, उ, हस्ब ए और व्हस्ब वो

11) दीम- भा, ई, ऊ, ए, लो

lii) संयुक्त स्वर- अई, अउ, एई, एउ

iv) अनुनासिक स्वर- अनुनासिकता प्रायः सभी स्वरों के साथ उपलब्ध है।

इत स्वरों के लघुतम युग्म शब्द की प्रश्येक स्थिति में मिल जाते हैं। इनके उपस्वितम भी खोजे जा सकते हैं। इनमें बलाघात शून्य स्वर की न्हस्य करने की विशेष प्रवृत्ति देखी जाती है। इसलिए अन्त्य स्वर न्हस्य हो जाते हैं।

स्वर विकार

- 1) अ > इ = निक्सिश्चपुर (8-21), कारणि, बहत्तरि अ > उ = वुदंतु (1.7), मुणइ, सम्मृहु, एक्कु अ > ए = एत्यंतरे, एत्यु
- अा > अ = रफ्जंग, कज्जे (4.10), अल्लबह (3.18), दिव्बहाद (3.5), सीय (8.10)

आ > इ = विज्, पुज, पच्छताव (3.10)

भा > क = विण्

आ > ओ = तही

3. इ > अ = सिरस

इ > व = वब्ह्

इ > ए = जे, ते

इ > ई = बद्धसिरीहर

4. ई > वा = वारिस

र्ष > र = किसि, अलिय (36)

र्घ > ए = एरिस

5. उ > अ = मउड

उ > इ = किंपुरिस

उ > ई = धीय

उ > को = पोग्गस

6. क > उ = समृहि, शुटहंसगइ (3.15), पुब्ब

क > ए = नेडर

क > ओ = तंबील, मोल्ल

7. ऋ > ल = धय, (3.4), क्य

ऋ $> \xi =$ किट्ठभिण्नु (4.6), धयरद्ठ (8.1), मिण्ण (4.5), णिवसेहरु (3.1), मियकपुत्त (3.3)

ऋ > उ = पुह्वि, वृह्तु, वृह्ती

ऋ > ए = गेह, णेह

ऋ > रि = रिसहो (10.11), रिसि (4.16), रिव्छि (4.17),

ऋ > अरि = उब्मरिय

8. ए > इ = अणिमिस, पंचिदिय

एँ > ए = केनास, कज्जे, परिहर, मेहानए, न्हस्य ए का भी प्रयोग मिलता है- सरीरे, पुरे पलीएवि पेच्छेवि, सीयणाए,

ए > अइ = वड्यस्स (49), कडलास, वहन

9. भो > उ = अण्णुण्ण

भो > क = कसारिय

को > न्हस्व को = तही, मंजरहो, विवसही, ससुरहो (8.3),

क्षो > ए = करेमि

 भी > भी = को कहलु (8.10), पियगोरि (11.3), मोतिय भी > अउ = गडरिय (4.9)

11. अस्व स्वर की दीवींकरण प्रवृत्ति- सीस, बीया

12. दीवं स्वर का ऋस्बीकरण- परिक्ख, तिरम्, रण्ज, विण

13. -हस्य स्वर का अनुस्वारत्य- दंसण, अंसु, उंबर

14. स्वर लोप-

i) अदि स्वर लीप - हुउं, हैट्ठामुह, बलग्ग

ii) मध्य स्मर लोग - परित, उदिद्ठ, पडिलिड

iii) बन्त्यं हवर लीप- बेब्मासे, सहावे, रोसे, सक्खें प्र

15. आवि स्वरागम : इतिव

16 स्वरणक्ति: बायरिय, किलेस

17. इत्राच्यात्यवः सच्छरिय, वंशवरिव

18. स्वयानमः उच्छ करेवि आयरिकवि, वेक्टिवि

19. संयुक्त स्वर

i) वह : दहर, अइस

il) वर : कीकहरा

iii) यउ : वसरिय

iv) एइ : वेड, लेइ

v) एव : नेसर

20. अनुनासिक स्वर

i) में : हवें 8,13 : सूब्हरें 8.20 :

ii) एँ : माणवेएँ 4.1, दीसँ 4.5, अणुराएँ 4.9, छड्हलें, राएँ

iii) हैं : पलाई 4.5, हि 4.5, हिएहि 4.5, मणहें 4.6, तेहि, जहि, एयहें

iv) उं : रजरवर्ड 4.9,

21. अनुस्वार स्वर

अनुस्वार के पूर्ववर्ती स्वर प्रायः अनुनासिक होते हैं। वर्ष के सभी अन्तिम वर्ण अनुस्वार में परिवर्तित हो गये। अनुस्वार कहीं कही बहुदचन का भी स्रोतक है। निरमुनासिकता की प्रवृत्ति भी दृष्टन्य है। जैसे – तहि 4.8 जिल्ह, तिष्ठ

- i) अं : वाहुदंड 4.3, जं, जं, पर्स्यंयु
- ii) इं : अहरहि 4.23, विकी 8.17
- iii) उं : उदर 4.5, प्रणिउं 4.5

स्वराषात : स्वराषात के उवाहरण गई, किलि अवि जैसे बन्दों में देखे जा सकते हैं। अन्त्याक्षरों पर प्राय: बलाषात नही रहता।

व्यक्तन परिवर्तन और विकार

- 22) i) आदि असंयुक्त व्यंजन: साधारणतः आदिवर्ती असंयुक्त व्यंजन अपरिवर्तित रहते हैं। जैसे-खणु, मिल, सरीरहे आदि। पर कुछ विशिष्ट स्वानों पर जनमें व्यत्ययता भी वेखी जाती है। जैसे- दुहिता > धीय; धृति > विही
 - ii) बादि य को ख: जमहो 4.18; जमवासि 4.19; जुहिद्द्रम्, 8.4; जोयब, 8.9
 - ili) बादि में संगुक्त व्यंत्रम रहने पर एक का लोप हो काता है। वैसे-वंशु, पश्चिमा, धमरट्डहो । परम्यु कहीं कहीं अपवाद थी मिलता है। वंसे-वहाइ, इ.6

- 23. 'स'बृति : जियारि, सीयम् 4.9; पमासिय, गणियवरी 3 11, समल 3.11; नवहमि 4.5
- 24. 'बंध्रुति : बंधावित 8.10; अयगीवह 8.16; लिहाविय ^{8.17}; पोमाविय 8.17
- 25. संप्रसारण: i) य > १ = कोइसतमाम 3.9; कंबाइणी
 ii) व > उ = विषदेउ 9.13, बाबुएस 8.4

व्यञ्जन परिवर्सन और विकारों के उदाहरण

क > य = प्रवस्थि 4.5; कुलयर 10.1, सात्रय 10.4, रवणायर, प्रयासिय, विणयवरी 3.11, समस 3.11

क लोप :- सर्वण, गर्जल 8.4, कोइल 4.23, बार्जल

ष > ह = सिहर, सुन्न, दुह्न, संलिहिय 4.15, रह्युह, 4.15

ग > न = णयर 9.7, सायरमूज 4.6, सरायवेजु 4.11, धीयजुयलु 10.2, जायसिरि 11.13, अजुराय

ग > उ = मानसवेउ

ष > ह = मेह, दीहंगी, पुण्णमेह

च > य = वयण 4.10, विधारविमुक्त, खेयह 4.7, सुत्रीयण 8.13

ज > य = भोयम 9.7 संसभूयंगी, पीमराय, णियजीविड

ज > ड = राव

ट > व = घरमाण, पावली उस 10.13, कुडिसमाव 4.14, ठक 4.5, फोबि

ठ > द = मन्न, वीब

ह > स = कील

ण - णकार प्रवृति अधिक है । जैते- ताराहरणु 8.22, पुणु, जाम, तणज, जाणेविणु, आयरेण

र > य = जियारि, गुणवय, रयणायर, सिय, असिय, सीय 8.10, वजिय 8.14, सीयस् 4.9, णियंव 4.16, अणुक्वय 10.14, वेबाल 11.6

स > य = माणयं मु 8,14

T > E = WEE 10.5

स > ड = पडिवासुएव 4.1, पडिवमण्

त > उ = तिस्छात्रड = 10.15, केकासबड 10.9, विविज्ञित 4.1, हिसमिट

त सीय - सुनकी 10.11, शणवह 11.3, वियमुणवह 11.26, रहसुह 4.15, कीऊहम 2.9, मंबरनइ उ

म > ह = जाई 4.2, पिडुनरमणे 4.11, अवरपह 2.16, जरणाह

व - नुजीवन् 10.10, मंदीवरि 9.17, परवारकहा 4.11, मयणानव
 2.19, पावसूवन् 2.12

व सींप - बासुर्वेव 10.9, सहएव 8.4, आइन्यणरेस 8.3, विश्तंगड 8.1

द > द = दक्झ, रहण

ध > ह = परवेण, कुण्जोहण 8.4, सह 4.2, रहिर 4.4, वर्हिम्हु 9.9

घ > इंड = गोबइंडण 11.26, बुर्ही 9.9

न > ण = मणोहर 8:2, अणुरस, 8.3, शीमसेणु 8.4, जीयण 8.9; जियदेसुं 8.9, जयरी

प > व = सेनावें ई 9.22, केविट्ठतर 9.2, सुवण्णदीव 11.13, दीवंती, कोवजलबु, पावंखलणु, गोविए 4.10, उवरि, अवहरें इ, कावें।सि 4.17, उवसम्मू

'प' लोप - रहणे उर 11.4, खगवइ, अमराउरि, गोखर

प > फ = फुल्ल, फोफल 1.8

प > उ = आउण्ण, आउरिय, मणवेयक्ड, निडणमइ 3.4, बाणरदीउ 8.16, उहुयमरूब, गोडरेण

फ > व = गृह

भ > ह = रासह 4.16, अहिणव, सीह, बलहद्दु, लोहंण

म > व = सवण, दवण

य > ज = जमुहो 4.18, जमपासि 4.19, जोयण 8,9, जुहिद्ठिलु 8.4, कुलोहणु 9.14

य > उ = जिणालउ

म > इ = अक्बइ, कोइल 3.9

र > ह = आढविय

र सोप = पउ

व > च = जिणदेच 9.13, वासुएउ 8.4, सुग्गीच, 8.18-19

व > अ = तिहुभण

ब > य = जुयरायही 3.3, गुजलायण्णही

ब सोप = पइट्ठ 4.10

ष > छ = छट्ठ

श > ह = दहलक्खण, दहविह

श > स = सरीर, दस

ह > भ = बंभण 10.6, वंभही 4.12

समीकर्ण

अवसत्य ध्वित स्वाने से दुवंत ध्वित का अपने में समाहित कर सेती है। इसी की समीकरण कहा जाता है। जब प्रवादवर्ती व्यंजन पूर्ववर्ती व्यञ्जन को प्रमावित करता है तब उसे पुरोगामी समीकरण कहा जाता है। जैसे- सुगावि करने, सैन्म, जन्म आदि। इसी तरह जुन पूर्ववर्ती व्यंजन प्रवादिवर्ती व्यंजन को समीकृत करता है तब वह प्रवादानी समीकरण कहलाता है। जैसे- अग्नि, जोगा। क्यी-कथी उद्यों का बी संगीकरण हीता है जैसे- खप्त, माणयंम, पासत्य आदि । संयुक्त व्यंजन का सरलीक्र्ण करके अनुनासिकीकरण के भी उदाहरण मिलते हैं। जैसे- जिणवंसण, पविजयद ।

संयुक्त इस्लाह परिवृत्त

नत > त = रतंवठ, मृत

स > नम = एन्यून ८,12, लक्षण ८,10

स > ज = खणभित्तु 4.19, खंतुब्बू

भ > ण = णाणावरणीय कम्म

> ण्या = वण्याण, अण्याण्यत्स

ग्म > द = दुद्ध 3.4

च्य > ज्ज = रवर्जग, विसवजरेण

त्य > च्च = णच्चंती 10.3, सक्च

स्म > प = ब्रप्पड, अप्पण्

त्स > रछ ≈ उच्छव

द्य > क्ज = खिरजद 9.12, विरुजाहर 8.16, उरजाण 11.1

हय/हव > जम = बुज्सह, अज्ञाण

र्प > व्य = क्ट्यूर

द्र > इ = महि

ष्ट्र > ट्ठ = प्रयरट्ठ 8.4, अंधयविद्ठि 8.2

चिट > दिठ = मुद्दि 2.7, दुद्ठ 4.22

ष्ठि > दिठ = परमेदिठ 10.3

ह्या > पर् = कप्ह, विषह

ब्क > मुख = पुरवार

स्क > स = संध

स्व > सी = सोचछंद, सचछंद 4.17

स्म > म = ज़िशिय

स्न > प्र = ग्हाणकरव 8.6

2. अशिकाण्डात्मक स्वनिम

इसके अन्तर्गत अनुनासिकता विवृत्ति, सुरलहर तथा बलाणात आते हैं। अम्मपरिक्का में इसके ब्वाहरण कोज़े जा सकृते हैं।

शस्त्रसाधक प्रणाली

व्यक्तं में ,सन्द-र्जना द्वीम प्रकार से होती है-

1) ज्ञाहरों में पूर्व प्रत्यूष (उपस्ती) तथा परप्रत्यम सनाकर

2) यो शब्द जोडकर, समास बनाकर, तथा

3) खबरों की पुनक्षित द्वारा

शस्यों में प्रस्थयों के योग से संज्ञा, विभोषण, क्रियाविजेषण, नाम, झातुएं आदि शब्द रूप निर्मित होते हैं और उनसे विविध भावों की अभिन्यक्ति होती है। इन्हें हम तदित प्रस्थय कह सकते हैं।

- 1) पूर्वप्रत्यय- जन्दों के पूर्व कुछ प्रत्यय लगाकर सक्द बनाये गये हैं। जैसे- ज + काल = अकाल, अ + ध्रम्म = अध्रम्म, अप् + जस् = अपजस, पु + जन = दुज्जन, अ + भय = अभय, स + फल = सफल आदि।
- 2) परमत्वय- ये प्रत्यय मूल प्रातिपादिक, व्युत्पन्न प्रातिपदिक अथवा श्वातुओं के बाद जोड़े जाते हैं। इनसे संज्ञा, विमोषण, क्रिया आदि शब्दों का तिर्माण होता है। जैसे- अस्म : एक्कल्स, नवस्म । इस्स : वृत्ति : इस्स : केसरिस्म । आवण : शयावण । ऊष : पिष्ठकण, हसिकण । इसी तरह से यक्तु, मोल्म, यस्सु : पेण्ठिवि, हसेविणु, हणेवि, मूणेवि, पमोत्सूण, णिसुगेविणु, पमोत्सूण, बोल्साविय, पोल्सित आदि शब्द भी परप्रत्यय लगाकर बनाये गये हैं।

रचना की वृद्धि से सब्द वो प्रकार के होते हैं— सरल सब्द और जिटल सब्द को कप मुक्त है वह सरल सब्द है। जैसे मुठ, आइ आदि। जिटल सब्द के वो भेद हैं— 1) मिश्र अब्द, 2) समस्त शब्द या सामासिक शब्द । पूर्व या परप्रत्यय (बढक्प) मुक्त रूप (मूल शब्द) में जोड़कर मिश्र अब्द बनाये जाते हैं। समस्त अब्द में एक से अधिक शब्द रहते हैं। वह प्रायः दो प्रांतुओं, संज्ञाओं, सर्वनामों, बिशेषणों, अव्ययों तथा दो विधिक्ष पदों के योग से निर्मित हैं। पारम्परिक दृष्टि से इसे हम मुख्यतः चार प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं—अव्ययी भाव, तत्पुरुष, बहुन्नीहि और इन्द । अव्ययीभाव में पहले पद के अर्थ की तत्पुरुष में दूसरे पद के अर्थ की, बहुन्नीहि में अन्य पच के अर्थ की तथा दन्द में सभी पदों के अर्थों की प्रधानता होती है। धम्मपरिक्या में समास के इन जारों मेदों—अभेदों को देखा जा सकता है। यद्यपि वहां समस्त शब्दों का बहुत अधिक प्रावस्य नहीं है फिर भी यद्य—तत्र समासान्त पदाक्सी मिल ही जाती है।

क्य साधक प्रणाली

क्ष्म प्रक्रिया के अन्तर्गत संभा के लिंग, वचन और कारण पर विचार किया जाता है। संभा को प्रातिपविक कहा जाता है और प्रतिपविक में बचन, जिंग, कारक बावि सूचक प्रत्यय समाविष्ट होते हैं। ये प्रत्यय वो प्रकार के हैं— व्युत्पादक प्रत्यय और विभवित प्रत्यय। व्युत्पादक प्रत्यव प्रातिपविक के पूर्व अथवा परस्थिति में समते हैं अवाँक विभवित प्रत्यय भव्य की मंतिम स्थिति में ही संबते हैं। प्रातिपदिक स्वरान्त और व्यंजनान्त दोनों प्रकार के होते हैं। जनके कारक रूपों की एक झलक हम निम्न प्रकारों में देख सकते हैं। श्रम्मपरिक्खा के बाधारपर अकारान्त पुरिलग के रूप निम्नप्रकार हो सकते हैं।

१. देज, देव, देवो, रिसहो	वेड, देव, देवा, रिसहा
२. वेज, देव, देवा	देउ, देव, देवा, रिसहा
३. देवें, देवे, देवेण, रिसहेण	देवहि, देवहि, रिसहेहि
४. देव, देवंस्सु, देवहो, रिसहो	देवहं, रिसहं
५. देवह, देवहै, रिसहे	देवहुं, रिसहुँ
६. देव, देवहो, देवस्सु, रिसहस्सु	देव, देवहं, रिसहं
७. वेबे, देवि, रिसहे	देवहि, देवाहि, रिसहि
८. वेब, देवी, रिसही	देव, देवा, रिसहा

इनके कारक प्रत्ययों को देखने से ऐसा लगता है कि इनमें मुख्यत: प्रथम, वच्छी और सप्तमी विभक्तियां शेष रह गई हैं। उकार बहुला प्रकृति है। निविभक्तिक पुल्लिग अकारान्त प्रयोग अधिक मिलते हैं। इनके कारक प्रत्यय इस प्रकार हैं—

	एकवचन	वहुवसन
ţ.	उ, अो	0
₹.	ਰ, o	0
₹.	ए, एँ, ण	fig
¥,	सु स्सु हो ०	ŧ
ч.	8 8	Z.
۹.	सु स्यु हो	ŧ
6.	इ.ए	fig

पुल्लिंग इकारान्त तथा उकारान्त आदि और स्वीलिंग के इकारान्त, उकारान्त आदि के रूप प्रत्यय कुछ परिवर्तनों के साथ इसी प्रकार लगाये वये हैं।

वयमाच

एकवयन	बहुबचन
१. हर्जे, तुमं, सो; इहु, तुहं	जे मे
२. मइं, तं, तुमं, ममं	षाईं, ताईं, अम्हें
१. महें, तेया, जेया, एप	अम्हारिहि, अम्हेहि
४. ६. पच्यु, मम, मोर, तोर,	पुम्ह्हें, अम्हहें, अम्हाण,
तव, तही, जासु, मम	ताणं, जाणं

५. यह, यमाहि ७. अव्यक्तिम, विद

बम्हाहतो बम्हासु, ममसु

८. हुई विशेषय

१) परिमाणवासक विशेषण

- जीवबु, तेवबु, केवबु, एवडू, जेडाउ, केविच, देतच

गुणवाचक विशेषण

- यहत, बेहत, तेहत, अव्हारिस

रेह, जेह, तेह

रीतिवाचक विश्वेषन

- श्रीम, केम, जिह्न, किह

सम्बद

i) ह्यान्सायक- कृत्यु, जेरपु, तेरपु, केरपु, वह, कह, कहि, एतहि, तरिंह,

समयुत्रासक - बा, जास, साम, थाव, साब, एमहि, ताबहि

iii) रीतिवाचक - बह, जह, किह, जैम, तेम, तह, तहा, तही

iv) षष्ठी रूप - बस्हारच, तुम्हारच, अम्हकेरच

v) संबन्धवांशक- सह

संख्याबाचक गुज्र

एक्कु, वो, बिष्ण, तिल, तिष्ण, चल, चयारि, पंच, छ, सस, मट्ठ, नव, वस, दह, एयारह, बारह, तेरह, चलदह, चलदस, पण्णारह, पंचवह, सीसह, सत्तारह, महारह, वीस, बाबीस, पंचवीस, सत्तावीस, पणबीस, तीसं, देतीस, क्तीस, चलीस, चलीस, पंचास, सलसह, चलसह, बाहत्तरि, छहत्तरि, पंचासी, सय, सहसु, सम्ब, कोकि, कोहाकोडि

संस्थानाम्य विशेषण-

यहम्, वीयत, वीऊ, तहर, चरत्यो, पंचमो, छट्ठो, छहो, सत्तमो, बट्डुम्हे, मनमो, वसमो, वहमो, एयारहमो, चरनक, पंचहि, तिहि

सवित्र बस्यय

नरत, वात, वार, भावत, दक्ष, हम, इत, इर, बुस्यू, पुरु, त्युक्, व्ह विकास कर

वयश्रीस में कियाओं के वर्तमान और श्रविष्य बुश्युक कर शहिता निश्चते हैं। मूतकास का कार्य प्रायों कुर्वन्य मूच्यों से निश्चाला पुना है। सुहन्तिप्रव

बारे परस्मिपत की बंद भी यहां संगाप्त हो गया है। बाबायंक और विश्वस्कृत कर्ण समान है। क्षिम-प्रयोग के भी क्य मिसते हैं। बावुकों में ब्रिक विविध्य विकार नहीं वेता। कहीं-कहीं तो बिना बातुंबी के ही काम पता लियो जन्म हैं। इस्तिए संकिप्तीकरण की ' इक्ट से वर्डमर्वरिक्सी प्रस्य वहेंती महायक्षे हैं।

वर्तमान काम

एकवेंचेन

प्र. पु. : मणीम, संबंधि, होमि

बि. पु. : होसि, मुमहि

त्. पु. : अरिथ, हसइ, गच्छइ,

होइ, हवेइ, बोल्लइ

मूसकाख

तृ. पु. : आसि, सम्मसियउ

भविष्यस पाल

तु. पु.': खप्पण्येसीई, भमेसीई, होसिंड) करेंसड

आशीर्य र

द्वि. पु. । जाणाहि, भणु, करउ

विध्यर्ग

ष्ठि. पु.श देहि; बेहु, पेक्खु, अणहि, क्रव्हु ·

तृ. पु : चलंतु, सहंतु, जियंतु, होउ

कर्मण प्रयोग

भणिज्यह, दिज्यह, किल्यह, बुष्यह, अध्छिज्यह

कुएन्स

वर्तमान इंदन्त - जार्चर्त, पद्संत, सोहम्पूर्ण भूतक्रवन्त - गर्भ, ययंत्र, हुन, जिल्लिय, जिल्लि, कंपित, पर्भणित हेत्वर्थ इंदन्त - गर्त, चर्तुण, पहित्रेण, प्राणकण पूर्व क्रवेन्त - वामिन्मियं, जर्ग मार्गियांने, कार्राव, पक्षाव, पक्षाव, मेरिनाव,

मृत्य, विश्वविर्विन्, करेरिक्, उहेरिक्

गच्छीमी, पेच्छामी

उप्पण्डाति, दसिति, रमति

इस प्रकार धन्मपरिक्खा की अपभंश भाषा का विश्वेषण करने से यह सच्य स्पष्ट ही जाता है कि इस पर एक ओर संस्कृत का प्रभाव है तो दूसरी जोर सौरसेनी प्राकृत का। इसे मौरसेनी किंवा नागर अपभंक्ष भी कहा जा सकता है। इसमें देशी कच्यों का भी प्रयोग हुआ है। कुछ उंदुर जैसे सन्य ऐसे भी हैं जो भराठी में आज भी प्रयुक्त हो रहे हैं। यह हम जानते हैं कि हरिषेण ने अपना प्रन्य अचलपुर में लिखा था और अचलपुर आज परतवादा(अमरावती) के पास महाराष्ट्र में है। मध्यकाल में, विशेषतः 9 वीं से 12 वीं खती तक अचलपुर जैन संस्कृति का प्रधान केन्द्र रहा है। मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र इसी के समीप अवस्थित है। अतः मराठी के विकास की दृष्टि से धम्मपरिक्खा की भाषा पर विचार किया जा सकता है।

अन्वार्य हेमचंद्र ने अपश्चंश के भेवों का वर्णन तो नहीं किया है पर उनके वैकल्पिक नियमों से उनकी विविद्यता अवश्य सूचित होती है। पश्चिमी सम्प्रदाय के हेमचन्द्र आदि वैयाकरणों ने प्रायः शीरसेनी को अपश्चंश का आधार माना है। आभीरों का आधिपत्य पश्चिम प्रदेश में रहा है और पश्चिमी अपश्चंश का आधार शीरसेनी रहा है। हिरिषेण ने भी आभीर देश का वर्णन किया है (2.7)। पूर्वीय वर्ग के प्राचीनतम वैयाकरण वरक्षच ने भी अपश्चंश के भेदों का कोई उल्लेख नहीं किया पर कमवीश्वर और पुरुषोत्तमदेव के अनुसार नागर अपश्चंश का प्रयोग क्षेत्र पश्चिमी प्रदेश रहा है। रामश्मेतकंदानीश्व (16 वीं शती) ने 27 प्रकार की अपश्चंश का बड़ा सामीप्य सम्बन्ध है। लगभग समूचा अपश्चंश सीहत्य इसी भाषा में सिक्षा गया है।

छंब योजना

धन्मपरिक्का की रचना प्रमुख कप से पण्मिटिका समवृत्त माजिक छन्दों में हुई है। पुष्पदन्त के समान हरिषेण ने भी कथा-वर्णन में इस समबतुष्पवी छन्द का सुन्दर प्रयोग किया है। इनके अतिरिक्त पादाकुलक, मदनाबतार, सम्बद्धी, समानिका, मौक्तिकदाम, उपेन्द्रमाता, सोमराजी, अर्धमदनायतार, रासह, विषुत्माला, तोटक, तथा दोधक आदि छन्दों का भी प्रयोग कडवकों में उपलब्ध होता है। इनमें अस्पमादिक छन्द कम है। समब्द्रत वाणिक छन्दों में से मूर्चगत्रवात की ही कवि ने अधिक प्रसन्व किया है पर उसे की उपहोंने विपदी जैसा बना दिया है।

अपमंत्र के प्रबंध काव्यों में प्रायः कहवकबद छन्दों का प्रयोग मिलता है।
कुछ कवियों ने वर्णनों के अनुसार छदों को भी वित्रण में सजीवता लाने के
लिए परिवर्तित किया है। हरिषेण ने भी इस रवनाखेली की अपनाया है।
उन्होंने चतुष्पदी षट्पदी छन्दों का दिपदी के समाम भी प्रयोग किया है। समाम
माभाओं वाले चार चरणों से एक छन्द बनता है। पर अन्य अपमंत्र कियगें
के समान हरिषेण ने भी प्रयोग करते समय इस निग्रम का ध्यान नहीं रखा।
उनकी पण्डाटिका में दो चरणात्मक इकाइयों में भी समानता नहीं है। कहींकहीं दो छन्दों को मिलाकर लीसगा छन्द बना दिया ग्रमा है। घरता (सन्ध्यादी
कडवकान्ते च ध्रुवं स्याविति ध्रुवा श्रुवकं घरता व, संदो. 6.1) का तो प्रयोग
समूचे ग्रन्थ में हुआ है। किव ने चरणों के विषय में कोई एककपता नहीं है।
कडवक छोटे भी है और बड़े भी है। उनके चरणों में कोई एककपता नहीं है।
पर प्रायः घरता के साथ हो कडवक पूरा होता है। संधि के प्रारंभ में भी घरता
के रहने का उल्लेख हैमचंद्र ने किया है (कविदर्पण, 2.1.) हरिषेण ने इस
सिद्धान्त का पालन किसी सीमा तक किया है।

हिरिषेण की ध्रम्मपरिक्खा के प्रस्तुत अव्ययन से इतना तो निश्चित हो जाता है कि इस प्रबन्ध काव्य ने परीक्षात्मक ग्रीली में व्यंग्य का पिश्चन कर एक नई विधा का विकास किया था। पौराणिक मिचन परंपरा पर महरी चोट करते हुए तत्वविनिश्चय के लिए वेदाय बातावरण तैयार करने भी मूमिका को निमित्त करने का श्रेय भी हरिषेण को ही जाता है। जनधर्म हठान् धर्मान्तरण के पक्ष में कभी नहीं रहा। उसकी वृष्टि में बिना हदय-परिवर्तन हुए धर्मान्तरण का कोई तात्पर्य नहीं है। जैन सोस्कृतिक इतिहास में जितने भी धर्मान्तरण हुए हैं, वे सभी हदयपरिवर्तन के आधार पर ही हुए हैं। इस दृष्टि से भी धर्मपरिक्खा के महस्य की श्रांका जा सकता है।

खन्मपरिक्या का प्रस्तुत संस्करण प्रवम बार प्रकाशित हो रहा है । इसकी पाण्युलिपियां जुटाने और प्रतिलिपि करने में हमारे अभिन्न मिन भी. सामन रक्षिके, भूतपूर्व शांति~प्राकृत विभाग प्रमुख, विवाजी आर्टन कारोत्ताः काराश की सङ्घारता अविश्वनरणियः है। यान्य के संपादन में उनकी सहायता के लिए हम बामारी हैं। मेरी पत्नी की पूर्वकी विनि, बंधारी हिन्दी विभाग, एस. एस. एस. कालेज, नागपुर का भी विविध सहयोग जदक्षिणान्य हैं।

ध्यम्पर्यदेशस्याः केश्वस्तुद्ध प्रकाशनः में यानवं संदेशिन विधानं, विधानमंत्रीलयं का स्वर्तिक अनुदान नृत्वत्र सहस्रकः रहाः हैं।। 'तवकें हमार्थाः संस्थानं उसकें। अस्मात प्रवास है। प्रकीन सामों के प्रकाशन में मन्त्रालयं का यहः योगदीनं निविषक्ष ही। प्रशंसनीय है। इसकी मुद्धनः व्यवस्था में राष्ट्रीहरूण प्रेतः कें भी शेषकरान-स्थानय नंदनवार चंश्वतों का सहवोग भी सप्तर्भवार स्मर्शीयं हैं।

म्प् एक्सटेंबन दक्षिण, सबर, नागबुर-440 001.

वीपावेशि : १८-१०-१९५०

स्मगंधन्य खेनं ''जरेरकेर'' यानि-प्राकृत निषाण प्रमुखें नागपुर विश्वविद्यालय

धम्मपरिवस्ता

णमो सुदवेबदाए

सिरीहरिसें**णविरइ**आ

धम्मपरिक्खा

१. पढमो संधि

(1)

मिञ्च-पुरंधिहि कतु मुद्धें तणू-मण-वयणें। मतिए जिणु पणवेवि चितिउ बुहहरिसेणें ॥ छ ॥

म गुय-जिम्म बुद्धिए कि किज्जइ तं करंत अवियाणिय आरिस चडमहुँ कव्यु-विरयणि सर्यम् वि. तिषिण वि जोग्ग जेण तं सीसइ जो सर्यम् सो देउ पहाणउ पुष्कवंत ण वि मागुसु बुच्बइ ते एवंविह इउँ जडु माणउ कट्य करंत् केम णवि लज्जमि तो वि जिणिद-धन्म-जगुराएं

मणहा जाइ केरबू म रइउजह। हासु लहिह भड रणि गय-पोरिस । वुष्कयंतु नण्णाणु णिसुंमि वि । 5 श्रहमृह-मृहे थिय ताव सरासङ । अह कह लोया-लोय-विमागउ जो सरसइए कया वि ण मुस्चइ। तह छंदालंकार विहीण उ। तह विसेस पिय-जणु किह रंजिम । बृहसिरि-सिद्धसेण स्वसाएं करिम सर्वं जि णिलिणि-जल-थिउ जल् अजुहरेइ णिदवमु मुलाहलू।

> धत्ता- जा जगरामें आसि विरद्ध गाह-नविध । साहमि धन्मपरिक्य सा पद्वविधार्वीत ॥ १ ॥

14

Note: Numbers under Bracket () indicate the numbers of verses and numbers without the bracket in lines represent the numbers of lines of the verses.

(1) a. begins with 'क नम: सिद्धेम्य:" b. begins with क नमो वीतरायाय शक्ता 2.a ॥ १॥ for गळ॥ 1.a मणहर b न रहज्जड inter. भड and राग, 5.b अण्णाच णिसुंभु 6.b जेगा, b ताम for ताब, 7.b • वियाण्डं, 9.b हुद, a बड, b माण्डं, b • विहुण्डं, 10,b पि उजणु, 11.a •अनुरायदं, b बुहहिसिरिं , 12.b निविणवल ।

(2)

इह अंवूतर-अंछणदीवए सावयदिहियह जिणवरवयण् व विविद्वारामगामसीमंतिह सोहइ पुरणयरेहि विसालउ जन्मफलोहाणं दियविउलइ जींह मगहरखेयर विलवाहरे जहिं मयघू मिराइ कलहंसइ कय गोमहिसिबसहणिग्घोसइ

भरहखेलु अस्थि रिव दीवए ससर सुरयदियद् वहुवयणु व । ण सीमंतिणिकुलु सोमतिहि। हरगलकंदल् णाइँ विसालउ। पिहियदियं तुष्जाणइं विचलइ। भिरमभरकुलिजल्ललयाहरे रइरसवसइं मुयहि कलहंसइ। णंदहि बहुपयाइ जिंह घोसइ।

घत्ता- तहि थिउ मज्स पएसि गिरिवेबब्दुविसान उ। वहु सउगउलिगवासु सोहइ णाइं जिणालउ ।। २।।

(3)

जो उत्तंगो छत्तपयंगो णरणाहो इव बहु-मायंगो केसरिल्लु णावइ पंचाणणु सुरसेविउ णं दससयकोयण् मेहु व वरणियंबु रुप्पयमञ कत्थइ पोमरायवइरल उ कत्षद् इंदणीलमणिसामल् फलहंतरि अवलोइय मोरो जिंह रमणीयपएसहिं रमणिउ सुरयसुक्ख माणहि गेयंतरे संचरंत अच्छरयणसारो सालत्तयपयपायाउलउ

दीहंगो ण सेसभूयगो। विविहकुसुमसर णाइं अणंगी। तिलयसोह जुउ णं वेसाणणु । थियसारंगु णाइं णारायण् । सोहइ वलहद्दु व धवलंगउ। सरयमेहु णं संझाजूत उ। णाइं सुरिदकरिंदु समयजल् । देइ झडप्पं जींह मजजारो। किण्णरीहि सहुं चलहारमणिउ। हावभावविक्ममेंहि णिरंतरे। 10 जहिं सुम्मद जेउर झंकारो। जो सोच्छदो इव पावाउलउ। 12

10

5

- (2) 1 b लच्छण, b भारहखेतु 2.a सन्सुवियट्ठु, b सुरयवियट्ठु, गिहियदियंतुज्जाणइ विजलइ ॥ विविहृदियतुज्जाणइं विजलइं, a ॰ दियंतु उन्जाणह, 6.a जिंह, a भिया, a न्त्रयाहर, 7.a जिंह, b मयधु-म्मिराइं, a रहरसबरइ, सुयहि, b मुयहि, 8.b बहुपयाइं। b घोसइं, 9.b णंदउ॰, for तहि यिउ, 10.a णाइ।
- (3) 1.b उत्तृगो छित्त , 3.b वेसायणु, 4.a थिउ, 6.a पोमराइ०, a ०जुतो for जूताउ 8.2 जहि, 9.b जिह, b किण्णरेहि, 10.2 सोन्खु, b माणींह गेयंतरो, a बिक्समीह, b जहि, 17.a पयंत्र for प्य,

भत्ता- उत्तरसेढिहि सट्ठि तहि णयरी उरवण्गत । वाहिणसेढिहि सत्थि पंवास जि जणपुण्गत ॥ ३ ॥

14

(4)

तांह पंचासह मिष्म सुरिटी
कामिण क्व जणगयणियारी
जा सुरतरुववणे णं विसालें
परिहएसारसहंसखः लए
सिवपायारमिलिकं जुलियए
उप्परिय ण सो इइ सोहंती
गोउरेण णं रुंदें वयणें
भवणरयणणयणेहि णिहालइ
मंदिरसिहरष्यक्तसिहिजूहें
संचरंत माणिण पञ्मारें
अइ सोहाजुय किह विण्णजन

चता- महिहरपियउच्छंगे बसइ तरदिठ व कंत

णयरि वहुजवंसी सुप्रसिद्धी। जिंह दीसइ तिहं सहइ जणेरी। अइ रेहइ णेलें जवणीलें। मेहालए णं किकिणि मुहलए। वं चवण्यध्यमालए धुलियए। 5 कणयकलसउरवह दरिसंती। हसइ व तोरणमांतियरयर्गे । अहिनवतर्पल्लवकरवासद् । सोह देइ णं केससमृहें। चल्लइ णं णेउर झंकारें। 10 जाहि सुराहिव गवरि ण पुज्जइ। पउरभोय गुणबंती । रयगदित्ति दीवंतो ॥४॥ 13

(5)

तिह असि राउ णामें निषारि
पयह वि खयरेसु ण खयरणाह
अपुरंदरो वि बिनुह्यणहट्ठु
अकुमाह वि जो सत्तीपयासु
अदिसागअविअणवरयदाणु
तणुकंतिपरिजय छणससकु
सहणो वि विस्थसुहरह्वरस्नु
समसमिनसमियणियकोत्रजसण्

णमदंडपहावे णिषिजयारि ।
असिरोहरो वि लच्छीसणाहु ।
परिपालियसज्जणु शिह्यदुट्ठु ।
वधवपरियणक्ष्मुरि पूरियासु ।
अदिणेसु विउग्गपयावयाणु । 5
अणुरायणमिय सामंतचक्कु ।
अद्दरिसमाणमणमोहबन् ।
जिजमुणिपमाणकयपावस्राणु । 8

b जो छंदो, a omits इब, 13 a त्सीवहि, b स्टि, a जयरियउर॰ b •वण्यार्ज, 14.b जि संपूष्णव ।

^{(4) 2.}b कामिणी व, a जा णयणक, b सुहइ, 3.a सुरतर०, 4.b ० हंसबमालए, 8.b भवणस्यणस्योहि, a अहिणव०, 12 a पीय०, 13 a तरट्ठी, b सम्बद्धित ।

मत्ता- पयभरधरणप्रवीण् रञ्जंगसमिद्ध दुरज्झियामिष्ठत्तमन् । सो वित इंदु व अतुलबन् ।१५॥ 10

(6)

तहो बाउबेब णामेण घरिणि णारी सुहतस्बणसम्बद्धांग तहे अहिमश्चोवम् वणु विहरद बहरसपाणिपत्सव चसंतु कोमसजंबारंभा सहंतु पिहृपीणपश्चर फलमहंतु रसाहर्गिवशिहस फुरंतु चंदणकप्पूरहि महमहंतु पद्यय णावद्द परसीयसुहिणि
मुहणयणि जियम्छणसिसुर्गि ।
अहणम्छि ण मंसुरिस माद ।
वेत्लहस बाहुबल्ली सर्लेतु ।
सियमसियणयणमुसुमद सर्लेतु ।
अस्याविल्विल्यसिस् हितु ।
सम्छाउ सिवन्यद तिस्यबंतु ।

वसा- तर्हि तें खयरणिवेण लक्ष्यण गुणसंजुत्तउ । जणिउ पुत्तु मनबेड संगु अणंगृ व बुत्तउ । ६ १।

10

(7)

सो जंदणु जंदणु सज्जणाहं बहुद व मणोरहु वंधवाहं आवासु समगमसंहे सो अवसें परतिय पिष्हिरेद्द परजीविज जियजीविज गणेद्द परिगहे पमाणसंखा करेद्द इय पंचाणुक्वय विजयजुज् साहद विज्ञाज ज वह्लियजुर णावद्द मसिकुन्वउ दुष्जणाहं ।
णं वस्त्रणिहाणु अवधवाहं ।
जो जा उदाउ वेयासहेहे ।
परधणु ण क्याह वि अवहरेह ।
हिंउ भिउ मउ सम्बु वयणु व भणेह । 5
विणएणप्पाणु वसंकरेह ।
गुणवयसिक्खावयधम्मरउ ।
भाग।विहमवर--गुणस्कयउ ।

बत्ता- सो णियतायहो गैहि अत्यसत्यु जाणंतत । माणसबेउ कुमार हुउ जोव्वण मुणवंतत ॥ ७ ॥

10

(8)

सहयरखेयरमणणंदणहो खाइयसम्मलविराइयहो कीलंतहो खगबद्दणंदणहो । जिणवयणरमय-अणुरादयहो ।

- (5) 1.4 तहि, 3.a ०सज्जणणिहय ०, 4.a Page No. 4th is lost after वंशवपरिय, 10.a.b अतुलवसु ।
- (7) 1.b वह्ठइ, 6 a from here page No. 5 continues, 8.a गुणिस्सियंड, a.b सत्यसंस्थ, 10.b जोवण ।

विजयाजरिखयररायजणिज
सो खेयह हुउ तहो मिस्तु निह मिच्छादिद्ठि वि तहो आवहह अह णेतु ण एक्सासिज घडह ते विण्णि वि परमणेति चडिया ते विण्णा वि सयनकलाकुसना ते विण्णा वि संदर्सदरेति

जी गामि प्रस्थित प्रशिव ।
जन्मही वि ण तुट्टइ पेहु जिह ।
जग्मोन्ज ताई जिन्न सामग्रह ।
अह घडइ खण वि परिचलइ ।
गं इंदपब्रिट वे कि घडिया ।
जिजविज्हुवायपंक्रयमसला ।
कीलंति विविहसरिसरघरेहि ।

चत्ता- एक्कहि दिणि माणवेउ वाहिणभरहि भनंतउ । वंदणह ति करेइ जा जिणपयपणमंतउ ॥ ८॥ 10

5

(9)

चलंत उ वि थक्कु णिएवि विमाणु
मुणीस के उलणाणसिमद्ध
असित् व होण्ण रउहसहाउ
वियप्पे वि एम अहोमुह जाम
णरामरिकण्णर खेयरचंदु
णहंगयणे तु वियारविमुक्क
विसटटु सरोहह वीहिवसण्णु
सियावयवारणवामरज्नु
प्याणप्यासियणिम्मलधम्मु
सुरासुरहोइय कुसुम्बामु

विचित्ततः खेयर ताम विमाणु ।
सुमितु भवंतरणेहणिवद् ।
ण सस्लद्द जेण विमाणु णहाउ ।
णिरिनक्षद्द दिस्ठु मूणीसर ताम ।
तमोहणिसुंग्रु फुरंतु व चंदु ।
फुरंतवणंतसुहादं चउनकु ।
अघाउ अच्छाउ सरोर पसण्णु ।
दिसासु समुग्गय किस्ति महंतु ।
समाहि विसेसविणासियकम्मु ।
वियाणियछंदु वि मोत्तियदाम् ।

10

5

घत्ता- तं केवलि पिच्छेवि णह्यले उपयरिये । ताम अवंतीवेसु पेच्छइ सिरियरियरियं ।। ९ ॥

^{(8) 2.}a.b संमत्त o, 3.b • जाणि उं, b भणि उं, 4.b तहु, a मित्त, 5.b ताहं, 6.b omits the line अह . . . ज बह to परिचल इ. 7.b परमणे ह, b पिडिया for भडिया, 8.b • भसन, 9.a • मंदरकंदरेहि, a • सरवरेहि, 10.b एक्जिहि, b दाहिणहरहे, 11.b ति करेबि, b • पणवंत उ

^{(&#}x27;) 1.2 मक्क, 2 ताव, 4.2 एवं अहोम्ह जाव, 5.2 क्किनर, b किन्मर, 6.2 तु, 2 क्विम्क, 2 क्सहाइ मडक्क, 7.b बिस्टू, b क्विटिमसाम्म, b जक्काहि सरीर, 8.2 समुख्जम, 9.2 विवासियकस्म, 13.2.b कोसुमवाम, 11.2 संगरि म in margin before महमलंड, b अवयरियंड, 12.2 ताव, 2 सिरिपरियंड।

(10)

जिहं गिरिवर रेहइ णं सायर सीरि णोच णावइ वररमणिज मोत्तिपहारसुत्ति पयडंतिज जिह गोवलींह गोविमंडलियज जितइ णाणासाससमिद्धइं वयकारंडहंसपरिपुण्णइं गोमंडलमंडियसीमंतईं जिह गोजरपायाररवण्णइं

सजससिव्युमनहुरमणायर ।
कुढिलउ मंबरगइउ सुररमणिउ ।
पुलिणणियंविवित् सोहंतिउ ।
रासु रमहि जोक्वणमय लियउ ।
जहि उववणई कुसुमफलरिउ ई ।
जहि सरवरई भिसिणिदलकुण्णई ।
गामई बहुधणकंषणवंतहं ।
णयरई णायरणरपरिपृष्णई ।

पत्ता- तहि उज्जेणि णाम वरणयरि मणोहर दिट्ठ । अमराजरि व विहृद जा विवृद्यणह मणिट्ठ ।।१०॥

10

(11)

णाणाकेलपंतिघृवंतिल सवणसहरि करिकंचणमयघर गृहविणयाणुगामि ण य जिणवर जहि रहकरणालियणकोच्छर बहुवंदणभुयंगकयराह्य सरयरणयणायरवेलाइ व चलवण्ण सयसुर घणुदिलि व सकलसजिणबहिसेयपवित्ति व जिह गहलगाउ सुरहरगंति । जिह सोहंति गाइं सुरमहिहर । जित्य भव्य गर गं पवरामर । स्रयल यि तिय गं मणहर अच्छर । गं मलयायल अडइ विराइय । वहु प्यसावणयणमालाइ व । पंडुर दीसइ तिषयण मृत्ति व । सव्वसुहं करिमृणिवद्दविति व ।

घत्ता- तहि उत्तरहे दिसाइ माणसवेउ खण्णउ । उसवजु मत्ति णिएइ गाणातवसंख्ण्णउ ॥११॥

10

- (10) 1.a जहि, b सझससविद्दुम॰, 2.b वररमणि उं, a मंगरगइसुर॰, b सुरमणि उं, 3.a ॰ णियंबिबद, 4.b omits the line जहि गोवलिहि... लिख उ. 5.b छेत्त इं, a ॰ सिख इ, a उववण इ, a ॰ रिख इ. 6.a ॰ पुण्ण इ जहि सरवर इ, a ॰ छण्ण इ, 7 a ॰ सीमंत इ गाम इ बहुक णकंषण वंत इ, 8.a ॰ पायारबण्ण इ णयर इ, a ॰ णरसंपुण इ, 9.b ति है, b ॰ वरणयि र, 10.b झमरावरि, b विवृह्यणमणिट्ठ।
- (11) 1.b व्यक्ति, a पहिलागाउ, 2.b जाँह, 3.b पररसर, 4.b जाँह, b सयलं, b inter. जं and मणहर, 5.b व्यवंग, a व्यवद्याहर, b मलयाणिलसूवणराहर, 7.b व्यक्ति for वित्ति, 8.b सम्बं, b व्यवित्ति, 9.b तहि, b विसाहे माणसवेडं, 10.a जिएवि, b तहबरक्षणाउ।

वहु चुहंति सयराविसस्हेहि सिदुवारमंदारिह कुंदहि तामेहि तासिंह तासूरिह चंदणध्यअस्साहि व्हनसाहि णालिएरजंबीरकविट्ठिहिं लविलवंगेसाकंकोर्माह तिहिं सगणागगरामरवंदही सेसाण वि मुणीण पवणेटिपणु गोत्तु णाउ अध्यउ पयडंतज जाणुअसिरु धरणियसि णिविट्ठउ

णं रेहर मंबहि मामंदेहि ।
चंदणियनुमंदिह मुनुकुंदिह ।
सालतमानतासमानूरिह ।
फोफलिमाहुनिगवह वक्खिहि ।
पुण्णायहि णायंजणिरिट्ठेहि ।
कप्परायरितस्यहि वज्लिह ।
बंदणह सि करेबि मुणिदहो ।
भवियह इच्छाकारु करेप्णिणु ।
परमाणंदे णाई णहतन्न ।
ना पुन्छंतु एकु बणि दिट्ठन ।

10

5

घत्ता- इह संसारि मुणिद केत्ति उ सुह दुहु पाणिहि सामिय करणमईहें अक्खिह सह अण्णाणिहें ॥ १२ ॥

(13)

एत्यंतरे अहिणवजनहर सरु को वि पुरिसु कत्यइ गच्छंतउ ता समृहितु दिट्ठु तें करिवर उण्णयमुंभु अण्णुण्णयपच्छउ पिच्छेवि मणुअरुउ णिरु रुट्ठउ करिण करेण ण विष्यइ जावहि कासहो तं चु तेत्यु अवलंवेवि जाम अहोमुहं किर अवलोयइ चडकोणेसु खयारि भूगंगम खणिउ सिया 5 सियखहिताकासो वच्छायण्णहि भणइ मुणीसक । विज्ञाडइहि भिल्लपहे पत्त । णिज्ञादबंधु तुंगु णं गिरिवर । महिघुलंतदीहरकरपुष्ठछ । घायंतेण तेण अददुट्ठछ । अडद्दह्अड्ड तें दीसद तार्वाह । गयभएण अण्णाणजें लंबेवि । ता गुष अजयर तेत्बु वकोयद । दीह णाइं तमतमणरयहो गम । पारभिछ णं भवित्तिहि णासो ।

5

10

^{(12) 1.}b चुहंत, b ०सहाँह, a मायंदेहि, 2.a सिदुवारिमंदारेहि कुंदहि, b मचुकुंदाँह, 3.b हितालाँह तालाँह, a तालूरहि, a omits ०ताल० before मालूराँह, 4.b चंदणधुवअक्खेंहि, बहक्खेंहि, b पुष्फल०, a ०माहुलिंगि०, b वहुदक्खेंहि, 5 णालिएरिजंबीरिकविद्ठहि पुण्णायहि णायंजणरिह्ठिह, 6.b ०लवंगएल०, a ०तिलयहि व उलहि, 7.a तहि, b खगणाय०, 8.b भवियहं, b करेवियु, 10.b जाणयसिर, b एक्कु, 11.b inter. सुदु and दुद्दु, b पाण्यहे, 12.a करणामईए a अण्णाणिहि।

एतिह करिणा तं असहंतें करिगुद थाएँ जा तर पेलिड

अडतउविज्ञविसमाहुउ देतें। ता साहहि भामरि महु पयलिउ।

वत्ता- उटिठ्उ महुयरिसद्दु णिसुणेवि उद् णिरिक्बाइ। किमिणं इय चितंतु महु गलंतु ता पेक्खाइ।।१३।।

14

(14)

तो उद्वयणस्य उद्वउ महुविदु
सोसाउलहिको ण लोहेण ण उ चलइ
तो महुयरी तथणसुईहि विज्मेद
इय एत्तियं वच्छ दुनक्षं मणें मुणहि
तहि बहवि जा कहिय तं मुणहि संसाद
भिल्लाण पंथो अहम्मो अडो देह
कातस्य तंवो वि आउसु वियप्पेहि
सप्या चयारि वि कसाया वि णिहिट्ठ
एरिसु वियाणेवि जिणधम्मु कीरेह
धम्मेण कुलयर जिणा चिक्कणो होति

पिंड जिणुत्तिम जोणिषु अद्दर्भद्व ।
पादिद्व चितेद अण्णो वि जद्द गलह ।
द्वेवियवसो कि पि दुनस्यं ण नुज्योद्द ।
सोनस्यं पि महिवदुणा तुल्लू परिगणिह ।
पुरिसो वि जो जीवो करी मच्च् दृश्वाह । 5
अजयर पुणो णरज तरु कम्मनंधो हु ।
सियअसिय दो जंदुरा पनस्य जंपेहि ।
वाहिज महुयरीज जाणेह धम्मिट्ठ ।
अद्दुत्तरो जेण भवजलहि तीरेद ।
छंदं पि मयणानयारं पर्यपंति ।

भत्ता- वरसोहग्यहो पुजु गुणलायण्णहो सायर । धम्में सुरणरदेहु होई णिरोउ क्लेवर ॥१४॥

(15)

धन्मेण रयणंसुजालाही रम्माइ धम्मेण हरिरहा जाण जं पाण धम्मेण मणिकडय कुडिसुत्तकुंडलइँ कंचणविणिम्मियइ उत्तुग हम्माइ। धम्मेण सियचामरा छत्त जर जाण। धम्मेण देवंग व छाइ उव्जलहैं।

(13) 1.b बच्छावण्णहि भणहें, 2.a कत्य वि, b गच्छांतउ हिंडहरें, a भिस्सपहु, 4.b अणुण्णय , b व्युसंतु, 5.b मणुयक्उ णिरुहर्टें, b अद्युद्दें, 6.a जाविह सडहिंह अड, a ताविह, 7.a अप्यान, 8.a जाव शहोसुह, 9.a व्यवस्तो, 10.b सियासियआहतकासो पारंभित गरिवित्तिहे णासो, 11.b सडतिहिंद, 12.a व्यायं जा तर प्यक्तिन, b भामिरहु प्रयक्तिन, 13.b उदिहम ।

(14) 1.a उट्टंडिंग, b बिणुत्तिम सुत्तिम जीणियु, 2.b पाविट्ठु, 3.b तं for तो, a स्वयमसुद्दीह, 4.a.b मुणिह, a.b परिमणीह, 5.b सबद, b मुणिह, 6.b सबगद, 7.a कास्सस्त, a विवय्पेहि, 8 a महरीज, b जाणेहि, 9.a सी for जीण, 10.a चिक्कणा, 11.a वरसोहमुहो, b गुणलायण्यहं,

12.8 कलेयर ।

ध म्मेण संपुष्यक्षययेदवयणाउ उत्तुंग अइपीणशीवर--यणासाउ दरप्यकावव व्य जणजणियलासाउ जायंति पुरिसाण बहुणेहवंताउ धम्मेण सक्वाहं पुष्ठा णरा होति पण्युत्सकंबोट्टदलदीहणयणाउ । संगुरिय सुसिणिस भसलंखलवालाउ । 5 ससदंघरायस्य मं वाणमालाउ । गेहम्म महिलाउ गुणविणयजुताउ । धम्में विणा ते वि वयणु वि ण पायंति

चला- अहवा कि वहुएण जं जं सोहणु दोसइ। तं तं फलू ध-मस्स नागहि केत्तिन्न सीसइ ॥ १५॥

10

(16)

तो लहेवि अवसर स खेयरो भणइ दियपुरा णत्य संविटिठ्उ जिणवरिदमगगण्जाइउ तं सुणंवि मुणिणा पर्यपियं तम्म णेवि परक्यपुराणयं हेउ ण म सुदिट्ठंतसोहिपं कम्मवधसंसारमोक्समं करहि ता मुमइगुण विलासिणी

> वता- इय पर्भाणत णिसुणैत वेएँ माणसवेत

मुणिषा वे वि सिरसिहरकमकरो ।
मज्झ मिलु अइबिन्छदिद्द्रित ।
कह हवेइ सम्मत्तराइत ।
कुसुमन्यक देवाण जं पियं ।
प्यहिक्षा ण व घडमाण्यं ।
बिणम्यं पमाणा विरोहियं ।
भासिओ ण वियवरसमन्बन्धं ।
हवइ छंदु एरिसु विनासिणी ।
प्य णवेवि सणिणाहहो ।

पय णवेवि मुणिणाहहो । चल्लिउ सम्मुहु गेहहो ॥१६॥

10

(17)

जा विमाणे ण खे खेयरो गच्छए ताम तेणावि सो झित्त आलोविड मिन मुन्ण मं कत्य तं अच्छिड कील सेनें तहा कील वावीजलो देव हम्मे वणे लोयणाणंदिरे सा विमाणत्मु मित्तं सुहं वेच्छए। बाउवेएण एंतूण आलोधिउ। ताय गेहे मया सम्ब् आउच्छिउ । बिल्लगेहे सरे बाहियालीबले। जोइउ पट्टणे मंदिरे मंदिरे।

- (15) 1.b जासाहि रम्भाइं, b हम्माइ 2 b हरिकरिनहा पवन्णर जाण धम्मेण, b छत्त जंपाण, 3 a कुंदलइ, a उज्जलइ 4.b छणइंद०, 5.b भंगूरियसुस्रिणढ०, 6 a झसबेंधायम्स णंदालमालाउ, 7.a पुरिमस्म, b जेहबंतच 8 a सन्वाइं, b धम्मं, b पार्वति, 10 b जाणहि, a कि किर for केसिंड, b सीसइं।
- (16) La सो for स, 2.b भगई दियपुराणस्य संठित, a व्हिट्ठत, 3.b हवेत सम्मत्तरहत, 5.b ण व इब घडमाण्यं, 8.a परिसु for एरिसु, 10.a तेयं, a नेंह्ही ।

का ण विद्ठो सि ता एत्य हं आइउ का जियारी सुएणं समासत्तमं अस्यि रम्मं तींह पावअगीवए पट्टणे पट्टणे जाब गच्छामहं वाडलीडलं णामं पूरं संदरं

ते विजयम्मि मे झिज्जए कायं । मित्त जं दाहिणं भारहं खेत्तयं । भत्तिए वंदमाणा जिणाणं पए । ताव दिट्ठं मए दिट्ठिसोक्खावहं । छंदयं सन्गिणी णाम एयं वरं । 10

भता- जहि चउवेयणियोसु दियबरविदा उच्चरित । छिप्पद बहुयसएहि जण्णकम्मजनयरियक ॥१%।

(18)

जिंह गंगायिह मुंहियमुंहा हिर हिर हिर उच्चरणसमस्या वंभमालउबडट्ठपहाणा विण्हुपुराणु भयव बन्खाणिह बुज्जिह के वि तित्स् बहसेसिउ साहिय के वि के वि गहजोइसु पुज्जिय गरिहिबल आह विणय अग्गिपरिग्गह दीसिह होत्यिय जस्य के वि दिय छनकम्मरय अन्खमालदालगणियमिय मण

धरियकमंडलभिसियतिदंडा ।

ण्हाहिणि व्य बहु ण्हायपसत्या ।
वायजप्पबद्तंडिवयाणा ।

णण्णिहाणु के वि दिय जाणिह ।

मीमंसा दियगुर जवएसिउ ।
के वि भणित किवलगोवरपसु ।
विवस्रणिगदुय णाणाहवणिय ।

घडवण्णिय णाणाविह सोत्तिय ।
अण्णे वंभयारि तियविरय ।
क्य स्मलास्य णं नमलासण ।

5

10

घत्ता- तर्हि जा मिरत णिएमि इय णाणाविह मोज्जइ । उप्यणाइ सुद्वाइ तामस्वेय मणोज्जइ ।।१८॥

^{(17) 1.}a मेत्तं, 2.a ताब, b अवलोइउ, b आलाइउ, 3.a मेत्तु, b मत्तु, b ताय मेहो मए, 4.a बेल्लिगेहे, 5.a अंदेरे मंदिरे, 8.b तहि, 9.b जानि गच्छामि हं। ताम, 10.b वरं for पुरं, 11.b दियवरिंद उच्चारहि, 12.a बहुयसएहि, b उवयारिङ।

⁽¹⁸⁾ l.a जहि, 2.b omits one हरि, b म्हायसमस्या, 3.a ॰ उवड्ट्ठपहाण, 4.a मणहि for भयव, 5.a मीसंसं, 6.b संहिय, b कपिलमजहं य पसु, 7.b गरिहमत्त, b दिन्छणिमहुब, 8.b दीसहि, 9.a छकम्मरय, b छक्कम्मरया, 10.b जं before अक्खमाल॰, a अक्ख-मालढालिण॰, b कथकमलासण, ll a तहि, b जोज्जहं, 12.b उप्पणाइं सुहाई।

(19)

साहियवरती	पहसियबत्ती 1	1
खगरइपुरती	सुहिणाउरतो ।	
माणसबेया	माणसवेया ।	
किमहो जुज्जइ	तुह मणि छज्जइ।	
एवं काउं	महं विण् जाउं।	5
दट्ठं चोज्जं	जद्द वि मणीज्जं।	
हो हो पुज्जइ	कि बोलिज्जई ।	
तो मणवेउ	पभवइ छेउ।	
पउरायरियं	ब हुअ फ्छ ियं ।	
तहि पेच्छंती	तित्ति ण पत्तो ।	10
विम्हयभरिउ	पद्म बीसरिज ।	
जंही मित्ता	गुणगणजुत्ता ।	
तं अवराहं	खमसु वराहं।	
तो हसिऊगं	महबेएणं ।	
भणिओ मिरती	सं पर धुत्तो ।	15
माया णेहिय	अप्पाणैहिय ।	
उज्झिय तावं	ता खमभानं ।	
गन्छइ वित्तं	मित्त णिष्टतं ।	
जइ मच्छामो	सं पिच्छामी ।	
छंदु सकलज	पायावलव ।	20
-		

घराा-ता माणवेउ भणेइ जा हु गमगु आसंवहि । फुडु कुसुमउरहो णेमि जइ महु वयणु ण लवहि ॥१९३३

(20)

तो भणिउ तेण मारुयजवेण जंभणिह जैम त करिम तेम जइ ण करिम वसणाइ मिन ता खयररायतणएण भणिउ

कि अंपिएण बहुणा अगेण। णेहें वसियरणु ण होद केम। ता तुह सरीव गुरु पायांच्छत्त। कुसुमजर भाय जंजेम मृणिज।

^{(19) 2.}a खमनयपुत्ता 3.b omits one माणमवेया but writes the sign × for repetition of the same word, 5.b काउ, a मइ, 10 a त for तींह 11 b विभयमरिड पर्द. 13.a पराह, 16.a बच्पा जेहें.हिय 21 a तो for ता, 22.a पुढ, b कुसुमजनही।

तं तुह दरिसमि पच्चूसवासि तो तहि विष्णि वि गुणगणमहंत दिव्यक्ति बाहारित वहुरसेहि विहि पानिय पोसिय सुहणगाई

वसिकण अञ्ज मंदिरि विसासि । 5 मणवेयगेहे सह सरतवस्त । ण तरजाहारहि बहुरसेहि । सह्यह तंबोलविसेदणाई ।

षत्ता- आर्निगिवि हरिसेण पंडियविक्जवियाणा । प्यणिहि सह्यरसूरत इरिवल अणुहरमाचा ॥२०॥

10

इयधम्म परिक्खाए चउवगाहि ठियाए चिस्ताए । बृहहरिसेणकवाए पढमो संधी परिछेनो समस्तो । ॥१॥



^{(20) 1.}b भणितं, 2.b भणिहं, 3.b स्हरमि, क जयणाइ, b ती, 4.b भणितं, क जे जैव भणितं, 5.a तह, 6.a ते, b सित्यतः, 7.a दिव्यहि आहारहि यह्रसेहि, 8.a सुह्मिणाइ, b सहयदं, a विलेखणाइ, 10.b adds ।।छ।। after ।।२०।। 11.a भजवरवाहिद्दियाए बृह्व, a बृह्हरिसेणे, 12.a परिसं, a ।।छ।। १।। सतोक १७८ ।। छ ।।

२. बीओ संधि

(1)

अवरहि दिणि दिणमणि उग्गमणे किकिणिरणंत जाणहि खपर गय तहि पुरवाहिरि अवसरिह जाम हितालतालताली जलंतु अहिणवहरियंदण लय संहंतु तिह थाय वि विज्जावलवलाई णह जाणइ जाणइ संबरे वि मणवेज भणड भाणयज करेहि तिह कथज तेय संबल्य वे वि मणिकइयमज्डकुंडल हरिह जंपित सविब्मम के वि एम लिखज्जइ जियसम्बदेह

ते तिर्णण वि जुसुसउरही चिलया।
णायरणरपउरही ॥ छ ॥
मणहर उवनण् पेण्छंति ताम ।
कंकेल्लिवेल्लिपल्लब चलंतु ।
कप्पूरसुरहितर यहमहंतु । 5
णाणारयणाविल उज्जलाई ।
कमणीययं रहस्बह करेबि ।
मजणेण मिल मह अणुसरेहि ।
विज्जाकयखडलक्कहह लेबि ।
पुरवरपइसंतह णरचराहै । 10
एरिस विक्कद्ठलणबहुई केम ।
परमत्यु अहुब कि कीलएह ।

घत्ता- अवर भणहि जेम मणिमजडहर णरिषकिहि तणकट्ठिह । तहो तणिय तति ण वि परिहरइ जो सो पावह कट्ठइ ॥१॥ 14

. (2)

इय मुणेबि परतिल ण किज्जइ
एत्थंतरें पुरवरणारीयणु
हले हले कामएउ हरएवें
णवर मार विहि रूवइ आयउ
क वि भासह वयंसि सुकुमारहु
आलावेण कयत्थ हवेसमि
का वि भणइ हले जइ विक्कइ तणु

कज्जरंमु फल हि जाणिज्जद्द ।
वोल्लइ मयणाण लुभावियमण् ।
जण् जंपइ दड्ढ कोवें
णं तो पीडइ कह महु कायच ।
एयइ दासिह वेज कुमारहु । 5
पयपक्यालणणंसु सहसमि ।
पुन्छ पयच्छमि मोल्लु जइ वि ।

^{(1) 1.} b omits चित्रया, 3.a तहि, a अनयरिंह, a मसहर, 5.b महुमहंतु, 6.a तहि, b बाए, a oबलाइ, a उज्जलाइ, 7.b जायदं जाणइं, b कमश्वदं रइरूवइं, 8.a करेहि, b मइं बणूसरेहि, 9.b oकमश्वदं 10.a णरवराहे कुकसवराह, 11.b सिंवभय, b कंट्ठ, 12.b लिखज्जिहि, 13.b सउक्षर परविक्कहि तणं कट्टइं, 14.a सिंत, b मं वि, b क्ट्ठ्इं।

जीविएण सिंह कि अकियत्वें जंपइ अवर जासु सिरिकट्ठइं भणु हुले कीलड सी महु जीव्वणे जिह्न यणफंसु ण एयह अश्वें । सासु जि अंगइ मज्ज्जु मणिट्ठइ । अण्यही मुग्र घलेज्ज उ सक्वणे ।

10

चरता- अधर भणइं हिल अण्णभवे भइ तउ चरगु ण चिण्णछ । तणकट्ठमोडु पुण्छंतियहि कुमरिहि वसणु ण विण्णउ ॥२॥

(3)

अइस्वेण सुजोव्यणसहिएँ
जिंह अंतरगुणु फरह ण सहयर
अण्ण भणइ सलीणु अइसुह्व
आलि आलि एहु उप्परि वट्टइ
वियविरहेण हियवज कुट्टइ
सन्च लीयाहाणु परिद्वज
अह जंपरणिमित्तु सई किज्जइ
हय वयणाई णिसुणंत समासए
तेत्यु गंपि तणकट्ट मुएप्पिणू
कणयवीले मणवेज वहट्ठउ
तो दियवर णिसुणिय भेरीरव

कि वण्णिम सोहग्गें रहिएँ।
आउलिहुल्लाह रमइ ण महुयस।
दीसहि वे वि णाइँ ले माहव।
जहु दंसगे रइसलिसु पयट्टइ।
तल्लोबेल्लिसरीरहो बट्टइ।
खोडससे व नाडउ रद्धउ।
कम्मु अ भुरतु केम तं खिज्जइ।
बंभसाल जा विय पुग्वासए।
घंटाजुयभेरी पाएप्पिणु।
इंदु व पेच्छय लाएँ दिट्ठउ।
णाणाहिमाणअसणसिहिभइरव।

10

5

घत्ता- वार्य अहमहमिय करिम एम सन्वं जंपता। कणयासणसिहराख्यु जहि खेयर तहि संपत्ता ॥ ३ ॥

^{(2) 1.}b कज्जाइंस् फलिंह, 2.b लताबियमणु, 3.b हररूवें, 4.b णविर, a माइ for मार, b omits कह, 5.b वंद्रीत, b एयहं, a कुमारहं, 6.a गणेसिम for लहेंसिम, 7.b मणइं, a मोल्ल, 8.a जिंह, b एयहो, 9.a कट्ठइ, a मणिट्ठइ, 10.b कीलजं, b अण्णइं, 11.a अवरे पभविन्नं, a अवरे भवे for अण्णभवे, 12.a मोल्ल, b कुमरेहि, b दिण्णजं।

^{(3) 1.} b वर्णे. 2.a जहि, a आमिलहुल्लिहि, b भमई for रमइ, 3.b अण्यहं सालेण, 4.b writes number 2 for the repetition of the word वालि 5.b ण after विरहेण, 6.b अजैसएव ण वाहउ for सोडससे व, 7.a विमित्त सङ्घ, 8.a बयणें, 10.b णिविट्ठउ for वईह्ठउ, b सेवांह, 11.b णिसुणेवि, a व्यवस्था, 13.b वाह, a स्वयर ।

पुणु मणवेय कउ पिक्छे विश्व अन्ह मतिसावें रंजियमणु जय जय विष्हु विष्हु प्रमेसर पुड विहि एम मणंत लुबंता अवर्राह् भणिय काह किर जंपहु भणिह केवि एहु वंभु पहाण उ हय क्वेण हवे सह संक ६ हंदु वि सो सहसम्ब्रु प्रसिद्ध उ अग्ण भगिह किमणेय वियप्पें तो दियपवरें एक्कें बुत्त ठ

सह पश्छमसी हुउं जारायणु ।
सह पश्छमसी हुउं जारायणु ।
लोयणिमित्तु जिह्यससुरेसर ।
सम्मानें गीयाउ पढंता ।
विष्हु चउन्भुउ कि ज वियप्पृष्ठ । 5
सन्द भगेहि बंधु चउनसण्ड ।
अह तियण्डु सो लोया संक्र ।
कि ससरीव जह वि मयरद्ध ।
एहु जाउ जाजिङ्जह विष्कु जप्पें ।
सरह जिय सामनणु जिह्हत्त । 10

घता- कि तुम्हइ कवणु वाउ करहु भेरीघंटावायणु । वायं अजिणं तेहिमि कयउ कि कणवासणि रोहुणु ॥४॥

(5)

चत्तारि वेय छहंसणाइ सयनु वि जमु जाणइ हम्मे हम्मे तुम्इइ पुणु कि वायहु कुणेहु जियसत्तुसुएण तो भणियं परजाणहु वाउ पहंजणउं वेउ वि हरि णइं धावंतयहं इह दुण्णि वि दुग्गयसणवर्ग आइय गृह तूर णिएवि मए एव दुहो केवडउ भणेवि कोउहलेण कणवासगयं इह पुरवरि रंजियबुह्यणाइ।

णिच्नुष्छव विरद्दय विविह्यम्मे।

कि कि अउन्नु अवरु वि मुगेहु।
णाउ विण अण्णवायह मुणियं।
जो पयहउ रुक्ख विहुंजगउं।
वंसणु वि मुणहुं णियक्यंतहं।
गिण्हेविणु लक्कस्मारमिणं।
वायउ णउ जायए वार्यं मए।
णिसुणियउ सददु घंटहो हणैवि।
वास्टउ मि मा भूसणयं।

5

10

घस्ता- जइ मइ हे भासंगसंहिएण तुम्हइ भावइ दुण्णउं । वो एत्यु ण अच्छामि खणु वि हउ इय भणेनि उस्तिण्णउं ॥५॥

^{(4) 1.} b मणबरूज, b वर्षणाँह पियसेविणु, 2. b सहं, 3.a सिह्य for णिह्य, 4.a एव, a मसाबे for सन्भावें, 5.a अवरहि, b किण्य, 6.b भणिंह, b पहाणडं 6.b भणिंह वंभू वि चउ०, 7.b लोगा भंकर 8.a इंदु सो वि, a सरीरज, a omits वि, 9.a अण for अण्ण, b किमणेंग, b ण for णउ, 10.b वियमउरें, 11.b repeats घत्सा-11.b के for कि, 12.b कम्यासण (अभितानित धर्म० 3.66)

(6)

तमो सुट्डू बर्ठण भट्टेण पुर्टं तुमि कि पयंडेण कन्येण भृतो किमुगीणता रुण्णगन्येण भग्गो समस्यत्यवेईण भट्टाण ढाणे ससं ता इमेणासजालेण धुस्ता पमोत्तूण बंभं पसाडेह कज्जं तड भासियं तेहि रोडेहि वृत्तं ण केणावि दोसेण हं भंतिविस्तो पुणोत्तं दिएणेरिसा कत्य दिट्ठा ण-याणंति एयं भुमंगप्याड

ण एवं विह्न वेहिठयं सिट्ठ इटंट ।
अलंकारवणीण कि सपजत्तो ।
किमेएण रूवेण उम्मन्यलग्यो ।
करे भीरिसहेण हें सं णियाणे ।
णियट्ठाण मज्झिम्म मायाण जुस्ता । 5
किमुप्पाइयं अज्ज लोयाण जोज्जं ।
ण जुत्तं पि रंजीवि अटठाणि दित्तं ।
खेडं लक्कडं विक्किजं एत्य पस्तो ।
तणं विक्किणंता पुर सं पहट्ठा ।
फुडं छंदु एसो भूयंगुप्ययाउ ।

वस्ता- अञ्चवा जद्द जाणिह तुहुँ मि भणु कडयमजडकेजरहरा। भारहे पुराणि रामायणि वि णीय कम्मकर कहिमि णरा ॥६॥

(7)

तो वाइइ मयतिमिग्दिवायर जाणमि परपेसणरयणरवर सहसा विरइयकज्जाण णिहि सोलह मृद्ठिहि तणउ कहाणउ दियवर भणइ तं पि जिह जाणहि ता माणवेउ भणइ सोक्यालउ भन्द णामु तहि णिवसइ गिहवइ तं गिसुगेविगु पभणह खेयर ।
किंतु भएण ण पयहमि दियवर ।
कोवजलणजलियहि अहिमाणहि ।
मा महु किज्जल दुन्खणिहाणल ।
सोसह मुट्ठि वहाणल पभगहि ।
सास्य गामु मसए संगासङ ।
तासु पुत् णामं महुयरगह ।

^{(5) 1.}b छदंसणाइं, b पुरे बरे, b • बहयणाइं, 2.a णिच्चुच्छवि, b हम्मे हम्मे for विविद्यम्मे, 3.b कं वार्यं, a अपुष्यु, 4.a णियसत्तसुएण, b तत्व, a णाउ मिण, b अण्णवायहु, 5.b परजाणह, a विहंजणउ, 6.a बिहरिणइ धावंतयाहं, a मृणहु णियकंतयाहं, 8.a णियेषि, a वाइउ, 9.b केवट्ट a घंटहे, 10.b भू भासणयं, 11.a हेमारणे सिरिट्ठए b हेमासणसठिएण तुम्हइं, b दुण्णज, 12.b उत्तिक्षतं।

^{(6) 1.}b बुट्ठं, a रक्खेण, 3.b •गव्याण, a किएण for किमेएण, 4.a करे हिस्सेंचेण वं हं णयाणे, 5.a घुस्तो, a जुस्तो, 6.b वमोरतुण, a पसाहेहि, 7.a तेण रोडेण पुरतं b यट्ठाण, 8.b भव्यज्ञिस्तो, b खर्डं, a विकित्त , 10.b मुखंग०, b मुखंगण्याण, 11.b जाणहि, a तुहु, b • केलरधर, 12.b शर।

गर आहीरवेडु पिरुरोसें चाजित तेज जियगमचहि दिट्ठेट मिरियहें रासित जिह महमंदलि चर्यवह रासिच वेष्ण्यिष रोसें । वं केष वि ग कयाए वि सिट्टर । तिह इह युगु चेषयाच य सर्ति व्यक्षिः १०

यत्ता- ती कवर्वटावनभरन् तहि भणइ एहु भुतति । सम्हाण देशु अमहस्तद्ध खलु बंधहु कि वहु वृत्ते ॥७॥

(8)

छेत्तकुबुंबिएण ता वृत्तत किण्यह इय मुणेनि विष्णत्तत किण्यह दो वो पोल्लिस मुद्ठित एमही तं विरहत साधम्में करणें सच्चए बोल्सिए जॉह एही गह इस चितंतु स एसहो गच्छह तहि मि तेण पुणु एहत भासित मह अहिरवेसि सह विर्ठत उसहकारणि चणम ण सम्महि तैत्यु सो वि वंडतें पावित यडवोसस्याण जियत्ततः ।
उवहासाणुस्त विरम्भ्यम् ।
सिरि विज्यंतु असियस्यितिवेहहरे ।
जितह गहनहसुत सिरहण्यें ।
वसत मारि तहि जन महुयरमह । 5
जा ता मिरियह रासित वेण्डह ।
भणयाणं एव हुत रासित ।
तिहि मि कृष्णु पभणह । इसुट्ठत ।
तिहि कहि किर रासित तथलस्महि ।
जियमुहस्यदुक्यों संताबित । 10

घला- अबर बिदहपुरि सा स्रत्य जइ तुम्ह मजिल तस बीडिंग । सच्चं चिय कहिन च सहहड तेण विग्रंद च साहमि काटा।

^{(7) 1.}b पमणई, 2.b परपेसमर, 3.a निर्मि and in margin अज्ञानी, a व्यक्तियहि बहिमाणहि, 4.b तमड, 5.b भणई, b जाणहि, b कहाणडं पमणहि 6.b ती, 7.b णामि, a तहि, a वमहबद, a महयरकवद, 8.b पहरीते, b पणबहे, 9.b व्यवपि, a कावा वि, a च before सिद्ठच, 10.a विश्विष्ठ, a भण्याचं, a omits म, 11.b नणई, 12.b वंबसु बंबह क्तें ।

^{(8) 1.}a छेलकुर्वनिएम, b बंदुवीससम्बद्ध, 2.a उनहासुकुरुष्ध, 4.a विरस्त सम्बद्धी करमे, कि सिरिहरमें, 5.b मारि पन तीह महुवरपड़ं, 6.b मिरियहं, 7.a सिह मि, 8.b महं, b सई b पणवाई, 9.a सम्बद्धि सिह, a स्वयंत्रकाह, 10.a adds मि before सी, a संदू में, 11.a जई, a सा दिवा तस 12.a समुद्धाहि, b विदेश 1

१. रक्त मूद कथा

(9)

तो विएण मासिन सई इच्छए कहि ता कोळहलही णिहाणन तं णिनुमेनि भणइ खगणंदमु इस् हुट्ठ मूढन धुग्गाहिन बीरागरणंदण मृन्खानिय एयर् मज्मे णढमु साहिज्जह सामंत्रक तेत्यु बहुधण्यी पडम घरिणि जिह णामें सुंबरि अवर तासु मणहरसण्यंगी पढम हीणजोम्बण जाणेनिणु रस् विरस्तु कुरंगिहि संतहो हुन्नरियह मरियह सस खुहइ हंसावराह पवंचु करेनिणु

मूलकहाणू कहेडजसु पच्छए ।
जिह विसाउ दहपुरिस कहाणछ ।
इसम किरण विष्णुरियणहंत्रणु ।
विस्तवाहिषु णु चूनविरोहिछ ।
इय अण्णाण दह वि संघाविय । 5
रेवादाविद्यणयिक विद्युणिएजइ ।
णिवसइ गामकूड बहुस्रण्यी ।
तिह कर्षे सीसे ण वि सुंदरि ।
पीवर्षण णामेण कुरंगी ।
इयर तरिष्ट जुवाण गणेविणु । 10
ण गणइ कि पि विश्वंतरि जं तिहि ।
णिव्मक्छिउ णियकंतु कुरंगइ ।
मणिय तेण णियबद्ध लएविणु ।

वत्ता- अवरहि वरि णिय पुत्तें सहिया अच्छहि णिए सुहभायणि । तं तिह करेनि थिय सुद्धमई चितेबिणु णियकम्मु मणि ॥९॥ 1

(10)

गहनइ इयरए सहु अच्छंतल दियहि जंति ण नियाणइ जहयहु तेग वि सो वि हक्कारिल जाणहि णिच्छिल्लियचपयमोरंगिए विषयसरिक मयणसरजालें नं णिसुनैविणु णयणजलोहिलस पद्मं बिणु महु विरह्मि पलिण्णइ वरि तुह अग्विड मरमि ण अच्छमि इट्ठकाम् भोयह भूंजंतउ।
राए वि जयजस्तक्य तहयहु।
भणियं पुरिस्लएण पिय तार्थाह।
खंदावारही जामि कुरंगिए।
आवेसामि बहरेण विकालें। 5
कवडसगेहि कुरंगि पवेस्लिय।
तणु ससणसरहि तिसु तिलु कप्पह।
दीह वि तुस दुक्यु ण समिन्छमि।

^{(9 1.}a सइ, a मूलकहाण, 2.a adds प after ता, b कहाणज for णिहाणज 3.b भणई, 5.b ए for इस, b दह दह सि, 7.b सामंतजरू, b धणी पिषसइ, 8.b जिस for जिह, 9.b बर for मणहर, 10.a मण्णेविणु for जाजेविणु, a नणेप्पणु, 11.b गणई, 12.b हुज्बरियइं भरियइं सत्युह्ए विकास्त्रहर, b हुरंगई, 13.a हंसल्बइ, a पियअब, 11.b अवराह, b सहियं अञ्छाँह, a पिय, 15.a सुद्धमइं ।

वता- ता प्रवामविध्या पिट मणइ हर्ड मि विमीमह बीहर्मि । परमिक्ताल मिछ पद हरद त तुह गमणु ण ईहमि ॥१०॥

10

(11)

इय भगेषि महत्त्वत गामकेण अप्पण मृत्कु खंदावार जाम कीलई अणूदिण जणुरत्त चित्त भोयणतंत्रोत्तविलेवणाई इय कद वि दिवस किर जहि जाम णिकण जाणेबिण जारएहि मृत्किय सह त्ति साई वि केम णियपिय-आगमण मुणंतियाए एत्तहो संपत्तपुरिस्लएण विश्णविय णवेवि कुरंगि तेण

वहुबृद्धि णामु तहि मुक्कु तेण । जारेहि समेव कुरींग ताम । ज मुणमि गियकंतहो तिगम वस्त । तहो देइ णिच्च वहु जिस्दलाईं ! कणसेसु वि ण वि उम्बरिय ताम । तिष्य आगमणासंकिएहि । परिपक्त पणि थिय बोरि जेम ! किउ पयसियमिय तिय वेसु ताए । णियपुरिसु पुरुष पट्ठविउ तेण । वद्याविय माए पियागमेण ।

15

5

घरता- तं णिसुगेनिणु मंदिर सुंदरहि जाएनि धुस्तिए नुष्यह । पिउ आयउ अस्किरंघि तुरित केम कुलस्कमु मुख्यह ॥११॥

(12)

तो सुंदरि पश्रणह महु मंदिर सो कह एत्य माह भुँजेसह ता कुरंगि पश्रणह महु नमणें इय आयण्णेवि अकुढिलशावए बहुद्यण्णी वि ता ताव सुम्छपड तुह कंतहो गउ गयगार्गंदिर । रद्धरसोद विहल जाएसद । भुंजद उक्कोदय मणमयणे । कय वहुरसरसोद गयगावए । सहस्रहृहिहं घरिणिहे यह सायउ ।

- (10) 1.a गहबर्ष इयरएं, b. सहुं, b क्लामभीयइं, 2.b वियह जंत, a omits बि, b माणइ, 3.b omits वि after सो, a जावहि, a पुरिस्तएहि पिय तावहि, 5.b आएसमि, b बलालें, 6.b लवडसणेह, 7.b मयणसर्राहे, 8.b अग्राइ, a दुन्ख, 9.b व्यणवेतिणु, b भणइं, a हुउ बि, b विदयहां 10.b जिए पूर्व, b तें for तं।
- (11) 1.a तहि, 2.b जय्युणु, के जाम जारेहि, क तान, 4.a विलेमनाइ, b पर for महु, क मिनसमाइ, 5.a जाम कमसेस, b म, 3 उच्चित्रिं के साम, के प्राय, a जेन, a प्राय, a जेन, 8.a नियंतिमाए फिल, के inter. सिय and तिय, 10.b विचा for विमन, a प्रतिया, 12.b पहु for पिड, a केन कुलस्कमुण्यह।

चडरियाए जा तिल्बु जिबिट्टड भणिउ घुरतजेहेच सर्वस्तिहे स्रागिवय तहि जयम पियारस कुडिसए कुडिसिए दिर्ठए दिर्ठे । जिह्न रसोइ सम्बद्ध सम्बद्ध समितिहै । सम्बद्धि मंबिरि सुंदरि केरए ।

वस्ता- एत्थंतरि सुंबरि पेसिएन युत्तें ए वि भणिज्वह । सिद्धरसोइ बररससहिय एहि ताय भूजिज्वह ॥१२॥

10

(13)

कुरंगि विविद्ययम्युण परिवर जनसणमणु पियनमणु विचानकः पंचस लोयण णाह कुरंगी कि किर पर्याह्यगए वहुमायए हह कि खाइहीसि मप्पाणन कि इह मुस्तेण वि विणु मेहें तो तहे वयणें कज्जु वियारिय आसण करयहत्य ता सुंदरि दिण्ण बालकंचोलसुभासिय अकुढिलमणहि ण मच्छर बढिडर सुगड ण वयम् सट्टैमं चिह्यत ।
ण वियागड सम्हंतु विभावद ।
तो स्सेविण समद कुरंगी ।
जाहि जाहि हक्कारित मामए ।
तहि तुह बत्सहाए कित पागत ।
भृत्तु वि ग वि जीरद विणु गेहें ।
गत सुंदरि धरि माणु वियारिति ।
यिय पिडिवित्ति प्यासिय सुंदरि ।
गिम्मसरयणं सुकद्द सुभासिय ।
गाहहो छडरसमोयणु विद्यत ।

10

5

षत्ता- पर सक्वहो जरिपहो बिरिह्मिहो अष्णु कया वि णं सक्वह । अहिययर पयासई उण्हजर तेणोसासु पसुक्वह ॥१३॥

(14)

ण्णयकोवकुडिलीकय दिट्ठी अहवा खधावारिण रिउही चितद् कि कुरंगि मह क्ट्ठी। सुरयसोवरकु पथयंगणविषहो।

- (12) 1.b प्रमणइं, 2.b माइं, 3.b प्रमणइं, b उनके विय, 5.b घण वि ताम, a धरणिहे 6.a बुडिलए for कुडिलिए, b omits विट्ठए, 7.b भणिउं, b om वींह... सवितिहे, 8.b श्रयणियारए, 9.b एम for एपि, 10.b सिद्धी, a ॰सहिया।
- (13) La.b कुरीय after णिवर, b वेब्मयम, b मुम्बई, 2.a •णयम, 3.a कदेविश्म, 4.a बहुसाए, 5.b लप्पायर्ड, a कर for किए, 6.a मुत्त वि, 7.a कम्म, b conits करि, 8.b स्टब्स्स, b परिवर्शित, व्यासिवि, 9.b क्यमीस, a सुकद सुहस्तिक, 18.a स्टब्स्स, 11.a स्टब्स्स, 12.a सहित्यक पिनाता, उन्ह तुक, b तेवासासु विकृत्यक ।

मं माणित तं केमिंब संविद्यत्व ती पातत्व भगिति संविद्यम्प्त नाम पुरित्मएण वीत्तिण्यत्व माणिण्यत्व वयम् तही गेहहो ताए भणित कुराँग तुह वद्यश्ची वंजणु वेहि कि पि जं तुह पद वंजणु वर्षि समिक ता साम्य भणित कुराँगि काइ बोल्सिक्यह इय कारण सहको बहो लिखान । सुंचह सम्मु काह चितिक्सह । मोयणु एक्कु कुर्रेविए गण्यह । ता सुवरि गय महें महहो । जन्मु म रच्यह गैहें छहमहो । भुजह ताम कुरंधी बंगह । पुणरवि विस्तवनेण समागम । देहि कि वि मं हह उपमन्तह ।

5

10

षत्ता- चेहंबु मुजेबि कुरंगियए अद्याप्यसंनीसिछ । जरकसंग्छाणु अच्चुण्हु तंहो सत्ति पविच्छि वि वैसियत ॥१४॥

(15)

तो तं ताए णेबि तहो दिण्ण उ रत्तु ण-पाण इ कि पि हियाहिउ गम्मगम्मु ण हेयाहेय उ बहवा छणु काद अश्विष्ठ अद्द इय सहरिस्ति से सुत्रे किण् कि महु णेहु ण करह कुरंगी कि महु वोसु ण प्यक्ति केण वि भगिउ तेण भो णिसुणहि महुबध सप्पाह व ससहावें कुडिला जनकीला इव अमुणियकारा भुंजतें हि अभित परिविध्यते ।
कण्णाकण्यु ण मोहें भोषित ।
मनवाभनभा ण वेपादेवत ।
रत्तें पुणु विट्ठू वि धनियन्त्रम् ।
पुण्डित सो सुबुद्धि वि हसेषिणु । 5
पह ण भणिय काह मि समिपंषी ।
भणु मणु सयसु भित्रमत विवागिव ।
छाया हव तुर्वेश्य महिलामह ।
णवभणिवज्युलवा हव मक्सा ।
कि गयहो धृहितमहो सवरा ।

(14) 3.5 मिंगरं, 5 कारण् सद, 4,5 ता, 5 मधित, a मंदद वप्पु 5 कार्ड, 5.2 ताब, 5 कुरंगेए, 6.2 बंजण, 7.5 मिंगरं, 5 अब् णे इच्छद, 8.2 बंजण, 2 ताव, .5 अवन्तो, 10.5 मिंगरं, 5 मार्ड, 2 पेंसिर बोलिक्सह, 11.2 बोहियू, 5 बामीसिल, 12.2 बरकसरच्छाण् मच्यूच्यू कि सहो, 2 पेंसिर !

⁽iS) Lb omits है, b बंधिउ, a परिवर्धानं, दें क्षेतु पर वा वार्थाइ, b रहा य बायइ, a कल्याकण्य, a पेंट्रें for मोहें, b बोहिएं, 4.0 काई, b inter. बिह्टू and बि, 5.0 सहरिसे, 6.0 पर्द, b काई बि, 7.0 विवारी बि, 8.2 बाहि, a for बाबा इस la written for explanation, 9.2 विज्यासका, 11.0 तुम्ब बस्प, 12.0 जाइहि सह ।

षरता- सहवा कि बहुणा वित्थरेण तुज्ञ अस्यु तुह कंतए । बारहि सहु सम्यु वि विलसियन मयणुम्माईपन्तिस्तए ॥१५॥

(16)

२. द्विष् मृह क्या

इय णिसुणेवि अदिग्ण पड्स्तर ताए पहीयंड सी वि कडिवर्खंड पेक्खाँड अहर तणु वि णहमंडिउ सहि कहेबि दुव्ययणेहि वाडिउ दियवरिंद इय जागहि रत्तं इह सोरदिठ धण्णधणरिखा होता खंध बंडु णामंकिय वंक मिलेवि गामभोत्तारहो संधवंश उप्पाडण जित्तहो जाय असज्झवाहि तही वंकहो तो सो बंकवास णामंकें भणिउ ताय संसारि असारए मुय मणए सह अरब् ण गच्छइ धम्माधम्म् णवर अणुलगाउ इय जाणीव ताय दाणुल्लउ इट्ठदेउ नियमणि झाइज्जइ

गउ बहुषणी सहु बहुयहि घर । मद् रक्खणु विय मुक्कु णिकिट्ठउ । धाहावंतिहि सोलु ण खंडिउ। तेण घरहो सुबुद्धी णिद्धाहिछ। णिसुणहि दुट्ठुं साहिज्जतं । 5 कीडि णयरि गृहवइ सुपसिद्धा । अवरोप्परु गियदांसर् सकिय। पीड करेड जणहां जोत्तारहो। असमत्यहो अणुदिणु झिज्जंतहो । संति अहव कहि पावकसंकहो। 10 पुतें णियकुलगयणस्थाके । को विण कासु वि बुह्रगस्यारए। सयणु मसाणु जाव अणुगच्छह । गच्छ इ जीवहो सुहदुहसंगछ। चितिज्जह सुपत्ते अइभल्लउ । 15 सुहगइगमणु जेण पाविज्जइ।

घत्ता- तं णिमुणैवि वंकें भासियउ वंकदास आयण्णहि । कालाणुरुउ मह चितियउ पुस्तय जद तुहु मण्णहि ॥१६॥

^{(16) 1.}b अणी, 2.a rubbed with white ink half line & other half with black ink and in the top margine the portion is written by some other person, मह रमस प्यमुण निक्ट्ठर, 3.a पेपहि, 4.a दुष्पाणों, b णिसारील, 5.a इह for इय, b जाणहि, b णिसुणहि, 6.b सीरट्ठवेसे धणरिखा, 7.a होता, b बांसवंक, b णियवोसहि, 8.a णही for जणही, 9.b बांदकंव, 10.b कहि, 12.b अणिलं 13.b मणूर्य सहुं, b जाम. 15.b चित्रज्जह i6.b इट्टू, b अणिलंब for झांइल्जह, a खेम for जेण 17.b आयणहि. 18.b मई, a चित्रचल, a जय for जह, b तुहुं मण्णीहि।

(17)

तो पुरतें तं वयम् सुगैविण् ताय देहि आएस् म वंकभि ता वंकेम पुरतु गंगतंदही णउ अवधार करेबिण् संविक्त्य मुज महं पंच्छिमरयणिहि गेबिण् वहसारेवि तहो घेतव्यंतरे मो पुण् मह गोवालु गंगीबिण् नुहुँ पुण् एविण् रोसें कंपहि जें णिवह एतहो अरब् लहज्जह हय वोलंनु वि बाणहि मुक्क्ड

जंपित शिवपित्य पणवेष्यण् । सारमि ण पाणहि च सक्ति । जीनं तेण पुत्त मई खंदहो । एवहि णियहिय तल्सए तनिकत । मेल्लहि कंक्लीए कंडेनिण् । णियमहिसीत मन्ति पासंतरे । दंहें हण्ह सन्ति आवेषिण् । मारित मक्सू तात हय खंपहि । मह सम्मत्तहो वि हि जप्पण्यहं । मृत्तु पशंचु ता सुपुत्तें कत ।

5

10

5

10

घरता - खंधु वि विक्साबित राजलेण वंकु णरबदुहु पस्तत । अवरु वि गरु वरसातावग्रह कवणु ण तत्तत तुक्खें । ११७६।

(18)

३. मनो मूह कथा
पुणरिव खगवइणंवणु भासइ
इह कंटोद्ठणयहे गुणरिद्धः
वानत्तणहो सत्पत्रक्षासे
वृड्ढु वि विष्पाह्मिण प्रभणेविणु
परिणावित पुणु मंदिर सिद्धः
तर्हि जण्णाए सिह्य जा अच्छइ
ता विज्जत्यित एक्कु समायत्र
भणित तेण सो पणविष्य भावें
एम भणंतु तेण सो इच्छित
जण्णए जण्णवर्टु मचे भावित

मूद कहाणु णिसुणे दिय सीसह ।
भूममा ति विष्यु सुपसिद्धत ।
पित पंचास वरिस सुइषोसें ।
फण्म णाम दिय सुग्र ममोविणु ।
दिण्णु तासु घणकणयसमिद्धत ।
दियाँडमाहें सुद्दसत्यु पयण्छह ।
कण्युवद्दु णामें विक्खायत ।
सिक्खमि विज्जत तुम्ह पसाएँ ।
णावह णिययमविरहु पहिष्कत ।
सुहणिहाणु वहनें दावित ।

भता- सो बिहिमि सुपेसण् जा पहर वेच ताम भूयमहहे । पट्ठविच लेहु महुरादियहि जम्मविहामा जिचममहहो ।।१८॥

(17) 1.a पुण for पय, 2.b पाणेहि, 3.a निसंबही, a मदं, 5.a कम्मलीए, 6.b तही खेलक्संतरे, b पसरंतरे, 7.a मणेविक्णु, b हमदं. 8.b गुणु, a मण्डा, 9 a हितहो, 10.a बुत्त, 11.b खंड for खंडु, 12.a तत्तर ।

(18) 2.a कंटोडमयरे, b धमरिक्टन, a विक्तार्श विक्रण, 4.a वेद ति विव्यहि, a पद्मचित्रण, a वनाम, 3.b विक्सनं तही प्रवृत्, 6.a तहि, 7.a जन्म-पद्मद नामें, 8.b पाएँ for भावें, a पसाम, 10.a जन्मवहुन। अण्णोष्णु मिस्सेवि जण्णकणु आहिति वेत्नु यउ विष्युजान बहुएँ पिषर्वती रमणमान कलियनकर जंपद बहुसगई अह तियहि को ग परिहल करह बिहसेविणु तो बहुएम वृत्तु जं मयणें हर देत वि विगृत् हम वयगहि सबगाजनु पत्तिषु लेहेण जिरंतर जिडिय गत

नहराविएहि पुंडरित जणु ।
सहवासि चिरंकुसु जन्म जान ।
अहिणवजीव्याम मण जिया तान ।
पीट्ड अणंगु म नि काई पर्ड ।
पर्ड गोहु मणेनिमु परिहरइ । 5
मोरीगंगा रहसोक्यरसु ।
तहो कि अन्हारिसु मणुबमेसु ।
ते तसलोइ जिम मिनियिक्तु ।
वियहेहि वेवि एक्कंचु पस ।
वाउमास विगयदोहि वि ज्याहैं। 10

भत्ताः- णवरेक्क दिवसि जम्माए भगित जम्मवदुव कि दुरुमम् । णिसुगैवि तेम परिजंपियत गियड् अम्ह महानमण् ॥१९॥

(20)

वहुइ जण्णे तेण में जिन्निम मरिम विवंधित पद इह अण्डमि तो सा भणद तुम्मु साहिन्नद रयणिहि मडमज्यम् आणेविणु भगण्यंतरे सिहि जालेविणु सणित सणित सिहिमिन्स बहेविणु तं णिएवि हा हा प्रभंतत णं तिस् तिस् करवस्तें छिज्जमि । सहव जामि तृह वयणु ण पिष्छमि । समिए विरहदुक्षु जें छिज्जह । मह तृह समगोवरि मेस्लेविणु । सम जतरदिस च व संपेविणु । जयदु ज त सरपवणु सहेविणु । समस्तुंभु दियसस्य पहुत्त ।

चत्ता- जंगह नषु एवति महिबलए जन्मबदुम जन्मामरणे । मुद्धविषयसहत्तम तिमय कहा गय बहरेण बकारणे ।।२०॥

⁽¹⁹⁾ i.a अञ्चेल, a.b पूँबरिस जरण, 2-b आस्विस विन्जु गर तिस्य जान, b सिरंकुस जरण ताम, 3.a बदुनं, b जोवण, 4.a बस्यमह, a काइ पह, 5.a क्रीच्य, a करेड, a परिहरेड, 6.b ग्रंगामई, 8.b इंड्यामहि for इय सम्बद्धि, b बिह for जिम, b विक्त, 9.b तिरिय for जिस्य, a देमीहिंह वैवि देगेंचु पुत्, 10.b विगयदोई, a प्रवाह, 11-b वर्णए प्रियास

के वि भगैति ह्यास हुगासणं हा हा जण्णवहुय कि न जिल्लं एव भणंतिह खिहि उण्हासिक जवरहि पासरि महुरापुरषक खहज सो कि समानिक जामं हा हे जण्णे यहँ मेल्लेकि हा कि करिक कर्य फिर गच्छिम कहि तुह ते उल्गुंगपबोहर जिम्मच्छिय तामालकोहलगिर कहि महिणवजसोयपल्सकर कि मई तुज्जा मरणे जीवंतें हा हा जण्णमञ्जय कुसणंदण

पद्यय दहढ काई पई जीसलं १ जिल्ला दहढ काई पई जीसलं १ जिल्ला का जानित । जिल्ला का जानित । जानित के जिल्ला के जानित । जानित के जानित

चला- इय सी निलवंतउ पुणु वि पुणु वंभयारि वहुवं सणिउ। भो भो भूयमइ अयाणमइ णारिदेहु णारिदेहु कि वहु गणिउ॥२१॥

(22)

जा लालाविष्टुणु णारिमृहु जा सरिहे पस्हर सुंबरिहि जा सम्नउ मियमग्रमाहस्हो जा चितहि चिहुस्मारससरा संभ रहि कि म ता विष्टु तुहु । ता किण्णि महामुजिस सुरस्रिहे । ता किण्ण होहि बढहरिहरहो । सुइमहुर किण्ण ता सुदहे सरह ।

^{(20) 1.2} जेज तेण तं for जच्जे तेण जें 2.b मरनि for मरिम, b अहवा, 3.2 क्यें करुजेड, 4.b वरुकेबिण, 3.2 सिहिजकेविण, 2 जिहुद, 6.b जिन्छं साथ, b तेश for तेज्य, 7.b सिंच स्थितं सिहिमज्ज, b खड, 8.b ता for तं, 9.2 वहुयज्ञ जणामरेण, 10.b कह for कहा।

⁽²¹⁾ La फाइ पड़, b मोलच्य, 2.0 • जालेलिहि ययलिय, 3.b युंजावेनि, 4.b inter. पेलिस and पियाहि, 5.b बायद, b समाजिति, b सोजह, 6.b हा हा, a मह, म नहिं b वंद्युयोरलेनि, 7.b inter. तुह and मृह, a चिह्न, के महि, a. • अवचाहर, 9.a सामस •, म कहि, b inter निहुर and सुमिन, 30.a विभिन्न 11.a मह, b तुज्या, b स्तिविदय, 12.a व्यवज्याह्य, b स्तंतु, 13.b वहुए, b निज्यं।

वा सायहि रमणिहे करवरणा इय वितमूढ परिश्वरहि तुहुँ को समस्वेत्रणुट परमपर तं विसुनेति शासद भूयमर्द परसुरहु विसुसह पियविरहु उरदेहलन्छि गउरिहरहुँ

٩.

ता कि ण विष्यच्छकम्यगुणा। 5
मा पावहि णरए रउद्यु दुहु।
वहो पायजुमबु तक सोयहर ।
विता अम्हह वि मराजम है।
कि मणुयह होइ च कासबहु।
मूदलणु कि तहो हरिहरहें। 10

पत्ता- इप भगेषि भरेबि दो तुबद्द अट्ठिया ण जा चित्रवि । गंगहे ता'एककहे गामि तहि सो जण्णवट्ट तहो मिलियस ॥२२॥

(23)

तेण णवेवि मणिउं पाविट्ठहों
पुच्छिउ दिउं को तुहु सो पमणह
तं णिमुणेवि मट्टु क्सेविणु
भणइ ह्यास वंचिअप्पाणउँ
गृइवरणार्रविदफुल्लंधउ
इय भणेवि जा व्यगह गच्छह
ताए भएण पवेविरमत्तए
पह दो हिसांह खमहि सो मासिउ
पुच्छिय का तुहँ ता सा जंपिय
तो पमणह कोवें कंपंतउ
जह विरवयह जगु वि सुहसंबहें
एम मलेवि झिला णीसरिउ

समिह मज्यु उण्झायणि किट्ठहो।
जण्ण उट्टु कि गृद मह ण मृणह।
सन्न थि वहु यवसणु हुसे निणु।
कि वनकर पहिं पहिं सम्माणन।
अञ्छद नु वयस्मि सो इह मृनः। 5
जण्ण वि विहिवसेण ता पेन्छह।
पर्याणविष्ठयए अजो इसवस्तर।
अञ्छह सामि अस्णू अविचासिन।
जाणहि जण्ण कि च मह विस पिर।
अन्ट्रु गामु कहि हुई संवत्तन। 10
तो वि णेमि जण्ण इस गंगहें।
गर्याविवेन मृदस्तें तरियन।

चत्ता- चिसुजैवि कि पि कासु वि वस्त्यु अलिउ वि सञ्चउ मण्णह । सञ्चु वि सद विट्ठु ण सहहृद सो वि मूढ इहें भण्णह ।१५३।।

^{(22) 1.}a जो for जा, b कि, a.b तुहुं, 2.b स्ट्राह्म, a किन्दू, 4.b जा जितहि कंतहि बिहुद्सरा, 5.b करकरण, b किन्न्यपक्छक्कंसमुणा, 6.a सूद for मूद, a तुहु, a जरये, 7.b भूयमई, 8.a हेंसा, b जन्हदं मि जराहंगड़, 9.b वेवाण विद्वसह पियविरहु, 10.b गोरीहर्स्ट, a हरिहर्स्ट, 11.b भणेवि सो तुंबयह, 12.a तहो for तींह, b जल्लाबद्द को मिलियज, a जन्मबद्द ।

४. व्युव्याही सूद्धां

पुगरित ख्य शिवणंदणु पश्यह

णं दुवसारिहे दुव र रामचः .

कडयमजदकुंदलकेळग्हे

देद जाम सी मंति पधीसह

गा दुवह पश्यम् ण ज मुजह

ताम लोहिवरहज तही मंतें

भणिज कुमार कुलग्यमभूसण

एयहें चाहें रज्जू पणासह

तही पहाह दय दंहें मुख्यह

अह तं लोहमयं जो पश्चह

m he es

एककगहि कह दिहमणु णिसुणह ।
ता सुपुत्त सम्मेषु अयाण्य ।
दिणि दिणि वंदिय पही दिहि पूरिह ।
णिवं तुह सुउ वसु माएँ णासइ ।
जह तही जब आह गत दिश्जद । 5
अप्पिउ भूसणु न यकुलसंतें ।
मा कासु वि दिश्जसु कुलसूसम् ।
लोहाहरणे इय जो भासद ।
एम करेमि कुमारे वृष्णह ।
तं तह लि सिरि दंह पहणह ।

घत्ता- कौ गहिउ अजुत्तु वि गउ मुक्द बृहबु झाइउ रूसइ। हरिसैण वि विज्ञिउ मुगरहिउ सो दुग्गहिउ बृज्वड ॥२४॥

इय धम्मपरिनखाए चडवग्गाहिट्ठियाए चित्ताए । युद्दहरिसेषकमाए प्रीव संत्री परिसमक्तो ॥छ॥ यलोक ॥३३०॥छ॥

* * *

- (23) 1.a भणित, a समहो, b समिह, 2 b पुष्छ , a परमणिह, b पभण हं, a मुणिह, b मुणइ 3.a सन्य विद्युसमयणू, 4 b भणह, a मंचि अप्पाणत, b पहिएहि समाणत, a संभाणत, 5.a b स्यमि, b मृत for सत, 8.b पह for सी 9 a तुहु, b जाणिह, b मह, 10.b पभणह, a किह इत 11.a विषयह, b सुहि संगही, a ण्णेमि, b मह 12.a एव, a ययिनेय, 13.b मण्णहं, 14.a सक्यू, b भण्णहं।
- (24) 1-b युणरिब, a सागसर, b पमणरं, 2-b युखारिहि, b रामणं, a जायंध्र, b सामाजं, 3-b केंकरहं, b पूरद, 4-b ता for सी b, 5-b पमणद, a सहारक्षण, 6-a ताब, 7-a कुमाब, a कुलग्ययपूर्मणु, b कुला गयमूमण, a कुलगूसणु, 6-a एवह चार्च, b लोहाहरणइ इह, 9-6 करेपि कुमारे मुख्यद, 10-b पमचरं, 11-a बावज, 12-b तीसइ for बुज्यद, a after शक्ता281, 13-a omits विस्ताएं, 14-a onlits वीज, a परिसेज for संबी, b परिक्षेत्र सम्ती शक्ता सिक्ता हिरोहित

३. तइअ संधि

५-६. विसद्घित सूत्र तथा आम्र सूत्र फवा

(1)

अंग्रिकार पृणु स्वर वि भणमि विवरीयभाव संस्थाणस्य पित्तजरेण की वि श्व जरियस्य सक्करस्यपयपाणु पियंतस्य माणस्युक्षे वह आदण्यस्य जिह सो तिह स्वर वि स्थाणिस्य हम भासिस्य पित्तलाहाणस्य एरसंग विसए संयापुरवर तासु सण्यवाहिह्य हिम्रत्सें पेसिस्य तेम भणिस्य किंग्यस्य गो तें तं स्थानासहो स्रप्यिस्य णिस्य प्रकृतिक क्रमंजनि हस्यें

विस्तवीसु णिकिकट्ठे ।
गुगद्सण् जिह विट्ठे ।। छ।।
गवर मुसस विज्जहि उन्मरियं ।
जह महरु वि कडयं आसंति ।
प्रमण्ड णिव काहँ नह दिण्ण ।
जुसु अजुसु भणह अहिमाणि ।
जिसुणहि एवहि चूमकहान्य ।
विस्तवेह्द जामें तहि ज्या ।
व्या सुवंगहि व मिस्तें ।
एक्कु केम किर सहँ भिक्षज्जह ।
गृगु प्रमणे उपसार प्रमस्वें ।

घरता- अह तं रुक्खाउ वेच कुसर्सु केविना सो बणवान गउ। तें वरिसें तहमए अन्वतर दलकसम्दिहि सहिच कच।।१॥

(2)

ता णहाँच्य पनिष को वि ता विसस्स विदु तम्मि तेण पनकु अंबु एककु

जाइ जाम सप्यु लेकि । सति प्रशु जैनमस्मि । मूमसे गमेकि पश्कु,।

(1) 1.b जायण्यहूँ, b जितहो सोसु, b विकिट्ठस, 2.a संजननपर, b जिह, 3.b विस्ताननेम, a जिन्महिं, 4.a व्यास b कर्यट तारांबर, 5.b सामर्सहर्यों महस्वारण्यनं यमण्डं, a विक्यु, b विक्यु, b विकाद, 6.b समर्द, 7.b पितिस्थाहर्यनं चितुपहिं प्यहिं पूपकहार्यनं 8.a adds वसद before तहि निम्त तिहं, 10.b भणिनं, a इक्ष्यु a सह, 11.b inter, तें के सं, a अप्यत, a करिहरेस, 12.b प्रयापनं, 13.a क्य for वेद 14.a तहरू, b फसरसमुंखई।

तं सप्ति स्वखनामु सप्तियं कवेति तस्स दिण्यु विस्वियप्प्ण्य सम्बयस्य सृष् छिण्यु ताम बृस्तु वाहिए्या भवियकण धवसाद एम त्रोहिसकण खाम णद्दु ताहुँ वाहिना हु पत्तु जत्य साजिसांभू ।
ते पुनो कुमारयस्य ।
प्रविध्यं कुमारयस्य ।
प्रविध्यं कुमारयस्य ।
प्रविध्यं कुमारयस्य ।
प्रविध्यं अगिन विष्णु ।
तन्ह कार्द्र जीविष्णु ।
वेहिन नुएह कार्द्र ।
अन्ययार्द्र बाहि सम ।
उदलो समाणिको हु ।

घरता - सबसाण वि रोबणासु मुणिउ पुणु महिनासे बुसाउँ । व दिण्य कुमारहि चूबहसु त महें कवाउ बणुस्तउ ॥२॥"

(3)

जह दिण्णु कार किउ चूयणासु कम्माणुसारि वृद्धिह पयासु हा ही कुमार पण्यक्स मार हा हा कुमार पण्यक्स मार हा हा कुमार पण्यक्स मार हा हा कुमार पण्यक्स स्व पक्क पृष्टि सवणसुद्धि विरद्धसण जाम हम विस्विकण मंहे सुमासु हम पण्डा मानि में तेणितस्य हम पण्डायावाणसपित्ति अविमारिष्ठ हम पण्डायावाणसपित्ति अविमारिष्ठ हम प्रामेशिक पाम मुद्धिह फस् प्रमू विमाह मण्ड

जुमरायहो कि विश्वज हुमानु ।
हा हा जविनेहर हुउँ ह्यानु ।
हा हा गंदवा पुजरयणसार ।
हा हा है सुम सुम विश्वयन्त ।
सह कि जमानि वित्वज्ञ पत्रकु ।
जिल्ला को वि कि कि कि कि कि कि कि विश्व के विश्व के

भारता— जो वृह बिहवे विण् कज्यु ण वि णित्रणमध्य परिधायकः। सो णाम मिस्तु परितुद्द्यमम् अंधु ससोयम् णावकः॥३॥

^{(2) 2.5} स for ता, a has written इनक अंबर हुलस्मि, 4.a तें for तें b जेल्यू, 5.a रावण (in margin) for तें पुगो, 6.b दिखू, 7.a सो for सुस, b सुनो, 8.b दिखू, 9.a ताब, b बाह्मिएहि, a कार, b जीविएहि, 10.a सम्मयाइ, a काइ, 11.a एव, a जांब, b बाह्मि, a तस्म, 12.a ताह बाहु बहिनो, 13.b बुणिर्ड, b सत्तद, 14.b जे दिणुं, a मइ, b कव।

७. क्षीरमूढ क्या

(4)

पुणरिव पषणइ सो महसायर को वि बणीसर णामें सावह पज्जसंतइ जाणामणिदीवही दुददिस्वयमोयणणिदिण दिहहंडिए मिल्लाई उत्तोमक मिट्ठाउ व्य समप्पिउ गोरसु अमबाहार सेट्ठि कॉई लढउ तं णिमुणैवि वणीसर जासिउ खीनहाण णिसुणि दिवसायह ।
जसजाणेण तरेविण् सायह ।
णालिएर पुरदहो गउ दीवहो ।
णिय तीह सरिसु एक्क में णंदिणि ।
टिट्टू करःगश्चरियधण मोमह ।
भणिउ चिलाएँ भुंजेवि गोरसु ।
जहि मध्र अइसयरसु उवलद्ध ।
महु कुलदेवि पयच्छह भासिउ ।

षता- तो तोमर पषणइ सेट्ठि महु णियकुलदेवि पयच्छद । तुह देमि परोह णुपुर हउँ रयणवत्थु जं इच्छड ॥४॥

10

5

(5)

तो विषयए पञ्चासक दिल्बह , जह वि संबुत्तु तो वि आसंश्रमि एम भणेवि सेणू सहो अप्पेति लहु छोहारवीच वज विणयद सुरहि सुरहि कुसुमहि उम्मानेवि पुरंड थवेविणू कं वणमायणु जह वि ताए तं वयणु पिक्षिन्यज्ञ गोवि जह वि विषए को लिन्यय तो तीमव प्रभाई महें लिन्स्य णियमुलदेवयदेहु ण जुज्जह ।
तुम्ह वयणु किर कि हज लेषित ।
जाणु भरेविणु न्यणह चप्पेवि ।
एस्तहे मज्मण्णए सो तामक ।
पवणेप्पणु णियवयणिहि लालिवि ।
भणह देवि तं देहि न्सायणु ।
तो वि ण दिण्णु तासु हियहिन्छ ।
देइ दुदु कि कासु वि मिण्य ।
एसा इट्ठविकोएं दुक्खिय ।

- (3) 1.a काइ, b भूयणासु, a दिष्णुउ, 2.a हुउ, 3.a गुणणियरसार, 5.b वसि, a अंसु for अंबु, b अयालिक यम्कु, 6.a जाव, a ताव. 7.b सुआसु, 8.b भणिउं, b वहइ for हवइ, a.b पण्छत्तावाणल०, a उज्झेवि, 10.a कृष्ण, 11.b भूथणयस, a किजंति मोक्यु धम्मत्यकाम, 12.b भणिउं, b गणिउं, 14.a परितुट्ठु !
- (4) 1.2 पुणुरिन, 2 बीरकहा णिसुणहे, 2.b वाणीसर, 3.b जीवहो for दीवहो, 4.b विय for भय, 2 त्रहि, b सरिस, b ते for तें, 6.b मिट्ठाउच्छ समस्यिय विसाय, 7.2 कहि, 2 जहि मह, 8.b वनीसर, 10.2 हर रमणावस्यू ।

भरता- ता बच्छत अञ्ज ण मस्तियद नियपरित्रण् आगस्ततः । परपरमेतरि परमरसु अम्हहें देह निवस्ततः ॥५॥

(6)

णवर अवरबासरे तही मुद्ध हो देह ण जाव ताव णिक्षांविय जो सह मणह ण पुष्छ ह णाणी मुख्ये सुवण्ण वसह विण् भरितए हय मुजेबि सयन् वि पुष्टिछण्जह पुष्छंतहो अण्णाण पणासह णाणे णह सुहज्झाणपरायण् जा अयाण् अहिमाणे भज्जह मित्रव वंवातंबु वि दुउही ।
चंददंश्वणवायहि तहिय ।
वासत्र बत्य वि सी अञ्चाणी ।
उत्तस्रक्षम् व पात्र विज् कृत्तिए ।
समियवृद्दाहि माणु च रङज्जह ।
हेयाहेयहँ जाणु प्यासन्छ ।
साणें सन्तर्भाहि कुहुमायणु ।
सो संनारसमृदि जिमञ्जह ।

घत्ता- अह तोमरु भिल्लु अयाणगुण बत्यु मुखद सं चोण्यं म वि । अच्छित्रित महंतर एउ पुणु जुत्तु वि वज्जद सं गुणि वि ॥६॥ 10

(7)

८. अगुर मूहकथा

जिणवरणार्शवदरयमहुयद अस्य एरषु दिय सगहामक्ल एक्कहि दिणि किर कीसए गच्छद एक्कृ जिणिय तुरुंमुजन्मद्र णर अवद कहाणच भासह खेयद । सिंह सबरह णिउ णं अहंडसु । दूर आणु जावित तो पेण्छद । बुच्छइ तो जियमंति णरेसद ।

^{(5) 1.6} विणए, 2.6 कि हट व लंबिन, 3.2 भवेमि, 6 रविविह, 4.6 छेहारदी उ.5.6 सुर्रीह कुसुर्मीह ओमालेदि, 2 कुसुर्मीह, 2 विववयणिह, 6.2 विविद्यु, 5 भवाई, 7.2 परिच्छिन, 2 हिमयिन्छन, 6 हिमदिन्छ, 8.6 गावि, .6 पमणई, 2 मइ, 2 इट्टविओपं, 10.2 मर्णतहो, 2 गुणह समुसह, 11.6 मिन्ययई, 12.2 अम्हद 1

⁽⁶⁾ I.a बुदाहो for बुदाहो, b मनियम तंबु बि, 2.b जाम साम निदाबिय, b मणवाएँ, a ताबिया, 3.a सह, b अम्मणी, 4.b बणु, b मंतिए, b नित्तिए for जुलिय, 5.b माणुं गढ जुज्बह, 6.b हैमाहैयहु, 7.a घर, 8.a संसारे तम्हे गणवह, 10.b जं बुणु ।

कासु पुत् तिक्यू विकि प्रकाइ तं जिलुपैवि मंति तहो सुक्वइ बारह परिस खाम गुणकित्तणु तो एत्वंतरे राएँ बृत्तच चिरसेवयवद जंग वि अस्थिड जो न मुगेइ मंतित्तणु जो महु किज तिषु व तेषु मण्णद । 5 हरिसेहरणंदणु हिस बुच्चद । सुम्हरू देव करद भिण्यसणु । हा अमण्य पदं कयत अञ्चलत । तं पद्दें पीदसत्यु ण त सम्बद्ध । स्रो कह बितद पहुद्दि पहुत्तणु ।

वता- सतंगु रञ्जु तही पंचविह संतु मंति को जागह। चंड विञ्जड भिञ्च गुणागुण वि पहुपसाय सो मागह ॥७॥

(8)

स एवं चर्चती परिवो जियंतो । तवो तुर्ठएणं हुलियस्स तेणं। सवामाण दिण्णा । सया पंच रण्णा णिको तेन उसी सुहीवंध्युसो । ग सो अस्पि जा मे वलीव्मि गामे। 5 अस रे अजेण। पुणुसं णिवेणं तया अत्यकामा । जया होति गामा वया सेण्णसारा। जणा आचयारा भडा चडतेवा । ह्या बायुवेया धया छत्तवनका । 10 रहा चारमका पिया पीणणेहा । सुरुवा सुमेहा सुबंधू वि भत्ता । मुपुता सुमिता घणं सच्चमूलं । असं तेण वालं जगा पुत्तमाई। धणे सोक्खमाई बुहार्णनजाई। विजाई सुजाई 15 णिक्बी सुरूती। विष्याम गर् ववीरो वि बीरो अधीरो वि धीरो । अ्सच्यो वि सन्यो गुणी होड मच्यो । सया सो सपुण्यो वायेषापि पुण्यो

^{(7) 1.8} अनुद for अवद, b कहाणतं, 2.2 ज्यात, 3.5 एत्क्रति, b जाम ता वेच्छद, 4.5 तुरंग, 5.8 कहो for कि, b भण्यदं, a तथु व तिजु, b भण्यदं, 7.2 बहिता जाब, a तुन्हत, 8.2 रामं, a पद, 9.5 व्येवयर, 10.2 क्राँड्, .11.2 संतांबु दण्य, b सहि, b संति मंतु यो वायदं, 12.5 विच्यु, b मणिदं।

धत्ता- जो पुणु संपयसामण् धम्मु ग करड् अयाणच । को सम्मदनम् अहवा हवड् यर पसुएव समामन ॥८॥

(9)

इम जाणिय निण्हिह गाम तुहुँ ता हिलणा जोइच रायमुहु कोइसतमालच्छित छितड उ णिउ मंरितिह वयणु णिएिय चवइ एयहे दिस्सिह तुहु अगरवणु णिववयणु तेण परिभावियउ पिच्छितिणु त तरवरगहुणु वावह ण देइ किर जो णिवइ ग्उ सच्यु क्यांवि ण संभवइ अवरहि दिणि खंडेवि सयलु वणु विश्वित मिए तुहु लिक सुहुँ ।
जह तुट्ठु देत तो देव महु ।
विष्णवित देव मह एत्तड ।
पुण्णे विष्णु लिक्छ म संभवद ।
जीवव कट्ठद विक्वंतु भणू ।
तहो जगरध्यावणु दावियत ।
चितवह हिल उज्जिज्जंतमणु ।
सो पवरगाम मह अहलवह ।
जगरजणाए गरवह लवह ।
जातेविणु कोहब विवय पुणु ।

10

5

वत्ता- भंतें वणःहणु गिनुणेवि हस्ति पुच्छिउ का किय वणही किय । तें अणित दट्ठु छिण्णेवि महें पुणु पच्छा कोहव विवय ॥ ९ ॥

(10)

ता पभणइ मंति दट्ठू व्य रिख तें आणित एक्कह्रत्यपमित ता मंते पनणित विक्किणेकि नइ अत्य कद्ठु नागहि तुरित । सम्मेन जलणु जहि उन्समित । जंसहह दन्युं तं लइ गणेषि ।

- (8) 3.b सुगामणि दिणा, 5.a पजोइह गामे, 6.a पुणंतं, b असं सं णिवेणं, 7.a बस्थिकामा, 8.a जणा याणुयारा, 13.a अणं त्रेण वालं, 14.a omits जणा पुत्तभाई, 16.b क्यांने विकवि, 19.b वृषो for पुण्णो, a सुपुण्णो, 20.a हमी, 21.a adds हवि वि, before धम्मू, b अयाणचं, 22.a चम्मदस्य, b पसवेण समाज्ञां।
- (9) 1. के वेण्हहि, a तुहु, 6 मएं तल, b सुहु, 2.6 जोइल, b ता for ता, 3.6 मई, 4.2 वयई, a संभवई, 5.2 एयहु, a अगुद्धन्यु, b अगरवण्, b जीवइ कट्ठई, 6 b अगरवल्क, 7.2 लेखिलकांतु०, 8.6 inter. किर के जो, a क्लिक्ड, a सरलक्ड, 9.8 संभवइ, a लवई, 10 b अवर्राह दिग संडिड, b कह्द, 11.6 मंति, a सुणेवि, b पुल्लिम, 12 a सई पुण् ।

विक्तंतइ पंच दिणार तेण करमेत्तहो एत्तिउ मोल्लु जेश्यु मद्द पार्वे खंडिउ काड वणु इय पण्छुत्तावाणसजनियउ भवर वि जो मत्यिउ कयक्तिसु पाविय जा ता चितिल मणेण । णीसेण वणहो को मुणह तेत्यु । खंडिल जह तो कि दहह पुणु । अप्पापल सोयह सं। हिनल । लखहो वि ण याणह गुणविमेलु ।

5

घता- सो अमुणियसारासारगङ हलिउ जेम दुन्खहो मिलड । बहना पुष्णविरहियहो माणुसहो करयलाउ रयणु वि गलड ॥१०॥ 10

(11)

९. चंदनत्यागी कथा

म णिसेहरच	पुगु खेयरउ ।	
तहो वंभणहो	कह चंदणहो ।	
यमणेह सुहा	णिसुणेहि बहा ।	
पयसुहयरिहे	महराउरिहे ।	
उपसंतमनी	णिउ संतमणी।	5
तहो गाढयरो	हुउ पिस्तजरो ।	
ण समेइ जरो	हुय दुस्खभरो ।	
कुलमंति तओ	क्यमंत जन्नो ।	
9ुरि पडहसरं	कारवइ अरं।	
णिव दुनस्वयरं	जो हरड जरं।	10
तहो गामसयं	आहरण जुयं ।	
जच्छइ णिवरो	ता विणयवरो ।	
णइतीय गओ	दिट्ठउ रजभो ।	
घोवंतु जहि	चंमण वि तहि ।	
गोसीरिसयं	मिलियालिसयं।	15
दह्रुं मुणियं	वणिणा भणियं।	
णिबही सयमं	लढं समलं।	
कहि रे रजया	तें भणिउ तया ।	

^{(10) 1.}b भणइ, 2.a सइ चेय for सयमेव, 3.b हो for ता, a विकिक्णिव जं सहिह, b किणिब for गणेबि, 4.b विक्सेंतें, a दोणार, 5.b एसउ, b णीसेसय, b गणइं for मुणइ, 6.b मइं, b काइं, a ज्जइ, 7.a पच्छुता-सावाणसक, b ॰ जिलड, a हालिड, 8.a inter. बि & न, b यागइं, 10.b पुण्णुरहियमाणुसहो।

इत्यं विमले	जउणस्य जले ।	;
ता महुरसुणी	भासइ वणी।	20
मह वेहि इसं	बहु कह्ठ तुस ।	
गेण्हेहि तओ	भासइ रजनी।	
कूण एम अही	भगिकण तही।	
अदिगप्पियं उ	तें अप्पियत ।	
वणिणा वि तही	घसिउं णिवहों।	25
लाइउ तुरिबो	जरुओ सरिओ।	•
हयगाममणी	गहिकण वणी।	
णियगेहे गउ	एसही रजज ।	
सुणिउं रुयई	महु परिष मई।	
नहुकट्ठक ए	वहुकट्ठसए ।	30
दितो वि विणव	ता विण मुणिउ।	
रज्ञां छंदो	एसी मंदी।	
स्रोयाउलभी	पायाउनभो ।	
घत्ता- इय जो विवेध	विजय अवृह वस्य अवस्य ण वज्म इ ।	

(12)

सो परियट्ठो मृदमइ उंती अंतो डन्सइ ॥११॥

१०. चार मूर्जों की कयायें

पुणु वि भणइ महसुद्धपारंगय णर बत्तारि कहि वि जा गन्छोंह जो तिगुस्तिमृत्सु वि बंधणनु व जासावसणु वि आसविरहियउ णिग्गं वु वि वहु गंयपरिग्गहु कथपरयारगमणु च वि दुण्लणु

मुक्खकहाणाउ णिसुणि मुणिसंगय ।
ता समृहि तु एवकु मृणि पेच्छहि ।
सम्बद्ध वि णिम्मलयक बृह्यणयुण्य ।
सुक्कहरण् वि तिरयणसोहिउ ।
विकहविहिण् वि कहिय जण वि कहु । 5
तक्कंतु वि परलोए सुसम्बन्ध ।

35

^{(11) 3.}b णिसुचेहु, 4.a पयरतुह्यरिहे महुराखरेहि, 5 a अवसंतमणे, णिबु संतमण्णे, 13.b दिट्ठो, 14.b तहो for जिह, b जिंह for तिह, 15.b सोसीरसर्थ, 18.b भणिनं, 19.b एरणु जे for इत्यं, b जडणाहि, 20.b महुरं, 25.a मसिन, 28.a णियगेह्गन, b बओ, b रजबो, 29.a सुणियस, b स्वई, 31.b दितो वाणको, 32.b रणड छंदो, भणिस मंदो, 34.a बण्जियस सुट्ठु, b उच्चक्झइ, 35.a परियद्दो मूदमई।

मयविद्धयणो वि ण मयाहिउ चरुहि वि वंदिउ सिरिण णामंतें बहु सीसु वि ण बृत्तु लंकाहित । दिण्णासीस ताह भगवंते ।

भस्ता - जोयणु दिवट्ठ् गंणिणु भणिउ ताहें मज्जे ए के णरेण । एक्के आसीस कासु हबद्द दिल्ण तेण जा मुणिवरेण ॥१२॥

Ю

(13)

एक्कें भणिउ मज्मु पुणु अवरें इय कलहंत पुणु वि गय तेत्त्वहें तेहि णमेविणु भणिउ भजरा भण्ड मुणिदु जासु मुक्खत्नणु तं णिसुणैवि विवास करंतिहैंह णायवियारसार णर भरियस भणिव सिद्ठ सुनुद्धिए भल्लहु तहिं पुल्छिय कारणु समवाएँ तइएँ मज्झु मज्झु षुणु हयरे।
गच्छमाणु पहे मृणिवरु जेत्तहे।
विष्णासीस कामु रिसिसारा।
जो सई धम्मु चरइ पंडियजणु।
मह महु मुक्खत्तण् पभणंतिह।
पट्टणु एक तेहि अणुसरियज।
अम्ह विवास पियारिय घटलहु।
तेहि भणिज मुक्खत्तिविवाएँ।

षस्ता- णायरणरणियरे पुणु भणिष्ठ अणुपरिवाडिए वज्जरहु । तुम्हर्हे मुक्खरतु परिविधयड अण्णोष्णु जि मा कलि करहु ॥१३॥ 10

(14)

प्रथम मुखं कथा

तो तहु मज्जि एक्कु पडिजंपिउ एक्फ दिवसि किर णिद्द् भुस्तउ दी पियान मह हउ दोहि वि पिन । रयणिहि जा उत्नागन मुत्तन ।

- (12) 1.b पुण खर्म पर्भण हं, b विया for गृणि , 2.b चत्तरि कहि मि, व गच्छिहि, क एक्क, 3.a तिमृत्तु, b बंद्यणं, b तुर्ज for गुणज, 4.b आसारहियं मृताहरणु वि तिर्मण सहियं , 5.a णिगंत्यु, b विहीणु कहिय जिणविक्कहु, 6a परमाच, 7.b चहुं मि वंदिज, 8.b दिणासीस ताहं, 9.a गंप्यिणु, b भणि छं, 10.a हवई, a मृणि गरिणा ।
- (13) 1.b भणिउं मज्जु महु इयरें, क तहर, 2.b कलहंत गहय पुणु तेतहो, 3-a तेहि जमेनिण, b भन्दिं, 4-a मण्डे, b मुन्यत्यूण, a जे सह, b श्रद्ध for चरह, 5-a विवा for निवाज, a करंतिह, a writes मह three times, a मुन्यत्यु भणंतिह, 6.b असर, a तेहि, 7.b adds व before सिट्ठ, क छिन्न for सिट्ठ, b सबुद्धिएं भेरलहु, b नियारित, 8-a रहि, क निस्ताएं for समवाएं, a तेहि, b भणिउं, 9.b भणिउ, a बज्जरई, 10.a तुम्हह, a जण्डीक्ण ;

ता दोण्णि वि दो भृय चप्पेविणु दोवयवट्टि णवर पजलंती णिवडिय मण्मु वामणयणुरूलए वामकरेण वट्टि जइ फेडिंमि अह इयरेण कृंदा स्तद तो वरि अविश्व जाउ समस्मक्ष इय चितंतहो कुट्टउ लोयणु मण्मु अहिउ सरिसु वि जइ णियडउ सुत्सर महु पासींह आवेषिणु ।
उप्परि उंदरे पिगण्यंती ।
ता महें चितिन णियिह्मिनस्मए ।
तो हर्ट्य पिय णेहहो तोडिम ।
णिहुय-छंतहो सीयणु णासह ।
विहडिन णेहु हं इ अहतुक्कर ।
हर्जे जिण मणिन विसमस्बन्तीयणु ।
अत्य मुक्खु तो अप्पन प्रयस्त ।

घत्ता- एम भणेवि जा धनकु तिहं णिय मुन्खता चिद्ठत । मुन्खत्मणु पयडहु अन्द गरु णायरसहाँहे पेनिट्ठत ।।१४॥

(15)

द्वितीय मुखं कथा

तेण भणिउ मज्य वि खिरिन्छिउ खरि दाहिणउ पाउ पनसालह तावेनकहि दिणि खरी आयेष्पिणु सो महेँ जा वामोवरि दिण्याउँ एत्थंतरि खरि मम्मु विघट्टइ जेण तेण णिय पह अवमाणहि ता रिन्छिए पभणिउ तुह कित्तणु जाणेवि अवच कंतु सिरु मुंडेवि एव भणेत भणिय जह सक्तिहि इय कोवेण वामचरणुस्सउ दो महिलाउ णाम सारिष्ण्य ।
लामउ रिष्ण्यका लह्य बोलह ।
गय दाहिणउ चरणु धोबेप्पण् ।
रिष्ण्य्य स्तेषि मुसलें चिण्णउँ ।
तुह घरे बोडमडप्फर बहुद ।
अवस्तद्विद्विवणे बिंद माणहि ।
चन्वरंगोडररमणियद्त्तणु ।
वल्लहु चल्लह णास विहंदेवि ।
रक्षाहि पाउ एहि मा बह्महि ।
भग्गु बरिए हउँ यिउ णं कम्लउ । 10

पत्ता- तही दिक्सही लग्गि विहड जजेज हुंदहंसमद भासित । पयडल अप्पाणन अस्य जह बवर मृक्कू महु पासित ॥१५॥

^{(14) 1.}a ताह for तहुं, a मिन्सि वि एकु पर्श्वपित, b सह हुनं, b मि for वि, 2.a रवणिहि, b त्रतामनं, 3.a भूव for भूय, a पासन, 4 a पयसंती, b उंदुरे, 5.a ती मह, 6.a adds को before कंता, 8.a वर, 9.a भणितं, 10.b जो for जह, 11.a एव, a तहि, 12.b पहट्ठन ।

तृतीय मूर्ख कथा

तइएण भाणिउ मुस्सत्तु मण्यु सयणयले माणमोणण जाम जो बोल्लइ सोधयपोलियाउ इय होउ एम ताए भणिउ घरदव्यु सम्बु बत्यइ णियाइ णिवसणहि पत्तए ताए भणिउ चोरेहि हरिउ णिवसण् वि जाम ता मह बंपिउ पिए देहि ताउ

णिसुणहु साहमि ण उ करिम गुज्मु ।
अंच्छइ महु पिय मई भणिय ताम ।
हारइ सबंड दह पोलियाउ ।
एत्तिह चोरहि घरे बत्तु खणिउ ।
कण्णाहरणाइ मि केडियाइ ।
जिल्लाज कत्य धुत्तत्तु मृणिउ ।
मोणउ ण मिल्लिह तो वि ताम ।
हारियउ जाउ दह पोलियाउ ।

भरता- गय तसकर सयलु अत्यु हरिवि महु धुत्तिह विरद्धजह । बोदो ति णाउ जणवय पयडु जं तुम्हे हि वि मुणिज्जह ॥१६॥ 10

(17)

चतुर्य मूर्ख कथा

पुणु चउषड ण**र जियमुम्ब**त्तणु जिज्यार्जंद पनरपियसुरयहो भणइ जडस्तगव्यरं नियमणु । हउ संचलिउ जाव सासुरयहो ।

- (15) 1.b भणिउं, b खररिक्छल, b सरिक्छल, 2.b दाहिणलं, b बामलं, a.b लुइय, 3.b तावेक्कींह, b आवेपिण, b दाहिणलं, b धोवेबिण, 4.a मह, b inter. महं and जा, b ईसिबि for स्सेबि, 5.b omits खरि, a खरि मणु बि पयट्टइ तुह झडवोडे, 6.a अवमाणिह, a has written in margin by other person जुल्लाजुल्लल किपि ण याणिह for अडलड० etc. 7.b पमणिलं, a चक्चरगोवयरमणे सयस्तण्, 8.a कल तह अप्यड for बल्लाहु चल्लाह, 9.b मणितं, 10.a हुउ 11.a जणेणा।
- (16) 1.a मजर, b जिसजह साहंमि जं डं, 2.a मह, 3.b ध्यबोलियाड, 4.a इड, b adds ता before ताए, b भिजड, b चोरोह, 5.b बत्थहं जियाई, b फेडियाई, 6.b जिसमोह प्यंतए b भिष्डं, b कंत प्रस्तुत्तु मृजिडं, 7.a चोरेहि, a ज्जाम, b मोणवड, 8.a मह, a ज्जाड, 9.a श्रुताह, 10.b बोदि, a बि for त्ति, b चाउं, a तुम्हेहि, b omits वि।

ता सिक्खविख णवर णियमायए जैमिजजइ ण अहम जैमिजजड इयाणि सुणेविणु गड तहि पस्तड अवरहि दिणि णारिहि णिरंतरु रयणिहि किर सालय भुंजावहि भ्रम्ख ण अस्थि केम जैमिजजइ सासुयाए तं वयणु सुणेविणु मग्मेसइ जन्वेलई भोषणु

पुत्त तित्यु बबहरिय एमायए । इट्ठिए तोबि लेबि छड्डिण्यइ । तिहिणे जिमिलं ण जह वि पबुत्तल । 5 एंतिहि जंतिहि लक्षण अंतर । सड तहुँ दिण्यु पहुत्तह ताबहि । अवह भूलु अहदुक्खें जिज्जह । तंबुलधरियससिसि बोलेबिणु । रंधेसमि तत्वेसए नोयणु ।

घत्ता- रयणिहि विरामे पीडिज छुहए जा किर पासु णिरिक्खिम । ता मंचयतले तदुनु भरिज ससलिलु भायणु पेक्खिम ।।१७।।

(18)

ताँह अवसरि वाहिरि गय महु विय असहंतेण तेण भुक्खाउहु ता सहसा विययम संवत्ती हुउ वि गर्यक्जरुण तुण्हिक्कउ वोल्लावंतिहे जाव ण वं।िल्लउ महु मरणासिक भयवेविर दोसहि माय णयणआसंविर णउ जाणिज्जइ दोसु ण कारणु कवि जंपइ संपद्द हिल जायउ कण्णमूल प्रभणिज्जइ एक्कए वियणु वि जाणिवि महँ वि रहय किय।
तंदुलेहि चप्पेवि भरियज मुहु।
महिलारूवें ण। इँ भविसी।
तिहियन वोलणयणु सा धनकछ।
तावंगुलिए गत्सु महु पिल्लिछ।
णद्ठु कज्जं प्रभणह गिगरिंगर।
तुह जामायहो कि जायज किर।
तं णिसुणिवि मिलियज णारीयणु।
कुलदेवयहि दोसु महँ णायज।
गंडमास भासिय अवरेनकए।

^{(17) 1.}a चजत्थ, b भणइं, 2.b हुउं, b जाम for जाव, 3.b पियमायए, 4.b inter. ण and सहव, a छंडिज्जइ, 5.a तहि, 6.a अवरहि, a एंतिहि जंतिहि, 7.a रयणिहि किल, a तहु दिणु, b तार्वोह, 8.b मुंजिज्जइ for जेमिज्जइ, a मुत्त, 10.a जहि वेलए for जब्बेसइ।

^{(18) 1.}a तहि, b बियणु वि स्ताणेवि, a मई विरय, 2.a भिरतु for तेष, a मंदुलेहि, b मृहु, 3.a महिलक्ष्वं गां६, b विभरती for भवित्ती, 4.b हर्जं मि, 5.b जाम for जाब, 6.b मरणालंकिय, b कज्ज, b गग्गरिगर, 7.b दीसींह माइ, 8.a तें for तं, 9.a मइ, 10.a कण्णमूलु, 11.b कण्णहं सूयज, a सुणह गस्ल, a संलबई, 12.a बल्लवई, b अस्लबई।

यता- क वि धासद कण्णह सूद्रयन सूणगल्ल क वि संलव्ह । असुणंतु वि नाम हु महिलयण् णाणावाहिन अस्सवह ॥१८॥

(19)

वाहिउ केडिन इय जंपतउ महिलयणेण ता मुह्उ दाबिउ ज्तिविहीणु काई किर सीसइ तंदुस भायणि खोउजु णिएविणु ते ण णिउणु सक्बेबि भणिज्जइ एयइ बाहिए ण उ जीविक्जइ देमि जमलि तुह पुण्णहि आयही ता महु वे वि गल्ल ते फाडिय किमि भणेबि लोयहो साहेविणु महु घुलीहि णामु विरहण्जइ सत्यविक्य ता तहि संपत्त । पेक्खेवि महु सरीर ते भावित । एयहो वाहि मणावि ण दौतह । यट्टु कवोलजुयलु पेक्खेवियु । तंदुलवाहि एह जाणिज्जह । ता महु सासुयाए वोलिज्जह । बाहि पणासहि महु जामायहो । रत्तस्तितंदुल वक्खालिय । तुरिउ विणिग्गउ जमलि लएविणु । गस्तफोडि लोएँ जाणिज्जह ।

10

चत्ता - प्रम चउहि वि पर्भाणउ सुणेवि णायरणर सह जंगइ। तुम्हह् मुक्खत्तु विसेसु जइ सई अमरतृष वियप्पद ॥१९॥

(20)

इय जलारि कहियं के मइ णर अल्प एत्यु तो कह वि ण साहमि अवर कि जासु ण लिगग्गहण्ड जणरंजणु णाउ य जुयसुरूवड तो विष्पेहि बुरसु पहें जारिसु जुरितजुत्तु मण्यह मा वीहिह तो स्वयंण मणिड अवहारिह लिक्ड वस्यू मणिमउडंकियसिट हरि सम्बष्ध सम्ब जुय संठिउ ता सिरसि हर चडाविय हत्यें ताह सरिसु जह एक्कु वि विषयः ।
सम्बु वि अनिउ भणंतहो नीहमि ।
चहुमहुगोत्ययसगहण्ड ।
को वि ण वयणु भणह तहो भल्लउ ।
भणिउ ग को वि अत्थि इह तारिसु । 5
विहडह जं ण कि पि सं साहहि ।
विज्ञानुद्धि महु वयणु वियारहि ।
जलु दिवहदमणु प्रम ण य सुरु ।
अत्थि अहव ण पुरामहि विट्ठउ ।
भणिउ विएण अत्थि परमर्खें । 10

^{(19) 1.}b बाहिउं, 2.b मृह्उं, a मासिउ for माविउ, 3.b जुरदुविहीणु, a मगिव, 4.a खोजज, b पेच्छेनिणु, 5.a एण for एह, 6.a तो for ता, b बोबिज्जह, 7.a देवि, a पुणहि, a पणासह जह जामायहो, 8.b फाडिया, 10.a हुत्तेहि, 11.b ब्युट्टं मि ममिण्डं, 12.b मुनखत्त, a सह 1

घरता- विशुधेविण् मनवेएँ अनिष्ठ नइ एरिसु हरि बुलाउँ । ती पंत्रपरिहर मरेवाम् हुछ कि पहु गुर्गाह विस्तरत ।।२०।)

(21)

पेंड्सुएँ पहिंच णियसामितित हुं उ हुई र्ण वामणस्वेणे क्यकबंडेण बलि वसु हं अविरलसकाएँ सेन्द्रुणिकाएँ पत्थरही अहवा कस्सा वि हु बाणए सो वि हु संचरइ पुन्छिउ तुम्हाँह जिह भासिउ मद तिहं घडद ण घडद य विज्ज मह दिय जं वयणं ता तेण दिएसें वि हु णिय सीसे खग् भणिउ एयारिसज अम्हेड वंचिय कि करह अम्हाण वि पट्टइ कह वि ण तुट्ट

भंति मणी

दुक्जोहणेपासं क्यमहिपासं कीस गउ । पत्थित सरपहुणा कि दणुरि उणा विश्वसुई । होर्जे सरहिणा खेडिन बिहुणा कीस खहा। तहो एसा कीला वरिजयबीला जह भगह अभिषय कट्ठाणे ता अम्हार्थ सह मुगहुं । अम्हर्भरेसु मरणुसु करमपरावसु कि करइ। पश्चियणं । अम्हेरि पुराणे भयिश्यनाणें हरि सुचिख । पंडिउत्तर दाउं वामं कान पन तरहु। जड पंग्णिज विदो मलाछंदी एस जणी।

घरता - ती मच्छु कुम्म किडिणरहरि वि वामणु रामु तिवारहं। Ю होएयिण जन्मणमरणदृष्टु देउ णिरंजण सहर्द कर हं ॥२१॥

(22)

परमप्पड कि रसरुहिरमस दूसिउ सरीह करेग वि हवेइ

मेयर्ठमज्जसुक्कंतदोसे । णिक्कल् ति कहि वि कि उह संहेई।

(20) 1.b रयरतेताड for इय चत्तारि, b मई, b ताहं, b जड़क्कु वि णरवर, 2.a कहि वि, a सञ्ज वि, 3.a संस्यहण्ड, 4.b भणहं, 6.b मण्यहं मा वीहोंह, a जम्मे, b साहिंह, 7.b बृत्तु for मेणिड, b अवराहिंह, b बियारोह, 9.a सम्बन्ह, b जग for जूय, b पुरागाहिद्दिज, 10.b भणिउं, 12.2 युणहि विश्वत्तउ ।

(21) 1.b दुज्जोहणपासें कथमहिपासें, 2.b वो रणरूवेणं, b सुरपहुण कि बंगुरिस्त्रा, 3.a पत्यणहो is written in margin. 4.b कट्ठतमं, 5.b तो for तही, b ती for ता, b इय for तहं, ba कम्मी for करेता, à संचरई, b काम-'परब्बसु 7.b बिह मई नासिउं तिह 8.a अन्हेहि, a पयब्दि गाणें, 9.b क्षिम b बलाखंदी, 10.b वायम्, 11.a किरह for करहं।

सन्यन्तु ण पुन्छइ शर कया वि श मरेइ अमर ण वि य हवेइ सम्बंगू ण गच्छइ वाह्म्पेण जो सन्छिणाहु सुरपहु अमिच्चु इय कारणेण गड विण्हु होइ जरमरणरोयस्यजन्ममुन्कु तं कइ वि मवेसहु णाणदेहु तं णिसुणेविणु कंटइयगत्सु

तह पत्थह ण कयस्थन सया वि ।

भयविज्ञन गन पहरण्गह लेह ।

अह तिरतु करह कि भोयणेण ।

सो होइ केम किर परहो भिच्चु ।

सन्वण्य अवच जह होइ को वि ।

पुन्नावरवयणविरह्ण्युक्कु ।

जडवाइय सुम्हह जाहु गेहु ।

सुहिवयणकसलु पुणु पुणु णियंतु ।

10

5

षस्ता-णिगाउ मणवेउ सुषद्धि लहु विष्य णिकस्तर करेवि तहि । हरिसेषासाइ विविद्यस्तु गउ युब्बुत्तुष्जाणु जहि ॥२२॥

> इय घम्मपरिक्खाए चउवगुवहिद्ठियाए चित्ताए । बुहहृरिसेण कयाए सङ्गा संबी परिसमत्तो ॥३॥छ॥

> > * * *

^{(22) 2.}b कहि सि, 3,a पह for णह, 4.b णा बि, b पहरणहं, 6.b आमच्यू, 7.a सम्बणु, b सम्बन्ह, b हवह, 9.b तुम्हदं, 11.b सुबुद्धिलह, 12.a हरिस्णा विविद्युष्णलु in margin हरि is explained as बानर, b adds प before विविद्युष्णलु, a गम्रस, a उन्निह for जहि, b जहि, 14.b संबी परिच्छें समलो, a परिसमलो, a 11311मलोका। २३-11

४. चउत्थ संधि

(1)

पुणु मामवेएँ बृत्तु मित्त ण कि पि मुणिउजह । अञ्जागंधजणेण हरि सन्वण्ह मणिउजह ॥छ॥

भी पवणवेय णिसुणहि सुमित्त सुसमसुसम् वि सुसमदुसम् दुममसुसमि जिण चउवीस होति वलएव णव वि णव वासुएव तहो मिज्म के वि पावति मोनख् तहो हरिहु मिज्म जोबंति मिल्लु सो वासुएव वसुएवपुत्तु कि वि भणइ रमइ दहजम्म लेबि छनकाल कहिम जिहं जिणिह वृक्त ।

दुसमुनुसमु दुसमु वि दुसमदुसमु ।

चनकवद हवह बारह ण भति ।

णव चेव हवहि पिश्वासुएव ।

सम्म के वि हु णरयहुन्खु ।

कंसासुररिज चाणूरमल्लु ।

सम्बण्णु पुराणि दिएहि पुत्तु ।

जम्माइ विश्विष्ठाउ भणिह के वि । 10

घरता - इम अण्योण्णविरोहु जाणंत वि अवगण्णहि । एक्जु वि उह्यसरूउ गयविणेउ हरि मण्यहि ॥१॥

(2)

त्रवाकोक्तं ॥ तरेव ॥

मस्त्यः कूमी बराहरच नारसिहोऽच वामनः । रामोरानस्य प्रकारच मुझाः कल्की च ते बसाः ॥१॥ अक्तराक्षरिनर्मुक्तं जन्ममृत्यु वियक्तिं । अव्ययं सत्यवंकल्वं विष्मुक्यायाम् सीवति ॥२॥

^{(1) 2.}a सन्वण्ह, a drops छ, 3.a हो for भो, b बृत्तु, 4.a सुसम्भुसम्
सुसम् वि सुसदुसम् दुसम्, 5.b हवहिं, 6.b हविंह, 7.a ण्हो को वि मण्डो,
b सुम्बद्ध संग तह, a को वि, 8.b हरिहुं, a जेपच्छ for कोअंति, 9.a
सन्वण्हु b दियहि, 10.a भणहि, b भणइं नमइ दह०, b भणहि, 11.a
दह सम्भोग, a सनगण्याहि, 12.a मयविनेत्र, a मन्याहि ।

विक्लमुनि कथा

कायण्यहि भित्त य करमि गुजर्मु यश्चिमंति तासु मुणिहणणकाम् तें मन्गिउ तेण वि विष्णु तास् अहविस वर्शपणमुणिहे तेण क्षवडेण बसुह सनि पश्छिकण इय बनिवंधम् जयउ णिवस् सीयह बलि जेण पायालि गमिउ भार्यतु ण सीसइ तं कयावि एवं भणेवि जरवहसुएण

बलिबंधणकारण कहिम तुल्ला दिण सत्त रज्यू णियणिवहो पासु । उबसम्ब घोर जण्णहो मिसासु । हरिमुणिणा मुणिकजन्जलएम । इबसमा हुरिंड तं वंधिकण। अण्यारिस् पुणु दियवरहि बुस् । स्रो विण्हु गरामरणाय गमिछ। सुह बाणु होइ णव सइ सया वि । पमणिज्जह सुहि चितियहिएण ।

5 10

घता- णिसुणिउ परहु पुराणु मित्त वियाग्जिंतड । णाह पुराणंड चीरु लहुसयसम्बद्ध जंतउ ॥२॥

17

(3)

मार्जार कथा

मणवेएँ पुणर्वि पवणवेख अबर वि अजुलु लोइयपुराणु एवं भणेवि संजिणयमाय मध्वित्यचिहुर टट्टरियसीस दढकढिणवन्छ भीसण पर्यंड विज्जाणिम्मित मण्याद लेवि उत्तरदिसि संठियबम्हसास कणयमयवीदि मणबेड बहिस वियवरहि एवि भेरीरवेण

पष्मणिज बहुण विह्रय विवेख। तुह दरिसमि उज्ज्ञिय श्वपमाण् । अलिउलतमालणिह भिल्म जाम । गुंजहलणयण छिच्चरियणास । कीवंडिवहसिय वाहुदंड । रहिरेल्लकण्या फलसए छुहेबि। गर्सेनिण् क्य मेरीरवास । मं बेरिसहरि जबमेह मण्डित । पुष्किम ते पुरुविसामनेण।

5

(2) These two verses are given by अधितयति in somewhat different form, see 10.58-9. 1.b omits ।। तीरेव ।। 2.व मस्यक्षी, 3.a ते वस् 4.a ॰िम्मूंक्तं, 5.a अहवं, b विष्णुध्याई न, 6.b आयण्णीह, a कहिम, b कहींन, 7.8 दिण्या, 9.4 adds व्यवरऽद्ठमुणहि संजुत्तएण before इरियुणिया, 10.b तें for तं, 11.b दिवयरिष्टि, 12.b तेह for सोहय, b गमिर्ड, b गमिर्ड, 13.b सइं, 14.a खगबद्सुएण, a चितियहिएण, 15.b विसुवित परहुं, 16.b जाई पुरागतं, b मनुसंबे for सहसय», cf. for बॉल-भागवतपुराण, मत्स्वपुराण, बायुपुराण stc. ।

मणवेएँ तो पडिनमण् सूट्ठ तो ते ह पणिव ह्यमेरि कीस तेणुतु गरुय कोऊहरोण

मंजर विकाही हुउँ इह पहर्ठु । कणयासणि कि बिर पाणिसीस। गवजोव्यम्बल्लिक्जामप्ग ।

10

धता- वह मुक्बस्स ण जुलु कणयमयासगरोहमु । तो एत्यहो उत्तिष्णु करह पसव्याउ णियमणु ॥३॥

14

5

(4)

तो भणहि विष्य को गुणसिट्ठ भिल्लेण भणित गंधेण जंति नो ते हि मणिउं मणु मोल्लु काई दिय मण्णहि कणयही पहल बहु एक्किहि दिणे पुरि मूसयहि अत्य सारियए ण एक्कुबि रूउ एइ तहो देवि हेम् अवियारएहि नें भणिउ पलोएवि सेह एह तो छिण्णु कण्णु वहिरावित्तित्तु **५ हिरारुणु दीसइ काइ कण्णु**

एयहो मंजरहो सरीरि विट्ठु। वारहजीयण खंदर ण होति। तें मणिउ सद्ठि कणयहो पलाई । मज्जारें पुणु वहु सरह कज्जु । णासिज्जड जी सी मिलड केल्यु । जं करइ मह जणु तं हवेह। कुंभत्यु वि लइउ विरास् तेहि। मा पण्छताव हु डह्उ देहु । पिण्छेवि तासु दियवरहिं बृत्तु । भिल्लेण ताव पश्चिमणु दिण्णु । 10

यत्ता- अम्हद पंथें रीण णिरु उंदुरकुलआउलि । मुल्तण्छुहासंतत्त रयणिहि एउ विदेउलि ॥४॥

(5)

किल सयलकाल अम्हाण जाइ

एयही दुट्ही गंधेण जाइ।

- (3) 3.a एम वि for एवं, a •तमालणिहि, 4.a मुंजाहणयण छिच्चिरियणास, 6.b कहिरोलकम्यू कलसें, a छहेनि, 7.b दिससंडिवबंगसाल, a बंग्हताल, 9.a विसवरहि, a चेरीरेकेण, 10.a मं मंजर, b जिनकडं, a हुउ, 11.a तेहि, b भणिनं, b विभीस, 12.b जनजोवम•, 13.a नह for जद्द, a फण्या-सम्बारीष्ट्रेषुं, 14.8 णिययमम् ।
- (4) La मनहि, b युगु. 2b मंति for होति, 3.a देंहि, b जजू for मणु, a काइ, b श्रमियं, a पकाइ, 4,b मंत्रहि for सम्बद्धि, 5,a एक्कहि, 6.b सहायण्, 7.म देहि, 8 म पण्डलाब, b पण्डल पावा बहुउं, 9.b ती छिणकण्, b पेछेवि, a दियबरहि, 10.b दीसई, b ताम, 11.a उंदुरहुव, o 12. व रयभिष्ठि।

तो अवकरेही घरसुरतयासु इय उंदिरीह वहरं सरेवि कोबि कंपंतिह ता हिएहि जइक्छिणु अलिउ ती तुज्जु वयंगु एक्कें दोसें मासित खगेण दिय भणींह भणिउ तुह केम घडउ सबरेण बृत्तु तुम्हाँह पमाणु तें भणउ वोसु जइ परिहरेहि पुणु तेण भणिउ संक्रमि भएण अवद वि जइ अडवव्युरसमागु चिरविरइय कट्ठभिक्वसमयं

जिउ हरइ रंधि पहरंतयासु। कण्णाद् सद् णिहु अंसरेवि । एयहो वि कण्णु मूसयदिएहि। इय भणिउ पलोइउ तासु वयणु । 5 कि बहुय वि गुण णिज्जहि खएण। सुरविदु वि णासह दुद्धयङ्ग । रोडाण बादु ण ह्वइ समाणु। तो वंभणाण जसु परिहरेहि। परिहरिङ दोसु णं भणिम एण । तह कद्वय बहिरिब णरसमाणु । विच्छेवि ण वयडमि तो समयं।

10

घत्ता- ता भासिउ मट्टेहि ता णरतिउ साहिज्जइ। णियमजरदोसस्स पुणु परिहारच दिञ्जइ ॥५॥

(6)

तो सवर भणइ समुद्दतहरो मेधुएँ पुष्छित आगमण् भएण वुत्तु केवट्टु उवहि करपसर करेविणु दव्युरेण तेणुस्तु गरु पुणु मंडुएण हंसे भासिन की मुणइ माणु जो कूवि वसइ दददुरु सया वि एवं भगेवि उड्डीणु हंसु गुर गणहें सहु वि जो पुर्विदर्ठ कइयम बहिरु वि असउ प मएण दुणिमित्तु च पिच्छइ जैम कि पि इय असुहमीत जो सुहु चवेइ

तिंड आयउ हंसु जाम अडहो । रयणायराउ तें कहिउ पुणु । तें भणिउ मुणिह अइ वहु सुहि। एवह होइ कि मणिउ तेण। कच्चइ कि सरिसउ महु अडेण। तें बुस्तु अडाउ वि कि महाणु । सी सायरगुण ण मुणइ कया वि। अवर वि सो णरु अडमेयसरिसु। सदृहद्भ ण पयाब्दित गुणगरिट्ठु । रितहे गण्छइ तुरहरवेण। सुणिमिस्तु ण याणइ तिह हियं पि । अवरु वि सो कृष्टयन वहिरु होइ।

^{(5) 1.}b কিং, 2.b খড, 3.a ভবিংছি, a খুৱু, 4 in margin the meaning of दिएहि is given as देते, 4.a ते for ता, 5.a पत्नीयवि, 6.b खएण, b जिज्जहि, 7.b जासइं, 8.b समाणु, b बाख, 9 व मणहि, b मणडं, b परिहरेहि, b परिहरेहि, 10.b भणिनं, a संस्कृति, b णह for णं, 11 omits वि, a कमस्य वर्षति वि जरसमाणु, 13.b तो मासिउं, a महेहि ।

षता- दुर्ठु वि पहु जाणेवि विरमेवित मण्णंततः। जो परिहरद ण मूदु किट्ठोंमच्यु सो बुत्ततः।।६।।

(7)

मण्डपक्षीशिक कथा

इय तें लिणिण वि पुरिस पसासेवि
रत्ताइ य दह पुणु वि भणेविणु
एयहो सरिसु अस्थि जइ एक्कु वि
तं णिसुणेविणु वंभण जंपहि
ता सम्भत्तरयणरयणायरु
दिय पुराणे आगमे जो वृत्तउ
मंदयकोसिङ णामें सावसु
एक्किहि विणे केण वि आमंतिउ
ता तावस कुडिलिक्य दिट्ठ्य
जजमाणेण भणिउ विणु दोसें
तावसेहिं पभणिउ गुरुमितिए
मंडवकोसिएण ता बुत्तउ
तिर् भणिजजइ जेणय अपुत्तउ

सोलह मृद्ि कहाण्ड भासिवि ।
दियवर सह भणिय वि हसेविणु ।
तहो गुणु लहिवि ण पयडमि सक्कु वि ।
बृह्यण सह पडसइ एरिमु कहि ।
भण्ड समृद्दु गहिरसक स्रेयव ।
तो हउँ अक्सिम तुज्जु णिरुत्तउ ।
उम्मतेयतउणाइ विहावसु ।
तावसजुउ णिविट्ठु क्यसतिउ ।
तं गिएवि सहस ति समृद्ठिय ।
बिह्नय कंपनाण कि रोसें ।
पड पाविट्ठु णिवसिउ पंतिए ।
कहह काइ मह कायउ अजुत्तउ ।
अच्छइ एष्ट्र दोसु णिश्ताउ ।

धत्ता - विण् पुश्तेण ण कोवि इहपरलीए वि पुल्जिड । भोयणपंतिहे तेण तुह संसग्गु वि विज्जिड ॥७॥

15

^{(6) 1.}a खेयर for सबर, b भणहं, a समृद्दितहहो, 3.a उबहे, b भणिउं मुणिंह, b सुँहि, 4.b भणिउं, 5.b अह lor पुण्, a कें for कि, 6.b मुणहं, a तेणृत्तु, a कें for कि, 7.a वव्दुरं, b मुणहं, 8.a उड्डीण, 9.b व for वि, a पडियउ for पयडिउ, 10.b व for वि, 11.a दुणिनित्त, b तह, 12.b चएइ, 13.b चिरसे वि, 14.b मृद्, b कट्ठमिक्चु।

^{(7) 1.}b कहाणरं, 3.b एसहं, a तहि गुण सहस् ण बोल्लिव सक्तु वि, 4.b अंपींह, a बंसण for वृह्यण, b किंह, 5.b तो for ता, b भणसं समुद्द, 6.a पुराण आगम, a हुउ, a उपना for तुष्म, 7.b तउणारं, a in margin gives meaning of विहालसु as सूर्य, 8.b एक किंह, 9.b जिएसि, 10.b सजिय, b विण् for कि, 11.a ताबसेहि, b पभणिउं गुक्मित पहं, 12.a मंडनकोसएण, b omits कहुह काइ....अपुत्तउ, 13.b एउ जि for एह।

मधानीको ।।

अपुत्रस्थगतियोस्ति स्वयं मैव च मैथ च । सस्मालुश्रमुखं वृष्टया परकावृषयति मिक्कः ॥१॥

तो कोसिउ भणह वियमुलसम्पण्ण ता तावस भणहि जं पुष्टम्णि भणिउ णट्ठे मुए पष्टाईयम्मि कीवम्मि इय पंच खावपहि वियमुसहँ अध्याद को देह किए मण्डमु थेरस्स जियकण्ण । परमायु सुइसाब त कि मा मह मुझिछ । अवरी वरो होह भत्तारि पडियम्सि । 5 एवं वियोगेति सह कावि अवियोध ।।छ।।

HEET -

मध्ये मृते प्रमधिते पनीषे च पतिते वर्ता । पंजरबायस्तु मारीमां पतिरम्यो विश्वीयते ॥२॥

इय तवसिवयणेण विह्वा वि तें गहिय अह अट्ठ वरिसाई गेहिन्स वसिकण किर तित्वजस्ताफलं वे विज्ञ लेहु अह भणिह हरपासि ता गंगकणा वि आयण्ण सो आसि लिह विस्तु विस्तंतु जा संसवंदणणिमिस्तेण मण्डेह तं णिएवि तहि ह्यु पिन्कवि सहस स्ति णिय मणिण वितेड कही तणिइ इहकण्ण

णामेण छाया पुणो जाय तहि दुहिय।
पिय कोसिएणं समालत्त हसिकण। 10
छाया तया नस्स पासम्मि मिल्लेहु।
जो लेइ मिल्लेइ तो घीय महु णा वि।
हरू गंउरिसंजुरतु कहलासि णिवसंतु।
तिल गंग तियल्व कीलंति पिन्छेइ।
हर्जे मयणवाणेहि हर्रणिएवि ते सत्ति। 15
अण्हर इंडनसिट्ट णउ होइ इह अण्ण।

वत्ता- तो वंसणमिरतेण तें मयणग्गिपिलतें । चितिउ एह ण भाष्य जिह ते कि देवतें ॥८॥

^{(8) 1.} This verse occurs in the वसस्तिलक्ष्यम् (बम्बई 1903), vol. 2, p. 286. Amitagati's verse runs thus, see 11.8. 2-b आयुलस्य, b स्वर्धी, 3-a विश्वका, b ॥।।। 4-b कीसिओ भणकं, a अस्वप्यण, 5-b तावस भणकं, b भणिनं, 6-a कीसिम and gives its meaning in the margin as नपुसके, 7-a विश्वकृत्यह, 8-b omits तसमा; cf. Amitagati's DP.11-12. This verse is identical with पाराक्षरस्मृति, 4.28 quoted by Mironow, p-3i of his Die Dharmapariksha etc. It is also attributed to Manu as found in the स्मृतिचन्तिका, see the suppliment to the समृत्यृति, Gujarati Press ed. Bombsy, 1913, p. 9, verse 126. 12-a बरिसाइ, 13-a तय, a पश्यमिम मि मिस्तेष्ट्रं, 14-b भणींह, a संगक्ष्यों, 15-b पोरिसंबुत्यु,

तो वरितं मार्थां एहं जारि ता हुत संख्य वंसद कुमार बोस्सांनिय एरिसु बोम्बयेग कि तजुमायण्यं बुस्सहेय गंवाए ताम खतिय क्यू राए हुत क्ष्म व परमह बहितसेमि हुव पर्भागह हुत मि बच्छमि कुमार इय वयणहि संग्र साहितामु धुरयम्य जाए पुषु णियत्र रेण आरहमि जबरि सङ्ग जिसल जेल्थु सह काई संग संकर व बेंद्र थए पिए तहे जिस्स्य मीससाहे मि नामहि दूसह्तिरह्मारि'।
पन्नव्य वाहँ संस्रीय पांच ।
कि निज्यमेन नेनियं नमेन ।
के जड माणिज्यह करनहेग ।
वोत्तित संपुराएँ मह गिराए ।
सुह जीसंती काणि वसेति ।
वोत्या न जीम्मू संसारसाद ।
सम्मून सम्पित संस्रासु ।
पुष्क्रिय कंता जं ते हरेल ।
आवसि दिनि विमें नृति एत्सूक ।
सम्मू वि क्यरम् सीयस् हर्नेहः ।
रम्दगु वि क्यरम् सीयस् हर्नेहः ।

5

घला- अधुमन्तें बद्धस्त सा गय जा कहलासही । गञ्जरिस पुण्डिय ताम पेन्छिनि पण्डाह ईसही शहरा

(10)

भा त्वं सुवरि जान्त्ववी किव्यह ते वर्धाहरे नन्तर्व । सम्भव्यं क्रिय पेयुम जन्मधरसं जानत्वयं ते वितः । स्वचिन्तत्विर्ध विहे विद्यापे सत्यं क्रुवः सावित्यं । इत्येषं हरयान्त्वी विरिवृत्य संसत्यवं वातु कः ॥१॥

अह भगिह कंते वृत्तवसमहंतु
तुण ते व रिमयं विह गोवरमिय
कंडवे ण कहेि वच्छोति दिद्क
जयसंद्धम् मोडलु रच्म् माउँ
विरयस् सुद्धीहि सङ्ग होस् सासु
तिहुवसमोहणु मोहिस्स सास्

तुर वाविषयाहे बोग्यन श्रवातु । 5 लोबवसमोबनम्बरतत्व्यक्ष । सूर्विहरूए मक्ववायु व वहट्ठ । वियमायुषु जहि तदि विस्तु जाई । ण सुहाद कि वि सववास रोसु । वोविष् व मोह्यविस्मार्ग । 10

17 व लेडियान वेच्छेड, a हुउ, a मुणिबि for विश्वि, b तो for तें,
18.a विशेष इड् समिन कह करण, b उक्तवह गर्ड, b कथा for अण्य,
19.a व्यक्तिसह, 20.a जहि. Noic: सम्बन्धीविक may be the
name of विश्वकार्य व्यक्ति whose daughter was छापा, the wife
of Agai. See the story — व्यक्तवसुराण, अस्त्वपुराण, वायुपराण
व्यक्ति विश्व वंचा, तक वायुपराण (42.39-40). महाचारत व्यक्तियां,
230,11-18.

अमुणंतियाए पीवरमणाए णावह बसिय रणपजीत्तमाए हरि चितह कि कामिणि सहासु सो धण्णज जीविज सहसु तासु बंधित णं विक्लए बंधणाए । वितिकत हियवए पहसंतियाए । विर एक वि थिय पियविरहणासु । सह जेग एह जंपद सुहासु ।

घाता- पेम्मपरव्यस्थित्तु पियमुहकमलु णिएविणु । सरसवयणु जंपेह हरि ईसीसि इसेविणु ॥१०॥ 15

(11)

वादत्त् गमण् किंद्वहं सगमणे चुंबहि जसु क्यण् भियंकवयणे जो जोयद वुज्म् सरायवयण् वोलिज्जद ताए वियम्खणाए पुरिसोत्तमासु एरिसु ण जुस्तु परयारकहा सञ्जावणी य वह धिद्धिकारपडिच्छणी य को धण्णु रमणु अद्ययिहुलरमणे । को सहलणयणु सिसुहरिणणयणे । आयण्णिको ण तं हरि हे वयणु । कि परमहिलाए सलस्कणाए । अहिलसियद्द जं किर परकलत्तु । सज्जणमस्ययक्षंपायणी य । णिम्मलयरसुहि मुहलंछणी य ।

5 ालहे**ण**,

- (9) 1.a बससं, b माणें, दूसहुह, 2.a णाइ, 3.b एरिस, 4.b माणिजइ यलहेण, 5.b खलियन्छ, राए वोल्लिय, a गिराइ, 7.b हुढ भणइ हर्ज मि, a संसारसर, 8.a वयणहि, 9.b दुगु for पुणु, 10.a त्तेत्यु for जेत्यु, 11.b समलु वि, 12.a रणगणज, 14.b गंजरिय, b ताम, a पच्छा एसहो।
- (10) 2.a बेल्सि, 4.a पातु ब, 5.a भणहि, b कंत, a धवणियाहे, 6.b सुणि, b गोविरमणि, a लोणससलोण, 7.b कहिमि for कहेबि, a मंगणबाणाइ पहट्ठ, 8.a रण्यु णेइ, b पिछ माणुसु, a तहि, a जाइ, 9.b सहिंहि, b रासु, 10.a व्वेह्लियाइ, 13.b सहास, a बर for बरि, b व्विरहणास, 14.b धण्याउं, b एस for एइ, a तंपइ, 15.a पेम्मवर्डस॰, 16.b जंपेवि, The corresponding verse is not found in Amitagati's DP. Amitagati refers to the incident in only one verse as followes:

देहरणां पार्वतीं हित्ता जान्हजीं यो निषेचते । स मुख्जिति कर्ष कन्यामासासीतमनक्षणाम् ॥ 14.23 Harishena provides this incident in rather more detailed form. For बीहान्य or हरि, see भाग्यसपुराण, विष्णुपुराण, मत्स्वपुराण etc. तह जारु विदंवु मरणु लहेह तें भणिउ अवश्विय मयणहासु पर्दे माणेविष्यु संगमिरतु जं पि वन्त्रवि पुणु दूसह बुहु सहेह । विए यह मोहद विसयाहिलासु । जीविम मण्णमि वहु सहलु तं वि ।

घस्ता- बाणुराइय अंगु जाणिउ तही सुयवयणए । ताए समप्पिउ अंगु उद्दीविय मणमयणए ॥११॥

(12)

पुण भणिण्यह रमणिहि एहि संकेउ देवि गय गोवि जाम रिव कोडि जुन्तु पिडहाई गयण् पंचमसर सर पंचमसरामु नंबोनु बोस् जुयरवयजनामु णिम्मलु वि हार णं असिपहार पिडहाइ भाणु नहु बन्छवंतु समयिम्म जाए हरि जाए जाम जह बोल्लाबिम तो जण्यु सुणेए इय बितिकण अंगुलिए जाम छिहणिबेसण् जण् परिहर्वह ।
हुउ दिवसु परिससम् हरिहे ताम ।
कमनसमण् गं पण्डलिउ जलण् ।
कप्पूरू पूरु णं सामरासु ।
हरियदण् महण् तण्डलाख् ।
आहार गाइँ जीवाबहाद ।
उग्गमिउ चंदु गावह कर्यंतु ।
गोविहि घरु संपिउ णिमइ ताम ।
मउणेण क्लंतु ण पिय मुणेइ ।
आहउ कवाहु सां भणह ताम ।

5

10

तद्यया- जंगुरमा कः कपाटं प्रहरति कुटिले माधवः कि वर्सतौ । मी बक्ती कि कुलाली नहि घरणियरः कि द्विजिल्वः कर्णोडः । नाःहं घोराहि महीं किनसि घनपतिमां हरिः कि कपीराः । इस्पेवं गोपवन्या चसुरचनभिद्वितः पातुवरचक्रवाणिः ।।१॥

जो तिय सोलहसहसण तिस्तु परतियलंपहु घर आणियाहे संकरहो कहाणाउ कहिउ तुज्मु देवस्तणु वृज्मिउ केसवासु अह भणहि कंत कह पासि धवनि इय नोरिए माणइ परकसरतु । 15 पिए सी ज जोन्मु तिय यवणियाते । महें व्यक्तित तुह जियमणे ज गुज्धु । परतियसंपदु सिन क्ष्मणु वासु । अष्ण्डस्त बात सो तुज्सु कहमि ।

धस्ता- अहवा खंबहो पासि बंगणि जह सुय मुख्यह । 20 जिह बंह दि अहकामिउ गिसुणहि सो जिह पुष्पत ।। १२।।

^{(11) 1.8} जाहिविस, b •रमाणि, 3.b सरयवधणु, 4.b बोलिज्जह, 5.a परकतुत्तु, 8.a स्वतेहर, 9.b धमणिर्द, b मोहणुर, 10.a यहमाण्येविणु, a सहस, 11 सुमुबदगई।

(13)

बाहुद्छ वरिससहसाइ जाम बातजु कंपिल पुष्कित समंति वंभा तुह रज्जही कारणेण तिलु तिसु कथहो सच्छरहो सेवि बादविबु पट्टू तहो पुरत ताएं बरवरिसिय जाहि पएसियाएँ उण्णामियणमिश्वासिय भुयाए सविसासकश्यक्षासीयणाए

ताउ करह वंश्व सुरवहर्त् ताम ।
मासह वेसह जहु सुणि भवितित ।
ताउ चरह वित्व हरिवोह तेण ।
प्रद्रविव सिसीसम तें करेवि ।
पर्व्हामुसारि वालिययगाए ।
ईडीसि वयासिय वज्जुवाएँ ।
विश्वमस्मार्थतत्व् भूलयाए ।
ववस्तविसेस्युण भावणाए ।

5

पत्ता- ता कण्यंतरे तासु जोर्बानहित्यंतम् । परित्र गीयम्वाण सत्ति हुउ सराद्ध कमलासण् ॥१३॥

10

(14)

जिह जिह पेण्छद तहे भरघरणहें पेण्छंतह तहि सरलंगुलियउ जिह जिह जंगाजुगल अवलोयद जिह जिह कदम्याँ विवर्ण्डंद जिह जिह स्वतंद सोणीगंडस्

तिह तिह सिक्लिइ झाणावरणहें। दलहि ण अथ्यपुत्तमणिगृत्तियतः। तिह तिह सुरवजुत्ति अथलायहः। तिह तिह तहो गीसासु णियण्डहः। तिह्-तिह रहकद मुख्द कमंदसुः।

- (12) 1.b रयिणयहे, एहे, 3.b पज्यक्तिय, 4.a जन्म for मं, 6.b जित्तम्, a माइ, 7.b उप्तमिन्दं, 10.b चिन्तिक्रम, b मणइं, 11.b मंगुल्या, 14.b शराहिमांव, a ज्यपति मो हरि, 14.b मंगुरमिनितः, a चतुरमिनितः, 15.b «सहसद्दि, b मांगई, 16.a वह, a जोग्य, 17.b कहिएं, व मह, b तुह, विश्वमे थ, 18.b «मंग्रहितः, 19.b सम्बद्धि, कंति कसु पासि, 20-a बंग्स्या, 21.a जह सेव वि मित्र », Amitagati has not got any verse similar to this. It is, ofcourse, found with some veriations in the तुमामित्यक्रमधारमामारम, p. 38, verse 166 of the section of दमानतार (Bombay, 1891).
- (13) 1.b वहसाई, क पाई, 2.b inter. पहु and मुण् for पुणि, 3.a बारहों for बंधा, 4.a तिलोतिसम, 6.a हरि for बंद, b पएसियाई, b सचसुवाए, 7.a सणु पूसपाई, 9.a सो for ता. Mote see for पहा, तिलीतसम, जिल्ल के हत्त्व, बहुत्वारस (सामियई, 210.18-28), बावयसपुराय, सत्स्वपुराय, बायपुराय कार।

जिह जिह निमइ महोरिस जाहिहे जिह जिह नीजपद्मीस्य जोस्द जिह जिह पिच्छा सुरक्षियणाहर जिह जिह जियह प्रमासकावर जिह जिह कुंतलबसाउ विमोयह तिह तिहं मक्षद्र पत्र प्रयागाहेहें। तिह तिह सम्बू स्टार्चणु कीमद्र। तिह तिह संवर्गति तद्दी बाह्च। तिह तिह चढद रावस्त्रवामय। तिह तिह तहो मणु मद्मणु प्रभीवद्र। 10

पत्ता- इय जोयंदु पिएवि कुडिलमावयणु रंजेवि । यिय उत्तरहे विसाहे वस्हहो विद्वि निवज्जेवि ॥१४॥

(15)

जइ वि विद्ठि परिहरेवि परिट्ठिय
णयणहो पुरत णाइँ अवलंविय
ण संस्तिहिय अहव ण रोविय
जितइ विहि वसेवि जइ पिण्डिम
अहव ण णियमि णयणकलु हारमि
तो वरि जाउ लज्ज तं बारहो
णाणज्ञाण संजमसंघायहो
सइ संपर्वित जइ वि विज्ञिज्जइ

तो वि तासु आसत्ति ण जिट्टिय।
णं हियवए गिलीन गं विम्हिय।
णं उक्तिण्नक्रव णं वाविय।
भूवजगुरु वि तहुयत्तहो वच्छिम।
सह उहाँत पान कह घारमि।
सह दुस्लह रहसुह परबारहो।
एउ जे समु काले ग वि आसहो।
तो वि ण कम्मू पुरायस जिल्लह।

वत्ता- अहवा कि बहुएण दोसु गुणु वि अवगण्णीन । एयहो दरिसणसोक्ख् सिदिसुहहो बहु मण्याम ॥१५॥

Ю

5

(16)

वम्हेण पुषु वि पुषु शितविड तहो वरिस सहास खेलेण मुट्ट ता सत्ति वाड सुंदर वयण् पिट्ट यणि विवंश गुरु मण्डा किस तित्वु वि अवरा नणु झाड पुषु जं एहु उम्मू महें तउ कियर ।
महु होउ जिन्म वेष्ट्रण्य सुहू ।
या तेण पत्तोमह चिरणयणु ।
मय ताम तिनोत्तम अवर्षिय ।
पिष्कृंतु जियंबिण बहुपुणु ।

(14) 1.a परपरसङ, b सिविसर्व, a सामायरणङ, b सामायरणङ, 2.b वेच्छंत-होर, 3.a बासोयङ, a सुरवं, 4.a बीसासु नियच्छाङं, 7.a सरासणे, 10.a बुंक्सु, b amip oco सिह, a विकोयण for प्रसीयङ, 11.b वह for एय, 12.a असर्वाच्याहे, b वंद्राही ।

(15) 1.4 बासति, 2.6 जनवाँ, a जेरह, b विविध for विविद्य, 4.6 सूरवायुर, a लहुबहो, 6.4 परवारही, 8.6 पुरस्ता, 9.4 बोसुपर्य कि, 12.6 एउट्टे 1 तहो णिविडपंग्मुं तहि जगे विमण् पियस में तण्हणेहें जडित चलदिसु मुगैबि णयणइ पसर पंचसयबरिस तमे संठिपए उम्बरिय तबाणुक्त वयण्

लीलए वाहिणदिसि किउ गमणु । तिह् अवर वि वस्तु तासु षडिउ । गयणयिति विहिउ संबीयसर । कमलासमेग कलियउ हियए । महु होउ णिएमि णारिरयणु ।

12

चता- ता रासहरिसि जाए गउ असेसु तेउ जाणेवि । गय सुरतिय सुरलोउ णियपहुकञ्जू समाजेवि ॥१६॥

(17)

विष्फुरिय हारमणि ता मयण जन्जरिउ उट्ठमृह्वं एक्कंगु कय भउहखेवेहि किर कुद्ध ते गसइ ता भीए कंपंत खरसीसु जहरेण कोवरिगउपहेग महु हुच्च तह चडउ ता सा व किण्हेण वह सामवयणेण पुन्त्रियं सामंतु वह णरकवलेहि भूसिय सरीरस्स चियछार धनसस्स भिक्खं भमंतस्स इस इउ वहंतस्स ज़इ को बि ता पश्ड इब भणिय वयसालि सञ्खंदी वि सुपसिद्ध

गय जाम सुररमणि । विरहेण विहि जरिउ। जाणियए तहो मग्गु। ता हसिउ देवेहि। सरमुहेण खरु रसइ। 5 हरसरण ते पत्त । जा खुडिउ तहो तेण। ता भणिउ वम्हेण। सिरू करहू मा पहल । सोयाणल्पहेण । 10 उक्समिउ तही तेण। बिहिणा वि सो जुता। अंगटिठजालेहि । जडजूडधारस्म । तवरवीण सकलस्स । 15 एत्यु वि जिमंतस्स । पूरेइ रत्तस्स । हत्यह तुह सहह। हरू जाउ काबालि। मयणान्यारव् । 20

^{(16) 1.}b वंभेग, a मद ताउ त कियाड, 2.b inter. सह and मृह, 3.b भोरभणु for थिरणयणु, 4.a ताव तिलोत्तिम, 6.a तहि for तहो, a तहो for तहि, 7.b पियरूवतण्ड्य, a तहि, 8.b adds वि before मुणेवि, b जयभाषाह, 10.b तवाणुरूववयणु।

घरता-नम्हें काममहेण गहिए लज्जमूएविण् । रित्र संपन्तिज रिक्टि रमिय रण्णि पद सेविण् ॥१७॥

(18)

तो खंबओ पुरतु इयरित्य जो रमेइ अह रवि समासण्ण ता जें अदिष्णा वि अणुह्वि य सुउ जाउ घर यविय सुछाय चंदो वि सकलत्तु व: विशिवदित्तेण मयच-मधाएण गोयमहो महिलाहे इंबो वि रइरस्तु सविऊण सहस भउ वपरोहवरोहेण पुण् जणिउ सहसक्खु इय देवसंघाउ सायलो वि फिकरहु

उपक्षा गुणब्रुत्तु । सो कण्ण कह मुयइ। जइ धरहु णियकण्ण । किर कुंति कण्णा वि । 5 कण्णे रित विक्खाउ। सो म्यइ कह छाय। दट्ठूण भुंजंतु । रिसिविस्समित्तेण । सकलंकु किउ किउ तेण। 10 आहल्लब्णा माहे। जा ताए घर परतु। कुविएण तेण कर। उवसमिउ कोहेण। इय लोय पश्चक्खु। 15 परयारअणुराउ । कह पासि सुम धरह ।

वस्ता-- पर अञ्जवि पिए दोसु एक्कहो बमहो ज दीसइ । धस्माहस्मु वि सेसु जो मज्झस्यु गवेसइ ।।१८॥

(19)

इय भासिति मंडवकोसिएण सह समहिलु तित्य भमेह जाम मयणसरिवद्ध हुउ वियलियनु बाहिरे किर वीसह सुरयणेण छाया **क्रमपासि** णिहित्त तेण । जमु छायारूउ णियंतु ताम । सा तेण अविष्ण वि कर्य कलतु । पिय मिस्तिय जमेण भएण तेण ।

^{(17) 3.2} उट्टम्सू , b जाणियहं, a तहि, 4.2 देवेहि, 5.2 हुद, 8 b उरगेण for उप्हेम, b वंभेण, 9.b तब for तहे, 11.b उच्चतिन्छं, a सो for तहो, 12.b सम्बंद, b ति सी उंत्यु, 13.2 वंगिट्टम, b अमानेहि, 15.2 तबरबीणतबमस्य, 16.b इत्य वि, 17.2 रंतस्य, 18.b इत्या वि, 20.b छंदो वि, 21.b वंगें, b गहिएं, 22.b संगण्णियरिक्ष, a रण्य।

मंबरेनक विवसि ववणेण अससु वें सब मारि बिर कम सुहेण तो तेम चणित संगीत ताहे मह मणह मिल जो विस्तवनुतु वंगुनिए पसारिए बाह पढ़ह तो यवह कंत त्यरंतराने तें मणित तिलोगासियत जात कि एकक विवणे गुरुवमविहीण यशींगत जम जीविज नित्त तहुन्। अवतु जाई कार्यु तही रहंसुहैम ।
सहि केम होई सम् पिरूक्माहे ।
सांद्र केम होई सम् पिरूक्माहे ।
सांद्र तहे केम संवन्य यहह ।
वहि एक्कु पहर वसपियमकासे । 10
पहरेकों सांजान तियल ताल ।
स्टूह मह मयगुम्मता वीचे ।

वता- इय भणेनि गउ तेत्वु जैत्यु गिचन जमु मंगहे । र छाया उम्मिलिकण सम्बद्ध भाजपरिमाहे ॥१९॥

(20)

तिई विउ पछण्णसरीय जाम
उन्मिलिय कंत वियमं शिएवि
एसहो धूमद्वाउ विव्यक्त
देसव्यमतेण वि एक्कमेक्कु
रमियावसाणे दिससुय भणेद
पद हणइ मजनु गासिय सुणेद
ण वहीत पाय पिए कहिंदि तुम्बु
तो नियमएण सो ताए विलिउ
गिमिकण भण्य वस नेहि जाम
वसणेण विवा विय दियह जाब

सहसा एंतूण जमेण ताम । जाडिवड णियम् जसे पहसरेवि..!
करिकण पत्तु छायासमीछ ।
हिष्ठिड एहरसु पिड महुरवस्कु ।
जा जाहि कंत जा जम् ण एहं
एरचंतरे सिहि पहिवयम् देह ।
पुह पुरव होत जं होह मज्मु ।
एतह जम् एविण् ताह मिसिड ।
विण् जायह सुरवर वियस जाय ।

भत्ता- ताम पमणु इदेण मणिउ समित्तु गवेसहि । बाउ पलोएवि तेम नृतु ग विद्दु मए तहि ।।२०।।

^{(18) 1.}a जेवयो, b पुतु जप्यम्, 2.b मृतद, 3.b किर कण्य, 4.b ताये, 6.b inter. सो and कहू, 7-b दि कलस्तु, 11.a स्यरस्तु, 13.b त्रवसमिय, 14.a इस for इस, 16.b कसु for कहू, 18.b ग्रम्माहम्मवसेस् ।

^{(19) 2} b तेल्प, 4.b बहिरे, b गशिय, 5.b पथियां, 6.b फाइ for बार, b यहे for सहो, 7.b प्रियणं, 8.b मच्छं, 9.b बहे for सहे, 10.b यर्षं, a प्रविश्वसमासे, 11.a बाच for बाच, a तित्यणं, 13.b शस्य धीन्य।

(21)

अण्य वि एक्कु ठाणु गउ औयमि एम भवेषि देव आनंतिय सम्बहो एक्केकासम् दिण्णाड भणिउ विसेसु क्षम् संशाधित भगद वाज समिएण म साहिम तो जिन्मिम कंत जमराएँ छह्डिउ ताए जाम मे सासणु णासह किर भगतहरुहो असम्

जह विकाम तो पहु संजोधित ।
आह्य सयल कि सामर पंतिय ।
जमहो तिष्णि ता तहो मणु मिण्यत ।
जेणासणतित महु देवावित ।
जह तिमलहि स्त ता साहमि ।
मेरिल मज्जु सुहि बोरिसंड बाएँ ।
ता अञ्चेतकुढ़ जमु मीसमु ।
ता पुरुहोए सम्मु सहसाणम् ।

वता- विहि उट्ठंतु पडंतु जा णासे वि ण सम्कर । विस तद तब धरणीसु ताब पर्दतिब बम्कद ॥२१॥

10

(22)

तहो दिवसहो संगिषि गिष्ठियम उ
वाणियं तुहु आसण मन्यु तिह्
इय जियपुराणकह संगरह
एत्थंतरे पर्भाणउ दियबरिहि
पुत् खयररायणंदण भणड
णढ मुणेजि सुनीलु सग्गे धरह
दुड्चरिय भरिय कह इत्यियह
पद कह वि च जाणिड तेण हिं
एक्केग वि दोसें कृष्यपुण
सो जमहो जमसणु खयहो गड

वहसाणर दीसह सध्यमंत ।
पत्सहीय गठ जमु मध्य जिह ।
कि वित्य जात्म प्रमुष्ट मध्यप्रह ।
छायह रिविष्म सम्यु करिह ।
ते लोड तियास वि जो मुणह ।
इट्ट होह पूणु जरयगमणु करह ।
उयरात्यिङ जियउयरित्यह ।
सा कि जमु सयसू वि मुणई न थि ।
वह जासहि एम भजति जन ।
वहवा मध्यरहा दोसु जन ।

^{(20) 1.}b एहि for तहि, क एतूण जन्मेण, 3.a नसमीर्ड, 4.b एक्छुमेक्ड्र, 5.a रिमयाबसाय, b रिमयाबसासे, a क्त जह जम् मृणेद, 6.b एहं हणहं, a हणहं, 7.b कहें मि, 8 b तासु for ताह, 9.b प्यण किय, 10.a जलणेणु, b दिवह, b जावहि, 11.b क्लिर्ड।

^{(21) 2.}a मित्रिय for बंदिय, 3.b सम्बद्धे, b विश्वार्थ, b विश्वार्थ, 4 b ०तर for नितर 6.b वृद्धि, a बोल्सिय, 7.a छड्डिय, 6.a बच्चेयु, a जम, 8.b जयत्वस्ट्डु, a. ऑफर जयत्वस्ट्ड्डो in margin ह, वासण्, b ०तद्ठुह, 9.a वासण्हि च स्विकस, 12.b ताम (स्वयंग in margin) :

धत्ता- दिवहराह णिरुत् सब्बु पुराणि पबुत्त । भणित दिएहिं मुणबृद्धु तह विरालु पद जिला ॥२२॥

(23)

पुणु वांइय विरित्त सोयामणि गियसोहगादमियरइरमाणिहि पयजिय, पोमराय क्इसंबहि सुरकरिकरसमळ्थ विसेसहि गहिरणाहिराय रोमायलियांहि सिहिणमार मारियलियांगिहि रतुप्लबलकोमलपाणिहि गयणपुरंतिदिल कहपंतिहि जियपरिणय विवीहलबहरहि जुल्लकमलबलद्वीहरणयणिहि कोइलकलख महुरालाबहि हावभावविक्यम प्रयक्तिहि भणइ रविगदु भव्वसूत्रामणि । वालमराललीलगहगमणिहि । मासि ण वि सिर वि रोमबरजंगिह । गंगापुलिणणियंवपएसिंह । तोच्छोयर सोहंसिह तिबलियहि । 5 न्यलयक्य अणगगणसंगीहि । सरलंगुलिवहुसोहाखाणिहि । तणुतेओ हामि य सिकंतिहि । मुताहलविलासदंसहरिंह । सरयसमयछणसिसम वयणिहि । 10 सिहिकलावसमकेसकलाविह । णवरसणट्टविसेस णढंतिहि ।

घत्ता- इय तिहुयणरमणिहि जासु ण मणु खोहिज्जइ । सुरणरणायणुयस्स तहो देवहो पणमिज्जइ ॥ १३॥

(24)

हरुदेह जारिहर जेण कड़ वंभू वि अवंभवडरिस्थियए गोविद गोवियुणमेहमत । सुरणाहु अणाहु अहस्नकए ।

- (22) 2.a यासण, a तिह, a जिह, 3.b inter. अत्य and णित्य, 4.b पमणि जं, a रिवय, 5.b यरराज, a b मणइं, b मुणइं, 6.a सग्गें, b हो for होइ, 7.a इत्यियहि, a उपरित्यिज, 8.b कह अ, 9.a गुणु b णासीह, 10.b ण जं, 12.b भणि जं, b तुह, b पदं।
- (23) 1.b भणहं, 2.a रहरमणहि, a व्यमणिहे, 3.a वसंघि, a वंधिह, 4.a विसेसिह, a व्यप्तहि, 5.b व्यम for वरायक, b व्योहतिकविषयिहि, a तिवितिहै, 6.a व्यतिवर्गिहि, a व्यप्तिमानि 7.a पाणिहि, a व्याणिह, 6.a.b णहपैतिहि, a सिक्तितिह, 9.a प्रकं in margin, a व्यरिह for अहरहि, 10.b णयणिहे, b वयणिह, 11.a महरालाविह, a क्लाबहि, 12.b व्ययदेतिह, b विदेख, 13.b व्ययपिह, 14.b प्रविश्व ।

कंतिल्लु आसि जोवह समलु सो मयणु जेण दुज्जउ जियड तं वंदह जो भवभमण चूर्य पावेविणु मुरणररायपयं इय मित्तणिमित्तें देवगुणु गउ खगवइणंदणु उववणहो

वा बसि परयारे सिस सम्मु ।
सो देव सुरासुर पुष्णियव ।
, सो मुद्द बंदारयुहंदणुर्य ।
पावइ योक्खं पिहु सोक्खमयं
भासंतु संतु भोसरिव पुणु ।
खेयरणरवाणः णंदणहो ।

5

10

घत्ता- पुणुरिव वृत्तु सगेण सुरिगिरिसिरिअहिसेयणु । जासु करइ हरिसेणु तुहु पणवहि सुहि तं जिणु ॥२४॥छ॥

इय धम्मपरिन्खाए चउनगाहिट्ठिमाए जिलाए । बृहहरिसेणकयाए चउत्पर्धची परिसमतो ।।संधि।।४।।श्लीक॥२३३॥

* * *

⁽²⁾ l.a in margin कामेण for जेण, 2.a ०अवंभवजित्स्यरय, a अहस्लक्यं, 3.a जीजह, अमलू, 5.b ०चूअं, 6.a पहु, 8.b ०वाणरभंदणहो, 10.b हरिसेण, b दुहुं पणबींह, a omits छ, 12.b चडयो संझी परिखेशो समस्तो, b परिसंगरतो ।।छ।। सीछ।।सीछ ।।भाष्ठ omits बलोक ॥२३३॥

५. पंचम संधि

(1)

मणबेएँ पुणरिव सिंह मणिउ देवहें साहारण सम्बु जिह हो विणमा महिमा लहिमा पावह कामरूज वसिमा सञ्चाणे एयह अक्ष अञ्चल दीसह जहयहो हरविवाहि कमलासणु गजरि वणलपासीह भामंतज ताम तासु मयणाउरिक्तहो चजरियवासुयज्वरि पगलियज तहि वंबुट्ठसमह गुणवंतहो वालिखीस भामहो सुपसिद्धह ह्य तहयहो जनकोह्यमयणें

शिसुनि मिल घराडगुणु ।

इ तं पि तुह करिम पुणु ।।छ।।

अप्पा गम्मई सक्तृ वि हास्य ।

इय गुण अट्ठ हुति देवाणें ।

बम्हाइयह लहिममुणु सीसद ।

इति पुरोहिउ हुणियहुवासणु ।

ख्हिउ पाय अंगुट्ठ णियंतउ ।

सुनकञ्चवणु जाउ अणुरत्तहो ।

सठजय सहासहुयपुक्तहो ।

रिसि अयित्थ सहियउ तबसिद्ध ।

सहिमा गुणु पाविउ चउक्यणें ।

वज्ञा- तह गरुरिए गिरिकइलासिहर बुष्चइ जण्डिह दासणु वणु । अइ पिम्मपरम्बसु पहु वि गुणि करइ अजुसु वि पिसवयणु ।।१।।

(٢)

शिश्तक्छेदनकथा

तो जाडयरमु उद्दीवित हुइ वरकप्पूर वृत्ति धूलियतज् वस्तिदर्गजणअंजियलीयण् जीतजैत्त्वसणसम्बन्धासित पंदकसासंकित जडसेहरः । कुंकुमरसरंजियपुरुषाणम् । भयणाहीमयबह्यमंडम् । जरमंगहिठाबहुसम भूसिज

^{(1) 1.}b सिंह भणिनं, 2.a देवह, 3.b पामम्मंद्दं, b आवद, 4.a वसियान्वाणं, a हीहि for हुंति, 5.a एयहं, b बंगाइयहं, 6.b ब्रह्मासुयु, 7.a ॰पासहि, a खुद्दियगयव्यंगुस्टिणयंतन, क्रि.a ०वरे for स्वर्धि, a ॰पयहि, 10.b बर्ट्ससिहासह्यपुत्तह्न, 11.b सिहयह्न, a ॰सिस्ह्मे, 12.b उनकोविय० 15.b तह्म्युरिहे, a ॰कंद्रसासहर, b दायवणु, 14.b ॰परवस्त ।

कजरणंतिकितिः जिमेहलसय रचस्यंतवरकंष्यणे उद जियकर दमस्यसरणास्त्रियभंगउ इय जबंतु गउ तावसवासम् चिक्षु देहु एरिसु चंपंतउ कवि जितह कि एहु देख हर वीरवंटटंकारमणोहरः । जणमोहणु गायदः सुनेवसरः । जनविहरसवहु भागवसंगठः । वावसिजयहः जणंतु विरहसम् । हरक्षेण वर्णंतु व पस्तरः । णं जोव बहव कि अणहरः ।

10

5

घरता- क वि देइ शिक्ख णागापजर वणहसक्दसकंदिह । सद जाइ पसाइयज्ववगिह चयपयदिहमिह मंदिह ।।२।।

(3)

क वि हर हरियंचित रिसिपती
हरणामे णियंपिड वोल्लावह
क वि बोल्लह कि वुच्च६ संकठ
क वि मयणवर्से कि पि वियप्पद
क वि संकरि करेवि आलिगणु
हले हले हुउं हुउँ क वि उरि पेल्लिय
क वि पिय तच्चव्ये वि ण संकद्द
जसु आस्ट सरीरं मणोक्यउ
क वि गउ गउ ईसठ पमणंती
गुरुयणपुरन वि पियमें विणब्धिय

करि करेबि देवण्यणपती।
पुण्यह देउ एमस्मावह।
जो तावसियह तियह स्रसंकर।
विक्यु गणेबिणु विष्मु समप्पद।
मायावयणहि रंजद वियमणु
परमत्तारहो उप्परि चल्लय।
हरहो जहर अप्यंति ण भवकद।
सा ण मुणद अवसंक सम्बाधः।
सा मुणद अवसंक सम्बाधः।
सरगहगहिय हरोबरि जिबहिय।

घत्ता- इय तावससणु निवरीयमणु हरदंसणे जा वायछ । स्सेविणु ता तावस भणहि कहि उद्धासु समायछ ॥३॥

⁽²⁾ La वाडयरस, b उहीविय, a चंदकतालंकिय, 3.b बहुइ, 4.a वक्षणयरह-ग्यासिए, 3.b कररणंत, a ॰ मेहसहर, b omits the line वीरषट... मणहर, 6.a जगमोहणगाइयमेयंहिसर, 7.b पड for बंबच, a मायरसंगठ, 8.b ॰ जणहं, b विरह्संसु, 9.b विक्ता, 11.a वाषायवर, b संविक्तंवहि, 12.b सई वासपयाइयजनवर्षाह ।

^{(3) 3.}b तावतियम्, 4.b सयणवसण कि, b शिवस, 5.b संकर, 6.a हुले हर काइ वि चरि, 7.a प्रवासक, a aids वि bosor संबद, 8.b समीभार, a की, b मुलई, a aids व bosor सम्बासक, 11.b तावतिगण्, 12.b भगहि।

(4)

पुणरिव तायसेहि पमणिज्जह जें महिलहें सामउ कामश्मह इंदियजणिउ वियार सरीरए एम भणेवि सा व वरसत्थें णवर ताण सटवाण वि लिगड चोज्ज भिण्णचित्तहि झाणें हरु भणिउ जयहि पिहि बीक्वें हरु संमु पवणक्वें रमणासण ईसक्टव जममाण परिट्ठिय सोमक्व तमणास तिलोयण

हो पुज्जइ केत्तिय सम किज्जइ।
एयहो दट्ठहो किज्जइ णिग्गडु।
दंडु पउंजहु इंदियसारए।
छिण्णु लिगु तहो तावससत्थे।
कयइ तेण परिविज्जिय अंगड।
तावसेहि जाणिउ मयाहर।
जयहि जयहि जलक्ष्में संकर।
रहरूव जय जयहि हुयासण।
जय सिवरूवायास अणिट्ठिय।
सुरक्षव महएव सुतेयण।

घरता - इय अट्ठ वि मुरितउ तुज्झ जए परउवयारहो कारणु । विहिहरिहरखबहि करहि पुणु सिट्ठि ६रणु मंहारणु ॥४॥

(5)

जं अम्हीं हं अण्णाणींह सामिय डिंभु सिपयरो अविषय प्रयासह अम्हइ दप्पें पामिय आनह अप्हिम उनिर सिवणस णमंतहु अम्हइ पुणु पह हियए यनेविणु तो हर अगद पहट्ठ करेविणु पुणरिव जेण तुम्ह लिगग्गह हत्थपहत्यहि जनर घरेविणु स्वाधें क्रेमि पहं तुह्ठंतिहि क्य पहट्ठ तहि तीहि णवंतिहि कित अजुत्तु तं खिम वि सगामिय।
सो परमत्ये तासु ण रुसह ।
पर वितित्र णियदेहहो आवह।
सम्य वरुजह उत्तमसंतह ।
अणुदिणु झायह झाणु धरेविणु ।
जणमह मण्झु लिंगु पुरुजेविणु ।
लगह हवहि विहिय णियसंगइ।
सम्बहि आसमु पत्तु चलतहि।
मत्तिए जय जय प्रभणंतिहि। 10

भत्ता- तहो विश्वतहो लग्गेवि एत्यु जय कयपमाण मुणिबयणिहि । अदलञ्जावमु वि लिगु हरहो पुञ्जित णरहि अयाणिह ॥५॥

^{(4) 1.}a ताबसेहि, 2.a महिलइ, 3.b जणिउं, a दंड, b ब्सारउ, 5.b लिगइ, a परिसेसिय, 6.b जिंक्तीह, a ताबसेहि, 7.b मणिउं जयहि, b जयहि, 8.a ब्संभ, b बणरूबें, b जयहि हुआसण, 10.a सूक्रूब, a सुतेयणि, 11.b कारण, 12.b विद्वि b स्वहि, b झरणसंगरण।

(6)

एम सा व विवित्यगुर्मक्षें परिउंविय छायामुहुकम्साह् बाहुल सुरयसुहाणदही तवसिय परयारम्मि ससंके जाणिय कुंती सुरयविसेसहो पवणवेय केत्तिउ वोलिण्जइ पग्यारे वियलइ गुणकित्तणु परमारे अकयत्थु णरत्नणु परमारे सुवित्तु खणे खिज्जइ पियम वि कयदोसाण परम्मुह तहि लहि मा नुगु लखु तियक्कों।
तहि लहि मा गुणु पाविज अणलहि।
लहि मा गुणु संजाज सुरिटहो।
हुउ लहि मा गुणु जुस्तु ससंकें।
जायज लहि मा गुणु दिवसेसहो।
परयाग्यिकहाए लज्जिज्जह।
परयारेण ण होड गुस्तणु।
परयारे णासइ देवस्तणु।
सयलजणहो अवि सासुष्पज्जह।
पर पुणु थाह कवाइ ण सम्मुहु।

10

घस्ता- सच्चछ चल्पमृहखरसिरखुडगु णिसुणि भिरत जं बिस्तड। संभू सच्चइ खेट्ठासुएण जिणवर तल आवस्तव ॥६॥

(7)

उग्गतवेण कालु जा गच्छइ पुणु विज्जाणुबाउ जोयंतहो पंचसयाई तिस्यु महविज्जह ता विज्जासमूह आगच्छह । आयउ वरविज्जासमूह तहो । अवरहं सत्तसयहँ पुणु खुज्जह ।

- (5) 1.2 अम्हिंह अण्णाणिहि, b अहुत्तु, a inter. तं and खाँम. 2.b डिमे सिपयरे, b पयासइ, 3.b अम्हइं. a पर चितिज, b णियदेहंहो, 4.b णवंतहु खमजप्यज्जहं, 5.b अम्हइं, b प्रइं, 6.b भणहं, b पणवहु, 7.a तुंम्ह लेंगांगइ, b लिगगाइ, a लिगइ, हबाँह, a विमा for विहिय, 8.a पहत्पह, b सिवाहि सक्वामाम्, 9.b खंधोह लेकि, a पढं तुट्ठंतिहि, b पत्तचलंतिह्ट्ठंतिह, 10.a तहो तेण णवंतिह सत्तिए, a पभगंतिह, 11.a व्ययणिह, 12.a omits कि, a णरिह टी. पद्मपुराण, शिवपुराण, वदसंहिता (11-14), महाभारत, सौप्तिक, 17.21 otc.
- (6) 1.a पांच for लाबू, 2.a छायसरीरि पहुं ठउ समलहि, b omits तिह, b adds जम after पविच, a अणलिह, 3.b आहल्ला, 4.b ताविन पर०, b ससंकहो हुउ लिह माणु जुत् ससंकहो, 6.b वोल्लिज्जहं, 8.a अकियत्पु, 10.b परम्मूहं, b परु, b सम्मूहं, 11.b omits सम्बद्ध, b चउमुहं खरिसरक्बरखुडण्, b तिह for जं, 12 संभूद. See for अहल्या, बहापुराण, मस्यपुराण, महाभारत (शान्तियवं) etc.

ताज भणिह भणु भणु कि दिज्जल ह्य वहपुर्व्वादि जा अच्छाइ परिमिष्ठ दिन वहिह वि भुवण्यल व्यविष्ठम्म देविणु वच्छाए वक्यकावसृद्धि किर पुण्या परिमापुरन केरिवणु जानाह विष्ठा विट्ठ तेण गायंती तं णिएवि जा पहिम णिरिक्खइ रासहसिक तहो उप्परि हिट्ठल णट्ठिवण्य सिक लग्गल करयले वाणारसिसमीवि जिल्बीरहो रसणि विराम जाम पर्यनुषक्ष

सामिय कि दासत्सणु किण्जल ।

ता सगकणाढ बट्ठ नियण्डा । 5

रइ असहंतित साल विकण्णल ।
परिणियगलरिसुरल किल इच्छए ।
छित्तणट्ठ ता मूलिणिविक्ला ।
सो वंभणि जबह सा तावहि ।
तियक्ष्येण गयणि जण्यंती । 10
चलमह घोत पुरिसु ता वेक्बइ ।
वस्तंतल हल्यें परमट्ठल ।
पुणु गय काले भमंतें महियले ।
घोरवसन्यू करेबिणु बीरहो ।
भरितए यविल पहिल ता खरसिर । 15

बस्ता- इय चरमूहस्वरसिरखुढणु सुद्धि जाउ नासि जं एरिसु । अध्याणिजणहो अध्याणि जणु भासद तं अध्यारिसु ॥७॥

(8)

जलशिला और वानर मृत्य कवा

पुणरिव मणवेएँ भासिज्जह
इस भजेंबि दिसिका घरेविण्
गंपिण् बंभसाने भेरि ह्य
कणयासने मणवेत निविद्ठत
भागित मुणहु कं वात कवणु गुरु
बात ण मुणहु जिल्ब् अम्हहँ नुरु
रिसि भासद पिहुत्तर निएकिण्

अवस् वि परपुराणु घरिसिण्जह ।
पिष्क्रमदिसि पठिलहे पइ सेविणु ।
जा ह्य घंटा ता दिय आगय ।
दियहि सगणहरेहि जिणु विट्ठउ ।
ता मासइ समु मामारिसिच्य ।
दिय पमणहि कि किउ भेरीसम ।
आजम्म अवस्य मुणेविणु ।

^{(7) 1.5} omits the line उम्मतेषण etc. . . आगण्डह. 2.5 वित्ततहों for जोगंतहों, 3.a पंचसमाह अवर्ष्ट सत्तसमाह, 5 सुजह 4.5 भणिंह, 5.5 समकण्णनं, 6.5 परिषिनं तिन्न देवहे वि सुवणनं, 7.a पण्डह, 5 क्लोरिसुरन, 8.a सुद्धिए किय पुण्जा, 5 सुविधिविण्जा, 9.a बावहि a बंधाणि, a ताबहि, 11.5 चनमूहं बोरवृदिसु ता वेण्डह, 12.a विद्ठिन, 13.a बाल, 15.a जाब प्यमुएकह, 16.a omits सुद्धि. See for the story of the बद्धा & others, भागवतपुराण, मस्मयुराण, महाभारत (बाविपनं) etc.

हणित जाबकोळहलमार्थे कहहु कहिबि जद्द युक्टहियड तड ता मृणि मणद मुर्जत वि ज मृजहु ता दिय मण्डि किमेण प्रसावें । विट्टु सुवित शह जह वि परिदि वत । वें करने तें जिसुमह पंत्रमह ।

धस्ता— बंबाद्वरि विड गुमनभ्यू तहो आसि मंति हमिनंबण् । ते सलिसि तरंती बिट्ठ सिंस कहिय निवहो एवं ते पुणु ॥८॥

(9)

पुण वि पुण वि हरि कहइ एयही
छलिउ भणेवि मंतेहिं साधिमी
अलिउ मिलउ भणिउ जा मंतिगा
परिह्वं वहंतेण णियमणे
पइसिकण एक्केण वाणरा
णमर कहिमि वासरे सकतउ
शिएवि पण्चमाण प्रमा।
ताम सेद्दु सुणिकण तद्ठमा
णमर सेपा तं पियहि भासिय
भणह मंति थिउ वणे ममंतउ
ताम मंति वाहिह राजभो
जड वि विद्दु कृष्णद्रद् बोल्लिको

तह वि णिउगपितयह नामहो।
विधिकण धरणियसि वाबिनो।
ता हमेबि मेल्लविउ राहणा।
तेण मूहकोबेण जिन वर्षे।
णट्टकम्मू निक्वविउ जिह णरा।
कोसमाणू णिउ वर्षे धमंतउ।
पेण्क पेण्क जा भगह नियममा।
तीए ते भदिव्दर वि णट्टपा।
साए थोञ्जू मदिहि प्यासिमं।
किहिम दुद्ठभूष्ण यस्तु ।
विधकण ताडिज्जमासनो।
सो वि मंतिवष्येण विस्त्यो।

5

10

वता- हरिणा वि इसेनिणु णिउ भणिउ चोज्जू नियमे जं विद्ठउ । तं जुत्तु वि मीउ न सदृष्ट जद बस्हेण वि सिट्ठउ ॥९॥

(10)

कमण्डलु और यस कवा प्रमाणक तेय-

> श्चार्येचे व प्रयान्यं प्रश्चिमयरि यगुप्तवेत् । क्या यामरर्थवीतं प्रया सा व्यवते प्रिमा ॥ (॥

(8) 2.a पिक्सिविसीह-महित-गर, 3.b गंगि बंगसासहे, b जा सर्वट, 4.b विव्रहि सगणह सेन्य लियु, क विद्वार, 5.b मणितं मुगहं, b मायासिरिहर, 6.b मुंबहं, a बन्धर, b प्रवाहि, 7.b पिहत्तम, a भगोतियु for मुनेविसू, 8.b भौजितं कि हणित a ती, b भूगहि, 9.b कहि मि, व युवहियह, b बुलितं, 4 वेहर पेसिहरूउ, 10.b ता, b समूर्व b बुलहें तें बज्जों ति, b वेल्लहें, रेडे.a युववंन्मं, b तहें, b हरिबंधन्, 12.a हिममत्त for स्वेति।

कारलेग एएज इक्छियं विय मणेहि मा चणहि एरिसं तो खगेण रिसक्तिधारिणा मज्मु तान विषयरच दसको पढमि जाम तीह विणयजुत्तको तुरिन ऐहि घरे मरेवि कुंब्यिं विद्यु खेडु रिमन्ड पयट्टन णासि तुज्ह्यु गुरु कुविन वागको जामि जाम किर अवर पुरुषरं गुलगूलंतु गज्जेतु मसको बह्यरं ण साहित्य पुष्णियं । सुणहु तुज्यु जुत्तीए जारिसं । भणित जह ण समयाणुसारिणा । मुणिहु पासि जा तेण जित्तको । एक्कदिवसँ गुक्ला पउत्तको । ता गको पहे हिंभमंडियं । भणह एवि ता अवह चट्टु । तो भएण हुउँ तुरिउ णिग्यको । ता णिएमि जिन्मह्हगयवरं । महं णिएवि कासु हव पत्तको ।

10

15

5

षता- पुरुविकाय दुविकाय कम्मु जिह करि महु पुट्ठि ण मेल्लइ। णासंतहो संतहो भयजुयहो देहु णिरारिङ बोल्लइ।।१०॥

(11)

तो णासेविण सिक्क जावहि धरिय तेन्थु णासेण पहट्ठेड अणुमग्गेण मञ्ज्यु तहो सो धाविछ कुँडियमञ्जि मञ्ज्यु णासंतहो करिणा महु चेसंचलु धरियस महँ मुणंतु पद् दारह कुद्धेड कुंडियभिडडाले मद्दें ताकहि। हुउँ जो ताम करिदें दिट्ठउ। कह ब कह व हुउँ तेण ण पानिउ। अद्दमप्ण उट्ठंतपडंतही। हुउँ दिवच्छु पुरुषहि उस्वरियउ। जाम ताम तद्दें संत्रु लक्षउ।

^{(9) 1.}a वि प्युण, b जण जिया for हरि कहर, b हरि कहेतु हरिसेण रायहो for तह वि... आयहो, 2.a मंतीह, 3.a भणिमज, b inter. भणिजं for भणिज and जा, a तो, 4.a वहुतेण, a णि for णिव, 5.a सिक्खविय, 6.b णिय for णिज, 7.b भणहं, 9.a जोज, 10.b भणहं, b णिज, b भमंतओ, 11.a ताब मंत बाईहि राणाओ, a व्यापंज, 12.a कहणट्ट, 13.b. विय सेवेणु णिज भणिजं, a वियाण for वियणे, 14.a लोग for लोज, b वंभेण।

^{(10) 1.} a स्तेन कविनास्लोका, 2.a बव्चेबित् cf. Amitgati's समंपरीक्षा, 12-72-3. S.a सिला, b सिल, 4.ª एण for स्एण, b विद्यपं, 5.b दिय सर्णेहि, a मुणह उत्तज्वाए, 6.b सो for तो, मिलडं, 7.b सृष्टि, a हउ for जा, 7.b जास for जाम, a तहि, 9.b एहि, 10.b खेड, b प्यट्टं, a एव, b तां, b जहुको, 11.a मण for सएस, a हद, 13.b व्यूनंत एउपंत क मद, 14.a कम्म तिह, b मेहकाई, 15.a विराज ।

भिनारिय सुक्षिरे जीसरियड ताम हु सिज्येण वि जिम्मंतड एत्थंतरे मई भौत्मि गार्थे अवस् वि जी वर्रविहि कारण् हउँ पुणु अवरणयरि पद्दतेविण् जिण् बंदेविण् मंज्ये जितिह्हेड 'जाम पत्नीयमि दूरंतरियत ।
पेण्छिमि पुण्डवाले गत स्तुत्तत ।
''मर भागवट्ड बहु वार्षे ।'
सो वि बहुद हुटु जिह सो बारण् । 10
जिजमवण्यमि पवाहिण देविण् ।
मुणितवयरण् जुण्णु ता विद्वतः ।

घरता- जिणमंदिर सुण्णल णिएवि नई चितिल हर्जे सावसह सुल । चीररहिल की तं की देइ नहु कारणेण इस लिमि हर ॥१९॥

(12)

संवंधु इय कहिउ
तो भणिउ दियवरहि
भनियम् णियमेण
सुट्ठेण सम्बंण
तं सुणेवि मुणि तबई
जह वेइ ण उ हवइ
अम्हेहि ण उ मुखिउ
मुणि भणइ णिम्भेतु
पर तुम्ह बीहेमि

सइ जेम तज गहिन ।
कि सम्बन्ध घरहि ।
तुहुँ नतु धम्मेण ।
गिम्मियल दहनेण ।
एउ अलिज संभवह ।
दिससत्थु पुणु नवह ।
तुहुँ भगहि जद सुणिज ।
जागेमि भमनंतु ।
तेण जिग साहेमि ।
तो गदिष छन् भगहि ।

10

5

धस्ता- जड़ की वि हेउ दिट्ठंत अब सहिउ वयणु मुणि जंपह ! जिम्मच्छर तो फुडू वि उ संसहें कि विवरीउ विवय्पह ।।१२॥

^{(11) 1.}b जावहि, b जिडिवालि, a मइ, b तार्वाह, 2.b तेण for तेरन्, a हस, b जा, 3.b omits तही, a हस, 4.b •मएण्ण, 5.b दिढ़ for मह, a हस, a पुण्णहि, 6.a मइ, a जाव ताव मइ 7.b सुमरें, 9.b पाबिट्डबट्ट्, 10.b दुई, 11.a हस, b •मवर्णति, 13.a जिज्जमदिर, a मइ, a हत, b साववह, 14.a omits तं, a देर महु हु।

^{(12) 1.}b सई, a जैब, 2.b अपिजं वियवर्राहं किर संच्यु जह वरहि, 3.a अणिग्रम्म, a तुहु चस्तुमं सम्मेण, 4.b विकिमयने, 6.a णा स, a पुष्णु, 7.a सम्हेहि, b मुणिहं, a तुह, b मर्चाह, a ज for जह, 6.b जामामि, 9.b साहेमि, 18.b अवहि, b मुचहि, b अवहि।

पौराणिक संवाओं वर प्रश्नविन्ह

एत्यंतरि सो विद्यस्थिरोमणि
रायसुपमह्मिद्धि बचुराष्ट्रं
वाणु कय वण्णविष्य कणिणाहे
णासइ चर सो कह आणिण्जइ
आणिम इंड ता वैश्वित राष्ट्रं
पायासए पहसेनि गरेणें
विषयपसण्णवयणु फणिराणत
इय वेयरिच पुराणें तुम्हह
विय मासिहि र दिए गत सञ्चत
तो खगु भणद दियंवरवेसें
सरविवरे नि माइ तं मण्णह
नं णिसुणेविणु विष्णहिं घुट्ठत

णवधणज्ञीण बोल्लइ मायामुणि ।
भणिउ सहाए खुंहिंदिहराएँ ।
वाइएण सत्तरिसिसणाहें ।
को तहि बञ्चुणेग पम्मिक्वइ ।
महियतु दारेविणु माराएँ ।
आणिउ तेण वि सरसु सिरेणें ।
'रिसिज्उ दहवलकोडि समागउ ।
अस्य ण वा पुढु साहह अन्हह ।
को णउ मण्णद सो वि अस्वव्य ।
सामरमुणिवलरिद्दि फणीसें ।
कि मइँ भणिउ वयणु अवगण्णह ।
जइ तुढु कुंहिहि सकरि पइट्ठउ ।

5

10

भरता- तो चिर जासंतउ कह भमिउ कह सो भेडु ज भग्गउ। जिग्गए गए चिंगारिय सुसिरे पुच्छवालु कह लग्गउ॥१६॥

(14)

जिणकमकमन् भसन् पुणु भासइ करअंगुद्ठसमेण संजलयक तासु उनरि किह माइ जलहिजन् अन्द नि पसयिमया दणुरिउणा कहि महु तिहुबणु इय स्तितंत्व ताम संसर्वितनिक तें विद्ठन एरिसु कि ण पुराणहि सीसह ।
रिसिनगरियमा धीरिठठ सायव ।
कह ग कमंत्रते महें सहुँ मयगनु ।
यवित्र तिसीत उपरे किह हरिणा ।
जीयह जाम विरित्ति समत्त्व ।
धुमावित्र समस्तितिस विविद्युठेउ ।

^{(13) 2.}b मणिर्ड समात्र, 3.a वाणुस विश्वस्थणहो कणिलाहृद्द आपएणा, a ०सणाह, 4.a तहि, 5.a हुँछ, b पेसिन्तं, a णराएं 6,b आणिर्ड, 7.b ०पसण्, a रिसिन्त्य, 8.a वेयल्यं, b तुम्हृहं, b सहृद्ध अम्हृहं, 9.b भावाहं, a परितिन्त्य, 8 मिन्तं, 10.b भणहं, b सामतुमुणियल् रिन्ह्, 11.b सम्बद्धं, a मह, b मिन्दं, 8 सवगक्ताहो, b त्रवगणाहं, 12.a विष्पद्धि, b तुईं, 13.b किंद्र मंगिरं, b सिन्दू, 14.b विद्यु, See for the stars, महासामत्र, मत्त्वसुनाम हाद.

सरिस व सरिसु कनंबलु डालए रिसिणा मन्मुत्वामु करेबिणु तुम्हडूँ कज्ने केण समानय अह केण विकासिय ण मुणिज्यह ब्रह्मंतियउ दिट्द् त्रविसालए । पुष्कित वंश्व सिरेण व्यवेषिषु । तैन्द्र श्रवित मह्न हम करण नि गय । एरवंतर मृतिषा वर्षाणिण्यह ।

यत्ता- वं मिनिमयज तुम्हर्दे अस्परेय तं किए कहि इय जीयहो । पहसिव कर्मश्ले मह तगए तिह्नयणु देस पत्तीयहो ॥१४॥

(15)

जा जयस्थिवयणेण पइसड वंशु कर्मडले

ता णिएइ तहि सुतु पुरिसु बंडरम्खे विउत्तवसे ।

कवण एह चितंतु एम किर णियडए गच्छइ

तो जिएबि बिण्हुति बंधु पुणु पच्छा पुण्छ है।

कि हरि तं युत्ती सि एस्थ ता हरिणा अंपिउ

तिहुयम् अं वह रयउ देव तुम्हा वि निरु जैपित ।

त मा पलए विभासु जाउ इय उयरि करेबिणु

सुलाउ गुरुभारेण संतु एयंतु भणेविणु ।

नो तं वयगु सुणैवि वंशु मणि णिरु गंजीरिलउ

साहु कमउ इच्छमि विष्टु बट्ठू इम बोल्लिउ। 5

तो हरि भगइ निएहि सिट्ठ मुंडेण वि सेविणु

ता पइसेवि चरावरं पि लो मं पिक्छेविण् ।

किर णिग्गइ सो ताइ ताम अपविस्तउ भाषह

णाहिकमससुसिरेण हरिहेणीसरियं पयाबद ।

णवर कमलकण्डियए बसणकेसहि बालुद्झड,

बंदलेहिया गाम छेटु वि वृहयण परिदर्ध ।

षत्ता- तो कमन्तु जि आसण् होउ इय वितेषि विविद्ठ । तहो विवसहो सम्बद्धि चडवयण् कमनासण् जव्य चुट्ठ ॥१५॥ 10

^{(14) 1} b किया, a पुराणहि, b सीसइं, 2.b ब्यारियणा, 3.b उपरि, a कह for किह, a कांग्रस पर, b सिष्ठं, 4.b उन्नरि, 5.a कहि, a कोरस, a. in margin सद्धा, 6.a in margin सत्तिय, a धुमाउसे, b वहट्ठड, 7.a विश्लिषस्त्र, इ.b सिरेखा, a करेयु, 9.a तुस्हर, b कर्जे, b स्थायमा, b अणिडं, श्री.a वस for म, श्री.a जे for म, b विस्मित्रं, a तुम्हहि सायरेसा, 11.a इह for स्थ, श्री.a स्थायम, b तमहं।

(16)

भणइ पुण् वि-मुणि विवह असम्बद परिहरहु

एरिसु अत्यि पुराणि ज वा कुडू वजनरह

दियवर भणींह पुराणि परिदा रूढिगए

वेषवयण कि को कि असक्बंड भणइ जए।

तो खगमुणि पशणेइ सरिसवसम कुंडियहे

तिहुयणु माइ कि ण करि मई सह कुंडियहे।

लोवभरेण ण भज्जइ एसिहि तंबु जिह

मह सकरिहे भरुवि सहद भिडही डालु तिह।

किह सन्दंगु विणिम्गड जलरहकण्णियहे

लगाइ वंमु काइ ण करी मिगारियहे। 5

इय पुराण जह अलियउ तो मज्झू वि वयण्

तं षिसुणेवि णिरुत्तर जायउ विष्पगण् ।

कवडरिसी तो सुहिबयणु शिएविणु हसिउ

हरि तिहुमणु गिलिऊण कमंडले जइ वसिउ।

तो कहि एसि अयस्थि कमंडलू थिउ चडेवि

काह वडविडवि परिट्ठिउ जीह ठिट्ट हरि चडिव।

पुष्वावरहि विषद्ध जाणिहि उवहसिउ

एहउ जो पहिनज्जह फुडू सो साहसिछ ।

इय परवडयपुराणे ण सच्चउ मई मुणिउ

रासहछंदु वियाणह एरिसु मई भणिउ। 10

भत्ता- तर्हि को वि हु सुमरियमेलु णिक मिल्लावहि भवपासही । सह मृष्यह विष्हुणाहिकमसे कह एड होइ ण हासहो ॥ १६॥

(17)

कमलासगासु जद जाजु बस्यि जद करह गारि तिहुयनविसिद्दु कि सिद्ठियस पुण्छित अयत्वि । सङ् रित्यि काङ् सेवङ् जिकिट्ठु ।

⁽¹⁵⁾ La जाम, b पर्दसद्द, a नवश्यका, 2.a ता मुशेबि, 3.a एत्यु, a रइउ,
4.a एयंत्यु, 5.b inter. मणे for मणि and बिह, a इयं, 6.b मणहं,
a मिम for जि, 7.b निग्गई सोस्ताई, a अपनिस्तद, a णहिकमस्त्रु,
b जीसरिजं, 8.a वंदलेहिक, 9.a चिस्तेवि. See for the story
महामारा (यनपर्व) डांट.

जह जायह सिद्धिह शमत क्षित्र णियजन्म कहिय जारबही जेण तथा सोस्तं-

कि ण मुणिउ वियसिमहरण विष्हु । कि पुष्ठिउ अहि विमक्त तेष ।

भो भो मुर्जनसप्परस्थमोसिकहे बंधूकपुष्पवससिक्षमोहिताचे : 5 पृष्ठामि ते प्रथमधोधनकोमलोगे काचित्ववा ग्रद्शक्षमुखीय पृष्टा ।।१॥ गता पता धंयकपुष्पवर्णी पीनस्तमी कुंकुमर्याचर्तानी । जाकासमंगा हिमसीतलांची नक्षत्रमध्ये सिस्थंदरेखा ।।२॥

जो मोहर भुवणसंख स्रोम महिरावणेहि पासेहि बदु इम गुरुभच्छरिय परंपराए कि वहुणा णिसणहो जयपयासु मोहो चिता वर वाहि मरणु विण्याज जम्मणु चिहा विसाउ सो किम समरि सह सन्ध्रणेण !
मोहें कि महि रावणु ण छुट्छ । 10
हो हो पुरइ विभयकराए ।
मुक्खा तण्हा भाग राज दोसु ।
सेज खेल मल अरइ करणु ।
इम दोससहित चल होइ देल ।

15

भत्ता- एए अट्ठारह दोस जए सब्बाण वि दुहकारण। सुह जीवहो कज कय जाव णवि एयहो दूरी सारण॥१७॥

(18)

हवि हरि छुहणिहादोसाउर जमु विहुपणचिताए णिरदमो रायरयहि पीडिय चउमुहहरु। रिव अफंसु कोदेण पसिद्धको ।

- (16) 1. b भणहं, a पुराणें, 2.a पुराणें, a क्विगल, b भणहं, a जह, 3.a कुंडियहो, a.b किण्ण, a मइ, a कुंडियहो, b लंडियहे, 5.a कह, a वम्ह, a भिगारियहे, 6,a बिष्पुगण्, b विष्पगण्, 7.a बिसिल, 8.b एसि in margin चडेमि, a मइ in both places, b वियाणहं, a भणिलं b मणि, 11.b तह जो बि हि, b मिस्सवइ, 12.a सइ, a बूष्पइ विम्हणाहिव, a बाहहो, b हासजो।
- (17) 1.b repeats जहं जाजू, a सिट्ठवरत, 2.b जबं करहं, b विसिद्ठि, b सेवहं जिकिट्ठा, 3.b जहं, b ट्ठिह, 4.b जायरहो, 5.b भुजगतस्यव्यव, a जिक्हा, b वधूर्क, a व्यक्तिहलोहि ताका, 6.a भो for ते, b प्वणभीजणकोमलागी, a व्यक्ति, b वहुव्यक्ती, a व्यक्तितागी, 8.b omits the verse गता गता etc to व्यहरेखा, 9.b मोहहं, b सह for सह, 10.b छ ब, 11.a पच्छरिय, b परंपराहं, a विश्वय b व्यर्श, b बेर्ड मंज, a सर्व बेह, b बेर्ड मंज, a बर्द, 14.b विश्वय, b व्यक्ति, a सेन बेह, b बेर्ड मंज, a बरही, 14.b विश्वय, b व्यक्ति, a सेन, b देर्ज, 15.b बद्दारहं, 16.b बीवह करं, b बाम, a जिन, b एयहबरी।

जो जी देख वि पहरणे धारह इय तिसीउ मुक्कम्मणियग्रस जे पुण छुहतिसाए परिवरिजय वय घणकम्मवद्यल सास्त्रवसुह वह केतिए शृजगणु असदेवर धम्में धम्मसार जह जहगा

सो सो भयजुन पर संहारइ। भुहतिसाइ बोसॉई उट्ठब्ड । ते जिण सुरणरिवसहरपुज्जिय । तिवं परिव मुक्त मुखनगरिह । देनें देस गरें जह मस्मिद्धेगंत श वायम् बायमेण बहुमद्रमा ।

भत्ता- जिह चर्डीह सुवन्णु परिनिखमइ ताव छैयकसतावर्णीह । देवा इय दयसुय तवचरिय गुर्गाह मुणेवउ सज्बर्णीह ।११८॥ Ю

(19)

जासु अहिसासासण् सासण् भाविज्यह मुजिबंदहि बंदहि जासु बसोउ विसालउ सालउ पहबद्द सयलु नमासा भासा सिहासण् जयसुह्यव सुह्यव दुंबुहिसर जगु वहिरइ वहिरइ सो देवाण वि देवो देवो

सासयसुह संपावणु पावणु । युव्यक् देवा सारहि सारहि । सुर मुयंति संफुललइ फुल्लइ । परिखिवंति णिच्यामर भामर । भामंडल जियभावइ भावइ। छतत्त्व संसमासिव मासिव । महिबंदेउ अरिहंतं हंतं।

भता- तें भावित दहनिबहु धम्मुबर जह सुपरिक्षेति किज्जह । गउनइ संसारही तथउ दुहु तो अइरेण वि छिज्जइ ॥१९॥

(20)

तह जिनेण जो भासित वायम् जे अरि सुहि तणकपयसमाणा समयुगेण जे जिणहि वसुंघर

सो सन्गापबन्नु सुह बावम् । ते मुणिबिर गुरु भणिय समाना । यंचमहर्म्यमार ध्रंधर ।

^{(18) 1.6} व्होसायर राइ रुइहि पडिय चर्नेमुइसर, 2.6 रितह्यमचिताई, b बक्यु, 3.5 धारबी, b वमुसंहारबी, 4.a तिसीय, b सूहतिसाहं, 5.b जो for जे, 6.b •फडस, b मुजयबणिह, 7.b देवे, b नरे नर, 9.b सुबम् a डेण्ड+, 10.a वुमहि, b मुगेबा for युवेबउ ।

^{(19) 1.}a • सुद्द, 2.a. भागीह जह मुनियंदहि, b वंदिह मुन्यह, b सार्राह सार्राह, 3.b tigent gent, 5.a w for was a in margin explains महिमान राजसम्मानं, 7.b हरिस्टरिंह म ग्रारियदं चरियहं, 8.b अहिमंदे, 9.0 सुपरियक्ष वि. १६३३ तक्षरं ।

पंचमसमिदि सञ्चाव प्यासण विसमृत्तिरयणस्तयमासिय एरिसु धम्मृ देउ बावमृ गृद कि बहुएण सार अविद्यश्यद अद्ठबन्मवणगह्यद्वयसम् । भूयहि जैहि बहिसा मासिय। को बन्गद्द सहो कुणसंग्रम् गुरु। जिलगुणसुमरणे कलिमल् क्विज्जद्द।

5

10

धत्ता- हरिसेण ते आयार जसु रूउ मुणिहि झाइरजह । तहो णयणरामसंदियहो जिणनाहहो पणविस्तर ॥२०॥

इय धम्मपरिस्त्वाए चजवग्याहिद्विमाए चित्ताए ॥ बुहहरिसेणकहाए पंचनसंधि परिच्छेबो समत्तो ॥छ॥५॥ ग्रलोक ॥१९४॥

* * *

^{(20) 1.}b जं for जो, 3.a बसुधर, b ब्यह्मियंब, बे.a व्यक्षंव for व्यक्षंत्र, a ब्रुवहं जेहि, a ब्रुवहं जेहि, 6.b सम्प्रदं, 7.a ब्सयरणे, 8.b तेम for ते, 10.a बरुगाहि, il.b संघी, a परि for परिच्छोको, a संमत्तो, b omiss क्लोक ॥१९४॥

६. छट्ठ संधि

(1)

लोकस्थिति : नरक वर्णन

गुणनेसु भणेनि देवधम्मकायमजदहु । णिग्गउ मणनेउ विम्हहु नाइवि दियबदहु ॥ छ ॥

पुणु उनवणे थाएविणु मित्तहो लोउ अणाहणिह्य जिणु मासइ थिउ तिवायदेढिउ अविणासहो णिच्चलु चउदहरज्जु पमाणउ झल्लरिरूउ मिक्स जाणिज्जह सयलु वि तलउन्मयसारिष्ठउ ताह अह लोए अहो हो संठिउ रयणप्पह अवर वि सक्सरपह धूमप्पह तमपह तमतमपह ताह विलाण चउरासीलक्खइ सोयदिविद पभणइ गुणवंतहो ।
करइ ण धरइ ण कोइ वि णासइ ।
मिज्स अणंताणंतायासहो । 5
तिल वेत्तासण अणुहरमाणउ ।
उविर मुयं गुणाइं भाविज्जइ ।
छुडु जीवाइदव्य परिहृच्छउ ।
भूमिउ सत्त मुदुक्बाहिद्विउ ।
बालुयपह तह पुणु पंकप्पह ।
गामसमाणताहं सयलह पह ।
संभवंति संपाइय दुक्खाइ ।

घरता- रयणप्यहमहिहि तीसलक्ष णाणिहि मुणिय । सक्करपहधरहि लक्ष पंचवीस जि मणिय ।।१।।

(2)

वालुप्पहाहि ते पंचदहा भारहमणियर दुनबावलन्ख पंचाणुलन्खु तह तमपहाहि पंकपहाहि संभवहि वहा । धूमप्पहाहि पुणु तिण्लिस्ख । पंचेव विलद्द तमतमपहाहि ।

(1) 1.a जहयहुं, 2.b विभाज, 3.b यभाणह गुणवंतहु, 6 a पमाणो, a अणुहरमाणो, 7.b ओल्लरित्तज, a गुणाह, 8.b वि तणुतुंवय सारिष्ठज, a ०सारिष्ठा, a परिहच्छो, 9.a तहे, b भूमिजं, 10.a वालुप्पह, b एंकप्पहं, 11.b समल वि पहं, 12.a तहि, b ०लवखाई, b दुक्खाई, 13.a णाणिहि, 14.b समसारपह, a भणिया।

ति उप्पन्नि धर मञ्जरमा हिसयर असम्बद्धणमण्या परिगहगहणिम्म अतितियरा णारयक्षयदुक्खुपायणाई लोहमयतत्तपल कवलणाई असिपसवर्षतर पाडणाई पाणहरदुक्खविरह्मगणाई सिरधारियलोहधराधराई इय एनमाई दुक्खई सहत

पल भहु पंचु वर भन्धिरया ।

परव्यहरण परतियरमणा । 5

परवंचणपरअवसारच्या ।

कढकढकढंतजलपायणाई ।

कुंभीपायाणल पडलणाई ।

महचडनडियजीह उप्पाडणाई ।

तत्तायसमहिलालिमचाई ।

गिरिज्यगठयस्वस्तुधराई ।

गय जम्मवह खहयह कहंत ।

घत्ता- हम्मेत हणंत करुणु रूवंत महिहि भूलहि । सयखंडगयाइ वि पुणरिव तहं देहिह मिलहि ॥२॥

(3)

भवनवासी देव वर्णन

इतो भावनव्यंतरसुरा समिहिता इति सामान्वेन किपित्मुरस्वरूपमुख्यते ॥ तस्रमा ॥

उववाइय जम्यद्यायरिह्या चउरंमसरीर चारुवयणा वलवंतणजें सयवेयच्या जरवाहिंविविजिभक्तेतिज्या अणिमाइय बट्टरिखिणिलया आयारिवराइय अतिचिहुरा कुंडलज्यमंडियणंडयलर केऊरविहसियमुयसिहरा रिंकिणिकणंतकडिसुसदरा सुरहवहि विजन्म गुणसहिमा ।
सोहग्गरून णिजियमयणा ।
अवि हिडिय आज पसंवभुगा ।
पुण्णाणुरूवू परिवारणुया ।
णाणादिन्नं सुयबहुदिनया ।
सहजायकणयमणिमज्डकरा ।
विजुलियहाराविलवच्छयला ।
स्वणस्वणखणंत मणिकडयकरा ।
प्यरणसर्वंत मंजीरसरा ।

5

10

(2) 2. b धमप्पहाहि, 3.b पंचीणु, a तह तमाहाहे, 4.a उपज्जिहि, a पंचुं, b तुन्धिर्या, 6.b परिगृहणिम्म, b परवंचणयरअवयारयरा, 7.a व्यायणाइ, a व्यायणाइ, 8.a व्यायणाइ, a प्रजन्माइ, 9.a पाडणाइ, b omits some चड. a उप्पाउणाइ, 10.b अमह्यरदुन्ख , a व्यापाइ, b घणाइ, a जियणाइ, 11.a व्यराइ, b व्यवदत्तवसुधराइ, a व्यस्धराइ, 12.a एवमाइ दुन्खइ, 13.b हम्मत, b स्वतहं महि चुलइं, 14.a म्या वि, b ताह देह मिसहि।

अण्छरकरचलियसिययमरा

इय एवमाइ वर गुणियरा ।

षत्ता- वितिय बाहार विविष्ठभीयसंतित्तमणा । विश्वयणीहार हियहच्छिय अखलियगमणा ॥३॥

(4)

रयणप्रह्णारहय मुएविण् भवणणिवासियदेव परिट्ठिया असुरोरयसुवण्णदीवोवहि सहजहु कणयरयणमयसिहरहु ताणोवरि णायकुमरणिलयह हेमकुमारहु भोयाहिद्ठिउ तह दीवोवहि यणियकुमारहु एक्केक्काण विविष्ठिय हुक्खइ पुजु छण्णवहत्तक्ख णिरु रम्भइँ मज्जिममहि अप्पट्ठिय भेगहि जोयणसहसु उवरि लंधेविणु ।

ते दहविह संखाए अहिट्टिया ।
यणियतिह दिसग्गिवायकुमरसुहि ।
चलसट्ठी लक्खह असुरहरहु ।
चलरासी लक्खाइ अविलयहु ।
सवणहु लक्ख वहत्तरि संठित ।
तिह दिसग्गिकुमरहु सुकुमारहु ।
वरगेहाइ छहत्तरि लक्खह ।
होहि अणिलकुमार सुरहहम्महं ।
जोयणतक्खु अलंकित एयहि ।

10

5

वत्ता- इय कोडिज सत्त वाहरतरि शक्खिह सहिउ । भावणभवणाहु एक्कीह पिडेविणु कहिउ ॥४॥

(5)

व्यंतर-ज्योतिष देव वर्णन

उबरि अट्ठविह संठिय बितर कि पुरुसोद्दरय गद्यम्य तत्य यदम पद्मणिज्जहि किणर । जन्म रक्क तह भूयपिसायय ।

- (3) 3.b जम्मधानी रहिया, 4.b तिन्हिडिय, 6.b पुण्णाणुख्य, 8.b सहजायमर्ज-डमणिकुंडधरा, 10.a मणिकणयकरा, 13.a चित्तियह, a विविह्मेयेसंसि-स्त्रमणा, 14.a •गमण्, b व्यमण।
- (4) 1.a ०सहस्रवंदरि, 2.b परिद्ठिय, b अहिट्ठिय, 3.a असुरीरंग संवण्ण ०, a थिणियं०, a ०कुमारसुर्हि, 4.b लखद असुरहरहो, 5 b फणिकुमरहो णिसया, b लक्खदं, 6.a सुवण for हेम० a भोयहिटि्ठ्य, a भुवणह, a संठिय, 7.a तहि दीवोयहि, a कुमारहो, a दिस्पिंग सकुमह कुमारह, 8.b तुक्खदं, b लक्खदं, 9.a ०रम्मह, a ०हम्मह, 10.a भेयहि, a एयहि, 11.b सस्ता for सस्त, b लक्खदं, 12.b ०भवणाहं।

एयह पुरणयरेहि विमाणेहि
तिरियलोच सक्पहि विहसिउ
मिज्ञमलोय चुणेहि सहिद्ठिय
मणुयलेतु सङ्गाहम दीवाँह
पूरित मणुसुत्तर परहुत्तत
जोयणसयह सह्दह्ळणहेँ
तिह लोइससुर पंचपयारय
विष्कुरंत णाणामणिरयणहेँ

रयणभएहि असंखपमाणहि ।
इय सोणियही जिणिदि मासित ।
वीनसमृहबसंस भरिद्ठम । 5
पुणु तिरिक्स पंचेदिय जीवहि ।
जामसयंभूरमणु जिम्मनुत्तत्त ।
उद्यरि कमेविणु जोइसभवणई ।
रविससिगहणक्षत्ततारय ।
एयह संख विहीण विमाणहै । 10

बस्ता- उबरोवरी ताण वहमाणियसुर कहिम सुणु । ते कप्युववण्ण कप्पतीद वि होति पुणु ॥५॥

(6)

वैमानिक देव वर्णन

मीहम्मी ईसाणो अवरो
माहिदो बंगा बंभीत्तर
सुनका महसुनको य समारो
आरणु अचनु उ एए कप्पा
उप्परि णव अणुदिस पभणिज्जिहि
निष्छ सोमुनच्छी मालिवरो
वरो अणुकलिहो य अणुवमो
उप्परि पंचाणुक्तर मासिय
विजय वहणयंती वि जयंतो
तह सव्वत्यसिद्धि संयलुक्तम्
पुणु सव्वत्यसिद्धि संयलुक्तम्
पुर्य विवरीयछ्कत आयारें

तह्यो भण्णह सणयकुमारो ।
लंतज तह काविट्ठु अणंतक ।
सहयारो आणयपाणमरो ।
उद्दं णवनह्वेय वि अप्पा ।
पुठ्वितसाह कमेण गणिउजहि ।
सोमद्वेरो बंको अवरो ।
मज्झें थिछ आहण्को णवमो ।
हरिजमवरुणकुवेरिवसासिय ।
दहि सजस्य अवराह उद्देतो ।
इहु मज्झिम परिट्ठिय पंचमु ।
वारहजोयण जवरि कमेविणु ।
मोक्खासिसा जि सोयवित्यारें।

10

घरता- सा तसि भासेहि मण्डित बट्ठजोयण कहिय । पासहि हीयंति मश्चिय पंच व तनुय विय ॥६॥

^{(5) 1.}b पणिज्जिष्ठि, 2.a इन्डरय is explained as गरुड in margin 3.b एयहं, a पुरणयरेष्टि विमाणिह रयणमएहि असंबद माणिह. 4.a अकरएहि, क सेणियहो, 5.a गुणेहि, 6.a दोबहि, 7.a जाव समंभुरवण्, 8.a उत्यह, a भुवणद्द, 9.a सहि, 10.a ०रवणद तहि परि संब ॰, a विमाणद्द, 12.a करपपवण्ण, a होहि।

(7)

विद्युमपीमरायरिव कंतहि पोमरायगरडोवसणीणीलहि इय णाणारयणींह णिरु रहयहो वियसियमहमहंतमंदारहो घणल्वंततारतरहारही कामिणिकरवीणाशंकारहो वरसंनीयमहाझुणिसारहो वरणाडयणिरुद्धसंचारहो सुरणिकायकामिणिय उज्जाणहो थिय वत्तीसलक्ब सुहठाणहो

वरकक्केयवज्जससिकंतहि। मरगयइंदणीलमहणीलहि। सुहसासयहो अणेवायारहो। सुरतक्तोरणपल्लवदारहो । पंचवण्णधयमानाहारहो। वेणुरावरंजिय सुरणियरहो । पहहम्यंगमेरिगंभीरही। वंदिण कय जय जय उच्चारहो। णहि भमंत मणिमंडियजाणहो। सोहम्मि बरसग्गमिम विमाणहो। 10

5

घत्ता- तक्ख्रट्ठावीस वारह अट्ठ कमेण तहि। चउलक्स हवंति मिलिएहि मिउवरि महि विहि ॥७॥

(8)

बिहि कप्पिहि सुरेहि वरसइ सुक्को महसुक्को वि विमाणहो

सम्दियाइ पंचाससहासइ। फुड् चालीस सहासइ पमाणहो।

- (6) 1.b भण्णहे, 3.b सुरके, 4.b अरण, 5.b यगुदिस, a गणिज्जिह, 6.a मालिवर, 7.b बेरोयणुफलिहो, a अणुफलिह यणुधमो, b ठिय, 8.a यम for जम, 9.4 विजय, b जिंह, 10.a Corrects oिसट्ठ for oिसदि, b तह for इहु, b उत्तम् for पंचम्, 13.a भासेहि, a कहिया, 14.a पंबस, b पक्ख तण्, a थिय, a थिया ।
- (7) 1.b रूडकंतिह, a क्वंतिह, a सिसकंतिह, 2-a व्णीसिह, a व्महणीलिह, 3.a •रमगहि, b णिख्द्रसंचारहो, b takes the line वंदिण कम जय जय उच्चारहो after णिरुद्ध संचारहो and adds णाणारयणिह णिरु बदयरहो before सुहसासयहो, 4.b omits वियसियमहमहंत etc. to तारतरहारहो after अणेयायारहो, 7.a व्सारहं, a व्यांभीरहं, 8.b omits वरणाडयणिक्दसंचारहो, b omits the line वंदिण etc. . . उच्चारहो which is taken above, 9.a उज्जागहुं, a ॰मंडियजाणहुं, 10.a सुहयागहुं, b omits वर, a विमाणहि, Il.b लक्सइ अट्ठावास, a बहि for तहि, 12.b बडलणाइ हवंति मिलिएहि मित्रोवरिम विहि।

तह सयारि सहसरि पिस्डहो अाणयाई उवरिम चडकप्पहि नहि पुणु सउ पयारिह अहियउ उवरिम तिहि गइ नेयहि साहिय अणुदिस णव पंचेव अणुत्तर कप्पुवण्ण कप्यवासिय सुर कय वालतव अकामियणिण्जर दिवसंमत्तसील कय तव णर छहं जि सहास विमाणहं दिखहो ।
सस्त जि सयह विविह्माहृष्पहि ।
तिह मिलिवि सउ सर्तहि सहियउ । 5
हवहि णवह विमाणएनकाहिय ।
एय जिण भणहि तिसोय महत्तर ।
कप्पातीदहमिय सुभासुर ।
तह सरायसंजम वयजज्जर ।
सुहकम्मे उप्पञ्जहि तहि सुर ।

घत्ता- चउरासीलक्ख सत्तणवहसहस हिय । तेवीस विमाण एककहि मेलिविणु कहिय ॥८॥

(9)

चारुमुवण्णभितिरुइरम्मईं
णाणामणिकलसावित सारईं
चंदकंत भा भासिय गयणहं
पंचवण्ण मणिगणमयदारईं
मरगयफिनहणीलवग्सालईं
विविहालंविकुसुमसुमालईं
दिणयरकोडिपिडमिजिणविबईं
णट्टसालगोजरिसहरालई
दुवुहिसरभरंतदिब्बलयईं
भवियविद पारंभिय ण्हबणहं

वरजतुंगसिहए वहु भूमहें विद्दुममयविमाणमलसारहें। सूरकंतपिहहयरिकरणहें। टणगणंत बंटा टंकारहें। झणझणंत घुर्गाकिकिणिजालहें। सुरणिकाय कथबोत्त व मालहें। भवणिवडंत भवियणालंबहें। जलहह्छण्णतलायविसालह। जववणपरिभमंतसुरविलयहं। अत्थि अकित्तिमाहें जिणभवणहें।

10

धस्ता- सुरलीह इमाइ गिह्नविमाणभवणई मुणहि । महियलि अडवण्ण चलसवाई संखए गणहि ॥९॥

^{(8) 1.}a तरवाअइ, b वरसई, b समुदाइय पंचासहासई, 7.a सुक्के महसुक्के विमाणहु, b चालीसा सहास, a माणहु, 3.a पिदाउ, a विमाणहु, रिदाहु, 4.a झाणबाइ, b चडकप्पिंह, b सई for सपह, 5.a तिहि, b सउं पमारई अहियउं, a तिह, a विहियउं for सिहयउं, 6.b गई, a वेयिह is explained as जिनै: कथिता in margin, 7.b भण तिलोया, 8.b कप्पुश्वक्थ, b सुभासुभर, 10.b ०समत्त, b सुहफक्षेण उप्पज्जिह राहि, 11.b सत्ताणबह सहस अहिय, 12.b विमाणण।

(10)

कृषिय-अकृषिय जिनवंत्यालय

महियले जिणवरसवण असंखइ
पंचित् मेरुहि चउउववचीह
एक्केक्समेरुपासहि दुसंख
गयदंतिगरि वि चउ चउ विसासु
गादइसंडे तह पोक्खरडे
वेयहढ वि चउजुय तीस तीस
सालम्मिल बाइ करेवि तेसु
मणुसोत्तरे चउविसु वरसिरीहि
अद्ठद्ठिह रइयरमहिहरेहि
कुंडलवरदीवेठ जगवरदीवे

णाणावण्णविषितः महंतह ।
वा वा वा हवंति पमणिउ विषाहि ।
सालम्मलिजंब्बाह्यक्य ।
कुलसेलहि छहि मंद्रियउ पासु ।
सरिसण्णिह् गिरि दो दो पसि । ।
एक्केक्कु जिणालउ मणहरेसु ।
स्रमणहर जिणहरु उत्तरि बक्कु ।
एक्केक्कु भवणु वंदिउ सुरेहि । ।
विण्णि जि गिरिषिररविससिपईवे ।

पत्ता- ते कुंडलर जग णामहि वे वि मणिय पयउ। एक्केक्कहिं चड चड उपिर जिणालयथिय वियउ ॥१०॥

(11)

देव नारकियों का आयु- आहारादि वर्णन

इय भणिउ लीउ जिह जिणवरेण मुणि जारयतिरियणारामराण तिह तुह भासिच मई बायरेण । उच्छेहाउस बाहारणाण ।

- (9) 1.a उत्तुंग, a भूमइ, 2.a •णमल is explained as स्कटिक in margin, a सारइ, 3.b चंदर्कति, a गयणइ, a •िकरणइ, 4.a •हारइ, a टंकारइ, 5.a •तालह, a रणझगंत घय, a •जालइ, 6.a सुकुसुममालइ, b सुमालर, a मालइ, 7.a •विवद, b भववटंत•, b ण आलंबइं, 8.b छण•, b विसासइं, 9.b •तरंत, a सायइ, a सुरविलयइ, 10.a ण्हवणइ, a यिकरितमाइ जिल्ममण्यह, 11.a माणइ for भवणई, b मुणाँह, 12 a चलस्याइ, b भणाँह।
- (10) 1 b महंतई, a adds ज तं जहा siter महंतह, 2.a मेरहि चउ चउ वण्णेहि, b उपपणिहं जंड, b पप्रियाडं, a जिणेहि, 3.b पासहि, a सासमित, a रुक्यु, 4.a प्रयदंत, b कुससेमाहि, a बहि for छहि, 5.a प्रियः, 7.a एक्केक्फ, 9.b नंदीसद, b बरसरीहि, b चउदह, 10.a एक्केक्फ भूवणु वंदिय, 11.b कुंडसदीनेच, a अप्रीय, 12.b omits ते, a णामहि, 13.a एक्केक्फ ।

सवराडे भिने स्युवाईयाई पढममहिए सस्त सरासणाई पारयहु सरीव छेट्टू दिट्टू सक्करप्यहाइ पुडवीसु गणिज आउसु तिसत्तर्यहंबस्तवहा सायरज्वमाणंह गासियन असुरह सरीह पंणवीसंवण् तह गायसवण्णदीवकुसरा मयसीम फुरू जे मणि क्षियाई छंगुल तिहत्य बहियाई ताई। भारतु साम्यर्जनमाणु सिंद्रु। तन्द्रणद्रणु उच्छेहुं मुणिछ। यामीस तिमाहिय तीस तहा। अपनत्तगरहिस दुहास्मित। भारतु समृहस्तमाणु थणु। वह मान तुन प्रभाषम् समरा।

Ю

5

10

पत्ता- अउसु वि विपन्त सब्दिद्वपन्त दुपन्त तहु । कुमराण वराहु भुजिम विविह भोग समह, ॥१६॥'

(12)

पहचाविष्ठसेस वि कुमार
उसासु उरयसुवण्णवीवएहि
सङ्बहि ते वारह वासरेहि
उमहि भणिय विज्जुकुमारयाहेँ
वियलिय वारह दिवसेहि इट्ठ्
तह चेव दिसगिणि मरुकुमार
आहार लेहि चितिज मणैहि
वितरहुमि दह धणु तणु गुरुत्
उस्सासु वि सत्त महुत्तएण
जोइसद सस्त कोषंडकांज

परलोवम् जियहि दिवर्ठसार ।

कि च सर्बंद दुवहिंद मुहुत्तएहि ।

स्वितियाहरेहि दिहिकरेहि ।

वारहींह मुहुत्तिह सासुताहै ।

एए चितहि बाहाद मिट्ठू ।

सत्तर्ठ मुहुत्तिह सासयार ।

परियक्तियहि सत्तर्ट्हि दिवेहि ।

वाउसु परलोवमु एककु बुत्तु ।

वाहारचितविष सत्तर्ण ।

पल्लोवच बहिउ हुवेद बाज ।

घरता-- उस्सासाहार जिह वितरहें पयासिय । मद वेय मुणेडि तिह जोइसियहें भासिय ॥१९॥

- (11) 1.b जन्मिनं, a मह, 3.a नवराह, a समूणेह्याहं, 4 a पतुमं, b ब्मिहिहे, a महियाह दोह, 6.a मृणिनं, b गणिनं, b तप्हुण् दूणु, b भणिनं, 7.b आन्तुं, 8.b नवमाणहं, 9.b असुरहं, a ग्यु, 11.a सह दुमस्त्रदुप्यस्नु, 12.b सराह !
- (६2) 1.b जियहि, 2.b सासु जरमानुबलबीवएहि किउ सट्द् बुद्दहि, व व्यावएहि, व शृह्यसम्हि, 3.a बासरेहि, b चित्रवियाहारहि, 4.b उवहि, a विक्व-कुमास्याह बारहि सुद्धालहि, 3.b जितहि, छ.a मुस्स्वहि, 7.a सत्तद्वहि वियहि, इ.b वित्तरहींम, 9.b जसासु, 11.a वित्तरह् 12.b मुनेहि।

(13)

सोहम्मीसाणींह सस्त जि कर
सणंकुमारमाहिदे छ हत्या
पंच करण्यमदेविणकायहु
विहि समरहो पंचकरपमाणर्जे
सुक्के महासुक्के विसयारे
विहि जीवहि सोलह सायरसम्
आणए पाणए सङ्बतिहर्यह आरणअच्चुम्बासिय अमरह हेट्ठिमण्डमम्बद्धिस्य सम्बद्धिः सङ्द्धु दो दिवद्दु कर उण्णहें
वावीसबृहि एक्केक्काहिउ णव अणुदिस समरह सुहसुहिड वो जलगिहिपमाण आउस सुर ।
सत्तसमृद्दुवमाच पसत्या ।
विहि वहजलहि समाउसु आयहु ।
आउसु चउदह सामरमाण्ड ।
चउहत्यामर तह सहसारे ।
विहि अट्ठारह सरिणाहोवमु ।
ठिदि वीसंवृहि समसुरसत्यहु ।
वाबीसुबहिसमाउसु तिकरहु ।
अमरहु तिहि तहि तिहि गइवेगीहं ।
अण्दिसासु एक्डु जि कर मण्णह । 10
णवगहवेयसुराउ सुसाहिउ ।
वत्तीसुबहिसमाउ सुपाहिउ ।

घस्ता- तेस्तीससमुद्द जनमाणाउ अणुस्तर्राष्ट्र । पंचिष्ठ वि सुमिस्त परमद्द भूजिण्जद्द सुरिह् ॥१३॥

(14)

पयईए परोवव बुह्यराहँ
चिक्ठियवरिक्चताहारयाह
विहि पुढिबिह भासिय काउसेस
मजिसमणीला पंकप्पहिंह
समपुढिबिह लेस हवेद किण्ह
असुराह्य जोहसियंतियाह
णरितिरियमोयभूमीसु ताम

अगवरमरूद्धसासाउराई ।
रयणप्यहार दुयणारयाह ।
तदयाहे काडणीलाहे अंस ।
णीला सकिण्ह धुमप्पहाहि ।
तमतपपुर्वविहि सा परमकिण्ह ।
तेयहे लेसहि जयणंसु ताह ।
स्रतंगमपुर्ह स्वसद्दि जाम ।

^{(13) 1.}a सोहम्मेंसाणहि, b जलणिहिसमाण, 2.a.b सणकुमार, a महिदि छह हत्या, b समृद्द्यमाउ पसत्य, 3.b करूणहे, b विहि, a ॰ जलिह, 4.b विहि अगरहे, a पंचकर समाण्ड, a चउदह, 5.b सुक्कमहा॰, a विस्पारें, a सहसारें 6.a विहि जीविह, a विद्वि, 7.a ॰ हत्यहुं, 8.a.b तिकरहुं, 9.a ॰ भेयहि, b समरहं तिहि विहि विहि, a गय for यह, 10.b वियवह, a करर for कर, 11.b तेवीसंबुद्धि, a एकक्काहिउ गवगविष, 12.b अगरहं, 13 अगुस्तरहि, 14.b मि for वि, b परमें, a सुरिद्धि।

स्वेग मगुय णं कुसुमवाण अञ्जव सुहतेसत्त्वससेय जाणंति क्यावि ण वाहिदुक्यु विरिसंवितोहणजन्मणपहाण । जीवंति तिपरलोजन सुतेय । पावंति विरंतर विस्वकोनम् ।

10

5

10

षत्ता- चितवियाहार उदण्यतणमय तिहि दिणहि । पार्वहि इह वृत्तु उत्तमभोयमहिहि जिणहि ॥१४॥

(15)

तिसहसतेहत्तरसत्तसयइ
सहिट्ठहे मद्द खुद ओहिणाण
जे कम्मभूमिमाणनितिरिनख
णक् धणुसयपंचसनायकोइ
तह तेसलेस छन्कु वि हवेइ
उत्सासु भोयभूमीहि जेम
महसुद्दओहीमणपञ्चनस्तु
सहिट्ठिणरहु इय पंचणाण
ओहि विविहंगुइय तिण्णि सिट्ठ
तिरियह मदसाह य तिण्णि णाण

तहु उस्सासेण मुहुत्ते गयह ।

मिच्छादिद्ठहे एए समाण ।

तहु सणु सयपंचमुक्ते संख ।

ताणाउसु पुग्वह कोडि होइ ।

सुहमसुहाहार वि संभवेद ।

वाहिरहियसुहियहि होद तेम ।

वरकेवलु लोगालीयचनकु ।

मिच्छादिद्ठहु महसुह सणाण ।

मणपज्जय व केवल णेय दिद्ठ ।

मिच्छदिद्ठहु तिण्चि वि भणाण ।

पत्ता- सुद्रखरमहीण आउस वरिससहासइ बारहवाबीस एइंदियहो पहासइ ॥१५॥

^{(14) 1.}a सासाउराह, 2.a णारयाह, b णारयायाह, 3.b भासिव, 4.b पंकष्प-हाहें, 6.a तेयह, b जवणंसु, 7.b ०भेग, b उत्तृंग, b ताम for नाम, 9.b तिपोल्लावम्, 10.b णिरंतर, 11.a explains in margin as उद्यक्ण∞दर्त and त्रज्यमम वृक्षः, b उवचस्त्रज्ञमय तिहि दिणहि, 12.b मार्बाह इउ ।

^{(15) 1.}b श्सयइ, b कसावेष, b गयइ, 2.a सहिह्युह, a बोहिणाण, a मिण्डाविद्व्हु, 3.a झण for अनु, 4.b श्सवालय, b पुव्वहं, 6.b असासु, b जाम. a ए for होइ, 7.a मय for यह, a omits वर, 8.a सविद्विद्वरह, b ए for इय, a मिण्डाविद्विह, a मणपञ्जयः, 10.a तिरियह, a मिण्डाविद्विह, 11.b सहस्तई, 12.b वावीसाइं एमें विश्वहों।

(16)

वाकण वि वरिससहासस्त वाकण तिवरिससहास थाउ भासित संगुलहो संस्व धाउ जोवनसहासु वणकृष्ट्रहि देहु तणु वात्रमाणु वेहंदियाण तणु माणें तेहंदिय तिकोस चार्रिदिय तणु जोयनपमाणु मच्छाण देहु जोयनसहासु सब्बह असुह तिलेसासमान

ते कण विद्ि विहिण तिरिण युत्तः ।
पूर्वति पहुति जीवह सुद्भुम् काउ ।
सम्ब्रह जहुन्यु क्षिण्ण सहस्त साउ ।
साउसु दहनरिससहस मृग्देहु ।
जोयणवारहनरिसह मि ताण ।
एक्कोण जिमहि पंचास दिवस ।
साउसु वि ताण छम्मास माणु ।
पुन्दाण कोडि आसनु पमासु ।
समुहाहारहु मद्द सुद अकाण ।

घत्ता- मण्डिम् अंसु फुड् तेळलेसिंह अमरहो । बिहि सम्बह्ति होइ मंदकसाया समरहो ॥१६॥ 10

ю

(17)

सणकुमारममहिबहि सम्बहि
मिज्यम् अंसु हवद छाहि पोमहि
मज्य सुम्कु तेरसि सुपरिट्ठिय
जहि जित्ति आउविह संबहि
तेतिय विश्वसहासहि भोयण्
सुरणारयहो ओहि सहिट्ठिह
भावणाहि दो कप्पंति य सुर
विहिसकंसपवियारहो आयण्
कप्पे अउविक पुण् वि सुद्द भहि
पुण् अउकप्पिष्ठ मणपरियारा

तेयसपोमलेस सुरपग्यहि ।
विदि जयणुत्तम् सुक्कहि पोमहि ।
चउदहसुक्कृत्तम सिय संठिय ।
उस्सासु वि तहि तेत्तिय पक्काहि ।
णिच्नु सुकंकु अमिनिसु आलोयणु ।
सो वि विहंमु हवेह कुर्विहिठहु ।
तणु पवियार सुहि सुक्यायर ।
पडकप्पेहि कव आलोयणु ।
पवियारो हवेइ सुह सहि ।
परजी सुरमुणि अप्पवियारा ।

षस्ता- पविवारमुहार् अप्यविवारहु अहित सुहु । सम्मत्तमुगाहं सुरहुं अहिमाण सित दुहु ।। रेजा

कम्मविरामि लक्ष ससकवहु जम्मजरामरणकयरियहँ अंतातीय धरियसंमस्तह तणुवायाश्यादिय ससरीरहँ बाइयदंसणणाण समिद्धहँ बाहारहिड णइ इंदिमजणियड इय गुणसहिया तिलीयहो सारा णिह सेणियहो जिणिण प्यासिड अहवा जइ केग वि जम् किण्जह के वि भणहि किर जलू पूणु पुक्वड

पुन्वसरीयत ण पहिस्ताहः । बीरिय वगर यसह पुंचसहियहें । छुहतम्हार विरोमें सुतित्तहः । सावगाह्यपतोमामारहें । णिरुवमणिष्यभ्यससुद्वसिदहें । जायत णज हीणाहित भंणियत । भविमह सरणल होंतु महारा । प्रविमह सरणल होंतु महारा । प्रविमह सरणल होंतु महारा । व्यवेग तिह तुह बन् भासित । तो जमकत्ता केण वि रहण्जरः । बुग्धुआत पण्लाह अंडतहुत ।

5

10

घस्ता- अंदयखंडेहि महियल् बंभंड् वि हुयछ । जद्द ता जलुकच्छ बुब्बु वि बंडड कि कियर ॥१८॥

(19)

ण वि केण वि गिरिसरिसायर किय पलउ वि सयलु विलउ पभणिउज्ञह जह वा कि ण सो वि वारिज्जह इय कञ्जे दियवंरहो पुराणहें विहिहरिहरमणियउ जह तिहुयणु एकक वयणु दुणयणु दो करयलु केण वि रिश्वय प विणासहो णिय। किर हरिणा सहो जगु रिव्वज्जह। लहु वि कज्जु कि बढ्दारिज्जह। घडिह ण अषडिय सोम अण्णाणहें। कि ण सउम्मृहु सत वह तिणयणु। वीसह सयलु वि मृत्तकम्मफलु।

- (17) 1.b सम्मिह, 2 b मण्डिम, a छिह पोमहो, b छह पोमहि, 3.a सुक्क तरस, a चल्हसेसु सुकुत्तम संठिय, 4.a संखिह, b ऊसास वि, a पक्खहि, 5 b ॰ सहासई, b णिष्च सक्खु, 6.b सिंहिट्ठिह b बिह्नु, b कुविट्ठिह, 7.a भावणाइ, b दोकप्पतिय, b सुक्केशय, 8.b एस for एंस, a पायण, a बालीयण, 9.b कप्प, b वि सुमहि पविधारहो हवेइं सुनसिंह, 10.b चलं कप्पहि, 11.b सहु for सुहु, 12 a समस्तव्याह, b सुरहे हिंच माणसित।
- (18) 2.a ०रहियह, a सहियस, 3.a संमत्तहो, a ०तश्हा, a सुसिसह, 4.a सरीरहो, a ०प्रश्तिकारायारहु, 5.a ०दंसणणाचरित्तह शिवसम् विकासयम् सुंह सिद्धह, 6.b ०रहित अभिष्ठ जिन्दर्भ, a होणोहिल, 7.a गुणसहिम, b भनियहसरणसं, 9.a केथ रह जह, 16.b भनहि, b बुख्युस, 11.a संबेहि, a बंक्मसु।

कर्में सुरणरितिरिय वि जारय इस जागेवि कि पि तं किज्जह जीत हवंति सिद्ध झाणें रय । जें जरमरणवेत्ति छिण्णिज्जद ।

याता- अवरामर देसु पनिष्जह विणमासियत । सिरिसिद्धणिनासु हरिसेणें भवियहें मासियत शर्राः

10

इय धम्मपरिक्खाए चउवग्गाहिद्ठियाए चिस्ताए । बृहहरिसेणकथाए **छर्डो संबी प**रिस**मक्तो ॥ छ** ॥६॥ छ ॥१८२॥

* * *

^{(19) 1.8} omits गिरि, 2.b स्यण्णु, a सर्निसज्जह, 3.b किण्ण, 4.b दियवरहैं, b सहिया, a सण्णाणह, 5.a वहरह, a ज्जह, b सरम्पूर्त, 6.b एक वयण् सुद्रमण्, 7.b कम्म, a णाणें सिद्ध सुण्झाण पुण्णस्य for जीव हवंति . . . etc. . . रस, 8.a जं, a लहु विस्वज्जह for छिण्यिज्जह, 9.a जिण्यासित, 10.a सिद्धिक, a हरिसेण भविषद्व पसंसित, 12 परिसंगत्तो । संदि ।। ६ ।। ६८२।।

७. सत्तमो संधि

(1)

उववारणिमित् मित्तहो परमहिबत्तनेण । मानेवि तिलोउ पुणु पमणिड खगवदसुएण ॥ छ ॥

पवणवेय पुणरिव पुरि पहसीम इय भणंतु नाइय दलवट्टणु भंभमाल जा दारे चडण्डण् तिह करेवि भेरी घंटासणु णवर भेरि घंटासहें दिय पुण्डिज तिह कहं तहो आइय तामसङ्बद्धारिमणवेएँ गामगुरु व भमंत संपाइय दिय भणंति कि कीलालावें कुलु कि कवणु माइ किह जायज ववर वि परपुराणु तुह दरिसमि ।

मिलें सह पदद्दु पुणु पट्टणु ।

जिहि दिय देहि दोसु परमस्मए । 5

माणसवेड विडिट कण्यासणु ।

आगय जे वायम्मि अणिदिय ।

करह पाउ जं भेरी वाइय ।

तो वोल्लिउ संजायिववेएँ ।

थ उ सस्थस्थवियम्खण वाइय ।

भणु तव कारणु मुनमू पलावें ।

कवजु ताउ को गृह विक्खायं ।

घता- खयरेण पुणुत्तु णियकारणु साहंतहो । भाउ अत्थि ण तेण सच्चु वि कहमि महंतहो ।।१।।

(2)

वृहत्कुमारिका कथा

दिब भणिह ता तं पिं ता गृह व कवेण सायरसिलातरण् वक्खाणु णिसुणियउ पुणु चणिउ भड मिल्लि खगु भणह रम्मिम

भयकारणं जं पि । खयरवहतणएण । मनकबहु जडयरणु । दियबरहि चिसुणियछ । जिह् मुणहि तिह बौह्सि । सामेयणयरिम्म ।

5

(1) 5.a बंग्ह्सास, b वेहि, 6.b तांह, 7.a जबरि, b पुण्डिय, a तेहि, a करड, b में भीरी, 9.a बोलियु कि बोलिसड, 11.b मणि, b मुक्क, 12.b मक्का भाग, a कहि, 14.b कहींम ।

तृह माम किर कण्ण रंगणीह परिणयण् बण्जविय रायस्य ता करफ पूरंतु पतो विषाहिम्म वृष विटठु उम्मिट्ठु तं जिएवि गृषविग्यु तहो वाम अंसग्गु सा पहिय खलिक्ज्म पुण्जेहि उम्बरिय जणु भणद जिनिकट्ठु हम गरुयलक्जाए उद्धरिय बंसेण पहस्मप्यरिकाए

मह पिंड है जा दिणा। का बाइ समजमणु । सारि खुट्टु रायस्स । Ю माणुसइ मारतु ! कय विविह सोहिम्म । समतद्ठु जणु णट्ठु । ओसरिउ वरू सिग्धु। बहुवाहे तहि सम्मु । जो इय ज वलिकण। 15 करिणा ण सा धरिय । वहु मुएवि वह षट्ठु। गउ रहिउ भण्जाए। पुरिसस्स फंसेण । हुउ गम्भे हुउँ ताहे। 20

भरता- सा मायए वृत्तु कि कुले लंखणु आणिउ। सा भासिउ ताए महें काई ण विवाणिउ॥२॥

(3)

महु अस्पि को वि ण वि अवह मग्गु इय जीगय मान मडणेण थिया एत्यंतरे तानससंजु तित्यु मायामहेण महु ते जीमया तो जीगत तेहिं दुक्कान्तु ताम तें जिल्लय अम्हड जिह सुहिन्खु तुम्हर्दे वि एहु मा मरहो एत्यु अह करहु कि पि पडियाक्तेम इय जासिक्षण भोयणु करेकि क्कार्ये मह जितियत ताम परिणिय पियसिडिसमुयंगु सन्गृ !

गय भासिह पसवणदिवस हुया ।

आइउ मह मायहे गेहु जेस्यु ।
कहि चलिय भणेविणु विष्णविया !
होही वारहवरिसाई जाम ।

गवसी च वि दुस्सह भुक्ख दुक्यु ।
विषय देसु सोजिज जीवियद जेस्यु ।
दुक्तासदुक्यु जिल्यादु केम ।

गय तावस देसंतर सरेवि ।

गक्छह रउद्दु दुक्तालु जाम । 10

⁽²⁾ ३.६ कारण ज्यांकि, 2.5 स for ता, क खड़बड़ ०, 3.5 सम्झडह, 4.5 पिसुणिया स्थान है. के मिसुणिया है. के मिसुणिय

यता-अच्छमि हा एत्व गव्यवासि वर्दंतउ । वीजिउ कम्बेण का वस्मही णिगांतउ १।३॥

(4)

गय दुक्काले जबर ते तावस भत्तिए अञ्जाए जबद सारिय ता मई वितिज कि इह बच्छमि एत्थंतरे पणट्ठमुह छायहे वाबारं मुएबि तणु छाएबि हजें वि ताम गम्महो जीसरियज्ञ भोयणु देहि भजंतु समृद्ठिज ताहज तबतिहि भणित अमंगलु एयहो सुयहो वज्जु सिरिणिवज्ज वरि फणि दट्ठंगट्ठच खंडिज पुणसीय बाइप मैहि छुहावस ।
अन्यू देवि परिवर्ताल बारिय ।
गउ दुश्कालू तुरिस लिग्गण्छमि ।
जायइ पसवणसूलक मायहे ।
स्थिय चुल्लीसमीनि सा जाएवि ।
महि णिवर्देतु वि छारहो प्ररियत ।
भोयण करयलु पुरत परिट्ठित ।
कुलबार एहु णेह गहु मंगलु ।
मा अणेण समस्तु वि कुलु हिहंबत ।
गुणगणणिहि सरीय मा छीडित ।

घरता- ता मए वृत्तु पुत्तु मध्झु णउ होहि तुहु भोयणु तुह देख मारि पर्दसिह जमहो मुहु ॥४॥

(5)

षुण वि ताए मह मायए घुट्ठ ज जायमेत्तु गिण्हेविणु भोयण माणुसु एहु माए ण जवेट्ड उ णीसर जाहि जाहि पुणु वंपिड लहु य केसु उद्धालिय गलाड सर्वे संजान तर्वसिद्ध वसंतर एरिसु केण वि किहु नि ण विट्ठा । मग्गद किह नि को वि कि भोयणु । पोद्ट विस्त महु रक्षासु मोट्टा । तामइ पेसणु तं पि पियप्पित । हर्जे णीसरिज तबोवणु पत्तत । अञ्चनि तबसिसंबे पिवसंता ।

^{(3) 1.}a परिणय, 3.b आयज, a मध्यह, 4.a ण बिया, b कहि, 5.b भणिर्ड, a तेहि, a विरसाह, 6.b अम्हहं जहि, b दुसह, 7.bएई for एरयु, 8.a दुक्खाल, 10.a इ for मह, 11.a एल्ब, 12.a तं for ता।

^{(4) 1.}a पुनस्ति, b गेह, 2.b पहिनात्त समारियं, 3.b adds in margin सोयमवेलं जाम किर वर्द्ध मह नक्त्रवही चित्ति प्रसृद्धं before जा महं चितिछ, a मद, 4.b साम्बं, b सूलकं, 5.a साह्यार for सावारं, 6 b हर्जीम 7.b देह for देहि, 8.b ताह्यं, a तनसिहि, b मणिछ, b लाइ रिवर सेह, 9.a बज्ज, a साम संशोध समस वि कुत् विह्रवेछ, 10.a वट्ठ-पुट्ठ, b पुणगूणिशहि, 12.b देवं, b पईसाँह, b मुद्धं।

बहु काति करंतु परियट्टणु ता विवाहु णियमायहे व्हिट्ठउ णिय उप्पति संवित्यर भासिय भणिउ ण दोसु को वि इह वीसइ एकहि दिणे जा तउ तं पट्टणु । एविणु तावसाच मई सिट्ठउ । सा णिसुणेविणु तेहि ण दूसिय । पुरुवमुणिदवयणु तुह सीसह ।

10

घस्ता- णारिहि वायाए दिण्णहे जइ सो णव मरइ । अस्वयजोगीहे पुणु विवाह परियणु करइ ॥५॥

तखबा-

अञ्जिषापि बस्ता या यदि पूर्ववरो मृतः । सामेदलतयोनिः स्वास्त्रनः संस्कारमहीति ।।१।।

(6)

पश्चित्य पिय वरिसईं मट्ठ जाम अपसूर्य णियह चउ वरिस पंथु पडिवालइ वंश्रणि सुद्धशाव । ता पच्छड अवखरहो धरइ हत्यु ।

तवपा-

अन्दौ वर्षान्युवीकोत आह्यणी पतितं पति । अप्रसूता व चल्वारि परतोऽन्यं समावरेत् ।।१॥

इय लोइयधम्म वियाणएण तवसीण मए ण सुपिहलवन्छ इय ताण वयण् बायण्णिकण बित कालु तहि मि पुणु अच्छिकण तित्थत्यणिमित्ति महि भमंतु वृहवाइय जनमणणयणइट्ठु वेयस्यपुराणपतीणएण ।
दीसइ तिघाण परिणयणु वच्छ ।
परमत्यु भगेविणु मण्णिकण ।
तवसीण संघु परिपुच्छिकण ।
विरसंचित क्लिमस् उवसमंतु ।
चितकण तुम्ह पुरवर पहर्टु ।

10

धस्ता- महु वहयरु भासि फुड़ जं जारिसु विश्वत । सयसु वि विवरेवि तारिसु तुम्हरू वृत्तत ॥६॥

⁽⁵⁾ i.a कहि बि, 2.b कि पि for को बि, 3.a मुहु, 4.a writes जाहि three times instead of two, b तामई, b तें जि, 5.a हुउ, b हुउं, 6.a सह, 7.a पिणे गछ ज्ञा तं, 8.a विवाह, a एबिण, a मह, 9.b स for सा, a ते हि, 10.b inter. कोवि and दोसु, 13.a पूर्ववरो, 14.a संस्कारमहीत, विस्वटस्मृति, 17.64 nearly agrees with this in contents. cf. 9.81.

(7)

ता पभणहि दिय	अहो णिदिय दिय ।	
अमुणिय तच्चय	सुट्ठू असम्बद्ध ।	
तृह गम्भासउ	तावसवासच ।	
वे वि विषद्भ इँ	जणे अपसिद्धई ।	
ता चनु भासद	समंद पवासइ।	5
पयिडयं अत्यहि	तुम्हर्दे सत्यहि ।	
कि इय घट्ठड	मुणिहि ण मुट्ठे ।	
रासें कंपिय	पुणु दिय जंपिय।	
जंपइ पिसुणिउ	अम्हिह जिसुणिउ ।	
जद तुह जाणहि	सी वस्ताणहि।	10
पुण तवसि भणइ	की संगमुण इ.।	
परभ उ वट्टइ	मणु ण पयट्ट ।	
तुम्हइ रूसेवि	महु मउ दूसेनि ।	
भि उडियणयणहि	णिट्ठ्रवयणहि ।	
विध्यित गोल्लिख	तुह ण उ मेल्लिउ ।	15
तेणासंकमि	भगेवि ण सन्कमि।	

घरता- तहो दियहो परत्तु जे समए ण वियारिह । ते बुद्धिविहीण अप्पाणउ पष्मारिह ॥७॥

^{(6) 1.}a पिउ वरिसइ, b ताम, b पिडवालई, 2.b णियई, b omits ता, a अवरहो धरइ, 3.a वर्षाण वीक्षत, b पतितं, a पति, cf. अमितगिति धर्मपरीक्षा 14.39. 5.a वियाणयेण, a oपवीणयेण, 6.a परियाण वच्छ, 8.b left blank space for चिरु, 9.a तित्यत्त , a चिरु, b णिजजरंतु for उवसमंतु, 10.a ज for जण, 11.a मुहु, 12.a तुम्ह्रह ।

^{(7) 1} a तो, b वभणिष्ठ, a omits विम, a repeats अहो, b omits दिय, 4.b जण, a अपसिद्ध इ. 6.a अस्पित्त तुन्द्र सस्पित्, 7.b इय मृट्ठ इ मृणि हि घुट्ठई, 9.a जंपइ, b अन्द्रीत् ण सुणि हे, 10.b जाणित्र, b वस्खाणित्, 11.b मण्डं a omits को तं ज मृणइ 13.b तुन्द्रीत, 14 a oपसमित्, a oवसमित, 15.b बुद्ध for तुह, 16.a जिन्द्र शिक विमार्शह, 18.b अप्पाण चंपसार्रीह ।

(8)

मुनि पुराणु तह माणच ध्रम्मु कि इय चलारि वि काणा सिद्धई सांगोबेड चिकिष्ठिय कम्पु वि । हेर्डाह ण हणिञ्जंति पसिद्धं ।

5

10

उद्यया-

. पुराणं मामको धर्मः साङ्मो वेदशिषकित्सितम् । वाज्ञासिद्धानि प्रकारि स हन्तम्यानि हेतुमिः ॥१॥ तह मणुवासविद्यहो वयणई जुयद भणंतु अपमाणहे । वभणाइणह होइ णिख्त ६ इय एरिसु पसिद्धिय बुलाउ ।

वणवा-

मानवं स्वासवासिक्तं वयनं वैदसंयुतं । बारमार्चे तु वो सूरात् स सवेद्वहायातकः ॥२॥

नेयाइयहो दोसु उन्भावइ जेण तेण तहो दोसु ण वोल्लमि ता दियवर पभणहि मित्तेण वि भिक्खु भणिउ वसि जीह ण छिण्णइ जो सो वम्हड व्य फलु पात्रह । दियमरदरसिउ मग्गु ण मेल्लिम । पाउ हवंतु दिट्ठु कि केण वि । सिहिउष्हंसु डहह को मण्गह ।

घाता- इय एम मुणेवि मस मिल्लेविगु थिरु मणहि । वेयाइ हु दोसु वत्यु भूज जद भुदु मुणहि ॥८॥

(9)

मागीरबी और गांधारी कथा

माया तायसेण एत्यंतरे किर **माइरहि** णामज दोणारिज वोल्लिज दियबरसङ् अन्मंतरे । एकक सर्याण मुलाज सुकुमारिज ।

8) 2.a हेउहि, a पित्रद्वह, b adds ।।छ।। before तसपा, 3.a धर्म, 4.a चारवरि both a & b used अनुस्वार like खांगो, वेदिष्विकित्सितं हंतक्यानि, 5.a • विद्वह नयणह, b खबह, a अप्रमाणह, 6.a वरहणास•; 7.a चैनसंयुतं, 8.a भनेत्रहाचातका, 9.a जो for यो, b वेयादयहं, b वंगह, 10.b • वरिसिंड मज्यूष्मु, ll.b ता दिय मणहि भणिय मित्तेण वि, 12.b भणियं, b खिण्णह, a उण्हुत्मु, b मण्णहं, 13.a एव, b भणिह, 14.b मुणहि. Note: Both Sauskrit verses occur in यशस्तिनक-चान्यु, भाग 2, p. 119. The first verse is identical with मनुस्पृति, 12.110—1.

ता भइरहि वामे सुउ जागड जम्मई गारिकंसि सुउ गारिहे अवह वि कुनमुणस्वविसिट्ठहो किर पिण्मीसइ ता रोमंचिय दियहे चडरचे जवर सण्हाइय मासेक्केण गवर तिह मायए त वहयर णर विट्ठि गिन्ठहो तं विसुणीव यमाजिय सिट्ठिं को बारहि पुराणि विकास ए । सह हुउँ पुरिरक्षे ए कुमारिहे। गांधारीकुमारि प्रवरद्द्दो। तह मुप्पत्र जाय सीलं किय। फणसांसमणे गडिमणिजाइय। सा अकुसुम् जिएवि मय छान्छ। भयगयाए जाणेविज जेन्द्रहो। सुहि हुक्कारेवि अंधकांविद्दि ।

5

10

5

Ю

वस्ता- धयरद्ठहो दिग्ण सहुउ गम्भू ण उ तें सुणिउ । संपुण्यदिणेहि ताए फणसत्तर फल् जाणिउ ॥९॥

(10)

तहि फणसफ्लें सउ णंदणाहुँ
एरिस कह भारहे सुप्पसिद्ध
त जिसुणेविणु दियवरहिं बुन्तु
जं पुणु गन्भत्यें तथसिवयणु
ना तावसेण पिडवयणु वृत्तु
ता एरिसु भारहि वासि भणिउ
सुहलक्खाण कोइलमहुरसह
असुहत्वी एक्कहि दिवसे जाम
थिरगद्भवासे ण लहेद जिह
एन्यंतरे कह सवणिन्यएण

संजाउ पवरगुण णंदणाहें।

कि मह उप्परित क्षणह विषय ।

मण्जिउ तुह जम्मू हम्छ णिक्तु ।

आयण्जिउ तं सह्हइ कवणु ।

जह मह पमणिउ मण्णह अजुरतु ।

दियपवरही कि तुम्हीह ण मुणिउ ।

गुचहारजाय जह य हु सुहह ।

हरि चक्कबूहकह कहह ताम ।

हुँ काळण किर मेस्सइ सुहह ।

बहिमानें तहे गट्यस्विएन ।

(9) 4.a सो for सुउ, b णारिदे, a इउ, 7.b सा, 8.b बासहें, b बकुसुम, 9.b जाणाबिछ, 10.b सेट्ठिहे, b अंध्रयविद्ठहे, 11.a गम्भ, b गम्भ ते णउं मुणिउं, 12 b दिणेहि, b फल्लु जॉणउं, cf. झादिपर्व (महाभारत), भागवतपुराण, मल्द्यपुराण, विष्णुपुराण, वागुपुराण।

⁽¹⁰⁾ la तहि, क सल मंदचाह, b न्यूण गंवचहं, 2.b सुद्धसिद्ध, a मलपतित, b भणहं, 3.a विववदित, 4.a सक्मत्थं, b तपसि, b अवस्पाह उँ तं, 5.b मदं पर्माचलं मन्मह, 6.b भारांह, b कि तु तुन्हिंहि किस सुणिल, a तुन्हिंहि, 7.b फन्मुण पिमणभीम भणिय सुहृह किर गुन्हिंग्स्याय etc. 8.b एक्सहिंह, b नक्सबूह कहद, 9.a मं for म, 10.b सवपत्थिरण, a महिवणें, 12.a नितेव।

वसा- हुंकारत दिण्णु तं णिसुणेविणु हरि दरितः। चितेद्र पयंद्र गब्मे को वि गर अवस्परित ॥१०॥

(11)

ऋषि फोपीन कथा और मन्दोदरि

यक्मत्यें तें हरि कहिउ जैम तं मण्णेविणु दिय भणाह एम पिट्टियण् पुणु वि गुरवेण बृत्तु मठ णामें तावसु तउ करंतु तावेक्कदिवसे सुइणंतरिम्म पालियसुवयहो खरणु जाउ कोवीणु जैवि गइणीरे विमस्ति ता पीउ सुक्करसु दद्दुरीए रिजवइहे तहि तें तक्खणेण नयमासेणेक्कें सुहृदिणाम्म णिसुणिउ मइ तापसवयणु तेम ।
वारहवरिसइ थिउ गब्मे कैम ।
णिसुणहु चिर मुणि पमणिउ णिरूत्तु ।
बाम त्यइ णिन्जेणिवणि वसंतु ।
संजायइ वर णारीरयम्म ।
जिति तें सुक्कु म बिहलु जाउ ।
वोलेविणु णिम्पीलियउ कमलि ।
विमलजलकमलदसकीलिरीए ।
हुउ गब्भु जुस्सु तियसक्खणेण ।
पवसिय सा सोहण गहुबणिम्म ।

घत्ता- अइविययमध्य जाय दुहियलन्खणभरिय । सोहम्बहो भरित णावद अण्डर अवयरिय ॥११॥

(12)

तण् तणयहे तणउ णिर्यतियाए दद्दुरियए पुण् पुण् चितियउ अम्हहें कुले होइ ज एरिसिया इय चितिकण वित्यिष्णयसे मउण्हाणत्यें तहि जाइ नाम पुण् तेण परंचिषि झाण् किया बित्य उडिह रूउ वियंतियाए।
णिउणउ जें विहि एहउ कियउ।
फुड् एह हवेसइ माण्सिया।
सा मुक्क ताए कमिलिण वेहंते।
नण मणहर वास णिएइ ताम।
जाणिय णियसुनकें संभविया।

(11) 1.b मई णिसुणिउं ताबस्तं, 2.b भणींह, b वरिसहं, 3.b णिसुणहं, b पर्भाणहं, 4.a जावत्यह, b जामरणह, यम must be सम दानव whose daughter was called मन्योदिंद, बाल्मीकि रामामण, उत्तरकांड, 12.1-21; सस्य 6.21; वायुं 68.29; बह्मा 3.6.29. 5.a सुद्दर्णतरम्मे, 6.a मालिमं, 8.a inter. ब्दलं के ब्यामलं, 9.a सब्धवृत्तु, cf. स्वंदपुराण, सत्त्यपुराण, बायुपुराण, भाष्यतपुराण, सहासारत (बादिपर्व) यम may be मय।

विच्छेनिण अद तुम्छोयरिका पुणु णिय कुडिय चेहेण मिया ता एनक दिवसे मुकुमासियए परिहिच संसुक्कु मुणि कीमणच वामेण मणिय मंदोवरिया। कालेण जाय मयजोव्यणिया। एहंतोए तीए कुसुमालियए। तें गब्मु जाउ तायहा तणउ।

10

षसा- मड चितइ जाम गम्महो कारणु झाणे । णिय सुक्कदिपास ता जाणिड वरणार्गे ॥१२॥

(13)

पुणु चितिच जइ तावस मुणित इय एता अयसु किय परिहरेमि तणु लक्ष्मणु होइ ण पयदु जैम इय चितिकण तवस्मच करेवि महियले मिलंति भणिकण तेण जा होड को वि भत्ताव पुत्ति एत्तहे लंकाचरि रक्ष्मणाहु कइ कासि णामहि तही पिययमाहे ते पच्छा जायइ सा कुमारि सा वावसाणे सो गढ्मु ताहे णियसुय कामिय एवं भणंति । परिछिद्द णिउणजणु कि करेमि । पच्छण्णु वि खीलमि गवम् तेम । कुडियजलु णियकरयसे धरेवि । गब्में सह अभ्छिद्द ता अणेण । कि किज्जड तुह एरिस भवित्ति । विस्तावसु णामें तिरिसणाहु । कालें हुउ राषणु णिश्वमाहे । परिणय मंद्रोबरि दिख्य णारि । पयडिउ तणुचिण्हिंह णिख्य माहे ।

घस्ता- सहो गेहि पस्य इंक्ड णामें पुत्तु हुउ । सवंक्छर सत्त सय जेट्ट सो पिउहे सुउ ॥१३॥

(14)

पराशर ऋषि और योजनगन्धा कथा

संबच्छराइ सयसता जह वि
महु वारह वरिसईं गम्भवासु
अहवा कि भण्णह तयह एसु
बंभणहि भणित इत होइ सच्चु
पर्वे जाए पुणु कम्मा हवेह

गक्में पिउ इंदइ सच्चु तह वि ।
मण्णहु ण काई किर करहुं हासु ।
जिय दोसु वि अणुं मण्णह ण दोसु ।
पर सई तज लेइ ण कोवि सच्चु ।
तुह माम एउ कह संभवेइ ।

^{(12) 1.}b तणाउं, b उद्देहि, 2 b मिउणाउं, b inter, चें and विद्दि, 3.a अम्बह, 4.a बिह्मिणणयिल, 5.a तहि, 6.b झाण, 8.a पु for पुण्, a अबजीवणिया, 9.a सुकुमालियाए, a कुसुमालियाए, 10.a समुक्क, b गर्मकाउ, b तबंडं।

ता गुरंज भणह अबहिय सुणेहु सो कत्य वि कन्सें आह तस्य तहिं तेण गीर-सारणप्यीम चंत्रल-पिंगल-सीयण-अणिद छिव्दरणासिय धीवरकुमारि मुणियव पारासक जो मुजेहु । विट्ठि य गंगागदमस्म तास । सोहण णारी-अस्वाम बिहीण । यस कोस पूर्वादिणि परिद्ध । तियमेस विट्ठ णावक कुमारि ।

10

पत्ता- णावद मुणि जाम सारइ तुंबचनत्पति । ता हिम वए तासु नग्ग मयणवाणावलि ॥१४॥

(15)

णियमुह जीर्यतहो वार बार, बरहरड अंगु क्यणू वि ससीसुँ इय एम तेण खुहिएण मृनु मा देख सा उद्दयक्यवस्थ सबतेयकणभूमीर करेबि मुख बासु सहिछ सुणि लक्खणेण जडजूडालंकियछ उस्तमंगु विद्दुसमयशुंक्स छिट्ठगंडु मयणिंग जलई तहां दुण्णिकार ह बुगुधुगद क्ति णज होद्र तोसु । इच्छद मद्दें हुउँ तुह मुद्धि रस् । पश्चिमणा ताइ ता सावसेम । सा रमिय तेण उक परिहरेकि । सुरयावसाणि हुज तक्काणेण । सियभूइसंग पंडुरियअंगु । उरे वंभुसुरसु करे धरिय दहु ।

5

- (13) 2.b एवंतु for इय एस, a पहिन्छिह, 3.b ताम, 4.b तच रवच, a करयल्, b करेबि for घरेबि, 5.b मेल्लेतें भणिच, 6.a पुत्तें, a एरिसु तुह भविति, 7.a लक्खणाइ for रक्खणाहु, 8.b णामें तहे पियममहे, b पियममाहें for णिहवमाहें, 9.b जाए for जायह, 10.a सो वयसाणे, a गडभ, a चिष्हिंह भणहराहिं, 11.a पसूह, 12.a स्विंह जेट्टू।
- (14) 1.b संवस्नराहं, a सनक for सञ्जू, 2.a मृद्ध वाग्हवरिसइ, a काइ कि करहू, 3.b भण्णाई पयहं, a दोस वि, b सण्णाई, 4.b भण्णाई, a सइ, b मच्चू for सच्चू, 5.a पइ, b काँह, 6.a गुरुव, 8.a तिह, b तीर for तैण, 11.a भणात्व है।
- (15) 1.8 जास for जलह, 2.b यरकरहं, a घूग्धगुइ, b वोसु, 3.a मह हुउ, 4.b पिडवण्य लाइ ता, 5.a वह for उद, 6.a omits सुरवावसाणि etc. . . . 7.b . संकिड, 8.a उद वंग्हसुरतु, 9.b अस्तपाणि वाईसर जोव पिडसपाणि, 10.a बासु for पासु, 11.b वेहि, b पश्चण्यं, a त्यु tor एस्यू, b करेहि, 15.a पिडस समाउरिया, 14.b वह for तह, a वारासरिया । cf. मत्स्यपुराण अध्याय 14, वायुपराण, मानवतपुराण, विवयुराण, महामारत (व्यविपर्य), ब्रह्मा, वर्तपुराण करू

वरकुंडिय मंडियरत्त्रपाणि सिरि क्य मुख्यिक क्य ज्यासु बोस्तइ महु पेसणु ताथ वेहि ते वयर्गे गंगाणस्थलम्मि बाइंसरि जोइ वॉवस्तवाणि । वॉरासरपय पणवेषि पासु । 10 मुणि पश्रणइ एत्यू जि तङ करेहि । तबे सठिउ सो प्रावणक्सम्मि ।

घत्ता सा घीवरधीय कय परित्त कामाउरेण । सह वश्वयञ्जीण मठ वैधिणी पारासरेण ॥१५॥

(16)

उद्दालक और चन्द्रमसी कथा

पारासरवयणे जैम वासु
गउ जणणिवयम् पेसण् गणंतु
णिसुणेवि पभणीम वियवरहो अण्णु
जायउ रविषा सा नेम कण्णु
उत्पण्णे कण्णि जह सुंति कण्ण रवि करह कण्ण जह भणहु एवं उद्मालु णामु अयह वि मुणिदु सुहणेतर णारी रहवसेण सुबकु मुक्कु गंनाणईहे चंदवह णाम पुष्फवह बाय तिव संठिओ तिह हुओ तबित बासु ।
अच्छाम सुतित्यजस्त जुणेतु ।
सुतिहे कण्णेष्ट कण्णेण कण्णु ।
मण्णेविणु पंदृहि युणु वि विण्णु ।
तो मइ जायर महु माम किण्ण ।
कह रमिह असुद्द माणुसिउ देव ।
गियतवपहाबकीपय सुरिंदु ।
पण्मरिज णवर्ति तावसेण ।
कमलिम्म ताम सुन रहुवर्षह ।
सगाजसिम विम्नासम्म ण्हाम ।

घस्ता- ते कमलु लएवि सुघिउ ता तहि तन्खणेण। हुउ गञ्भु मुणैवि जर्णाणए यण किव्हंतणेण।।१६॥

(17)

पहुवदहे कहिउ ति चंवममई काणपे जहि पंचाणणहो झुणी षस्त्राविय मध्मेवि दुक्टमई । त्रहि दिट्ठु ताए दिशक्दि मुगी ।

^{(16) 2.5} वर्च, 3.6 णिसुमाई, b क्रुंतिह सम्मिह, 4.5 वेब सर्वण, a बंडिह, b विशा क्रिं विक्यू, 5.6 जब, b क्षेत्र मदं जायमं यहं, 6.6 क्षेत्र म वर्ण जहं समाह एवं कह रमह असुमं सामुसिय देह, 7.5 उंहात् सामि, 8.6 सुमंगति b रहबसेण, 9.6 मुक्तु गाम्पर्हीह कमलम्मे ताम सुझ रहुवर्षीह, 10.6 चंदवह, 5 पुण्कवह, 11.5 तं for तं, b सुनियं, a तक्षीणणा, b तक्षीणणा किल्हुसम्मेल, a क्षिण्हतनोष्ट्रा, 12.6 हुवं, b संगीनिह क्या।

तहो बासिम जायत बाबकेर जियतात गवेसिह ताए वृत्तु ता बिल्लवेल्सि संजोयएण मंजूस दिट्ठु करे धरिवि जाम चंदमइ वि णंदणणेहएण मह इण्डि मृद्धि ता ताए बृत्तु तो तेण गंपि रहुवइहि पामु वेयस्य य पुराणवियाणएण सुज ण अवयण्याज मयरकेउ ।
मंजूसिह किज गंगाहि खिरतु ।
ण्हेंतेण तेण उद्दालएण । 5
ज्याडियवालज विट्ठू ताम ।
आगय पश्रणिय उद्दालएण ।
कुसकण्याह एहु ण होद जुत्तु ।
मरिगय सा तेण वि विष्ण तासु ।
कण्णाविवाहु किज राणएण । 10

घरता— पुरतें जाए वि चंदमइह य कण्णा हबइ । महु माय ण काइ ता दिउ को वि ण पडिलवइ ॥१७॥

(18)

पुणु वि तेश्व सो सगवइणंदणु
पुणु वि विवाह वरेण गएण वि
फणसालिंगणे गम्भद्दी संभ उ
गम्भरिष वि कह मिसुणिण्यद्द सत्तवरिससय गम्भें पीडिय रहसमए वि वासु उप्पण्यद्द कमलहो सूंघणे गम्भु होद्द जहिं पुज्यावर अष्टिय बालावज पुणु वि पुणु वि केत्सिज प्याडिण्यद्द एरिसु किण्ण मेणेणालोयह

जियमिसहो संबोहनकारणु ।
जारिहि पुसु जारिफंसेण नि ।
तो नि ज करइ मृद्ध जणु नि भछ ।
दुवदुरीए कह मणु नि जनिवज्ञ ।
कह बिय मंदोयरि जठ निहडिय । 5
जाए पुसें कह कण्णे भणिष्य ।
अनर काईं किर वोल्लिज्जइ तहिं ।
दुम्ह युराणु असच्य पसावच ।
जं प्यवंतहं हासच विज्जइ ।
दियपवरहो कि मह आलीयह ।

^{(17) 1.5} महुनईहि कहिएं, a नंदनई, नंदमई, b संदनई, a णोविसु b मणिवि for मणीवि, b पुट्ठमइ, 2.b पंचायनहं बिट्ठ, 3.b जातरं णायकेएं, a माइकेस, 4.b किसं, 5.b repeats तेण, 6.b दिद्ठ किर, 7.b चंदमई, b आविष्य प्रमिय, 8.b कुलकण्यहि होई ण एउ जुस्तु, 9.b दिण for दिण्य, 10.b omits य, b • विवाहं किस, 11.a चंदमई य. Cf. वायुपुराण, बहाजरत (सन्पर्व, सनावर्व) otc.

षत्ता- हरिसेणसमेउ परमलाइ वलु जिणहि जिह । वृद्धिए मणवेउ विध्य णिहत्तर करइ तिह ॥१८॥

इय धम्मपरिनसः।ए चडनगाहिद्ठियाए जित्ताए । वृहहरिसेणकवाए सतमसीस परिसमत्ती ॥ छ ॥ ७ ॥ छ ॥

* * *

⁽¹⁸⁾ La adds बीरलइ बुह्यणहियमाणेवण before वियमित्तही etc. 3.a कणसा बालिमणे, b उर्ण वि भड़, 4.b गव्यविएण, b किह, a मणु व, 6.b किह कण्ण, 7.a सुंबें गव्य होइज्जाहि, a काइ, a तहि, 9.a पयडंतह, b जिणहें, 13.b डियाए for दिञ्जाए, 14.b संबी परिच्छेड संमत्ती संबि: 11011का।१६४।।छ।।

८. अट्ठमो संधि

(1)

कर्णोत्यस्ति कथा

मणवेएँ पवणवेउ भणिउ एहि भिस्त जाइण्जइ । सोइयपुराणु जितंतहें बुद्धि विरंतण खिज्जइ ॥ छ ॥

चनवणे जाएविण पुणु बृहेण
सुणु जेम समायर कण्ण जाउ
नहो पुगु संतहहे बणंतएण
तहो लक्खणकत्तगुणगणविक्तित्तु
ते पुणु जणियच जार्यम् पुरतु
सुच पंडुरोयणुच अवरुजणिच
पुणु वि विश्वष्य मण्णिवि कुमार
पर पंडु पंड्रोएण भृत्सु
णच थाइ खणु वि खरुणीससंसु
गच चववणे एक्कहि दिवसे जाम
तहि कुसुमसयणे मृहहिस दिट्ठ
सा लेवि पंडु खणु एक्कु जाम

सुहि पर्भाणित खगबह तणुरुहेण।
सोमप्पहो णामे आसि रात ।
हुत संतण् काले जंतएण।
उप्पण्ण पुत्तु णामे विचित्तु।
पतमत णामे अयरदृष्ठ पुत्तु।
तें पंडु जि सो णामेण भणित ।
कीलहि मणि य पित लिकसार।
किन्जह अणुदिणु णियतणु जियतु। 10
कहमित रह करह ण परिभमंतु।
सुमणहर सुलयाहर दिद्दु ताम।
विस्तंगणाम खयरहो मणिद्ठ।
अच्छइ चित्तंगत पत्तु ताम।

वत्ता- पंडुहे मुहुँ जीएवि तें भणित मण्झु एत्थ कत्य वि पहिषा। 15 जीयतु व पिच्छमि सा ण हत कामरूवकर मुद्दृहिय ॥१॥

^{(1) 2.}b चितंसाहं, a बुद्धि चिराणीरि कचजर, 3.b प्रभणिनं, b जंदणेण for सणुरुहेण. 4.b सुणे, 5.b दुणु for पुणु, b अणतएण, 6.a गुणकण, 7.b अणियं धणुविन्दरएण, 8.b अणिनं, b भणिनं, 9.b पुणु विन्दर एम तिष्णि वि भूमार, b कीलोई मणि, 10.b दुलु for पुलु, b विगय तथु for जियतणु, 11.b कत्यवि रह सहद ण, 12.a एक्कहि, b लखाहर, 13.a ताँहै, 15.a पंडु वि मुद्दे, b भणिनं, a पहिया, 16.a मुद्दिया।

(2)

पंदु मणिड एह सा अण्छह
इय वेल्लंतें अप्पिय खयरहो
तेण वि काउ णिएवि कुमारहो
पुन्छिउ कि सरीश किसु दीसह
नाम पंडु पभणइ सुपहाणउ
तहो वरपुत्ति कुंति उप्पणी
एवहि मह रोइउ जाणैविण्
ता महु तहि रूउ चिनंतहो
एहावस्य जाय फुडू अक्खिउ
त णिसुणेवि चित्तंगर बोस्लइ
रूउ करेवि मणोहर गच्छिह

सुद्द अध्यय कि कर्य वि गण्छ ।
सर्थ मृद्धिय चिनस्त शिय गयरहो ।
कि कारणेग मिस्त तुद्ध सीगय ।
भणु मिस्तहो किर काइ ग सीसइ ।
अंध्यविद्धि अस्य इह रागय । 5
पुरुवयानि सा मृद्ध पंडियण्गी ।
देइ ग बिच अवहेरि करेविणु ।
विरहाणसजानां ब्रिस् प्रसिस्तहो ।
तुह पुन्छंतहो गृज्झ ग रिक्स ।
मृद्धिय एह कामक्षविणि सह ।
सुद्ध पण्छण्णह ताए सह अच्छाहे ।

घत्ता- अणुरत्त मुणेविणु णिय दुहिय अंधयवृद्धि णरेसरः । तुह देद अवसु आरत्तवसु ताहे सो वि धन्मीसरः ॥२॥

(3)

तो मृद्य लेकिण येषु तेत्व तत्य वि जगपच्छण्णे हुएण तहो वंसणेण तहो कंपु जाउ जाणेवि छइस्लें रस्तिचित्त यड येषु कयत्बु ह्वेवि जाम पायदु जाणेविणु जगणियाए मंजाउ पुसु लक्खणेहि जुन्तु खंगपुरवर परमेसरेण बाणविज चरि मजुयु जाम वालु वि किर णियकर धरिय कण्णु हुउ तासु बंजस्तहों सो वि पुत्तु यस पुरवर ससुरही तणन जेत्यु ।
दिसिस कुंतिहे अप्पाणु तेण ।
कंटह्य सरीरहे सुरयरात ।
सा रिमय तेण बासरह सस्त ।
हुत दिवसिहे कुंसिहि नक्यु ताम । 5
णिहुण नुयाबिय पुत्तियाए ।
मंजूसि खुटठू जरुणित खित्तु ।
दिट्ठत आह्रक्यणरेसरेण ।
उग्धीय वास्त दिट्ठु ताम ।
कित राएँ तें तहो भागु कण्यु । 10
इस पंद्रहो कण्यु पनुस्तु पुस्तु ।

^{(2) 1.}b मणिनं, b गण्डाइं, 2.a बोलंते, b omits लय मृद्धिय etc. ज्यारही, b omits कि कारणेण etc. . . . सीणन, 4.b काइं, 5.a ताब, b पंचायइं सुपहाणनं, 'a लंध कविदित, b जाम for बित्या, b राणनं, 7.b स्वद्धि यहं, 11.a लंडू for सुद्ध, a पण्डान्, a ह for सह, b सह, 13.a सबस कारत जस, b ताई, b वन्मीसन ।

षस्ता- पंडुहे अगुरश्त कृंति मुणिवि सा तही विष्ण णरेसरेण । तह अवर वि महि णाम तणय किउ विवाह पुगु आयरेण ॥३॥

{4}

वागाय कवा

तहो भायर परिविद्दहे तणया स्वयरद्दहो विण्ण पुन्न भणिया पंदु युज जेण ण को नि मृणिय पुणु भडणूडामणि भीमसेणु महीहि जणिय ने पुरत जमल ध्यरद्दहो पहनस धारियाहे स्वरसंदु णाम परनस नम्मिक एए स्वयस नि गुणर्यणरासि पडिस्नस्डमणी रह महियाहे सुय पंच नि पंडन सुनस्रहेड गंधारि णाम णवजोञ्चणिया ।
सोहग्गरासि मणसि य मणिया ।
कुंतीहि जुहिदिक्ल पुरसु जणिउ ।
पुणु अवसुषु अरिगणसवणसेणु ।
णामेण मणिय सहएवज्ञात ।
सड सुयहो जणिउ गंधारियाहे ।
महिनंद्रले होंतउ अदल्विक ।
तहो अदमहि सहोधिण्य आसि ।
कुंतीहि तिण्णि वो महियाहे ।
साहज्ज करप्पणु वासुएउ ।

भता-पंडुहे पञ्छहि हुस्सोहणेण सहु महिकारणे करेवि रणु। 10 बाह्य हुमेवि सुहिपरिसरिय णिम बलेण बिर रज्जे पुणु ॥४॥

(5)

चिरु रज्जु करेविणु गुणमहंत सम भाविय सुहदुह सरतुमित्त तउ निव महीयलि परिभर्मत । माणावमाण कय सरिसमिस्त ।

^{(3) 1.}b तणरं, 2.a पण्डमें, 3.a तहि for तहो, 4.b वासरदं, 6.b णिहुअं हु सुआविय, a. rubbs the two letters and writes ण after बिहु, 7.a सम्बागिह, b छुद्ध, 9.a मजूसु, b मत्यविच सो मंजुसु ताम for आणाविच etc. . . जाम, b उपाडिय, a omits उप्चाडिय etc. . . ताम, 10.a णाउ for णामु, b मण्णुं, 11.a अच्तरं, b पंड्हे मण्, a व्यव्युत्तु, 12.a णरेसरेणा, 13.a आगरेणा।

^{(4) 1.2} तह, b तिषय, b • जोम्बिणय, 2.b अषिय, b मणिय, 3.a पंडु बीज्येषि य को सुचिछ, b मुणिर्ड, 4.2 अञ्ज्जा, a सर्विषसेष्, 5.b महिषहे, a सहएछ, b सुपहं, a ग्रेषारियाहे, 7.2 जर्रासध, 8.a वो महियाहि, 10.b साहिज्ज, a करेबिण, 11.2 सह, b तण् for रम्।

वावीसपरीसह खीणयस्त तिंह जिल्लास विय तन् परिहरेवि जिम्मन् वाक्रिरिव सुक्तज्ञाण् वयमोक्षको सासयसुहहो तिज्जि गय लहुय जाग सन्वत्यसिद्धि कण्णाइ एम उप्पत्ति मजिय कहि सुरवर कहि माणव नराय कहि एकक बहुय बहु हवेइ सत्तं जयगिरिवरसिहर पतः । उवस्य वोष अरिकिड सहेवि । उप्पाएवि केवस् विमस् णाणु । ईसीसि कसाउ वहेवि विण्णि । अवरहे नवे अवस सहंति सिद्धि । ण वि रविज्ञमपर्वाणदेहि जणिय । अवडिय संबंधासान भाग । तं वोल्सिजह जं संभवेद ।

10

5

घत्ता- अण्णारिसु भारहु बिस्तु जणे अण्णारिसु वासे भाषात । गट्टुरपवाहुगासिडाजणेण अलिउ वि तं सञ्जल गणिउ ॥५॥

(6)

महाभारत कथा समीका

मारह विरए वि बातें संकिछं इय चितंतु कहि वि छवि गंगहे वालुयपुंजु तीरे विरएविणु अहिणाणस्य फुल्सु सिरि देविणु तो लोएण वि पुंजु करेविणु बासु जाम किर तीर बिरिक्खइ को लोएँ किय को किर मई किछ देववियण्णिय लोयसमूहें तो अण्णाणित जणु मणि मण्णइ तो वरि भायमु जान सम्हारत होइ पसिद्धु ण पाइउ मद्द किउ।

ण्हाणकज्जे गउ विभलतरंगहे।

तिह तं भायणु गूद्धु छुहे विणु।

ण्हाद जाम सद जले पदसेविष्यु।

पुस्तिह पुण्जिय लिंग भणेविणु।

मालुयपंज णिरंतर पेक्खदः।

एउ वि ण वियाणदः मणे विभिन्न।

ते जह भंजिम भायण लोहें।

वासु करेबि देउ अवगण्यदः।

अयसप्ष्युं भंजाने गहसारतः।

10

5

^{(5) 1.}b रज्ज, 2.a मेन्तु, b सम for कय, 3.b सित्तंजय, 4.a तहि, 7.b अवरहि, 8.a उप्पच्च, b ण उ, b ॰पविश्वदेण, 9.b किंहू माणवि, 10.a किंहु, b वहुय, b repeats वहु, 10.a वील्लिज्जह, 11.b जणारिसु, b भविउ, 12.a बहुरि॰, b गिन्नउं।

^{(6) 1.5} मइं, 2.5 एउ for इय. 5 कहि मि, 5 व्यर्थिहे, 3.2 गृह, 5.2 पुंज, 2 फुल्लिहि, 7.2 मइ, 5 वियाणइं, 9.5 अध्वारिणचं, 5 मक्लाइं, 6 देव व्यवण्यइं, 16.2 कर, 5 व्यक्तरचं, 2 अवसु पुंचु, 2 व्यवण्यइं, 16.2 कर, 5 व्यक्तरचं, 2 अवसु पुंचु, 2 व्यवण्यदं, 16.2 हंगई वहें, 5 इ for इय Cf. अभित्तमित धर्मपरीक्षा, 15.64-66.

पत्ता- जानेतिन् जम् शमाणुमद्द कय रंगावनि सहहो। भरदहु पसिद्धु फुहु हबद जद इय मुणैवि गस्तेहहो।।।६।।

(7)

यतानुपतिको लोको न लोकः पारमाधिकः । यस्य लोकस्य मूर्खस्य हारितं तास्रमाधनम् ॥५॥

हय मिसहो भारहो भारितिणु अवह वि परपुराणु दिरसमि तुह इय भणेवि होएविणु वंदय तिह पुणु वायसास पह सेविणु कणयहो बीदे खगाहिवणंदणु एत्थंतरे दिय जय जसकारणे पभणिउ तेहि वियम्खणु दीसिह वाहउ हण्ड भेरि किर एविणु पह पुणु सस्यचाणमाहर्थे तो रसंवरेण पडिखंपिज माणसबेउ मणइ वि हसेविणु ।
एहि जाह पुजरिव विययरसह ।
विक्णि वि पंजनवारें पुरि गय ।
हेलए पेरियंट वाएविणु ।
बिज लीलए परवाइ वि महणु ।
बुक्क महाभटाहं भडणं रणे ।
कि अजिणंतु महासचि बहसहि ।
जय थंटा पुणु वाउ जिणेविणु ।
तिर्णिण वि कियह झिल णियहर्षे ।
इय वयणें मह हिमनउ कपिउ ।

धत्ता- हुउँ सत्यु ण-याणिम वाउ किह करीम बुहेहि समाणउ । कोऊहुलेण इउ समसु किउ खमहो ण होमि समाणउ ॥ ।। ।।।

(8)

शृगाल कथा

तो दियवरहें वृत्तु कि दिक्किय कि परमत्यु तबित किमाइय ता तें भणिड भणिन जइ माबहु तो दिय भणिह संच्यु बोसंतहें कहि अध्विय कि सत्युग सिनिस्य । कहि पयद कि कज्जे आह्य । इय महत्यभाउ दरिसावह । को पहिंकूल हुबई नयवंतह ।

^{(7) 1}a लेका न, a पारमाधिका, b परमाधिक, 2.a पस्य adds after in अर्थ क्लीके चकारा श 3.b क्यूक्ट विम क्षेतिण, 4.a दश्सीम तुहू, b जाहु, 5.a होएकिक्यू, a पुष्कवि for पुरि, 6.s तहि, a वएविणु, 7.a कंप्यविके, 8.a सहाझ, a रणि 9.b पमिलकं, a त्यस्माणु, b वहसहि, श्चे, क समझ, b हमई, 11.a वह, a कयह, 12.b क्यूक्टियंत, 13.a हम सस्य प्र माणवि, b जिहु करणं कहेहि समाग्रनं, 14.b समाग्रनं १

रसंबद पथणह जह एरिसु
एरम् जि पुन्वदेसि पंडियमरि
तें विहारि सन्दृह विध्नि वि जन
नवर पणामने यमजस तिसह
गृह रसंबराह किर रस्बाष्ट्र
सहो भएण दासह निन्हेदिन्

जिसुजह मध्य कहा जड बारियु ।

मह पिड बुडमस् स्थितकार्युरे ।

पिडड समण्जिय विजय मण ।
सो सजत्य जहि साहित खिसाह ।
सोण्जि सियास एंत हा येक्सह ।

अस वि जिन्मिय जहि सहित्य । 10

घता- को बास्य जाति वहि करह रत्तिषम्यु ता मिश्यम । जं बूबेहि शृह मण्डीह सहित्र उच्चएविणु गहे सम् ॥८॥

(9)

जोवण वसीस कमेवि तेहिं
भविवज्यहु भुश्ववसेण जाम
सुणहहं भएय ते णट्ठवेवि
पारिवएहि तेहि वि समाण
जियदेसु विदेसु वि ण उ मुणेहु
पुठ्यं चिय सहु केसई सिराई
तजविर रसंवरवड घरेहु
इय वज सएवि महियनि भनंत
तो दिय भणेहि जे मुट्ठ आसि
ते भणिड कि ण एयारिसाइ

बहर्राह मेल्लेबिण बंबुएहि। समुणह पारक्षिय पंत ताम। अम्हद पुणु बृह्हों उत्तरिब। गय एक्क णयर पथकंपमान। चितिउ एवहि किरं कि शुबेहा। 5 एयहँ साहोणहँ बीयराउँ। घडियहि सर्लाह भोयणु करेहु। बहुकालें बुम्हह भयर पत्त। ते, गंजिवि तुह किउ अलियराति। सुम्हाण पुराबह बारिसाइ। 80

^{(8) 1.2} कहि, 2.5 परमस्य, ६ किमाइय पगढ कि किन्ने, 3.6 क्रष्ट क्षित इग,
4.5 मण्ड हि वोलंताई a amits को पिड कुतु हनड नमनंताई, 5.5 पर्मश्रहींह
5 पड़ं, 6.2 बुद्ध भन्द, 7.5 साम्हरं, a पढहु, के पछितं, 8.5 सिलाइं,
2 की समस्य का आवनेनकीसह, 5 किन्तरं, 9.2 रत्तं वस्य, a स्वकही,
10.5 वाताई, a उप्पत्ति न्याम बूह for स्वतः विभिन्नम पृष्टि,
11 क्षानिंद, 5 मूनारच तर्हि किरहु, a स्लामिन्स, 12:a बुवाब बू,
क सम्बृष्टि, a सन्माद्दि खड़े न समा।

^{(9) 1-}a पंति रिश तेर्दि, छ अडहरे, a अंगुएहि, 2-b ससुनहं, 3-b सम्हरं, 5-a विदेश्वं, b एवंहिं, 6-a केंसर सिराइ एवर साहीवय चीवराइ, 7-b तीवरि, a वॉडियर्डि सलाँहि श्रीपुव करेड्ड, 5-b गाँहि, b पुटं, छ-b श्रीवर्ज निर्म्य ह्यांच्यार्टं, a पुराण पुराणहं, छ पुराणहं जारिसाइं, छ-b चलाई पुराणहं, a क्यार, 12-b व्यवनगरं।

वता-दिव धनहि पुराणहि असिउ जइ तो कि न उ पयहिण्जइ। विदुविविषु विववरनयणम्ह वंदएण पमनिण्जह ॥९॥

(10)

राम-रावंच कवा

जहयह सीमसंगे वियम्बणु ताँह जरमूक्यु रणे मारेनिणु मायाकणयहरिणु दरिसेविणु एत्तहे जा पियनाचररायहो सो रामें रणें बालि नहेविणु मागाउ पेसणु परजनयारा भणह रामु पियनिरह सुदूसह तो सुम्मीचें बरिकरिकेसरि दिट्ठ सीय पुणु तेच णवेविणु हणुए संक निद्धंसनि आहय गउ वणवासहो रामु सनस्यम् ।
बण्छह जा ता राज्य एविण् ।
गउ लंकाउरें सीम हरेबिण् ।
विल्णाहित्तमज अणुरायहो।
विण्णु तासु तो तेण णवेबिण् ।
मणु मणु कि किल्जह णरसारा।
केणवि णिम महु कंत गवेसहु ।
पेसिउ हण्ड पत्तु संकाउरि ।
आसासिय पिमवसण कहेबिणु ।
रामें सियदंसण अणुराहम ।

10

5

भत्ता- वाणर करउच्चाइय वि गिरिहि उयहिसेट वंदावित । सुगिवें पूण् सेणासहित राहुत संकहि वि पावित ॥१०॥

(11)

इय वम्मीयमहारिसि भासिउं नो विएहि परिउत्तर दिन्जर्द तं जिसुनेवि माया रत्तंबर पंच चयारि तिन्मि दो विरिवर तं पि सम्ब मन्निउ तुम्ह हि वहि अह्मा कोउ जि एरिसु भासद एक्षु पम्मंयु पंच गिरि केविंगु तो दो खंकय कर्षय जोयन ब्रिस्य कि ण जं मह उदएसिउ।
एउ ब्रणारिसु केम मणिकजह।
मण्ड पंगदबाइ पंडियक्द।
नेवि वंति वहु कोयम वाणर।
मह सासिड पमाणु कि णउ तहि।
पूसंतर म क्याइ वि दूसह।
पूरि जाइ जह जहु संघेदिणु।
सुहु ण जिति अम्ह सायणक्य।

^{(10) 1} a रम्, 2.a तहि, 3.a मासावाणबहरिष्, 4 a बिनगहिस्त , b विलिणा-हिस्समन्य, 5 b रणे बाद बहेबिष्, b दिख्या, b द्या for तो, a गवेष्पिण, 7.b अवहं, b inter णिय and मह, 10,b हमूएं लंकविहंसय आएं, b अमुदार्य, 11.b ossits वि, b गिरिहें, b उवहिसेस, 12.a सेणसहिस, b omits वि !

एरिसु वयणु सच्चु जद्द शासह कि वहुएण जुसि जासोबहु तो महु वयम् काइ उबहासह । दिसह मणिय मणि संसउ डोयह । 10

षता- मजवेए पुणु तहि सुहि भणित सुमीवाइ ण बाणर । तह रावणी वि श्वसासु ण फुडु समल वि विश्वसाहर ॥३३॥

(12)

विद्याधर वंशीत्पत्ति कथा

णिनुणि जैम एयह सुपसिखद जहयह रज्जे धविनि भरहेसर भनियज्ञणमणकमस्विणेसर एतहे णियसालय देसंतरे पेसणु मारिनि गुण अणुराहय कस्टमहासम्छ हिनतणुरह पमणहि णाह कि ण संभासहि अम्हद सामि कि च अवस्टिहि महियसु भुंजानित णिय सुयसन अहमा काइ एत्यु कोऊहसु इय जा तेहि जिणम्यद जंपित अवहीणाणे क्षत्र मुणेनिणु जायइ रमस्तानरिष्यं ।
सिउत्वयवणि पढमिस्निस् ।
पित्रमा जोएँ विश्व वर्षेस्य ।
जाहि जिजु तिह जमिषि ण मि पराइम । 5
जिजु पणवेविणु विश्व पासिह बृह ।
णिक्मर पुन्नजेह ण वसासिह ।
णिक्मर पुन्नजेह ण वसासिह ।
कि ण पसायाहि रणहि मंबिह ।
कम्दह बातावेण जि संसद ।
क्रजनराइन सम्बह सीयम् । ।
ता धरणिवहो आसण् कंपिन ।
तुरिन जिणियपस् बावेविणु ।

- (11) 1.b किस विद्व यहं, 2.a हिकाइ इउ अण्णारित्, 3.a सं सुणेति, b भण्यहं प्यंत्रवाई वंडियणह, 5.a तें पि, b मण्यिने तुम्हाँह जाहें मधं, b तडि, 6.a सं from पुसंसद is corrected as सं in the margin, 8.a जीयम् मुद्द वाजंति, 9.b काई, 10.a मण् संसद, 12.a तेह for तह।
- (12) 1.b एयहं, 3.a शवियणजण, b तदलेविण भवियकसलणेसक, 4.a ब्रसि, a तित्यंतरे, 5.a जह जिल्लु तद्दि 6.a पणवेप्पिण जिल्ला पासिह भासिह for जिल्लु पणवेविण . . . etc. वृह b पासिंह, 7.b पसचाहि किण्ण णाह संशासिंह, b क्यातिहाँ, 5.b कविक उनुवाहि विश्ला, b विश्ला एकाबाहरमदं वंबाह, 9.a adda विश्लु कल्लोण बेह कि रंबाह before महियक etc. . . a व्यक्त, शि.b कार्य, b कल्म, b सक्तां, शि.a वेदि, 13.a सार्थ, 14.b पच्छण, b सन्य, Cf. पर्यापुराण 5.1-562.

भरता— जिल्लाक विजिधिति कणियहणा झाणासंदिय वा हो। विकास विज्ञानकेण वच्छकण् किंत्र सम्बक्त जिल्लणाहहो।। (२।।

(13)

राजसबंबोत्पस्ति क्या

झाणु समिनित्र हर्श्ये फंसेनि पुणु सुरमरनिष्णाहर पुण्याउ पणनिति जिण पिडिनिय फींगदहो उत्तरवाहिणसेडिहि सामिय पुरिसपरंपराए मयहंतिए तहि पसिक्षे वेयस्कारिहरे पुण्याहेषु गामें स्वरंसय ताम सुसोमचेय स्वरंसे णवर पुण्याहेषु ग रणंगणे तो तहो गंवसंण सह सम्बं महुरालाउ सम्बोहल मासेवि ।
दिम्बाइ धर्णिवें वेविष्या ।
वय सविष्य वेयद्द्वितिरिदही ।
वाय गरेंदणह्याय गामिय ।
वोलीमह वहु शरवरपंतिए ।
रहमंजरियमकवालए प्रुरे ।
रण्जु करह णं सविग सुहेसह ।
वेदिन पुरवर वाह्य रोसें ।
तहो सिह खुडिन मृद्द्य अमरंगणे ।
पुण्णमेह हुन ह्यप्डिवस्थे ।

10

षरता- तो पुष्णमेह र्णंदणु समरे परिसेसिय णियसाहणु । रणे सहसम्बाहो मिल्लेवि फलु णट्ठउ तोयदवाहणु ॥१३॥

(14)

हंसिबमागें णहे गण्छंतउ पणिय मणुयमुरासुर्विवहीं ताह अयरेसरेज मं भासिठ भणित सुरिदें भर मिल्लेबिम् जियु पणवंतह अरिम्न फिट्टइ जिम् पणवंतह वियसह कमिमन् तो सहसम्बद्ध वि तहो पहलग्गर माणवंसु अवसोइट जावहि विण्य वि विश्व अप्यायन प्रिटेबि सरण्ण कोवि कहि मि पिक्छंतच । समस्यरण गज व्यक्तिविवही । ते सवहहबङ्यस् उच्यासित । जिल् पणवहि करमज्ञि करेविण् । लिविड् वि जिथ्याणिवंद्वण् सृष्ट्रः । सुहणिहाण् उप्यज्ञः केवल् । सत्ति पत्तृ तहि कोववसंगठ । माणमस्प्यत्र विह्वित ताबहि । णरकोड्ठए जिविद्ठजिण् वेविव ।

^{(13) 1.5} समेहर, 24 पुण्या, 5.2 inter. यह and गरबर, 6.4 तहिं पसिस, 7.5 स्था, व बुरेसुर, 9.6 समस्यामें for समस्यामें, 10 स तहे, a स्थ, b इन इनं प्राविध्यक्तों, 2 पंडिपन्यों, 11.2 ochits जिथ, 12.5 रखे, b सेन्सिक्त् ।

पत्ता- वृत्वंतरे रायं णिसिवरह शीयु पुर्णीमहि बुत्तच । प्रथमहिष अन्दृह पुरतु तुह्न होत्तव आसि णिस्टतचे ॥१४॥

(15)

रक्स सविज्ञ तेहि सहो विज्याद विज्ञान जनमृहकंडाहरूबन जोयणाह वीनसरमण्णी बयर वि छण्जोयण वित्यारें तहो जाएसं महिय पताहणु रक्स सध्य स्वयरहु पढमं मुख् घडियाहरआहणणरमालए गय तिसद्धि सिहासण जहयहु सिरि सुजतहो गुणअणुशहन खयरणाह सिरिसंह महाहन गेहबसेण कि ग किर किण्यह ।
तं सिरिफल् वं निहस्दुव्यक ।
सुरणयि व संकाजरि विण्णी ।
सह वायानलं कर्मण सारें ।
संकपहर्ट् गंपि यथगाहणु ।
सीसए रज्जे परिस्ठित मं सुर ।
परिमलियए लीमए वहुकासए ।
किलि धवलु उण्णज्जह तहयह ।
तहो महएविहि लिख्छहि भायत ।
रयणत रहो होंसन तहि बाहत ।

10

5

धरता- सम्छद्द वि कंड वि वस्तरह तहि जियणवरही जो जल्लह । सहवेहाउरु भयरहियउ किति धवलु ता वोल्लह ॥१५॥

(16)

वानर यंशोत्पत्ति क्या

ज माणुसु णिवडइ संपियारचे तो वरि एक्कस्य वि अण्डिज्जड तं फल् दुक्कियकस्मही केरत । मज्झ विहूहए संयक्ष् वि पुजंबह ।

- (14) 1.a कहिंग, 2.b व्यंदही, 3.a तहि, 4.b भणिय, 5.b पणवंतहं, a णिगड-णिवंश्चण, 6.b पणवंतहं, 7.a पहि for पइ, a सति, a तहि, 8.b अवलोइय b तावहि, 9.b अप्पाणवं, a.वहट्ठ for णिबिट्ड, 10.b पुण्डंकाहं ताहं, a दरएवं, 11.b राग्यं, a भीमसुवागहि, 12.a वम्ह्ट, b तुहु, See the परापुराण of रविषेणावायं, 5.96—148 for Bhavantaras of नेघनाहरू & सहस्रकार के others.
- (15) 1.क होति, 2.क स्थानुतुं, के कंठाहरणनं, के विह्युक्षरचनं, 3.5 जोगणारं, 4.6 संस्थय, 6.6 समर्गं, क वरिष्टुक, 7.6 सर्थाए and in margin, के सर्थाक परिवाहरणाहरणवालाह पाठीतर, 3.6 सुर्थाहं, के पाइन, 10.6 सह कि नाहन, 12.6 सह कि सह कि समर्थाहं । 12.6 सह कि सह कि समर्थाहं ।

जं जं कि पि महु वंदि चंगर महु सिरिकंटु अमेपइ दीवइ ताहे मज्झे जं भावइ चित्रहो सम्भावणहि भंगु जींह किज्जइ मण्णित भयणीवह अन्मत्यित तेण वि दिण्णु तासु अवियारें दिट्ठु तेण तहि चिन्कांज महिहब तहि वाणरहि सम्स्र कीनंतहो तं तं सथसु वि तुष्मु जी जोग्गंछ ।
भूंजहि णाणारमण पर्दवह ।
सह किर कि गठ दिण्जह मिसहो ! 5
सिरमु जलंजित गेंहही दिण्जह ।
सामरबीड तेण सो परिय ।
गठ सिरिकंठु समन्न परिवारें ।
किक्सीड गाम करावित तहि पुष ।
गठ वहु कालु सुक्यु भूंजंतहो । 10

घता- विश्व रज्जु करेबिण तउ करिवि गउ सम्महो सिरिकंट्पह । तहो लम्मि वि णरवह ठणि पुणु हुउ णिउ कामें असरपह ॥१६॥

(17)

एतहे किस्त धवन संताणइ
विमलकिस्त लंकाहिउ जायउ
तहो सुय समर पह हे परिणंतहो
ते पिच्छंति अस गम णववह
मा रहो तं में मामर कि सिहिय
सिरिकंठहो लग्गेनिण वाजर
णउ दिज्जइ बाणरहो जि मामें
तो तुद्ठेण तेज पोमानिय
इय धणवाहण्य रम्खन्निंसी
हुउ पसिद्ध पयद कि सि सीसइ
धणवाहण्यसहो हुउ राषम्
सल्दहे उप्पण्णमहाजर

गए सत्तमणरेदि सुदृषाणइ ।
वो हु वि विजनु णेहु संजायन ।
मज यणि विलिहिय वाणर तहो ।
भृष्टिय जा ता कुद्दल अमरपहु ।
संतिहि ताम कुलदिरुद्धि साहिय ।
जायद्द कुलदेवयाद्द णरेसर ।
वाणरदीओं जि आयहो णामें ।
मजहि छत्तिस्याचिहि लिहाविय ।
सिरिकंटु वि बाधरचिहि ।
करि संक्ष्यु कि आरसि दीसद ।
धुन्गीबाद्द्य सिरिकंटहो पुणु ।
भनिबिक्तिहु वंसि जे वाणर ।

नता- वाणर तिरिक्षकाइहि भिजया रक्षक पुणु सुर वितर। रजु मिसइ ण वांगर रक्षसही किर ए बहुर्ततर।।१७॥

⁽¹⁶⁾ La णिष्यबर, 2-a एकत्य, 4-b सिरिकंठ अधेयहं दीयहं घुवाँह, a देवह, a पहेंग्रहें, b वहेंग्रहें, 5-b गरं, 6-a घाँहें, b किव्याहं, b विक्याहं, 8-b मिलाहं, a सम्बर्ध्य , b अव्यक्तियं, b विष्णुं, b महं सिरिकंठ् समर्गं, 9-b तेण ताहि किव्यु जि जान्ति कराविश पुरसर, 16-b वस्मितिह, b गरं घडूं, a समर्थ कि सुवयु, ३-La करेंबिणु, b तरं, b सिरिकंठ् पृषु, 12-a स्वस्त् for गरंबह, b ववरहं।

(15)

जं विष्याहर विश्वावशेण
त हवइ कयाइ वि जह हवेड
परवालि सुगीवही कलत्तु
लहुभाइमहिस गुरुभाइयासु
जिक्किट्ट वि ज उ सा अवहरेड
सुणि गिरिवियादिक सच्छीसणाहु
तहो तणिय तणय जामेण तार
मगातेण वि च वि सक्ष कच्चा
जा सुविहिय सा तहो सुमारि
अध्याणु पुण्णहीणड गोनिव

उच्चाह्य गिरिक्स बरिछनेण ।
वंधणु वि समुद्दशे संभवेद ।
किर हरिउण एरिसु क्यणु जुलु ।
जियधीयसरिसएउ जणे प्यासु ।
कि वालि महाणव आयरेद ।
उत्तरसेडिहे जसमसिहुमातु ।
कहसगद समे से वार वार ।
विउचा सुमीवहो जसर दिण्ण ।
अवरवरहो पाविय विरहमारि ।
वंणि यिउ विज्ञासाहणु मुनेवि । 10

घरता- वह कालें कंजियभोयणेण वह विज्जउ साहेप्पिणु । सहसगद णियद सुगीवछन् तारा खेरि वहेप्पिणु । ॥१८॥

(19)

एक्कहि दिणे किर **पुग्मीड** जाम विज्जावलेख सुग्मीवरूछ मुग्गीख वलेखिणु तक्खणेण वाराविख खिड धग्गाणुराख सुग्गीखव जुयले मोहियमणेण वेणकीसए गउ सहसगइ ताम । करिकण पुत्तु तारासमित । पइसइ ता विदेण वियम्सणेण । पेन्सह जारु वि वरसामि जारे । पद क्रप्यु ण जाणिर परियणेण ।

5

(17) 1. स संताणई, b जेरंदसुहबाएई, a सुहबालए, 2.b सकाहिउं जायनं दोहि मिन्नियइ णेहु समायन, 3.b अमरपहृदि, b माई for मन, b inter. विलिहिय and नाजर, 4.b जवनहुं, a adds जा in margin before मुन्छिय, b कुयन अमरपहूं, 5.b ति जि for जं जें, 6.b जायई कुलदेनइ 7.a णा for ज न, b विक्रमई बाणरह मि यामें, 8.b पीमायन, b निधि-ध्रमहित, 9.a बणानाहणू, b नणनाहम, के बाजरिकों, b नाजरिकों 10.b हुनं पविद्य प्यसन कि सीसइ, b कि दप्यणु वीसई, 11.a वंसुक्वन राममू, 12.a विक्षमिह, a वंस, b पह for जे, 14.q विलई म नाजर-स्वसही, b नद्द जीवर . . . ।

(18) 1.b adds विहार बहिट विश्ववाहर, b उच्चावहि, 2.a बंधवही समृब्दु य संवयेद, 4.b वय for जवे, 5 a उवहरेदे, a मेहाजर, 8.a मयांते तेंग य सब, 9.b सा पूर्ण for परिवर, 11.a साहेविश्, 12.5 निवर । वदोदी जायउ स्यल् सेम्य् विडमहरो सत्त व्यक्षोगहीरे सत्तिहि सुद्ध खलवस कालपासु स्रसिक्टियें वासिहि परिणेण उच्चद वह ठ्यक्टु मरह अज्जु वहर्षे सुग्नीवहो पुरन् भिण्ण् । सह मिलिड बंग् अरिखोहणीहे । अंगड पुण् थिउ सुग्नीवपासु । तारा रिक्सय रिउमहणेश । जो जिणह सतारड तासु रज्जु ।

10

भरता - तामंतरि भिडियइ बलइ रिंग मंतिमंतु तामंतिह । जुज्याच वयक्ष्यव विज्ञवसु कि विहियहि सामंतिष्ठ ॥१९॥

(20)

ता मूल णराहिक अविकडिया
दोहिमि किर गुर संगामु जान
अवमाणिन ति सुग्गीबराउ
एत्यंतरि सर्बुसम् बहेबि
जन्छइ अहि राहन हियकलस्
पणवेबि रामु ति भणिन एव
ता पुष्किन वहमन राहकेण
विक सुग्गीवें एयहो कसस्तु
संपस्तु एष्टु सूरस्यन जान
तुम्हहँ पयान जाणिन अमेण

णं वेवि करि वसमाविद्या ।
सहसगइ वि वहु विज्ञासहाउ ।
हिडइ वर्णणं वणु गटठच्छाउ ।
सत् विराहित गिरु करेबि ।
पायालसंकं सुगीत पत् ।
हर्जे तुम्ह सरणु अणुसरित देव ।
एत्यंतरि नोल्सित खंबनेष ।
अवहरित रज्यु ति कलिमसंतु ।
सुगीत कयदय खयरराउ ।
वं खरबूसण हयलस्खणेम ।

10

5

घत्ता- परितायही जा विवरीय मई पियविरहेण था किज्जह । यरकज्जू सक्त्यको अम्बस्य उत्तरमध्यरहि मणिज्यह ॥२०॥

^{(19) 1.}a इरकहि, 2.a करित्रण, 4 a समापुरात, 5.b जुबल, b जाणित, 6.b सेणू, a देववें, 7.a ॰ मकह, a जनकोहणीहि, b सहं, a अरिकोहणीत, 8.b सस्तिह सर्ज, 10.b जिणहं, 11.b भिवियदं बसदं, b तामंतिह, 12.a मुज्जह, b मुज्जलं, b विह्यहि।

^{(20) 1.} b ती, a जराहिय, 2.b a वससमगर बहु, b सह्तगरं, b विज्ञासहर, 4.a चर्तुसम, a तहि, b विराहिर्स किर्त, 3.b अच्छरं वहि राहर्स, a कारत, 6.b ति मिन्नतं, a हस, a अगुसरम्, 7.a बहुपक for बहुपत, 8.a रुव्य तें क्यमसंपु, 9.b सूरर्य, b विषयम, 10.a सुम्हर्य, b वयारं वोणिन, 11.a कि कि का 12.a प्रकल्य, b अन्यसम्, b ग्रामिकहरं।

(21)

रामे विश्वमविरहाउरेण चितिए कि जीवते गरेन सं जीविड जहि सुहि जिंगराउ भवभारव शेवहें करमभाउ जोव्यम् वियवत तय बरण एण अह विषयण सुरया चरषएग जह सरणायय भय वासणेण परधणअहिलसु ण होइ तेण ता करीम सहसू परिषठ अणेण किक्किश्चपुरहो वड राम् जाम सुगीवहा भिडिया रचे पगंडू सिंजिं ता हुय टंकारएण

समदुई वजेनि करणाधरेण। जी अबहरमङ् पष्टिङ परेण । मुणिवर बह वाणिवहाणु राउ। वक्ते विहरत शहरा शामात । अह चिक्जर परस म पारएम। मरणविहि विहिय सन्गासणेग । सयल् वि परदारपरम्मुहेण । जहि परखवाउ व उ बोस्लिएव । इय मंतिकच सह णियंचयेच । जिग्येविण् विद्यसुग्गील ताम । 10 वामेण ताम कोवंडदंड् । ययविज्ञ कामकविचित्रएण ।

5

घस्ता- ता रामे कट्ठे सिरकमणु वोकिवि विबसुमीबहो । तारापिययम रज्जेण सह करे लाइम सुखीवही ।।२१॥

(22)

तारा दाणें णं जीवित दिण्नर्जं जीवज गर जो परजनमारड उत्तम् परदुक्वे पीडिण्जइ तार जाय पुणरिव सुम्गीवहो जो भ कण्जपरिणइ परिभावइ जो हरिसे ण करव विणासइ परवारहो जामें सिजजजह वं परवार सुबब् बहिणीदेउ एरिस साराहरण गसिवन

एम कवणु वालइ पडिवण्णाउँ । रामचंदु जिह लोय पियारछ। अहमह अण्णकाष्ट्रित जीविवजह । मरणु जि केवलु विडसुग्वीवहो । सो अहरेण महत्वय पावह । ता युवरिणि घरसंपय दीसह । अयसु मरण् बहु दुहु पाविज्यह । सो भवे भवे दूहर वर्णाणवित । अं परत्तु तं अप्पहिषद्वतः।

(21) 1 8 सम् युद्ध, 2.8 जीवेते, b अवहत्वर् & पराउ for परेण, 3.b जिंगयराउ, a दाणिवहाण, 4.a वयभी बहुवीवह, 2 विह्वत, 5.b कोदण, a. omits बह विकास परंड व पारएवा before क्षष्ट्र पिययम etc. 7 a. omits त्रवासू वि etc. to line किया व व वोश्विएमं, ई.b होई, b परवाड, 9.b की for ett, b सर्व, 10.a कार्य for काम, a सीप, 11.a. omits सुम्मीयही टाट के मान क्षिम कामक्षिणमध्य, 13.4 विद्युत्तीही, b विश्वस्वहो, 14.b संह t

प्रवाचिय जिह्न एउ अजुसर

तिह अवरु वि विहड्ड परवृत्तत ।

10

भता- किर वागरेहि शिसियर हणिय एउ वि अलिउ पेसिस् अणे । विज्ञाहरसेणिह शह वस वि काई करइ हरिसेणु रणे ।।२२।।

> इय धम्मपरिक्खाए चडवागाहिद्ठियाए चित्ताए। बृहहरिसेणकवाए सद्ठमसंबी परिसमत्तो ॥ छ ॥८॥ छ॥

> > * * *

^{(22) 1.8} विष्यात, 2.8 समझ्यु, 5 लीड, 3.5 बहुमें, 4.8 केवल, 5.5 व्यरिणइं, a महावड, 6.5 हरिसेण, क कच्य, किण्णासड, 7.8 व्यस्, 8.5 में for मं, a सोरयू, 9.2 पविश्वतातं का परलु तं, 10.8 जबर, 11.8 वागरेहि, 12.8 काह, 14.5 परिस्त्रें सामतो, 2 संवि ॥४॥

९. नवमो संधि

(1)

फविट्ठखादम सवा

होएवि सेर्यंवर ते खेयरवर छट्ठें वारि मणिभूसणे। गय वंश्रणसासहे सरिख लहे चिउ मणवेउ कणयासणे॥ छ ।।

णवभेरिणिण्णाउ सुणेप्पिउ
दियवरेहि आवेविणु पुष्ठिय
वाउ वि कवणु को वि तुम्हह गृह
जाणहु भम्मह सत्सु पसत्पष्ठ
किञ्जई मोहिबि सो पर जाणिउ
गृहणा विणु तउ लहुउ णिहत्तउ
वहतंडिय आलाव मुण्विणु
ता सेयंवरेण भासिज्जइ
मुज्जरत्त वंसहहा पहुणु
गृद्रशेषुथाहि हुक्शंतिहि

बायउ को थि बाह जानेन्यिण् । जागह कवन सत्य कहि नित्या । भणद ताम मणदेउ सिर्वय । बाउ वि जि माणड बसमस्य । सवह ण सत्यवाष परियाणित । तं णिसुषेविण् विष्यहि बुत्त । चियवहयर कहेहि भावेविण् । णिसुषह णियवित्तंतु भणिज्य । मज्यु ताउ तहि णामें मोहुम् । गच्छद कालु जाम सुष्ट्रपंतिहि ।

10

चस्ता- एक्कहि दिणे जरियउ ता वरि धरियउ ताएँ बदुबालउ । हउ रक्ष्ममि बाएँसहु लइ माएँ जा गदुरउवालउ ॥१॥

(2)

तामइ पणि किष्ट्ठतर विट्ठउ
भणित समाइ एहु एत्यंतरि
हुउ वि किष्ट्रह्म सह भन्योविण्
गहुरमम् वणिम णिएविण्
रव भणियिमा एहु किर णिगाउ
कत्तियाइ णियसीसु सुधीविष्
ता सुहिएन बल्डाह सदाइ
तिति सहिष जा तहि तींबर
एत्यंतरि वंतिह होडेविष्

परिणयफसहय पुर्दु विसिद्ध्य ।

तुद्ध वासहि मेडियन वर्णतरि ।

अवरु वि तुप्तमु णिमित्तइ सेविणु ।

पण्छद वण्छ मिलमि कावेविणु ।

तामद तर मण्णेविणु तुंगल ।

घरिनल तहि हत्यें पित्लेविणु ।

मज्मु सिरेण कविद्युर खड़द ।

ता फसरस परियुर्ग दंडन ।

यह स्रसारें तरसिंग गडेविणु ।

धाता- वा तित्यु विमन्छिमि ताम ण विन्छिमि नहुराउ कस्यवि वयउ । सम्बद्ध गन्धित्व वा ता विद्वार एहु कमिद्दु जिहे नयउ ॥२॥

(3)

उद्देवि ताम मह पुष्ठिउ भणिनो नगेण पंचसमसीत तहतील जाम णिह्सुहु माणिनो ता सुनेवि मह भयकंपीत पश्चित वच्छ तास क्सेसह तो गिर सबरवेसु जाएतिन् तो बोण्णि नि सम्हद मुंडियमुंडा महि वि हरंत एत्थ सावेषिणु अच्छहु जा ता तुम्हह साहय हय नहयर पश्चित्व पुढु तुम्हह मेंडिपाउ काँह पुहु अन्छिउ।

मुख्यातण्हासिहियुद्धस्तें ।

तामद मिडियगमणु न याणिओ।

यामरिगर पुणु पुणु जंगीत ।

याकोसित नाय कि बीसक ।

अक्छह सेयंवर होएविणु ।

दोहि वि कंगलिद करवंदा ।

कोई मेरि समंद हणेविणु ।

सक्यउ जाणहो होहु ण बाइय ।

एहु जि इस्मु कुलायउ अम्हह । 10

घरता- ता वियहि भ्रणेज्जइ हो हो युज्जह मायए पर वंचतहो । को जरुज जिवारइ दुस्सहो तारइ मुणि असञ्जु वोलंतहो ॥३॥

- (1) 2.b जॅरिंग्बा, a. adds इ before चिन्न, b मणजन्न, a सिहासणि for कण्यासमें 1931 3.a विण्णा, b बाइन, a वान, 4.a दियबरिह आवेदि, b जाबहुं, a किहा अच्छिन, 5.b बार्च दि कवणु मुसह को किर गृथ भणहं, 6.b भम्महं, a माणु अप्यस्थन, 7.a किज्ज मोद्यति, b पर for पर, a सत्यु वान, 8.b विण, b सयन, a णिसुजेटिमणु, 9.b वहंतंत्रिय, a कहेह, b भावेप्यणु, 10.b असिएजई, a मणेज्जह, b भणिज्जहं, 11.b गुजजरित, b मक्यु तानं, 12.b वसेपुजाहि, a वुवसंतिहि, b गच्छहं, 13.b वि for विजे, b सा for ता।
- (2) 1.b तामई, b विट्ठज, a फ्लहर, 2.b तमाई, b विदियल, 3.b सई, b अवरई तुक्स णिमिति लेप्पिय, 4.b मरगु for वरमु, a यूएविणु for विश्वास, b पन्छई, a अप for वर्ष, 5.b एई किर जा गयो, b तामई, 6 b कित्याई, a सित्त तमेंह जत्में, 7 b इन्हिंद्य सज्ज्व तसई, b कविट्ठई खडाई, 8.a नहेंद्द, b कतरम परिपृत्ति तुब्ध, 9.a दंति, b बहुं, a फलाई, 10.a खडामे for जियबाई, 11.b पतुरावं, b गर, 12.a विह्न, b गर्म !

रावण वसमिर कवा

तमायण्यिकण बहुम्सं वरेषं तिलायाहिया होनि एवं मध्येषं वरं देइ णो तो वि जा ताव तेणं कया तस्स पुण्या तहण्येव ईसो मएँ एक्कसीसायसेसे वि देवो इमं चितिकण सुण्झाणेण रक्खो समुण्ठासमुल्लाविए जाइ भेए तभो रावणेणाधि भिल्ला वाह् समाणं कहत्य समुख्याइकणं विसेसेण गीयस्स आइड्डकणो पुणो भासिय तेण सैयंवरेण । विरं वंद्दु धाराष्ट्रिको रामकोणं । ससीसाणि फिल्रूक छिल्प सूर्यं । ण तुसेह ता चित्रण रंक्सवेखो । वरं देह मो कि महं दीह तेवो । वलीएह ती दिट्ठू तेणं तियक्बी । पसण्णो किवा किकारेणे समेए । महार्ष समायहित्यंगीय साह । अरं दिक्यवादं तहि वाहरूणं । किवो रासकेच हुरो सुप्पसण्णो ।

10

घत्ता- तो आवह हरेणं तुर्हें हरेणं रावणासु वस विज्जह । सीसह सुणियाह पुणु मिलियाह एउ पुराणि भणिज्जह ॥४॥

(5)

क्य सोमपाण पावलमुह्हो तो तेहि वृत्तु निरिमाणणहो एउ अरिष चरिष प्यवसी बुहहो । धर्मालयजसपसरदसाणणहो ।

(3) 1.b उननेति, b जर्द, b मिठियाच, a. repeats नहि, b तुहु, 2.a पंच for पन, a जुन्जान, 3.b न्तुहुं, b तामदं, 4.b नियुचिति मदं, b नियर, 6.a तो बर, b जाप्यिन्तु, b होएप्पण्, 7.a. omits तो, b जम्हदं, b दोहिम कविज्ञो करियंडा, 8.b आविष्ण्यु, b संबंद, 9.b जन्छदं, b तुम्हहं, b सम्बदं, b होह म वादंय, 10.b मासिन, for प्यविच, b तुम्हहं, b कु for जि, b अम्हह, 11.b तो विस्वरहि भणिक्ज्यदं, a माए पन बंचंतह, 12.b जसु जिनारदं, b तारदं a मोनंतह।

(4) 1.5 तिसीवाहिको, अ एवं, 3.5 देई, 5 तान, 3.8 ससीसाणिहित्यूण छिसाय, 5 ससीसाणि जिल्लूण मिल्लूण गूर्च, 4.5 दूवा तह येव, 5 तूसेई ता विसा विसार्थं स्वातेसी, 5.5 मए एको सामावसेसिम देवो, 5 देई, 6.5 सम्बाणिण, अ यसीप, 7.8 असमस्योपका पर्मेए, अ संगए, 8.8 दवी, 5 कार्यं, अ समस्योपका पर्मेए, अ संगए, 8.8 दवी, 5 कार्यं, अ समस्योपका पर्मेए, अ संगण, 5 दिम्बनीं, 5 कार्यं कार्यं, अ समस्योपका पर्में कार्यं कार्यं, अ संग्रें कार्यं, 5 सामावस्था कार्यं कार्यं

सरवरकुरंग पंचाणपही
सम्बद्ध जणेण विज्ञाणियइ
उद्घरित खेण कदलासिगिरि
ण व सीसिह पुण्जित देत हरो
एत्वंतरे पिडवगणेहि पहु
णवसीसद छिण्णद राजणही
तो मई बोस्सित कि ण उ बडद अह भणहु एम रहें सिरई

साहसु सुपसिद्ध दसाणगही।
जम्हिहि कि किर वक्खाणियह।
विद्धिस घिलस्य सम्रपुरि।
गेएँ तोसिउ हर सद्धवरो।
पडिजंपह विह्नसेवि संस्क्ष्ट्व।
जह लग्गह पुषरिव वंभणहो।
सिरु एक्कु कि या महु संबंहह।
गिल मेलवियह लुयगस्सिरई।

10

वत्ता- एरिसु वि ण जुज्जह जं णिसुणिण्जह सिंगु पक्षेतु तबिस सिंवछ । कय दाणवदप्पें हमकंदप्पें हरेण सदेहि ण संवविछ ॥५॥

(6)

द्धिमुख और जरासन्ध कथा

अवह वि परपुराणु एउ सुम्मइ
बहिस्हु देइरहिओ सिरसिस्सको
हुउ जा ता जगणयणाणंदिरि
अहिवायण पुग्नं पणवेष्पिणु
दिहमुहेण पमणिउ मुणिसारा
भणइ अयस्य मस्य तुह मंदिर
कुमरयाले जियरहरि बसंतहँ
गउ मुणि एम भयेदिणु जावहिं
धणियहं काई ण महं परिणाकह
हय भणियहं दहिसुहि ग उ भुंजद

काई वि वंभिणिए सुओ जम्मइ ।
सुहसत्थरय धम्मसंजुत्तओ ।
आहउ तहो अयित्य णिउमंदिरे ।
अञ्भागयपिडवित्त करेप्पिणु ।
मह धरि भोयणु करिह भडारा ।
जि कुमार तुहु महिलय णंदिर ।
णित्य धम्मि अहियाद करंतहैं ।
दिहिमुहेण णियपियरई तार्वीह ।
तेहि भणिको को देह तुहु ।
तेहि रोडु ता को वि भण्याद ।

10

^{(5) 1.}b. inter. अस्य and णरिय, 2.a तेहि, a दिस शिक चस, b दिसाणगहो, a inter the line श्रवस्य etc. and सूरवर्कुरंग etc. 3.b सुरवर्कुरंग, 4.b दियाणियरं, a अन्हर्श गिर कि वस्था , b वस्थाणियरं, 5.a कहसासु निर्दित b कहसासिति, b अवरपुरी, 6.a सीसिहि, b सबु वरू, 7.a पिडवर्योहि पहु, b विससिति, a सेयपह, 8.b नवसीसरं किण्णदं, b समाहि, 9.a मह, a कि शिक्ष कि, b युड्ड किण्ण, 10.b भवहां, b सिरदं, b अमावियरं सुपगससिर्दं, 11.a एरिस वि ज्य, a के शिक्ष चं. Cf. महावारत (बनपर्व), वास्थीक रामायम ।

घता- वहु सत्पु सहज्जउ णियसुय विज्जउ तगयहो दिय अम्हारहो । तेज वि विज्जी तहो पियरहि पुत्तहो किउ विवाह गुणसारहो ॥६॥

(7)

विसरीह को जो को वि ससमस्य उ
नह सो माणियोही माणिज्यह
गण्छह योज कालू किर जावहि
अत्यु आसि जो सम्हाह संविच
एवहि णिव्यहि कप्पाणको
मणिय सभज्य एहि जाहज्यह
ता सा णगरगाम पहसंती
णियपहवय दप्पें वर्गासी
नियहँ सहस्तणमुण युव्यंती
टिटामंदिर दिद्व कम्णज

तं जणु संभासह विसमत्यत्व ।
स्रांत्य किर को च त लोहिज्यह ।
दहिमुहु भणित अमेरि तासहि ।
तुज्स विनाहि पुरस सो वेकित ।
दहिमुहेण तसो महित पमामको ।
माणविरहित केम जीविज्यह ।
सिक्कयत्यु दहिमुद् दरिसंती ।
भोयणु अत्यु नत्यु मन्मंती ।
सम्बोकिह जयिहि संपत्ती ।
सम्बोकिह जयिहि संपत्ती ।
सम्बोकिह जयिहि संपत्ती ।

10

5

घरता- तहि खुटे ससिक्कउ दहिम्हुं सद्द करण वि कज्जें गय । एत्तहि जुयारहि दिण्ण पहारहो अत्यत्यें कलि जगग ॥॥॥

(7) 1.5 संभासई, a गय०, 2.a तहि, के माणिणाहि माणिण्यहं, b सेहिज्जह, 3.b सण्डहं, b तामहि दिहनृह मणिलं, b तामहिं, 4.b अम्हहं पंजिल तुष्मु, 5.a विश्वाविह, b बहिन्गुहेगा, a तं पृथित for तंनो महिल, b पहिलो, 6.b जाई वहं मणि रहियो, b जीविज्यहं, 7.b गावरगानपइंखी, 8.b पहंच्य, a वंग्योती, 9.b सहं तंनु गुणू, a बज्जंती, 29.a दिटाबंडल, 13/b खुँटि वस्तिक्क वहिन्नुक्केंट सा वि अंत्युक्तलें, 12.a जुवारहो, b जत्यित कसि संगामा।

^{(6) 1.}b किर for पर, b सुंमइं, 2 काइ, b जम्मइं, 2.a दिहमूद, b सुइं, 3.b हुंउ, b आयउ in margin पिउ is explained as पितु, 4.b अझामय०, a करेविण, b केरेप्पिण, 5.a मुहु, 6.b भणइं, a मंदिरो, b तुहं महिलअ णिविरु, a णेविरु is explained in the margin as आणंदकारि, 7.a कुमरकालि, a वसंतह, a करंतह, 8.b गउं, a आविह, 9.a पभणिउ काइ न म परि०, b परिणाबहो, a भणिउ तेण की देसइ तुष बहु, b बहो, 10.a भणिए, b विह्मुहं, b भूंजइ, b रोह, a omits की, 11.b सइंज्यहं, b दिज्जहं, 12.b दिणी, b विवाहं, Cf. ब्रह्मा, वायुपुराण, महाभारत, आविप्यं।

कासु वि पंडिय सीसु असिघाएँ तिम्म रंडे वहिनुहसिर सम्मछ सेमंगरेण प्रणित कम युद सुहा वहिनुहु सम्मदिएहि अमेग्जद सेमंगद प्रणेद जिन योस नि वहिमुहंसिन सम्मद परसंबही तह वहनीनें माण्य संगड जनर सेनि श्युपंती सीनियो अनर नि दहरह दाजनईसही कम नाराहण एक्कें निसीं

सिक्कण मिल्लाज कम्मिविवाएँ।
इय कहिकल कहाणु समग्गतः।
सम्मृत दियह ण वा एरिस कहा।
एमारिसन वैयक्ति सुलेज्जदः।
जयु विकास मन्नादः ण प्यासु वि। 5
मज्जू सरीय कि स मृतु दृष्ट्यी।
असिवरेण किस दो कार्लयनः।
सम्मु अंगू पुजरिक सो जीविजी।
पुत् परिय ताम ति इसहो।
असिमारतुदृहेण तिनैरतें। 10

परता— तहो परणार्थरणु होत्र सुर्णदणु हय अमोहु वरु मासिउ। पर्सपिव समस्मित एनकु कि कप्पिउ तहो वि हि मरणिहि पासिउ॥८॥

(9)

पिडेणं तेणं दोहाणं
एकपिह दोण्हें दो भाउ
अख्रदंशो बद्दं पुत्ती
देवीए पुद्धतेणामाए
रण्ये हिंदतीए विद्ठी
गेहेणं ताए दो फाले
जीवेळन जावी चंडी
विद्यो देवारीयं दुढी
जस्माए दो चीए तद्ठी
जेवारीयां भागा मीना

णूणं मञ्जो हुउ ताणं।
पुण्णेहि सासेहि जाउ।
वायाणाए रण्णे खिलो।
वे कम्मे ण आइट्ठाए।
विस्था होंतो पुर्व्य इट्ठो।
एक्कीकाओ युक्को बाले।
उच्चो णं गिमे मलंडो।
सम्मूणं लक्कीए लढो।
पुना वस्की।

10

(8) 1.b सीसु पहिटं मिसमाए सिक्कटं खिष्णाटं. 2.b सम्मि तुर्वि बहुमृह्सिरं, 9.b सुद, क सुदू for सुद्धा, b जन्माह बिवाहं, a मा या एरिसु मं सुद्ध, 6.a बहिमृह पुन्यविएहि, b वहिमुहं, b भनिष्णादः, b सुमितुनिर्ण्यदं, 5.b समेद क्या, a मिस्त नमाह म प्रमासदः, b मन्यदं, 6.a वहिमृह सम्बद्ध कि परं, a मिस्त नमाह म प्रमासदः, b मन्यदं, 6.a वहिमृह सम्बद्ध कि परं, b सम्मदं परस्ंबहो, 7.b संगरं, a किंग्न, b किंग् दी सार्वार्थ, a सम्म, b. amise सो, 9.a म सर्वा, b सार्वं, 10.a साहर्षे, a सिवार्वे, b सिवार्वेत, 11.b सुद्ध, के होर्ब, b सन् शिवर मद, 12.b नम्विया, a एक्यु, b स्थिपन, b मरिस्त साहिन्दी।

चस्ता- चर्डिन्यु प्रद्राणन साहंद्र रागन होतन पुगवपस्थित ।. इप नासे गासिन नीए पंचासिन कार भणह ण नि वस्त्र ॥९॥

(10)

जवक गउरि जवकीकाणमस्हों
विस्ताहासु विस्तृ का नक्ष्य जह कह वि हु इस सुरए पंक्ष्य जग् जगडंतु केस वारिण्डह इस मंतिब्यु गउरिसहोसर जियह संबंधु जियक्छित जाबहि एत्नहो सुरक्त्यलम् अलहंतें भाजित दुट्ठू अह बिट्ठ किमायत जह वि ज सालमासु क्लेज्बह दुदरसुक्क महिहि कि हरिस्सिम मृहि सोरतिम्म तिम्म युणु संकर्ष जबर तेत सुक्कह अनहंत्य

सुरमसोक्ष् नाक्तहो , वहहो ।
ता सुरसवहो चित प्रकृष्ट ।
उप्पण्यह सुरससुर कि मह्णु ।
तो वर विश्वृ कि कि विश्व्यंह ।
पिसिउ परतु तिस्य कहसाणह ।
कहें कोवाणल प्रकर्भतें ।
कि सह सुरमिक्ष्य उप्पाहर ।
तह कि हु तुक्क चंदु तुह किज्यह
उद्दृहि मुहु सुरेनु में यहस्ति ।
विश्व को दहनु काह जिहु तिह कुछ ।
वहसाणह को उत्तम् प्रसार ।

वस्ता- गंगहि मुणि भागहि किस्तिम ग्हामेनि वहि जा तथ्विउ । ता तेषाणलेण उष्हरयसेषं जाणिहि सुक्कु समस्पित ॥१०॥

(11)

पौराणिक कथा सबीका

ंहुए गुडमे मुणिहि णीसारियात खयस्य समुज्यतं काय खेतु हुउ एक्स कारुक्त मुहु कुमार सरवने तात पसूद्यात । एक्क वि विवयं पारपहु लेखु । तो तारकारि जीवाबहाद ।

^{(9) 1.6} बीग्हाणं, a सन्मा, b हुक, 2.a एक्डाव्हे, b. omita दोख, b माओ, b माओह सामा, 3.6 वहुं, a. explants सामा माए as अमानेत in margin, b तावामए, b णिष्यत्ती, केंद्र सम्माप, a क्यांने साईट्टाए, 5.a तस्मा 6.a प्याणी एक्डीक्टावी, 7.a बीबीक्टम, b चंदी, b उंगी मं निम्हे मंत्राहो, 8.b विन्हे देवारी and then the space is blank and the back page 57 is also, blank on .58 a, we have in red ink begins from (मिल्ला) वण्डे बत्तारई बेंग्र डाट. 9.a बीतां Cf. मानवसपुराच, मंत्रागुराच, मंत्रागुराच, मंत्रागुराच, मंत्रागुराच, मंत्रागुराच, संसापचे।

वंगयजरसंधकुमारकहा

दो फानु वि वंगउ मिनइ जैत्यु

परसम्बु कुमारह लग्गु वंगु

परसम्बु एउ जं विमह इट्टु

तो तेहि बृत्तु पइ मणिउ जाव

पर खाइ मृदु धहु घाइ केव

इह लोइ विष्णं चोयणु करंति

चिरकास मुया बूरंगया वि

णियडच्छु कवित्यइ खाइ मंडु

कहित्रण श्रणिय तें विष्पसहा !

यहु सिक महु अंगहु कि ण तेरष् ।

कि यहु ण घड धडु उत्तमंगु !
सहण्णु वि षय एककउ ण दुट्टु ।
तं मण्णिय सच्चय होय ताव ।
तं णिसुणेविणु जह शणह एव ।
परलोए पियर कहि विहि घरंति ।

गण्णाविहि जोषा समुग्नया वि ।
तक्षणे वि ण कि यहु भरहरंहु ।

घरता- केत्तित बहु जंपिहु चित्ति वियप्पहु रावणआइ कहाणउ। जा मारिसु तं जइ तारिसु तेण असित महु वयणज ॥११॥

(12)

सेगंबर मासिन बिप्प सुणेवि
ण जंपहि कि पि विहंडिय माण
णिहत्तर विप्प णिएवि सुवृद्धि
सुसत्यु सुमम् सुलिग् सुदेन
ण सुम्मइ जत्य सवाय विरोहु
सुमम्मु वि जित्य ण कम्मू सहिसु
सुदेन वसटठिह वोसहि चुक्कु
सुलिग् सुहान सुणेवि सुसत्यु
सुधम्मफलेण सुदेवहो झाण्
सुणाण गुणेण विजासिय दुक्कु

सुसस्यपुराणअ सक्च मृणेवि ।
विचित्तह एयहो वाय पमाण ।
पुणो वि ययासइ तत्यु वि सुद्धि ।
परिनिखवि लक्खहो मोनखहो भेउ ।
तमेव ससत्यु विणासिय मोह ।
अहिंसु जे दिट्छू उ जग्गु जईसु ।
सुमोनख असेस परिग्गह मृक्कु ।
सुम्रम्मु मृणेह गुण्डलु पसत्यु ।
करेदि लहेह सुणिम्मस प्राणु ।
लहेह सुमोनख अण्तरसोनख् ।

वत्ता- अप्पन परतारह जो म नियारह सत्यु धम्मु गुरु देउ वि । संसारि णिमज्जह दुक्खें चिज्जह सुसुदृहो मुणह ण भेज वि ॥१२॥

^{(10) 2-}a प्यट्टइ, 5-a मंतिविष्यु, 12-a वसंहंतछ, 13-a. explains गंगहि as वंगासमीपे in the margin ।

^{(11) 8.}a चेन for जान ।

^{(12) 3.}a पुण्यो, 4.a मोरवहो, 11.b अप्पर्ट यस्तरई जे ण विधारई सत्य, b वेर्च 12.b जिमन्जई, b खिन्जई समृहहो मुनई ।

(13)

इय जाणिन उह्यह अप्पतस्यु णिसुणिए मुसत्ये दुम्मइ हवेइ मुक्तियधम्मेण मुस्तिन रत्युं तहो मत्तिए वारुणु करइं पाउ णारहयदुक्य जह मुग्नह कहिंव जहलहइ णग्त्त सुहिएस्तणाइ ण सुणइ कमावि वरसुहहो णामु जिणवेउ ण रिसिगुर अत्य जेत्यु मोक्खे ण विणा सवकारणाइ मानोववासु चंदायणाइ वहिरसयणइं असावणाई संजयधरणइं सिरमुंडणाई

मा णिसुषह बण्मामिय मुस्स् ।
दुम्मइए कुममहो चिस्तु वेद ।
णर कुपुरहो होद कुवेनमस्तु ।
ते एम चउगाद दुहिषिहाउ ।
तिरिएस वि तारिसु लहद तह वि । 5
तो कोत्यिय सोम्बहो भायणाद ।
कहि किर सीमा जहि गरिब गामू ।
संपडद णरहो कहि मोम्बू तिर्द्ध ।
रसंवरजड घारणाद ।
कंजियमोयण सुदोयणाद ।
चि तारिस सिसंवियनणाइँ ।
सन्वह मि सरीरहो वंडणाइँ ।

बत्ता- इय एम मुणेविगु रिसि पुज्जेविणु लिगाज्जइ जिणसम्महो । जि अमरणरत्तणु सञ्चइ किस्तणु मोक्खसोक्सु खर्फ कम्महो ॥१३॥

(14)

अण्णाणियपुराणु अहतुन्छन णिहोस वि सुरवरणरखेयर जो सत्तावीसस्वरकोडिहि खयरामुरणरवरबुन्नसुरवह हंदु णाम खयराहित मुद्धत आहल्का णामाह सुपसिद्धहो सुरयसोक्षु माणंतु णिएविणु कहिह जणहो णियमइ सारिच्छउ । अप्पसिस साहिसद्दोसायर । सेविज्जइ मग्गियपरिवाडिहि । सो बहुल्ल मणु वि कि सेवइ । कोयमखगतबसिपिय लुद्ध उ । रूपकीतजबजीव्बचरिद्धहो । चियंपियपरिहुवरोसु करेविणु ।

(13) 1.b विस्वाह, 2.b कुसत्य दुम्मदं हवेदं दुम्मदंग, b विस्त देदं, 3.b कुसिंगरस्तु णरु कुरुह होदं, a द for होद, 4.a दारण्, b ति पावदं चंगरं, 5.b वदं मुजदं, a मुव for मुजद, b सहदं, 6.b वद लहदं सुरत्यणादं, b सायणादं, 7.b मुणदं for सुजदं, a बरसुरद, 8.a जिण् देख, b जिणदेखं, b संपडदं, b मोनस्त, 9.b कारणादं रत्तवडद्यरण जदं धारणादं, 10.a मासोमवास, b चंदायणादं, b सुद्धायणादं a. adds आवानणाह after कत्तावणाद, 11.a विर्तासणितिहि सेवियवणाद, 12.a धरणाद, b सम्बद्धं, a वंद्यणाद्, 13.a एव for एम, b लम्मेद्दवजद, 14.a में सुप्लब सुरत्तण्, b लम्मदं, b मोनस्त सोवर्य खयकदमहो।

कोयमेन निज्ञाद नर्वीत पूरिस नि कोचितहारी दृष्टिउ रवि जोड्डिट देड दम् जायह जद्द सा मुक्तिह महासद गासिय सिसुमस्य व परसस्य कहानड सहस कोणि किउ सा उ वर्षीत । कामें कहो बारित्तु ण मूसिंड । सो माणुसिय कुंति कह बाजद । हो कि तहि बहु मुलिहि प्यासिय । सं पावरणु तं वि परिहाकड ।

10

वता- वरतण् साहसपत सो कुत्थियपत वं दुनोहण् पयहित । हृति अदिनिहीसह पंडवपुरसह ति अप्यापत विपादित ॥१४॥

(15)

इनबाइवंसि पहिनातुंएउ नासेण णारिसुताः सुकहा बासि वि बयवद्युः जरमदेहु जुण्णयरतण् व मिल्लेवि रज्जु पावणसिलसंठिः चरणज्युयन् अहरोस्तरोट्ठसंपुडियबस्तु जिग्गमणपवेस णिठइसासु आजाण्युपलंविय बीहनाहु एत्तिह पुरवक णिज्ञ्यावलोह रावण् रयसावित खगकुमारि वरसंघु रणंगणि अतुमतेतः ।
विराविणु रंजिय मृदसहा ।
रावषु जिउ जि जयसिष्ठमेह ।
कह्मसि अणुट्ठिस अव्यक्तज्यु ।
सायरगहीरु मेरु व्य अचलु ।
णासग्गणिहियणिष्कंवणिस्तु ।
णिमुक्कडंभतिहृयणपयासु ।
तणु जोइ परिट्ठिस वासिसाह ।
धनसहरहय णामावसोह ।
परिणेवि विहंखिय विरहमारि ।

5

- (14) 1.b बहं, b महं, 2.b खेयरा, 3.b को बिंह सेविज्जह, 4.b खयरसुरासुरणरणुंठ सुरवहं, b सेवहं, 5.a हंसु णाठ, b सुद्धच for मुद्धठ,
 a •तवसिम पिय, 6.b जाहल्सा णामाहि पसिद्धहि, b •णवलीयणरिद्धिहि,
 9.b मूसिर्ज, 10.b देव, b जाणहं, b माणहं, ll.b जह सा मुणिहि
 महासहं भासिया, b तहो वहुं माणुस, 12.a पानरणु is explained in
 the margin as दुस्चारिणो स्त्री वालकवस्तुवत् = निम्मंतवस्त्रं सो पि
 पगपूछणकोदणसं, 13.b जि for बं, b पयसित्, 14.a तें जुष्पागस
 विमाहित ।
- (15) 1.a इनकाइबंसु पिनस्तित्वं, b इनकाउहवंसि परिवासुएउ जरसिंघु, b अतुलतेर्ज, 2.a वासे ज ज्यारिसुता, b वासेणं वारिसुता, b मुद्यसदा, 3.b कहचइसुउ चरसदेहूं, b जि जिंछ जलकियेहूं, a मिनि सरव्यु, b समृद्दिकडं, 5.a व्हेंकिंग, b जयम्, 6.a अम्हरत्तरीट्ठं, 7.b पनेसाद्य, 8.b विह्नाह् तजुर्वास, b वानिसाहं, 9.a पुरवर जिल्लावसीए, b जिल्लावसीर, a जानकतीर, b जानामसीखीर, 10.b रसवावसिं।

पता- किर परमानंतें वंदिनसहें लंकडरिहि जाम पतिछ । सा तिहुयणवंदहो वासियुणिदहो स्वरिर विमाणु झत्ति स्वसित ॥१५॥

(16)

तो मण्ड बसायणु माणमलणु
ति शणिउ देव कहलासि साहु
तहो मततेएँ सवसंहु जाम
एत्यंतरि रावणु कुछवितु
अहवा कह पंश्वह महु विमाणु
विज्वए महियलु दारणु करेति
स मुणिवि समुहै किर खिवह जाम
उवसम्मु मुगिहि खबहिए मुणिवि
सहसा एंतूण फलीसरेण
वेउठवणाड हुउ गरुउ जित्मु

कि किउ मह माम नदीई सलजु ।
वच्छद जीएंत व सिरिसमाह ।
गण्छद ज बाणुंज सारि ताम ।
जितद एयहो मापाचरित्तु ।
तो वरि प्रयहो णिद्वमि माणु । 5
कदलासु महीहृद उढरेंदि ।
आसणु कंपिज क्षिनप्रहें ताम ।
णियकण्यु एश पह इस समेवि ।
मुणि वंदिज कंसिए णियस्तिरेण ।
तणुगारें भारिज निरि वि तित्नु । 10

घरता— हुउ कुम्मायारउ मुणि जनमारउ ठारावणु बुहु वावह । क्य साहु अभिट्ठहो पयहए दुट्ठहो कासु महावह णावह ॥१६॥

(17)

गुरुगिरिभरपानिय वहु दुहेण त णिसुणे विशु मुणगोयरीए भत्तारिकस्य मन्मिउ फणिदु मिल्लेबिणु माणकसायमा हु जो वालि भणिड इस सुद महंतु सो किर दरिसिय धणु लाइबेण तं अलिउ भाण उत्तेग वि ण भंति णियमेण महागुणु तड चरंति अहराउ मुक्कु मृत्त यहमुहेश । भयकंपमाण महोबरिए । खिमयम्मि वि णिग्वठ णिसियरिषु । जिविञ अप्पाणु णिविच साहु । सम्मीए तो बाण्ड पबुद्ध । 5 प्रपीवकच्ने हुउ राहकेण । स उ चरिनदेह सारिय मरेति । गामेब मोक्सफर यह सुरति ।

^{(16) 1.}b रणइ for जणह, a. in margin for गरीइ explains हे मारीचे,
2.b कहंसासि साई, b साजहं, 3.a जाब, a ताब, 4.b चितई, 5.b यंग्रहं
महं, 6.a महियस, b बारुण, b कहंसासमहीहर, a उद्धेरीब, 7.b बिनई,
b संविषकं ति for कविषक्षे, 8.a उपसन्ग, b मुचिदि for मूणिह,
b समित for प्रविद्ध, क मुचिद for संवेदि, 9.b सर्विदेश, 30.b. omita
क्रिं, 11.b हुंच कुरुमायास्य सुनित्ववकारवं, क बृद्ध पानहं, 12.a पबद for
पनवंद, b सहावहं सांबहं।

इय जाण खलण कोवियमणेष सबब्दुबयण् एरिसु जिरुत्तु

उद्धरित आसि गिरि रावणेग। धुलेहि तिम हरकाज बुलु।

10

5

चला- रावणु वीसमए चउवीसमए तित्थि रुद्दु उप्पण्डह । कद्दलासुद्धरणा खिरकत्तरणा हरतोसवणु ण छण्जद् ।।१७।।

(18)

अधरंतु वि जं धुत्तेहि वृत्तु जइ वि हि हरिहरही णं अतिव भेउ जद कह व सञ्चंगउ हरि भणंति तो तहि हुए बद्दुत्तणु विवाए कि तेहि तासु ण उ सब् अंतु हरि बंगहि जासु च मुणिउ भेउ जइ ईसर तिहुयणमीहणवियर्दु तो कि पुणु सो देहद वजरि इय अध्रमाण लोइय पुराण सयल वि मिन्छ तगहेण भुनु

मुक्खेहि तहि वि पुणु विष्णु चित्तु। कह वंमसिरहो हर करड छेउ। वं भुवि तिहुयणमस्ता मुणंति । अंतरे थिए हरिणिय दीहकाए। कि तिहृयणु भिदेखि दूरि पुसु । तहो किउ कह तवसिहि लिंगछेउ। ष्ट्रेण कोबजलणेण दह्दु । सिरि वहइ गंग जियकामवेरि । सच्चाइव ते वि गणहि अयाण। ण वियाणइ कि पि अजुरतु जुरतु । 10

घला- जिह वंसहे णंदणु सर्सासगें वीमि ण पोम्मुप्पजनह । तिह सपिउसद्यप्पिउ गुस्परमप्पेउ हिसए धम्मु ण जुउलद ॥१८॥

^{(17) 1.}a जराउ, 2.b गुणमोयरी, 4.b अन्याणचं णविचं, 5.b वलि, b गुण for गुर, b बम्मीएं, 7.b ममिलं, b चरमदेह, 10.b तं पि, b बुत्तं, 12.a. in margin explains तीसवण् as दोषंकरणे ।

^{(18) 1.2} धूतीहि, a मुक्बेहि, b तहि मि, 2.a बंग्हसिरहो, 4.b तही for तहि, b बहुत्तण, b दीहकाइ, 4.2 तेहि, b तासु सद उ ण अंतु, a. in margin explains तेहि तासु as हरिवहग्रध्यां हरस्य, 5.b दूर, 6.a बंध्महि, b यूषित, inter. कित and तह, a तबसिहि, 7.b सद for देसद, a बब्द, S.a. omits सो, व जिह कामचेरे, 9.a जयण, 10.a सवस, a वियारह. b वियापदं, 11.b पीमु उपक्षद्, 12.b ठह, b व्यपस, a. in margin explains संसत्तिमे as क्रमणं ।

धर्म-महत्व

अह ह्बइ पढमु तो खित्याण जइ हिंसए लग्मइ सम्मु मोस्खु जइ सम्मइ तश्तिस फलसम्बन्ध जह देव सपहरण कामकोव वाणारसिपुरवरणरवहेंहे तह वासुएउ वसुदेवपुरतु इहु माणविगम्भ समुक्मवाहु जय करण धरण संहरण कम्मु जे परमप्यय ते अत्मु होति इय परमपाण सवयण विरोहु सण्हयपारि विश्वीवराण ।
ता को वि सहद तव ता व दुक्ष ।
को चढद पई हरु तदवरम्य ।
ता किण्ण चीरजारह सुदेव ।
हुउ णंदण वंभू प्यावदि ।
तह वंभरज्ज दूसिय भवाह ।
तहि कह परमण्यद्यक्तसम्म ।
विणु देहि जिनिकय कि करति ।
जिह स्तिय वीउ तहि सहि परोह । 10

घत्ता- मा दियहों निरावहो मइगुणे दावहो दहविहु ध्रम्मु चिति ठवहु । रयणस्तउ भावहु तहु कलु पावहु भवसयकम्ममस् णिट्ठवहु ॥१९॥

(20)

णिचनलगुरुत्तणिज्जियपमाए अहिमाणदुश्यदुह्मदमेण अवहृत्यिय कुडिल्त्सण जवेश हियमियपियशासणसंचएण हयलोहकसायसमुख्यएण पाणिदय अश्वजय उज्जमेण कर्याणयमें कलि तम आतवेण सारंगरंभवहृत्यासएण यणिय समाण तणकंचणेण णवश्रेष्ठ हवसयणुक्तमेण संभवह धम्मु उत्समख्याए । संभवह धम्मु तह महवेण । संभवह धम्मु पुणु अञ्जवेण । संभवह धम्मु पुणु अञ्जवेण । संभवह धम्मु सुस्रउच्चएण । संभवह धम्मु वरसंजनेण । संभवह धम्मु जाणातवेण । संभवह धम्मु क्यवायएण । संभवह धम्मु क्यवायएण । संभवह धम्मु क्यवायएण ।

10

(19) i.a. in margin explains सण्ह्य वह कसास, b संडिय for सण्ह्य, 3.b फस समया, b तरवरस्य, 4.a ती, b • जाराहं, 5.b साण for सम्बारसि, a साराणसि•, 7.b समुख्यवाहं, a त्रवणसरण्ज for तह अंगरण्य, b सवाहं, 8.a • कस्म, b तह कहि, 9.a जह for थे, a ते जुल for ते जसण्, a जिनकार, 10.a repeats समयण, a जहि, a तिह कहि, 11.a गुण्, a विजित्तह for जिति ठण्ड, 12.b कममल् ।

पत्ता- इह मलिय बुसंगहि दहविह भंगति विमलु प्रम्यु उप्पण्यद । सुरयरफिपुरुजही हिसवियण्जही तही कलु विवहु क्रहिस्सदा।२०॥

(21)

जासु जवस्य तस्तु सुबिहि नावनि वारहु एक्स जाम बहुरमणइ गुज्ये विस जमसास मिरंतर किउन्नह पुणु नि पुणु वि गिम्बमहि जे जम्मनि सुरसिहरे जवैविन् कम्मनि सुरसिहरे जवैविन् कम्मनि सुरसिहरे ववैविन् कम्मनि सुरसिहरे ववैविन् पुणु जिक्समने समरसंनायहि एकमिक्स विरह्य समहिहि सेवलपाणुक्सिस सुर विहिस्स सुरणरविसहरसहहिणिविट्ठा

इंवामए बाइए ब्रह्मरपणि । सुरवरिसहि उज्बोइय वस्त्रह । रयणविट्ठकच्चृरिय वर्स्वर । पियरह पुण्जिज्ज गयमाणि । बीरमपृहशीर वालेषिणु । ग्हाबिज्जहि सुरबहि संतोसहि । सिवियारवंत जाम अगुरामहि । ये णिज्जहि क्य जय जय सहि । समयसरणि बहु सोहा सहियए । जे समसु वि भासंति गरिट्ठा।

5

10

वसा- पुणरिक जिञ्चागय सुहसंतागय अग्निकुसारपंत्रक सिहिहि । संगद सक्कारिह सुरत्तरसारिह जा णवेति विश्विहिहि विहिहि ॥२१॥

(22)

इय जसु पंच महाकस्तामहि चन्तीसाइसमही सम्बद्धियही तिहुबणसिट वासि जहु वीसइ ते जिण तिहुबसम्बद्ध पिकारा जा मणिरवणु मिसेसइ (बीहइ) छाइज्जड ण हु अनरविमानहि । भट्ठ पाडिहेड्ज्य सहिवहो । तेहि समाणु कवणु किर सीसइ । धम्मफलेण हवंति चडारा । कार्गण किउ रविस्ति तमु नासइ ।

^{(20) 1.}b समार् for पमाए, 2.a बुदमदवेगे, कुडू for तह, \$.b तह for पुण, 4.b हिंदा, b क्षंत्रणम, 6.a मनिदय, 10.b हमस्यस्मवेम, 11.b प्रतिय for मनिय, b दंहमन्त्रंगहि विमलसंन्यु उच्चहं 12.b विविद्द कहिंदाई।

^{(21) 1.5} बाय्बि रिंग व्यक्ति, 2.2 बीम, 5 रमण्डं, 5 स्ववहं, 3.5 व्यवित-सद्दो, 4.2 विकार, 5 विकार, 2 पुत्र वि पुत्र वि, 5 रियर, दुविकारि, 5.2 वीं व्यक्ति, 3. सुनेवित्तु विश्व नवित्ता, 6.2 क्षायत्वपु, 5 वहासिर हामिकारं वृद्दक्तं, 7.2 पुत्रा, 5 निनस्ताचि, 8.2 एक्ष्ट्रमेह्न, 5 inter. स्म 2018 जब स्म, 9.2 क्ष्मिन, 2 वह कोसा, 10.2 समस, 11.2 विस्थापए, 12.5 वा स्मे 1

बंदु परंदु निरित्त स्वोह्नद सन्त् मध्य संदुनि को हातर समुबम् वि समहित्तम् तारद तुरच तुरंतु इट्डु पच पावह पुरच हवंतु पुरोहित् पिण्छह चनक वि सस्तु सम्बद्धाः पट्टरः । सर्वनस्तु वन्तु वि व बहावहः । करिरयमु वि सुरकरि नि निवारहः । वैभावह बारह सेगावहः । विह्वह विह जववरम् प्रकारः । 10

वत्ता- षण्ड विवर सोहइ करइ सगेहइ तियरयणु वि जहि तियसम । गामिति अतित्तहीं अद्रवसर्वतहीं करइ गलरह सुहपम ॥२१॥

(23)

छहरित जोग्गइ दिस्वइ सुद्दाड मह कालु वि जागा भागपाद माणउ पहरणइ वि जियरणाइ ये सप्पु वि वत्यइ चज्जलाइ पिगलु आहरणई वहयराइ खयरितृ जियपुलिह मेल्यि कोड्ड मिणमञ्जालं किय महिस्वह वलीससहस जहह जजाह गामाण रिद्ध धण कणसमाण पायारालंकिय योजराण जह देह कालिगहि स्थ पुहाइ ! पंडु वि धण्णद सुर हिंद क्णाइ ! संख णिहिवि तुरकत्रणाइ ! पउमक्षु घरडें वहुमूय लाइ ! णिहिरयण वेद रयणद वराइ ! छण्णवह सहासद कानिनीह ! क्लीससहासद हरिवयह ! वसीससहास हरिवयह ! वसीससहास हरिवयह ! सहसद वाहसरि पुरवराण !

10

^{(22) 1.0} जहुं, b केरलाणींह बार्ड जजहं ज हुं, 2.a सम्बह्यित, b व्याह, a सहियस, 5.b after जहुं a blank space and continued जु कवनु, b सांस्ट्रं, b तांसह, 4.b लोग for जयन, b. after जेंग्न a blank space and continued हवंति etc. 5.a रमंचवसु for रमयु, 6.b पंथीगिरिय, 5.b 'यद दायह, 11.b सुवेहर्द, 12.a अस्तिस्तहं, b जित्तर्त्तरं।

⁽²³⁾ जोरवहं विश्वहं सुंहाई बहु देह, व काल्विहि, b सुहाई, 25' प्रायणाएं, a बंदु-ते, क सुदि िक सुरक्षिक, क समाहं, 5.5 प्रायण पहुंच्याई मि क्रियर-पार्चः व सुरहं, b क्रायमाहं, 4,5 व प्रायण पिकासाई, क प्रायुक्त, 5.5 दहसराई, b, रसामं व स्वरं, क.5 समाहि जिल्लुक्तिकी, b सहासई स्वातिकीयं, रे.के सहस्यणाणांह जिल्लां, 8.5 मध्यदि देश पार्च, 8.6 प्रवस-विस्तायमाहं, मैक सोमसाविक्त, के नामनवह जिल्लोकास्तुक, वि.के सहस्यह स्वस्तावको सहस्यह, जमपूजं सुद्धाः १

भरता- श्रीष्ठहु सुप्रयासक् सीलहसहसई गवणवर्डे दोना मृहह । अवयास सहसक्त रयणव्यासद पट्टनान जम क्य सुदह ॥२३॥

(24)

गिरिवरकवहँ जजबुहहराहँ पक्चलहँ सत्तस्यदँ हवं ति छप्पण्णवरंत्वरतीवयाई णयणिज्जिय प्यरणराहिवाह देवह तणुरक्त वियाणयाह हलकोविप्तक करिसणि चलेड जियकामर्श्वणु वच्छाणुयाह जियकामर्श्वणु वच्छाणुयाह जमियसमयं जलाहार्याह कोविज वहुंच किकरवराह चजरासीसक्षद गयवराह च उदहसहास संवाहणाहें।
तेत्त्रयहें कुवासहें संभववंति।
बढवी सचादवच दुन्नवाई।
सहसट्ठारह मिण्डाहिवाह।
सोलहसहसाइ कपाणपाह।
चुल्लीणकोडि भाषणे जलेइ।
बीरहरकोडि वरसेणुगाह।
समिल्लिसठं सुमारंगह।
सट्ठारहकोडिज हमकराह।
तेत्विय जेमणि ममरहबराह।

10

भरता- इय लिख विहसिय अमरणमंसिय जन्मबहिरिखदंतिहरि । तहु अवस्रिरीहर पश्चिहरिहलहर घन्ने उध्यक्जेति हरि ॥३४॥

(25)

मज्जपिय्ह पाय अर्गिट्यं उन्जय करकरवाल जिरिक्ज्यं कय जयमंत्रव्यक्तक्यारः जज्जद विष्ठस्य जानंकारः देहविलिविश्वियम्बर्णानयः धानमुलिय अस्यायनिवस्थत पसेयं पि हु रष्ट्र अणुक्ष्यत्र सत्तायीसकोडि तियसेवित बोयम्बर्क्यम्य जान जमहि जाणामर्गववर्षे ।
चउरासीसक्तवर्षे तजुरक्यहें ।
मुख्यनियंत्र मदसंचारतः ।
जालाविह बीजा मंकारच ।
सहिनव हरियंदण क्रमितसम्ब ।
स्वजोऽनव्यविसहरू रयणिनम्ब ।
सोधससहस् विहिन चिनक्ततः ।
जानपहास् सर्वनम् एतितः ।
नेत्रियाः सत्वम् सुरावतः ।

(24) १.० ० स्वाह, क हराह च उदस्यहासगरवाहणाह, २.० पक्षांसह सशसगई, अं तेंतियह, कुक्षासह, 3:इं दीवयाह, क दुश्वक्षाह, 4.७ मिण्डंगहिवाहं, 5.७ विकायक्षं, b सहसाई क्याणवाहं, 6.8 भाणित कि भायो, 7.७ वंक्डीण्याहं, b वर्ष्वण्याहं, 8.० असाइंदियाहं, b असाहारयाहं, क संवितिया, b स्वास्थाहं, 8.० असाइंदियाहं, b असाहारयाहं, क संवितिया, b स्वास्थाहं, 9.० विकायक्षंहं, b ह्ववंदाहं, 10.0 सक्काई ययक्षाहं, a तेतिहम, b ० वराहं, 12.0 सई for तेष्ट्रा क इसा कि हिर ।

तें धम्में संस्वित सुरिव वि सम्महंसणणामवरिताइ तह भावगए स्वलमन् क्षित्रहें सुरफाणिव अहमिवपाँडव वि । भविषद रचणक्तद सुपविक्तद । श्रीषु निम्सामधुनस्य उप्पण्डद । 10

1.

णता- एरिसु जागेविणु मणु विश्वमेविणु विणु सायह तिह्रयणतिलउ । हरिसेणु हवेविणु पाणु तहेविणु विरयह चउनद्रदृद्द विसउ ॥२५॥

तचीक्तम्-

प्रामाधातात्रिवृत्ति वरधनहरणे संबधः सत्ववाववं काले शवावा अधानं कृषीः कन्नव्यवाष्ट्रकाकः वरेकाम् । तृत्र्याकोसीविर्वयो गुच्यु च विनक्तिः सर्वकायामुक्ताः साकार्व्यं सर्वकारवेष्यपृष्ट्यक्षयतिः व्यवसानेव यन्ताः ॥

इय धम्मपरि**न्धा**ए भउवग्गाहिद्ठियाइ भित्ताए । भहहरितेणकमाएं **चममो संबी** परिसमस्तो ॥९॥ ग्लीकृ ॥ २३५ ।

* * *

^{(25) 1.}b जबहि, a जंजामरनिवेद, 2.a ०लक्सपं, 3.a व्हेय०, 5.a बहिणवपर हरिसंध्यसियंग्य, 9.a चन्त्रम्यमं, b सरावण, 10.b संप्रवृह, 11.b चित्रपद प्रियम्हे, a रक्षणंत्र, b रक्षणंत्रमं सपित्रसदं, 12.b स्वृह, धानमदं स्वम् ममृ विक्रमंदं, a जिल्लाचं स्वेक्स्य पाविक्रमं, 13.b सम्बद्धं, 14.b हृरिसेष्य, b विक्रमंद्धं अर्थ व्यवस्थानम् ।
16.b मध्य राज प्रसाद, 15.b प्रवाण b स्वविक्रयम्बर, 18.a मित, 8.b संभी विक्रामंद्धं स्वाप्ति विक्रियमंद्रं । ११२ देश। С. व्यवस्थितायमंद्रं, वर्षः २, क. 99: वर्ष्ट्रियमंद्रियायमंद्रं, 54।

१०. वहमी संधि

(i)

जुलकर व्यवस्था

पुण् जनवणु जाएविण् बुण् मंध्येविन् भणितः निस्तं सब्बेएं । पुरिसे केन वि मासिस सीय पंचासिस तस प्रमा वि कि केरी ॥ छ ॥ तह कहाई समयसंवास कैम इह एक्क वन्ग महि आसि मिस्त पाणंगतूरवहुभूसणंग देवंगवस्य मासंगसिट्ठु असिमसि-ंकि सिसिपि-वियम्पवंत तहि चुसमसुसमि चिविय सुभीय सुसमिदुसमिकालि जहण्य भोय गय धनकु अंसु अट्ठमच जाम पहिसुद्द तह सम्मद्द भणिउ अवर सोमंकर सीर्वधर वि जैम

'ती मक्केएँ सुहि मणित एम । दहमेय कप्परतस्वरविचित्त । जोहसगिह भोयणभायभंग। तहो तिल रइ कामुबजुयस् दिट्ठु । अमुनिय वागाइयवाहिबंत । सुसमेण भिहु णई भुवंति भोय । तही अंतिमपल्लही सत्त भाय। कुलबरकमेण उप्पण्ण ताम । खेमंकर खेमंधर वि पवद । हुउ विमलवाहु चन्युम् उतेम ।

घत्ता- पुणु जसस्सि अहिबंदु वि तह बंदाहु मुणिज्जह । वच्देक पसेमड जो सिरिमाणइ माहि पुणी वि उध्यज्जह ॥१॥

(2)

तीर्वंकर ऋषभदेव

पुरुषहि ब्यसे जुमन् उपफ्जह मुणु विष्यु प्रस्था सास पुत्रु वस्सिह कप्नवृत्रमित्रशिय महकासे रविससिवह जे जेन जि सनिध्य संसिक पुस्तवराषु निकरत्वी तिह वसने विद्वारणपरवेतनः 🗠 पुरणाहेप येवि सिन्धिको

पियरज्ञमम् तक्यमे उच्छितज्ञद् । विष्णि वि जुयसह जीवहि सरिसह । तो हीयंते यह सबनालें। कुलमरेक से हैच जि व्यक्तिया । हुव जामें अध्यक्ति महाली । उपन्यस सुह विसहित्यसम् । श्विमिषु सन्तित सस्त्रीयी ।

वगरकुगाराँड्, मृह्य की वंहें कच्छान्त्राकृतकाहित्र, की यह परिविधाउँ तें विच उनरोहें स्विम्धिम्।इ कहिय सम्पेते । चंत्रकृषंत्रक वेति विकीयन । रज्जे वरिद्दिन ताम सुपेहें ।

10

बत्ता- सीलए रज्ज करंतहो सउ पुत्तह तहो वीयज्यस् उप्पण्ण । विज् स्तेकरउ जिवक्किन सुद संगन्छित हेर्र सन्म पण्णा । २॥

(3)

पुरवह तिह बहिय ससीइसक्स अट्ठारह कोडाकीडि कालू जिणु तो वि ण भावंद सुद्रभाव इउ वितिब पुण्णात्स णिवस णज्यंति भावणवर्स पसस तं णिएवि झस्ति जिणवर विरस्तु सुरसिविया जाणें गुण महंतु परमेट्ठि सिद्ध हियबद्ध धरेबि तहो णेहवसेण गुजगणिवास परिचस्तु देहु छम्मास जाम परिगतिय गसियं वेच् कीयकं ।
सायरह जाउ बन्धंतरान् ।
उप्पायमि एयहोक्ट विराउ ।
कीलंबस जिम बन्धानु पत्त ।
महि पत्रिय परम्बस पाणकंत्त ।
जियरण्जे यवेविन् भर्दु पूर्यु ।
जयसदे सिळल्यमण् पत्तु ।
णिग्संध् जाउ सिरि सोउ देवि ।
पम्बद्द्य णरेंद्द्र भउसहास ।
अच्छद्द जिलादु स्वस्त्रम्णि ताम ।

^{(1) 1.}b जाणेविण, व मुझ मणेविण, b भणिजं for मिरतं, 2.b भासिजं, b तजं, a सम्म, 3.a केव, a मणवेए सिंह, b भणिजं, a एव, 4 b जाम for जासि, b विश्वत्ता for विचित्ता, 5.b जोयसक, b जोईस, 6.b दीवंग, b सिट्ठ, b कामुयज्यसं विट्ठ, 7.b वाहाविय, 8.b सुसमिष्टुं णई, 9.a सुसम् युसम्, b सतत्य for सर्वसाय, 10.b बह्डमर्ज, 11.b विद्युष्ट तहं सम्मइ, a समेकर, b समकड, 12.a चक्कुक्म, 13.a repeats the line पुण जसस्ति अहिथंद वि, 14.a omits वि ।

^{(2) 1.}b सुसस्यान्यद्द, के इक्काबाइ, 2.b दिण कद्द वि आस्त, के बरिसाई, b जुनल्हें, b स्टिबाई, 4.8 सस्या, 6.b उप्पण्यक, 7.a सुद कि सिरि, a सब्देशिश्च, 8.a क्कारकुमारें, क बाह्य, 19.a कमरोहि, b सन्दु वे केहें, 11.b युसाई, 4 उपाणक, के क्याबार्ड, 12.b सम्लव १

^{(3) 1.}b पुरुष्टि तिहि, व सहिया, b मांस्स, 2.b सामान्तं, 3.b एमहोगार,
4.b हम, a पुणानम, b पियस्त, 5.a पामानम्, 4.b समर, for सस्ति,
a पूरप् for पूर्तु, 7.a पियस्त्र, अ.त. के मोह्यांच, के.b समर, for संतर,
व पूरप् for पूर्तु, 7.a पियस्त्र, अ.त. के मोह्यांच, के.b स्वर for संवर, 11.a संदिम, b मेन्स्स्ति, कि.a हम संविक्ति, b समस्यानि, नामान्यांच।

षत्ता- बसहियं दुसह परीसह छड्डिय तवकह कंदमूलफस विष्हृहि । बा ते समल कुलिंगिंड गयंजीरलिय गर्याण बाणि अर्थिश्वाहि ।'३।।

(4)

रिसिक्त सेमि तइसोयमेडु
जइ पत्थि सील वयमंग्ड पाड
सिरिक्वें जं संचिवन पाड
ता कच्छमहाक्रण्माहिबेहि
बवरहि वक्कसदमपिष्ठ जित्यु
भरहसुय मरीएँ पंथाबीस
दिक्किय तं वंसणु संखु जाड
वितेब सिष्ठक्त पत्त दाणु
पहराविवि भागामेय झण्ण
परिहरिय जेहि मुणिन सिम्त
रयणस्यसंख्य वंससुल
भागापरिहाणह मुस्गाइ

भावनित नाइ इत कम्मृ चितु ।
परिहरह झित जिलंबमात ।
विशे जिल्व तासु विज्ञपद्यवात ।
तण् धूसित सह कहवय जिलेहि ।
संजात एम पासंविसत्यू । 5
तच्याह कहेवि कविसाह सीस ।
एत्तहि महि साहिति भरहरात ।
तें पत्तु परिविचत नुषाणुहाणू ।
वत्याणसम्मे अंकुर विभिच्य ।
उत्तम सावय ते मण्य वृत्त ।
विज्ञाह निहर्मक सासमाह ।

भत्ता- पुणु विष्ठम अणुराएँ पभणिउ राएँ जिज् युनंत वयसंभूय । जिजपरमागमु भावहो मुणिपयसेवहो एहु सुज्जानगुणेज जुम ॥४॥

(3)

तो ते प्रसम्बद्ध भरहेण जेम जिह भरहोंद्व तिह बहु परवरेंद्व सुद्द वहु कालए तब्बंत जाय वितंति एम विष्यद्ठ दुट्ठ परिवाणिय काणासत्वकत्व सम्मर्गरहित इस बंबक्षमा वय कायरीत शृंबंति जोस एकहि विकि नग्नेद्व राणकंछ परिवासिय इस समयन्ति जाम विय सकत वृत्यु भावंत तेम ।
परिपृत्तिष्य कसपूर्णायरेष्टि ।
जिल बन्मसिक्दि मिन्क्यपुराम ।
सन्दुर गाँरय वंदिह्यरिट्ठ ।
लोवाणुगह णिग्यह तमस्य ।
विश्वसम्य मृश्वि उन्मयतस्य ।
गुमनक्वे अवसार्णति सोय ।
निमिक्षम स्थल पोसिय विवर्गतः ।
गुमनक्वे अवसार्णति सोय ।

^{(4) 1.} b काई, 2.a वरिहरह, इ.a तों for ता, b बहिवेहि, b संदूं, b शिवेहि, 5.a संयांय, 6.b सप्यांई, b कविलाई, 7.b परंदू, 9.a प्रथ्म for स्वयां, 10.b विहि सुनियं, 12.b व्यरिहाणई पूसेणाई विकार, b सासवाई, 13.a पंपनियं, a व्यसंव्यं, 14.b होह for एष्ट्र, a सुक्तांय सुपैक्ययः।

गुरुभार बिय परिस्नीण गलु

पिनसेवि पुसु पहि पंकि सून्तु ।

10

वाता- तें संदेश वि वर्षियाँव पायहि चिव्यवि वाँहि क्रांम परिवाहिए । मृहेवएसुं ता चतार सामुपयुक्तर प्रयम्नरे तहा सिरि पाँडिए ॥ ।।।

(6)

छुद् पर्वाण पूरिस तासु कास पाणास्य पंकप सुरतगरतु चितह एए अहसुद्धमाय गय दुट्ठ केस सिरि पार देवि जितंतु एम कोनिमादिरतु तहि अवहि पर्नजिवि णियह जाम चितह कि महु देवरतणेश अह एक्सवार जह हणमि पाय तो वरि अवश्वाह करेबि तेम हय मणि धरेबि धसम्बमाण् ता दूसह दुस्कु महंतु बाउ ।
विष्कदिति जियसस्ति चस्तु ।
मह जीविड तिषु च सर्वति गाय ।
विण् कारणेण कीविड हरेवि ।
दुस्कें मरेवि वसुरस्तु पस्तु ।
वयमवदुह सुमरिवि कुइच ताम ।
विम सस्तु ण फलयहो चैमि जिण ।
सह सर्वाद सर्वारि दुस्टमांव ।
सह संतहए दुष्ट वि सहहि बैम ।
घंटाति मृहलु सण्यिष्ठ विमाणु ।

घत्ता- महि ते महिस णिसुंभण अच्छहि वंभण तहिसीसए चिउ एविणु । मायामिउ पह पासुर सो सासासुर णहि चउवस्यु हवेदिन्।।१॥

(7)

पेन्छेबि तेहि सुहसंतमाउ के तुम्हर्ड कर्जी केण आद सम्महो अवद्ग्णस सृगह वंसु अवरावर बंभ मुहाउ परतु णियवरिससएम बएण ऐमि पणवेविणु पुष्टित पंहकांत । तें भणिय ताम स्पि महुर वाय । हुउ वंभणकुल कलियल जिस्सु । अञ्चित वहि वेड पहेलु संतु । चलवेयलीए पायकु करीम ।

(a) l.a तें, a भरहेहि, adda रस in margin after स्वस, 2.9 भरहि, b भरहेंहि, a जरवरेहि, 3.5 महें बहु कार्ले तब्संस, 4.0 वितंत, b अम्हर्दे, 5.a णामाबिह पसत्य, a पसत्य for समस्य, 6.b द for इस, b सर्वसम्य, 7.a कुसमंब्यें b कुसमेंब, 8.b दार्ग, 9.b समस्र for इस, b कहिमि बंग, 10.0 परिश्वेस, 11.b त संबंध गण्यि, 12.b परभव तसु।

(6) . 3.a राण्, b. saids म केडरेजा मणीत, के.b एवं, &b-विवर्ध, b जुड्यं बामं, 7.b विवर्ध, 8.b पुत्र प्रमुखि, 9.4 तो वर्ष सर्वयद, के करेमि, बे साम, b सर्व चं चाहि सुद्ध कहति, 11.a चहिः 12.8 सर्वार्थ्य, म ह्यिंगिण्य । कालेण तुम्ह कुंबंबम्म् पट्टू तो भणित वेहि शिमामु वेत ती तेण करे विसर्य केट वट्ठको रे वपा मुणेह बणुमंतव्यो वि दशामि सब्बु इय एवमाइ वयमङ् भवेवि पुणु दुनस्यमनस्य वॉरसिय समेण | णिय कोवकल्यु सारित कमेण ।

पासंबिहि एड पासंबु सिद्ठु। वं वाबह वियमुसबम्य वेह । समेव पदानिय विष्पाएउ । सोयध्यो रे अप्या गणेहु । शिह् अप्पा तिह पर गणह सब्दू । परमही बीसासही पढम् जेबि ।

पत्ता- अतिहिपियर सम्मानहं जरणिवहाणह धम्में जीव हवाविय । · वियमुसंग्रेम्न् मणेनिन् वेतं पढेनिन् संग्रेमोनखंफलवार्विय ॥॥॥

(8)

कप्पहो महु क्यु बस्सोरिकमासु अहवा महु जु ग्रेहा समासु । सस्त्रयगंत्रय अमस्त्रमम् रुस्तान्य रहरियमराहमहिस । पाराबबलावयहं**स**मारे चाएनि मुंजावेनि निप्पपनर णाणाविह जन्मविहाम भेउ राएँ वह राज वि इणिउ जेला

अणबृहिय हिन्सिः अह बाहुजेहु 🛷 🕟 अवरहि वि अतिहितप्पणु करेहु । बट्टंडयमासतित्तिरमउर । सारवभेषंत्र कवीवकुरर इस एवमाइ यह विश्वधनर । रोहियमच्छाइयमहाम पीणिण्जह मस्तिए मोत्तिपियर। अवरु वि वरितिच पडिक्रण वेच । सी रायपुर भासित प्रसूच । वयमेह भहायगहन्य सिद्ध अस्सवह अस्सवेह वि प्रसिद्ध ।

वस्ता- वीअपसूव हुणिक्जर जहिंसी गज्जर जमें वोमेह प्रसम्बर । वसुषेहु वि वसुहोते सह वर सोने सःगुज्यसमस्यञ्ज ॥ ८॥

^{(7) 1.}a तेहि, सहसंत्रमाउ पणविष्यिण, 2.a तुम्हेद, 3.a अवयवण्य, b सबस्वण्य, b सर्व, 5.a एपि, b पायद, a करेवि, 8.4 पार्वाविष्ठि, 7.5 क्षांबर्ड, 8 जामह, 9.4 वट्टजोरे, 10.5 वयणहे, 12.5 पुरुवसम्बद्ध, 13.5 सम्मागह वण्णविहासह, 14.4 वेग ।

^{(8) 2.}b ft for ft, 3.5 suffine for successive dat, 3.6 sque, b quant, sh them, b. conto quay before to, 7.0 faquet. b different bed flat, being, 11.5 though to

(ė)

द्य अभव्यवस्थाणु संगामिय सोम् अपेड पेड संगमित मज्जपाणि सोबामणि पार्विश्व । सावय परदारु वि सेवायिकः।

तक्यो-

स्वयमेवावतां गारीं यो व काववते वरः बह्यहृत्या प्रवेतस्य पूर्ण्यं बह्यावयीविवस् ॥ ,॥

यवष यहा वनम्मविहि प्रासिड विवयवचीर्ववनयु ववासिडं ।

-

तक्या-

वातरनुविहि स्वकारपूर्वहि दुवाकी न कातावी ॥२॥

एवमाइ अगर वि जंपेनिषु
कोवसमाण वहर साहेनिण
वालासुर कमस्य जिमनेहहो
तहो दुट्उरंतु विएहि ण लिखाः
बेठ अनिखाउ पमाणु अनिणासिउ
लोएँ ण वि निस्तामिसलुठें
इम मह नेयनेज संजायन
जवर वि शुधिसुरुवम्णिणणाहहो
वाल्लुटिश्च सुरुवसु स्वर्णमन

पगडु समस्मृ कि सम्मृ सिहें विश्व ।

गियजासमहो जामि पर्वेमें विश्व ।

गढ संतुद्द रमणिगणसोहहो ।

सम्मृ भणिम गहिड अपरिक्शित । 10

हय भणेकि सौक्सेसु प्रमासित ।

गहिड भणेकिमृ सुह्यस मुद्धें ।

कासकमेश कार्त विश्वाधार ।

तिथ वहतें गाणसमाहही ।

सहो संकामृ सेकि सोयगर ।

भरता- हरि जीवेतु गणेतच चींच वहंतच छम्मासाबीह जहयही। यिच ता मिन्छालाएँ इह किंच सोएँ संसासवस वि तहयही ॥९॥

(10)

रिसिस**ण वासविद्यगा**र्तिरचे गउ पुरुषए सिजन्जपुर गयरे वाजिए मुचिनाहें संगु पुरसु विहरंतु पिहिबि प्यक्तियमसत्वे । मंसास्त्रि म सपलेणायरिवर्णियरे । सा बाउ को वि परिवर्श विकस्तु ।

^{(9) 1.}b उन्मंबिंड मंहुपाणुं सुरतामांग राविष्ठं, 2.b मावट परवाद, 3.a तारी, 4.a प्रवेतस्य, 5.a तहा जयमुविद्धि, 6.b रवसारवृदिहि, b. omits च, Amitagati does not quote the votes in his समंपरीला, 9.b सालायुम, क वर्ड संपुर्ट पुणिबंबंच, 10 a दिवाहि, b. omits च, 12.b. omits च, b सिंदामा वार्षियक, 15.b सेम समेज for सालक्ष्मेय, 14.b स्कूल्य, 55.b सोहं वस, 55.b समासांबद, १७.a तहावही।

एकों मुजिया एरिसु सुयेवि यरिवाए गंपि धयखंडरिद एविषु सीत वश्यक्ताम् वास पहस्तवत असुदाहार अञ्बु उग्यिक्ति मुणित पुणु तेण मंसु सुद्धौयणुलेसमिइ य मुणेषि । मण्डय-तणुतदुलबीरसुद्ध । मग्निन मुणिणाहें मणिन ताम । हा हा णासिन णियधम्मकण्य । पर्माणन पत्तवडिए णस्व दोसु ।

5

5

10

घरता- पुणु जिलसासणु छंडिउ मुणिवड खंडिउ तेण सविज्ञागार्वे । देव वि युद्ध प्रयासित कड्डिउ पलासित मण्जित जजेण समर्थे ॥ १०॥ 10

(11)

समयाइ य जाय बहो समाया अरिहो संवरामर प्रयरिहो सर्विह कयकम्मविणासिलही स हरो भवसंभवदोसहरो स रवी संवस्त्य प्रयासर्वी दहणो कसायत्वक्ट्हणो णयरीज स सन्विविश्विम्मरी प्रवणो स भवोयहि संप्रणो सविसो भवियो क्यांबस्सियो स विहत महाणुक्णे स्विह

रिसही पुण णहिसुओ रिसहो।
विशिष्णे हिबहंडणु सो वि विणो।
स हरी तहो देव गयास हरी।
सुगक्षो वि य सो सुगई सुगओ।
अमरो ह पहु स स्या अमरो।
सजमो मयमोह वि हंस्जमो।
वच्णो सगरायणहा बच्णो।
धगओ सजगाण महाधणओ।
धरणो स य सेस्ब्रसाधरणो।
कहिओ इय तोडयकोकहिओ।

धारता- इय मासित णिसुणैविणु फुडु मण्णेविणु वोस्तित सारववेद । मिरतणरए णिवडंतत पलयहो जंतत रक्तित पद सुविवेए ।

(12)

पवनवेग का सुवयपरिवर्तन

तुहु परममिरतु अह परमसामि मिण्डरतु विमिद् वें हरिड मज्मु अह बंधू पियद गुरु झग्मसामि । को सरिसु अणसि घुषणयसि तुज्झु ।

- (10) 1.a पिहिमि, a पयस्ये, 3.b मंतासि, 5.b सिक्क, 7.b पर्ह लेबि for पदस्यन, a हहा, b परलोब for पियम्रहम, 8.b मुणिनं, b पर्मणिनं, 10.b मण्यिनं, a अभन्दे, Cf. स्थांतसार श देवसेन !
- (11) Lb जायं, इ समाय for समया, ६.६ सक्साग्रतक इह्मी b विवहंसजामी, 7.a निकीणसरी written क्यूरी 2 on the head of म and म respectively and it is applicated in the space as इंड्स. ६.६ सवीविंस, 9.5 सिमी for सिकी, में .4 मक्वेबिक्स पुत्र में सिक्ट स्वामेर्ट ।

मण्यत्तु दुसस् संसारि एत्थ् सुलह्द रयणद् रमणी सुहाद सम्मत्तरमण् पुणु होद्द सुलहु देवो तिहुयणकुष होद्द सो बि ते कमयस जे जिण शक्ने पत्त ते करमल जे जिण्णहक्कपृत्त तं मुहु जं जिण्णुणब्दणि दसिख भो दरस्वयारिय विमसन्नित

परतेषि अंगि गिन्यंगि जित्यु । बरडज्यायद् गयरें मिहाद् । मह तुज्या पसाएँ जाउ सुबहुं । सम्मससहिउ जिण् युवद् भी ति । से गयम मुणमि खे जिलहो रस्त । जिलग्य सुणंति ते प्रण्या सुस्य । तं गरतणु खं जिल्लासम्मे बस्ति । जिल्लासम्मु सेनि वड कर्मि मिस्स । धि

चता- इय पन्नणित मरुवेएँ ता मणवेएँ णिसुणैविषु वीतिष्णवः । एहि पुरिष्ठि वष्योणिहि नेवलगाणिष्ठि मुणिहि पासि जाइज्जंद ॥१२॥

(13)

एम भणेति खनाहितपुत्ता दिव्यविमाणहि से वियरंता णिम्मल केवल लिष्ठसणाहें णायणरामरखेयरवंदं मित्तणिमित्त समुण्ययमितो बोल्लइ केवलिपासि जितिद्ठो जासु कए मइ श्रेहिन्ह्त्तें पाडलिउत्तपुरिन्न दियामं सच्चुअसम्म् सुनेति निरसी जाउ जिणेसर क्षम्म सुद्दतो दिव्यविह्सणं भूसियगता ।
सम्मि पएसि संगेणं वि वसा ।
तस्य णवेविणु तं मृणिणाहें ।
वंदिन्न तेहि पुणो सृणिणंदं ।
माणसवेन सिरेण सहितो ।
सामिय एस सुहीम महद्दो ।
पुण्डिय तुम्हद्द सम्माणिमित्तें ।
एम सुणीवणु वेसपुराणं ।
चणिमय मिच्छसलो ज्वसंतो ।
छंदो एरिसु दावस बुतो ।

1,

घरता- मुणि एयही वस बिज्जड करुणु रहज्जह इस पसात महु किज्जह । मसंवेसही बमणुल्लाउ मण्यवि भल्लाउ बुंधिगाहिण समिज्जह ॥१६॥

⁽¹²⁾ La सन्तगतिन, 4.b सुनहरं रमयहं, b सुद्वाहं, b • त्रण्यागरं प्रतरहं विहादं, 5.a समस्ता०, 6.b मुनहं मो बि, 7.b यमबि क्रिंग मुनमि, b एंटर for रहत, 3.b ०ण्डवंचे, 3.b सं मुद्दु जिन्छ०, a जिमसम्स, 10.a लेमि, ति सं श्रेष्ठ तह।

^{(13) 2.6} विमानसि, 4.6 तेहि जबेस मुनियदं, 6 6 वस्ट्डो कि शिविटतो, क स्तिमस एस, 7 6 मई, ६ वैहिबनसीं, 6 कुम्बरें, 8 द एम मुनेवियु, 9.2 संस्थानस्का, र मण्डमसरे, 41.6 जंदर, 6 दोवंड कि सावड, 2 उत्तो, 11.6 रइण्डब, 2 मुद्दु, 12.6 मनेवि कि मण्डिय ।

वायक्तप्र

भो सन्तेय साम्यव्याह मा भन्वहि उंदर्शिप्यताह महुमञ्जूषाण तह मा करेडि जीववह असम्यु वि परिहरेहि वज्नेहि सुरूउ वि परकलत्तु मिय परिम्यह करेहि मणुष्यवाह दिसि विदिसि हु गमणक्योजणाह जहि देसहि भंगुह बहवयाह विसुणेतिणु निष्हिंह सुह्यवाहः।
वडवडिपंपरितदः शक्यकाहः।
तणु सूत्रवृष्टेहिं सर्वकरेहिः।
परदब्यु क काइवि स्वस्टेहिः।
स्वपः स्व निसिहि रमिय कलस्तुः।
इस पंच तिष्णि सुणि वृष्यवाहः।
करि संबहि सस्वीयणाहः।
परिहरि ते गम्मुण साववाहः।

घस्ता- रज्जू वि साडयस पहु दिय बुह्यर पयिवय देहि म कहहो वि कसाह वि । दरमारणरपिततहु हहहुँ सस्तहुँ चाउ करेहि सबाइ वि ॥१४॥ 10

(15)

वं जीवेसु महत्ती भाषिति
अहरउहज्ज्ञाण मिस्लेबिणु
अह वरे सुद पढिमग्गए बाएवि
किरियापुर्वे जिणु वेदिन्जद
उत्तमु तं पि हवेद तिवारए
एकवार जिणवद बंदतहँ
सत्तमि तेरसीहि भुतंतरे
जं गियमे य करणें णिसि मिन्जद
अहवा णियमरेवि बच्छेवउ

संजीम पुणु सुर्भायण पानिति । पानिण जिनमंदिर पहतेमिणु । मह उत्तरदिसि संमुद्ध होएनि । तं सिम्बाग्र पदमु मिनज्जद । मिन्समु पुणु मासियस दुवारए । सं पि जहण्णु दुरिस्स निर्मत्हें । स्वनासं सएनि पुणु जिणहरे । सो पोसहस्त्रमासु मिनज्जद । किसिवाणिक्जद न गण्डेक्स ।

5

(14) 1.8 जी for भी, b • वसाई in both places, b नेष्हहं, 2.b जिएतसाई, a फसपलाइ, b फलाइं, 3.b इ मह मण्युपाण, a • मुलेहि, b असंकरेहि, 4.b म काइंसि अवहरेहि, 5.b यण्डोहि सक्त दि, a अप्य क्यं m margin is written for अ, b जिसिहि, 6.b परिमह करहि अयुध्यमाइं, b सुन् पुष्पवमाई, 7.b विविधिहि नमन पजोस्नाहं करि संबाद सं संवोधणाहं, 8.b बहि देसई, b • वसाई, b सं for ते, b सामग्रहं, 9.b प्रविधं, b महो भि, 10.2 omits रथ before जिताह, b चहुं सत्वह ।

षश्वा- वं एयाहाराइए तं वि विवेद्य पोसहो मृजिक्स्सरमहि । इय वियाज सिक्खायज तिबिहु वि सुहावज किञ्जद पविमगिहस्महि ।।१५।।

(16)

वृभिसयणु तह तियपरिहरणउ
सुपहाएँ विणमं विदि गण्डिवि
पहनणपुण्जसम्भाहणु करेनिष्
जिणमर णियमरदार बरेसिह
परतु यनेनिष् पडिग्गाहिज्जइ
तत्यिन उच्चामणि नहसारेनि
पुज्ज करेनि नट्डिनिह भरितए
ज निहिनिहियउ भनियहि किज्जइ
मरणयाने सण्णासु करेनिषु
सुहमानेण नेह जो मुख्यइ
जनर नि भनियहि एम करेनउ
उन्नराइँ विस्म दोसईँ णिसुणहि
मयपाण्डिम वि्याहित न मुणइ

एस वि इत्स वि जाणिह करणत ।
वदमभत्तिकरेनि सहण्यवि ।
मुजिवरवरणज्ञुयल् पणमेविण् !
अहवा मिगिहि पंथि गवेसिहि ।
आयरेण पुणु मंबिरि णिलजह ।
कायुम्मानकों यय पन्यालेवि ।
पन्तु सुमृह्यक वि विम्मतित्य ।
तं सिन्धायस तहत मिणज्जह ।
तं चतन्य सिन्धायत गिल्जह ।
तं चतन्य सिन्धायत गुल्वम् ।
सं चतन्य सिन्धायत गुल्वम् ।
पंणुंवतस्योणि वियाणिह ।
पंणुंवतस्योणि वियाणिह ।

10

चत्ता- संमुच्छि मए पयासिय आयमभासिय वनमंश्वरसफासहि । 15 भिज्याण्य सबर वि जेन जि मुणियण तेण जि वहु बीव वि महुसासहि ।।१९।।

(17)

महुमिष्णयसंख्यास्य हवेद वं पात्रमामकारहदहर्ने इय वेयस्यम् सुपसिद्धं जद्द वि हिसारस सम्बह्धे भगववर्षि तह निक्कु चिद्क्षण जगु चवेद ! तं होए एकक स्मृतिषु वि वर्ग । सहपाणु म नेक्सद सृद्ध तह वि । सह लोए होद यह व्यक्तियमासि ।

^{(15) 1.}a पुत्त, a भावित for पावेषि, 2.b व्यक्षाण्, a पावण्, 3.a सुद्द अह घर पाँचं , b संमूहं, a चोद्दां for द्वोपिंद, 5.a मांक्सण, 5.a बंदतह, क णियंत्रह, 7.a तेर सीदि अस्तुंत्तरे, 8-b त्रवियंत्री, a वोसह जवासु प्रमुख्यह, 9.a स्विष्ण्यंत्र, a गांगिण्यदि, 10.b विविद्धि b गुजिरहि, 11.b व्यत्यदि, 12.b. onlite थि, a मुद्दमण for सुद्दागंड, b विद्दस्यदि।

परवन्बहरणे मरणउ सहेइ
वहु परिगह संख्य कलमसंबु
इम एवमाई बहु दोस धणिन
तें कण्जे एयह मणिन वाज
इय एरिसे ण पालिय वएण
जे खगमोक्समुह्यरदाल्हुँ

पररमणिरमणे तं चिंय दुहु सहैद । 5
रयणिहिं, वि णिद्द य सहेद सुयंतु ।
परसोयदुस्स्य पुणु केष मुण्यि ।
परिसु वयकारणु पुण्णहेउ ।
सुहु सन्मद मणुएँ भन्वरण्ण ।
मूलगुणाइ य अंकुद सुवर्तु । 10

वस्ता- ते विसयाणसचुनका होहि गुसन्का हरिसेणहो वं इट्टड । विहि पविय सुउणि गणहें गाँरतुट्ठ मणहं सासवफ्सु सुहिकट्टड ॥१७॥

इय धम्मपरिस्थाए चलवन्त्रहिद्द्याए चिताए । बुह्हरिसेणकमाए वहनी संबी परिसमत्तो ।। छ ॥ म्लोक ॥१६२॥ छ ॥

* * *

^{(16) 1.}b परिहरणंडं, a. writes in margin तह मियकरणंडं and writes संकोइयकरणंडं after ॰हरणंडं, a बस्य for इस्य, b जाणहि करणंडं. 2.a सुपहानें, b जिणमंदिर गण्डांव, b सइंन्छाने, b ॰ सबसहण्, 3.a पणनेपिण्, b पणनेपिण्, 4.b घरेसाँह, b मन्याँह, a परिथ, b यनेसाँह, 5.b मंदिर, 6.a तस्यह, a वहसारांव, 8.a जे नेहि विहि भनियंड दिण्जडं, 9.a जहि, 10 & 11.a two iines मरणया ले. . . to नक्नइ, 12.a भनियह एउ करेयडं, a भूजेन्बडं, 13.a उनराइ, a नोसें, b निमुणहि, 14.b मुणई, a भंकु भन्धि, b गण्डं, 15.a पासहि, 16.a फिल्म न नवर जीने जि, a. adds के after तैंच, a मंसहि।

^{(17) 2.}b बॉण, 3.b नेस्लॉह मूब, 4,b सन्बहं, b. inter. लीए and होड, a असिमरीं, 5a परब्ले हरण, b मरण ं, a पररमणिंह ते बिम, b omits पूह, 6a रमणिंह ण णिड़ a अतित्तु for सुनेतु, 7.a डह एवमाए इह दोसं, a मणिय डंग सुणिय, 8.b एत्यहं मणि ं, a एरिस बयकरण सुपुज्यहें , 10.b जें, a •तर्ब , a गुंच हु, 11.b होहि, b हरिसेण हैं, 12.b देंदि, a मणहं for गण है, a सासंबस्ट कर्ज मिट्ठ , 14.a परिसंगतो, b भरको िंग मणों । देंदे ।।

११. एयारहमो संधि

(1)

मेबाड और उन्जीयिनी नगर का वर्णम

णिसिपहरहो पूर्णकाणे भीयणवजनो जिसुनहु जं कसु तिद्वत । जंबूबीयि विसालए भरहि मुहालए नेबाडविसंड रिद्ध ।। छ ।। जो सिहरि सिष्टिणकेक्कारमल्लु तरकुसुमगंधनासियदियंतु च्यवणकोइसालावरम्मु भिसक्सिलयसायणतुद्ठहंसु करवंदजाल किश्विविहिश्योसु कयसासचरणमोमहिसिमहिसु तग्याणाणेविय दीयमंद् वरसालि सुबंधियगंधवाहु तं णियकगाममंदियकप्सु रिउजोग्गसोक्सरंजियज्ञीह

सरिति डरहट्ट जबसेयगिल्लु । णीसेससाससंपुर्व्यक्षेत्यु । वरसरसारसवयज्ञियपिम्म् । मररंदमसम्बालन्यलियोसु । वणतरुहलसंड शिवासामा मोसु । उच्छ्रका पद्मिसिय स्कृतिकेस । य लणसिमासम्पन्यपहिनसंद् । तक्किसक्षध्वियस्यमसम्ब जणपूरिमद्भिक्रम जान कोस् । गयनोरमारिमबसक्सोह ।

10

यस्ता- जो जन्मानिह सोहद खेहरसोहह बस्साहरीह विसावहि । मिष्णकं वायस्वपुरवहि बदवरवरणहि पुरिष्ठ संगोजरसामहि ॥१॥

(2)

तहि अत्य कोट्ट् सिरिजिसक्ड सोहर सुरणयणाणंविरेहि सोइयसुरहरइ मि जहि जणेण

जहि मणहरु जिणहरु सहसक्रू । पंच सय संख जिणमंविरींह । संवच्छरंतिगियहणभएण।

^{(1) 1.}a पुण्यासच्य, b निस्तुणहुं, 2.a मेवाडू विस्तु अध्याद् 3.a केवृकाखेस्, 4.8 विक्रोण for स्पेरीण, b oसंपर्ण , 7.8 अगण्डं for अमग्रा, 8.b ०थोसिंह समिहिसम्बिस् 9.b कमाचेमंद्रिसदीगर्वे ३ ० सम्बर् for समय, 10.b सुनंबाय. 11.b. oquin के 13.b जा उद्यापादि के स्वृतीहर्राह francis Ma state for outer business becomen for अहमरवण्यस्थितः के सुद्रोहित के सुवोद्धार्_{त ने}

जिनवरमपिकाः मृदंकियाः
जाँह गुमुष्मंति महस्यरक्षेत्रस्यः
जिविकारस्यकीसाउसाः
सञ्जाणिकाः व जिन्मलाः
जाह पुरस्णिपक्तांह सोहियाः
वरवाबीकृवतसाययाः
जिस्मिय वरहिणस्य विरहिणीउ

भविषाह जणहरई वसंकिषाई।
वरतस्वराह सुमहस्फलाई।
जहि दीसहि बहुवाणरज्याई।
जहि सरसरंति जिज्यरज्याई।
कीसारमगामिण बोहियाई।
वसीस बस्थि समप्याई।
सङ् प्रियवसाज जहि माणिकीत।

करता— वंति कोसु दोहतें कोसु पिहतें सब्कोसु वसु छण्यई । बासु सबरि सास्दु वि नच सहमूदु वि सप्पन्न तदण्यें मण्यहें स्वराह

(3)

निशिभोजन फथा

तहि वस्माणु पर्वषु णरेसर तहो नेहणि विवनीरि महासद तहो सिरियामु मंति वहु जाणछ तहो सिरियामहो धन्यद नेहिणि विहि ति ताहै जिनमुणिपयमस्तहें एवर हि विण जागरियहो महिसए मासि णाई सन्तमि सुरेसर ।
ण रामहो चर सीयमहासह ।
जसु सुरगुर नि ण महए समाणते ।
ण इंदही सह ण चंदहो रेडिणि ।
वियलह कालु सम्मि मास्सह । 5
मिनय वादी संस्वेनए ।

- (2) 1.6 तहि, 2.a व्यक्तिह a व्यक्तिह, 3.5 व्युक्टरहं वि, 4.a मृहंकियाह, a विक्ट्टरह विस्कियाह, 5.a जहि, b नुममुमंत्रमहुवर, a व्युक्ताह, a वरत्रव्यणाह, a व्यक्ताह, 6.a णियंडिय भररह्यकीताजनाह जहि वीसहि, a व्यक्ताह 7.a णिम्मलाह जहि व्यक्ताह, 8.a जहि, a सोहियहं, 9.a व्यक्ताययाह, a अत्यो, b. adds पय before समपयाह, a समप्रवाह, 10.a सहि for सह, 11.a अदकोसु जसु उत्काउ, 12.a अहबूद वि, a मण्डह for मण्डहं।
- (3) 1.a तहि, 2.b गेण for गेहमि, 2.a पियगीरि, a महासद, 3.b बाणले,
 4.a. omits में before देवही, b सदं, 5.a बिंह बि ताह, a अस्तही,
 b वियवार, a बाधताहो, 6.a सम्बादेसए, b संमावेशदं (मा).
 7.b सर्वाच मंदिर, b ध्रमकंदं पुरिताहि (Then four times were
 detated in a). 8.a तम वि संगित for ताए पणिल, b प्रवित्तं क गिरितिए पृथिक्याई b सुनिक्ताई, 9.a वें for बं, b दिन्ह परं विश्वमहि,
 b सुप for पुता, a तम वि र्वित र्त, b सुन्य समस्यति।

एलहि तक्बाणि मॅबिरि यलहि ताए मंबिर विसि थे मुंबिएंबर मान्त्रको भोषण् सम्बद्ध पुरतहि । पुरत महारको सम्बन्ध सुनिक्यह ।

करता- याक्तरांचि तां बिद्ठ गई नियुचि पुरत तुह वर्षिकीन । योवसुरवर्षिहि विज्ञियन तं हुन तुहि वस्तिमि ॥३॥

10

(4)

पुण् अवन्य जियनंदम् पन्तुः
रह्येकःपुर तहि नसद सीउ
सहो गयको निहर बह्यान्य
गोयरिनियस पायारत्युः
चउहट्टमग्म बदसोहमान्
जहि मंगस् गरिय सीउ
मनद नि तहि पुरवर मरिय मोजनु
जनसङ्गु पुरवर सोहमानु

पासड वियान् संपय सजुत्तु । उदमिन्वह तासु य सम्मतीत । सररामविहारेह व वस्तर्ज्यां । तही केण वि च किंउ क्यांवि मंगू । देउसह तृंवू बहसप्पर्माणु । जन्महि वि च वीसह तहि विश्रीत । पहपरहो च करत सुनह बीडकु । पह सारु य तहि बुरि सहह पाणु ।

वस्ता∸ पर एक्ड्रं वि तहि दोसु जिणझम्मू वि ण मुर्गिक्जद । विस्रसास्तव जीव पसु जंगसु मन्त्रिक्जद ।। ४॥

10

(5)

कीरंडनकु तहि चरवड पयंडुं तही केरड जो ज वि करइ वयणु पय पालइ तही गुण इंथा महंतु तही रूव अवड ज उ को वि विद्रु दिय पंचसमइ वहु कषयमाल रिविस्तासिहरिय सञ्जवंद् ।
पूज् वरिसद्द तही थिस्तुलव मरण् ।
परतिय परिहरद सुस्तर्सन्तु ।
बसुरवहि सबदम्णु बिट्ठू ।
सोहन्मसंत अद्युमिक्सल ।

^{(4) 1.}b अणवर्. b किल् for पेउल् b बरपष्टु विशास संप्रय विदास for पासड etc. 2.b वसके लोड स्वविष्णारं, a समित, b सम्ब लोड, 5.a वार्यि साहिर, a व्यक्तु, b वर्ष 3.b after सर रा, omits म विद्वासहि etc. बंग्रहृत्यस्य, 4.a त्रेच, a बंद्रसीमुनीम, 5.a वेटलड रत्यहि साध्यास्य, रू.a क b. क्रिक्ट सम्बाध्य, adds संबंध्यसमित्र तहि सम्ब लोड, b सम्बद्ध विद्यास सीत, b समह वि व्यक्ति सीत, b समह वि व्यक्ति सीत, b समह वि व्यक्ति सीत, के स्वत्य के सीत, b सीत, b के सीत, के सीव के सीत, के सीव विद्यास के सीत, के सीव के सीत के सीव के

सय बुढिमंति सहयूण महंतु तहि पुरि बणिजारको हक्कु आउ तहि पुरवाहिरि चंडीविहार तासु वि सुवहर सुद्ध अथिन सुपुत्तु । वसणह मन्बह ण उ लहह ठाउ । पहं सेविणु तहि थिए देविणु वार ।

चला- भयडरियउ अच्छइ तहि पुणु पिच्छइ भूयविवालहि तहि जि पुणु । तही सद्दु सुणेविण् मउण् करेविणु जिच्छउ आयउ घुव मरणु ॥५। । ।।

(6)

तिह ठियत प्रस्तुष्णु सो जाम अच्छेड तिह के वि कसी करेलेवि धार्वति णिम्मंसकडिएहि दद्दुरियणासेहि ववरेण ते भणिय कि तुहि बच्छेह तहो वयणु णिसुणैवि तं एक्कु संक्तिउ

तं वेल विच्छरिय पिक्खेवि सहसत्ति तहो भूयवयणेण संचलिय णिसि जाम जहि राउ भूंजेइ तहि आवि ते पत्त बेबाल कीलंति वहुविह्द पिक्छेद । बहुंगकावाल पुणु लेवि यच्चंति । टहुरियसीसेहि पिगलियणयणेहि । जि राउ भुंजेद तं वेल पेक्छेद । णिमिसेण सो पत्तु धवल हरिण खणे चिट । 5

पेयहिउ भणिउ आवेबितं सस्ति । वणि उत्तु वाहेहि धरिसण तहि ताम । मणपवणवेएहि पाहुणहि संजुत्त ।

घस्ता- तहि भोयणवेलए वहु वेयालए किलिकिलंतपच्छण्णभया । भुंजइ तहि एक्कहि ण वि ते पेक्खहि रयणिहि भुंजिव सयलगया ॥६॥ 10

- (5) 1.b णरबई, b रिजं, b वज्जवंदू, 2.b करहं, b दरिसहे, 3.b पालई, b पहु for इस्रों, b परिहरई, a सुसन्जंबंतु, 4.b रूबें, b वसुएवहीं णं अवर्षणु, 5.b पबस्यहो, a कणवमाल, b omits सोहग्गवंत etc...to सुपुत्तु, a सुपुत्त, 7 a एकु, b बाजं, b वसमाई मिनजं ण उ लद्धू ट्ठाउं, 8.a तहो पुरवाहिर, a पइ, a omits तहि, b देविदाह, a कवाडू for वाद, 9.b डरियजं बच्छइं, a तहो जह पिच्छइ भूयवियालिहि, 10.b णिच्छर्ज आयजं शुष्ठ मरणु ।
- (6) 1.b ठियरं, b जाएनि अक्छोइं, b कीतत, b पिक्छोइं, 2.b करेतें वि, a बंट्रंग, b ते नि for से जि, 3.b कलिएहिं, a बंदुरिय॰, a,b बासेहिं, a पिंग्लास॰, 4.a. adds अंपिक्ष केसेनि before अवरेण etc. a अवरेण भणिएम, b तुन्हिं अक्छेहं, b रातं मुंजेइ, b जिन्छिहं, 5.a विनिसेण, a हरि for हरिय, 6.b पेमाहियो चलियो अव्यक्ति तहोस्कित, 7.b वहु for तहो, a बाहीहिं, b. after सरिक there is a space before ताम, 8.b राउं मुंजेइ, a जाया for नानि, a नेज्यक्तवेयेष; 14.b मुंबहि, .. ए ग्रीह, b यह।

(7)

णिसियर जिसि चुंजिय गइय जाम
भूयमहंतपहाचें तहि पयह्ठु
राएँ पचित्र एहं केम बाउ
रायहो आएसि सो णिविंद्ठु
तहि कासइ हठ वि आयाण चाव
राएँ पचित्र विणवि विद्ठु
ति चित्रों चे जह अभवी नहिंम
तुह णयरहो पासि मणीहिराम्

बिणियवर वि एक्कु जि पर पक्कु ताम ।
पुणु सो तिह विणिट्टु सयनहिंह दिट्टु ।
बहुउ महंतु महु भीज्यु काउ ।
पुणु विणवर गुत्तिहि गेबि छट्टु ।
जिसि गद्द्य सूत्र उग्गमिन ताम । 3
महु सत्त्रकृमि लुहु कि म गद्द्रु ।
वित्तंत्तु समन् हुन तुम्ह कहिम ।
पंचारमायन सुप्तिखु जामू ।

वत्ता- तहि हउ जिनसंतर मुहि अच्छंतउ रह्षेरसपुर कार हउ। विवहार च सरियद रवि अच्छमियउ तहि मद पद समहनस् णउ ॥७॥

(8)

वंडीमंदिरे अइ निसंज जाम खट्टंगकनालंतिसुलधारिया ताह्रज अवलायेमि लयउ वाह तहा मंतिपहावें एत्यू आउ तुह सहु भुजिल मह इत्यू जाम तहु वयणु सुणैनि कंपिल देव स्ति जो गुरकेर लबएसु कुणइ पंचिदिय पसर णिरोहु मुणइ जाणिल किल एयही सुह पणामु अमरल रिल्ड सीहाज्याल किलिबिसहि भूयवेयान ताम ।
जाइणि साइणि सह तेवि चलिया ।
महाणखंडु महु विण्णु ताह ।
सुह पासि तेहि महु विण्णु ठाउ ।
से सयल वि यय हुउ चक्कु ताम ।
जिस्मिनीयमु चिज्जड तेम मन्ति ।
जो धम्मु असेसु वि सयल् मुण्ड ।
सो चलियउ रावहो करि प्यामु ।
मइ सहिड एउ चित्तकडि साउ ।

10

वत्ता- वा जञ्छिम तहि पुरि सिरिवालहो घरि सावण्यत ते दिस्ठु महु । तहो तार्स दिष्णि पुणु अवदण्यी सयसह सोयहो आणिवि सुद्धु ॥८॥

^{(7) 1.}b जामा, b विणयवरप्रकार: कु तामा, a एकु, 2.b पुरावेत b. pomits तिह, a णिविट्ठ, b समलहीम, 3.b सए प्रधानेमी हुई, b वोच्जु, 4.b णिवट्ठ, b व्यव् मेचिणु मुस्ति खुट्टु, 5.b सवाच्य कावा, b. omits तिह कालड etc to line, 6. वहट्टू, 7.b देहि for सहिम, b समलु तं सुहु कहेहि, 8 के दुह क्य and ieaves the space blank to की तम्बु असेसु वि कार्स केंद्रांक स्टीम स्वयु मुगदें। 8.a कार्सु for जाना !

(9)

महसू विवाहमहोण्छको यार्नाह मह वि ताको सुनिसंग्रह सहिनड कोरंटकणिवेस पण विज्ञह रमणिह योमणु बिज्ञड राएँ एह विसंगु सम्मु मह सिट्डच सणवह पणह णिसिह की मुंजह सम्मु विण्णासि बिह्नु ममुयसणु ताह पणिड सामिणि हम किण्जह ता बणय विस्त ताह तदो कहिनड मृणिवरसंकु परामण तायहि ।
कहिति विकि रहमेत्रद गद्मा ।
तेण वि तहो विक्शसम्म कहिन्यह ।
भूणिवरसंकु णिवंतत्र काएँ ।
पुणु पुणु तहि निम्मार्थणू छत्तत्र । ?
सो मृद्ध धम्मं चिण सजह ।
तें वमने पाणिहि मंपिस मणु ।
महु णिवित्ति जिसियोज्यहो हिज्यह ।
नवसिरेण चक्षाल नहिमन ।

वता- विवसं संविरि संपत्ती शिसिहि सपत्ती चंडालेण भणिग्जद । कोवगु सामिण विकाद वक्कपुण्णद वाढह हे सह जेमिक्जइ ॥९॥

(\$0)

तामताए जंपिज पिय विसुवहि तं विसुविश्व पाश्रीवस्तेज मह सह वोषण जेथ विरत्ती हए भनेषिणु छुरियप धरिय तत्वु जि सायरवधीयहो परिवहि पहरविष्ठर वयमूल संक्की कितित सम्मपहाज भविष्यह एत्ति नो मयविह्य भृत्तत्व सौ चंडालु पहाए वि सुद्धन ताए छुरियह जयह विद्यारिख रयोगिहि भोयणु ग करम म भगिह । भगह पुणु वि युणु इंदियमुद्ध । तें पुडु अवरहितुं अणुरसी । भयमसेण तेन सा मारिय । सायसिरिहि आहि सायरिगिहि । 5 सा सुमृह तें बांक्स उप्पच्छी,। सम्में उसंदु जुलु पाविक्यह । रस्तिवित्त सुरिमक्य सुस्ति । पियमर्गेणप्याणही जुद्ध । तेण वि तहिं सम्मन्न संगरित । 10

^{(9) 1.}a वा स्वतु विवादिः, के वास्त्रहि, b पापाइक्के, 2.6 स्तूं, के सुविशंवहि, b सहित्यं क्इंडिनि, क स्तूनेकर, 3-b कोस्टेनस्कित इसविकाई, के after शस्त्र कहि leaves the blank space uppo रसविधिश in क्षत्रक 10 :

परता+ को कि तहि चौरे चुमहिहे उसरि सुमह हुइस पामह सम्बन्ध । ' बारत्सेम मरंतर पुरिसु कि होतर होई तिरित्र जिल्लान्खम् ॥१०॥

(11)

वाहारवाम कथा

गय पाससएन संजायन समए कंत तहो सायरसिरियए णं सिसकला आगंद जजेरी एसहो तेल्यु जे पृष्टुचि बिजवह सो जिणपायपत्रोबह अस्तत कहि मि कालि किर यन विण्जिए सिरियए मृणिहि दानु म ज विश्यन एस्तिह वारह वरिसपहुर्ते विण्णा कवबसह जम्माहरु-भणिन अल्यु णिसुणहि विण् वायहो निष्दु पार्थियु च विनयायन ।
जिवस पुण्यसमयं तम किरिए ।
वर्ष्य जामण्यमपियारी ।
विवस विदित्य कार्ये विदित्य ।
मुचियामुस्याचि थयुरस्ततः ।
ज्ञानुत्रए वन्त्रम् तह सज्जए ।
संचिम अन्त्रें सहत सुवण्यतः ।
मुणिहि ण दिण्यु दासु साम्ह्रें ।
सामरेश सही अन्यद् शाहस ।
गुष सरीरकारम् तुह सामहो ।

मत्ता- तं णिसुजेवि मणु कंपिउ आउदजंपिउ ताए ताब बुह तत्तए । णाह तेत्वु हुउँ वच्छमि पुणु बावच्छमि णिवर रोए खउ पत्तए ॥११॥

(12)

तं व्राविणक्षय सिरिवहंगा पुषु विसि भोगगवाय परिजामें सा परिपेषिणु परमार्जवें बांसि सुवण्यु सिरिए वं संविश सुविश्वरवष्ण दण वा सिदी विषरगेहि सा वेसिय सुबद्धा । बा उप्पण्ण मामसिर वार्मे मुमिहि दाण् बार्सिट वर्षे दें । ते विषय्वप् करादित संकित । सा दूरस्तिह याम सुवैदिती ।

(10) 1-क विश्वपद्धि, व न प्रवाह, 7-क उत्तर्, 9-b वि विश्वय, क • मरप्रेण त्याणहो, 10-b. adds वि .after ताप, a तद्धि, 11-b स्ट्रिंड, b हुवड इस पावह, a पायह, 12-a पर्रास्त, a द्वारित for क्रिरिक्ष।

^{(11) 25} कच्च for कंत, a शीरियप, 3.8 वंशिक्षण, b यहित्य, 4.6 वार्ने विदियम, 5.8 पायपसहर, 6.8 क्राइमि, 2 क्री पक्षण, 7.6 विच्यनं b स्वय प्रमच्चानं, 5.8 वर्रियह पत्ते, b स्वित्वाह, 9.8 तें विच for पणिया, b स्वयंग्यनं, b सहै, 38.6 वर्षेक्ष, b विद्वार्थां, 8 क्राहे for दुह, 11.8 पणि, 12.8 हुत ।

सक्त वि स्पानक्षेण मुणिज्जह एत्तृहि सिरिए पियह णिएविण् बंपह क्यंड तेण मणु भिण्णंड तें कच्चें पिएणा परतारिय को घणमिरत्तणासु आहाण्ड किस्ति अकिस्ति वि कि छाइण्या । लेहअत्यु अलियन मावेनिणु । णं मह रिसिहि दाणु ण वि दिप्पन । कोवें वियमराज णीसारिय । सो महु दहवें कथन कहाणन ।

बस्ता- अहवा कि वृणी अच्छमि तित्यु जि गण्छमि भविययहो सारिष्छमइं। महु पिउ जद्द वि ण वासउ वेसद भासउ कुलउत्तियहिण अण्णगई ।११२।।

(13)

इय चितिषि सह जिवि छाइय
जह वि ण कुसर्गतिस्माहिश्यम्बिख्य
मंदिर एक्कु तेण तिह विण्णेर
कालि गलंति व णिरिजणि हियमह
एत्तिह जासिरिए ति बासिर
तो एक्कहि विणि सिरियए वीणए
जह वि तुष्का संपय आवग्गी
तो वि विहिणि महु एत्तिर किष्जर
जे पट्ठाणियाह मुणिणाहहँ
तो णायसिरि भणह फुहु मासिम

वहु दियहृहि पियपासि पराइय ।
तो पियसरणाइय संगन्छिय ।
सुपुरिसु करह अवस परिवण्ण्य ।
गउ सुक्यण्यवीवहों तो विणवह ।
देह दाणु मृणिवरह विसेसिउ ।
भणिय णायसिरि गग्गिरवयणए ।
जह विण्णहउ मृणिवाणहों जोग्गी ।
विहि पहरिह हक्कारउ दिण्जउ ।
उच्चायमि तनसन्छि सणाहहं ।
को वि ण अत्य करणु संपेसिम ।

5

10

(12) 1.b पहिय for पेसिय, a महणा, 3.a मुणिहि, b आ आटिवओ बणिदि, 4.b सुवयु, b संचिदं, b बेचिओ for संकित, 5.b सुव्यान क्रवर जा सिद्धा, a सी for सा, b पसिद्धी, 6.b मुणिकाई किस्ति, b छाइंक्जर्ड, 7.a सिरिय, b असियतं, 8.b जसय for जंपर, b जं महं, b रणु जल and omits from दिण्या. . . 10 ०णासु आहाणत, 11.a कि पुणि इह अच्छमे तत्यु, a सारिक्छमइ, 12.b महं णिओ जहं वि म बासतं देसइं, a अवरगई for अण्यादं।

(13) 1.a हैंग, b सहं, b बहुं, 2.b वह विण कुसरती हियह जिस्ता, a तो विश्विय सर्गाणह संगण्डिय, 3.b एकु, b करहं, 4.a गलींत, b ब्हियमहं, b सो णवहं, 5.b भावित्रं वैहं, b मुणिबरहि, 6.b विण्णि सिरियहि, a वयणह, 7.b तुष्कु, b जई विषुद्दको मुखिवाणहो जोगी, 8.b वहिण, b किण्यहं, b विष्यहं, 3.b पहंद्राणिवाहं, b तंत्र्वायित, a सणाहह, 10.b भणहं, 11.b संप्याणतं, b, व्यण्णत, b बीसणहं सिष्युरं, 12.b एसइं, b हस्कारतं, a यणत, b विष्यहं िक मिण्यतं ।

भारता- मह् वियरहरूप्यण्यत कञ्जलबंण्यत सुम हु वीसमह सण्यित । ं एसह तुह हक्कारत बाहुगगारत जो बणि मणुत मण्यित ॥१३॥

(14)

हय पणियम्मि णायसिरिय सहै गय ठाहु पणिवि णायसिरिय मस्तिए विविहाहारु दिण्णु भयवंतहो णायसिरिए सिरिहि हक्कारउ ताए कढांस निल्मि सिस्तउ अडडीह विल्लंतमरंतहो त मुउ जणहो जणेण जि साहिउ मंतपहावें सो सुरु हुउ तक्खणि जहि सिरिवइ परतीरए तहि जसजाणुक मन्गि लग्गउ

अवरहि विणि मृणिषरिए समानय ।

पुज्ज करेबि अद्विष्ट् भस्तिए ।

णीरमु सरमु सिर्मु भूजंवहो ।

पेसिज सुणहु अमंगलगारत ।

कि कियंतु पंगणि संपरतज्ञ ।

उदिण पंच पय णायसिरि एँतहो ।

अंतराज ता मृणिहि प्रसाहिज ।

अवहिए मृणिज रोम मज जिह मृज ।

तहि संजाय पयंब समीरए ।

कहत कहत पुण्णेहि स भग्गज ।

घत्ता- तं पि अविष्ठि आऊरणि णिय भव सुमरणि चित्ति फ़ुरिउ तको अगरहो । सुरभवि पाव णिरंजिउ ते गमु सण्जिउ णायसिरिष्टि उदयारहो ॥१४॥

(15)

जिह पसाएँ हुउ सूरू जायउ जिह पसाएँ हुउ अमयासण् तहो भत्तारहो खावह बहुद तो वा तहो जवसगाउ विजासीम इस चितंतुं अमर वह जाणें तहो सग्मह विजयम पर्मपिठ कि ज सुजह जिसमरि जो अस्पिहि प्रमानीसम्बद्ध मर्रतहो तहो जन् जं सुत्तु गई सक्कड इय संबंधु असेसु जवेश्विण् जहि पसाएँ मह वज जायन ।
जहि पसाएँ मज्जमिणमूसम् ।
उत्तम किल जवयार ण लोटुइ ।
सामिणि सामिहि विणय पयासीम ।
गव विषयिस पवण अवाजाने ।
इजे तुम्हह जवसन्य कवित ।
सो एवहि मई बुंद बहिणावहि ।
दिल्बइणावसिरिए सुमर्रेतहो ।
ते सामिय बुहे विष पंडियदान ।
जस बाषु वि सरिर्ण जानीविष् ।

^{(14) 2.}b हा हूं, a अणिय, b जायसिरि, 3.b भयवंत्रहं विश्वसुसिरसुर्वार चूंजतहं, 4.b सुगहुं, 5.a किविक संदु, 6.b.a वर्रति, a जायविश्विद्धाः, b कावसिरिति, 7.b नकरे, b वि for ज़ि, 8.a सीर for सरे, के वि त्रव for तो, के हुउ, 9.a जिहि, b सिरिवरं, 10.b तही नजि for मध्य, 11.b व्यक, 12.b ति गमु सन्वित्तं।

पत्ता- विषय विससमुताहुस वं सिरि सवहल स्ट्रय रहम जावेज्यतु । पूर्वांतर युवांतहे तामिसकंतहे यह हाव अव्येज्यतु ॥१५॥

(16)

वनरइ सुक्क्यमंत्रिम्सणाइ सुमरिज्यसु मह जह हो ह विहुत्र वानवर वि ताम संतुद्द्रिमसु तहो संगमि परिकोसियमणेष भूसणवत्यह रयमपियाइ पंचपयपहावें सुणह जेम अञ्चंत चोज्य विभिय मणासु वहु मणिरयणह संजोहरूण समय स्थल उप्पाह्म सिवेश विणिणा तहि विद्द्र जाइ जाइ देविक वेषंबद्द मित्रसमाई ।

गउ एम कहेविक विषिद्ध समय ।

संपुष्ण सहु गियस्यस्य परतु ।

विरद्धस्य महोन्छस्य परिवर्णम् ।

विण्णा पियस्यहे समान्नियाद ।

सुरु जीस दिद्दु सद्द कहित तेम ।

विसंतु पवासिस परियमासु ।

तें दिद्दु पराहिस पणविक्रम् ।

परतिर बोस्क पुन्छस्य णिवेष ।

गरणाहहो सिद्दु ताइ ताइ ।

10

भस्ता- ताराएँ वह खुम्माणे कय सम्माणे वण्छाहरण विहसियत । वणे विवास ह करेंबियुं बंधु भणेंबियुं विय मेंबिरि संपेसियत ॥१६॥

(17)

णवर एक्कु छणे विणवर महिसए काएवि बुह्द्वर्यसिए विद्ठस लीहें ताए भणावित विजवह एरिसु मृद्ध काई ज वियोग्यस विस्तिउ षषाहरे हाव ससीसए । गंपिणु रायमहीसिंहि सिट्ठउं । उत्तम रयणहें बाबणु जरबंद । कि वरहार सपियहे समीपाउ ।

^{(15) 1.5} पुष्ट जायरं, a यह रिक्ष चर्च, 2.5 हर, 2.a पसाए, b मह रिक्ष मरह, 3.b सायरं महत्रं रहेस करन, b सुद्धूदं, 4.5 वरि, 5.6 स्थरपर, a जाणि, b पासु, 6.a जग्रविम किर विकएण, b तुम्बूदं, 7.5 किन्ह सुमहं जो जिन्मपर जाणीह, b एमढ़ि मह, b चरियाणीह, a चनोक्सारपं, b विक्षपर, 9.a करा, a यह, 30-a संबद्ध, a व रिक्ष वि, 31-5 मणिएं, a द्यहर इस् जाविकायरं, 12.5 मुलग्रेशहो साहित्य संतहे, a अप्यिकाह ।

^{(16) 1.}b धनरदं, b मूसवाइं, b देवंगई विवसवाई, 2.b, inter. मह and वह, 3.b संवस्त, अ.a नेवेंग, 3.b अस्तर्वहं, b अस्वाई, b समाविध्याई, 6.b सुधाँ, b बुद विद्यु बाद सई, 8.b रमगई, 9.a घोषम, 10.a तहि, b विद्युद वाई, b सिद्देश साई, 11.a बहुआओं, b विद्रुदिश, 12.b बंह, b संवैदिश ह

अञ्ज वि शिय अवराह विशासिह तं णिसुणिविणू सिरिवद विणवक मन्त्रिय कहेवि हारस्य अप्पय णिम्हहि हारु भणेवि वियवस्याप जमु संघडित तासु तं सोहद्द अयगहियाए मुक्कु किर विसहर रमणविषय सह पेसहि।
हाइ सिवि गउ सई बहि गरवह।
साराएँ कोइकाविय णियपिय।
विषय सम्यु जाउ सो तक्किषा।
लीहबद्ध जगु जम्मड मोहइ।
पुगु वि जाउ सो हाइ मगोहर।

घरता- कि माहि दुपयासिउ गएँ भासिउ विषमुहरूमलु विएविणु । तो विषणा बोस्तिजजइ देव कहिज्जइ णिसुणहु अभउ भणैविणु ।।१७।।

(18)

महु घरि सुणहु आसि अलि वण्गड महु महिलए इट्ठम्खड दिण्णड अवर असेसु विमोहु वि मिण्णड तं अम्बर भावंतु वि वण्णड णाणारिह्य लह्य संपुण्णड माणिय घणयण सुरवरकण्णड अवहिए णियभवकारणु पुण्णड लहि पसाएँ हुउँ हुउ धण्णड तहे पिड जसहिमिन्स आदण्णड इय चितेबि तस्य अवहण्णड तही कम्मेण बाहु उप्पण्णतः।
तासु पहानें कितमणु किण्णतः।
तस्यणें सी संजात ससण्णतः।
तें झाणें पाविय वहु पुण्णतः।
महसयरूवसोह लायण्णतः।
सो एवंविट्ठ सुरु संपण्णतः।
गुरु उनयाक तेष पढिवण्णतः।
णायसिरीए समाणु को भण्णतः।
वट्टइ जामि तासु कासण्णतः।
हत उत्तारित तेण महण्णतः।

10

5

घत्ता- वरमोत्तियहि खण्णाउ फलिह सवण्णाउ एहु हार महु दिश्णाउ । देउ एउ पुरु मण्णाउ मा अवगण्णाउ होउ मज्जा सुरसण्णाउ ॥१८॥

^{(17) 1-}b एकक, a. omits छणे, 3-a ताए is explained in margin as राजी, a रयणह, 4-b मृद, a काई ण विवय्यउ, a समय्यइ, 5-b विणासिंह हाररयणुवणिवर, 6-a विणवई, a सइ जिह, 7-a हाइनय, 9-b जं जसु शक्ति, a लोहें बढ जयु, 11-b मृद्ध 12-b णिसुणहं।

^{(18) 1.}b सुंगहं, b उप्पथ्यतं, 2.b दिण्यतं, a कलिससं, b खिण्यतं, 3.b. omits अवर. . . etc. to भिण्यतं, b सर्वणातं, 4.b दण्यतं, a त for तें, b पुष्पतं, 5.b लायण्यतं, 6.b ∘कण्यतं, b संपण्यतं, 7.a ॰ कारणा b सुध्यतं for पुण्यतं, b पदिवण्यतं, 8.a हतं धुर धय्यतः, b भण्यतः, 9.b दृष्टं, b तासु वायण्यतः, 10.b तित्यु, b सहण्यतं, 11.b खण्यतं, b •स्यण्यतं, b गई for महु, 12.b खबद्दं संबंद् पुरस्थातः, a त्वसण्यतः।

(19)

तो णिउ पंत्रेणइ कहि इट्ठंमंबर अम्हद झंखार्वद विण मुंट्ठव तो तें पुर्मारेज सो अमयामेणु अद्द रोसेण तुरंतुं पहुत्तव परमम्बर कर्य मंति अयाणा तं फनु पिश्व कुम दक्खालिम इय अगेवि माया गिरिसिह्र इ किलिकिलंतु अविर पसरंतव करयविद्ठ णिट्ठूर वरिसंतव अचनु वि जीलद उच्चालंतव

जे दिण्णेण जाउ कुर्केंड सुर ।
वंग्रहो माहि दिउ विष्यंट्ठंड ।
अवहिए जोणिवि विण देहु जीसण् ।
धीरे विणु वाँण ति गिंड वृत्तर ।
जेमइ वंधाविउ विणे रांणा ।
उम्मद्र वंधाविउ विणे रांणा ।
सम्प्रधराधरभर अज्जु जि ।
पावद तर सुरहर धवसहरद ।
घोरंधार खणेण करंतर ।
हणि हणि मारि मारि पभणंतर ।
हयग्यपुच्छक्षंम झालंतर ।

परसा- तो करमठिल करेबिणु सिरु णावेबिणु अइ भीएण अणाहें। एक्कवार दय किञ्चल चीविल दिण्नल भणिल समस णरणाहें।।१९।।

(20)

माया संवरित सुर भासद हउ जागरित आदि पुर मैंतिहि सम्बेसए भूंग्या संतर्तिह ताव अहिसाइय गुरुवदयए दीवए पडिय पयह जिस दीसेहि भोयणु जिसिहि के वि जे भूंजिह तह जिसि मूंजतंह सह जिसियर एवमाद वहु दोसहि दुट्ठन त जिसुजीव जिसि मोजब विरस्तए वाटिय लेवि पस मह जंपिय णिस्णि गरे।हिव बह्यर सीसह ।
मह णिय वारियहे गय रिसंहि ।
मिगाउ भोयं में मिति पुर्ति ।
गिम पंदण पश्चिति अभवद्य ।
तेत्य जीव असमैहि पर्दमहि ।
जीवाह्य व तेहि फुडू साज्यहि ।
जीमंतह ण निक्षाण्याहि भीमर ।
जिसिहि ण जैवह जह वि सुसिद्ठउ ।
सह अगय मिउ गहिउ मह कंतए ।
जीमण जाम ण मज्यू मज्यो पिय । 10

वंत्ता- ता मह सुरियह हय मव गव्यासएँ हुए एश्यु वे सावरसिरियहि । हर्जे पहाए सा जीएवि अध्यत घाएवि मुख हुउ सुद सुक्कुरियहि ॥२०॥

(19) 1% पणड, 'b पणलडं, b विणेता, 2.b अस्तृतं सवात्रदं विण, a मृद्ठुतं,
3.a समरित्र, b दुह भावण्, 4.b अतं, b फलाउ कि पहुत्तन्न, b जिले
उत्तरं, 5.b पांच्ह, के.b दिस्सायमि, b कारस्वर व्यक्, 7.b सायए
विरिक्षित्रदं पाठहि, 'b सुरहृष श्रवसहरहं, 2.b कर्त्सं, 9.b कर्दं,
b प्यरंतान, 10.b अष्टुपं नियस लीतनं वासंतन्न, a प्रायंतन्त, 11.b अपं,
b अमाह्य 12.b विण्यातं 1

वायविणिहि सो हुन कोल्यवह वन परतीरि विश्व वि वासिक्कर वरिहं वरिहं इव उच्चारिड तासु पहाने हुउँ जायन सुद सुरतक कुसुपयाल क्यसेहर विलुलिय तिहिणोवरि हारमणिहि किण्णरि गीयहि गाइरुनंतन अञ्छिम कीलविलासहि ताबहि इय विलास किर माणिम जायहि णाणि सोवमग्य अइ जाणिन दिण्य हार भूसणइ पसत्थइ

पुण्णहि एहु ताए अवस नहा ।
सन्द मण्ड शरंतहो स्वा भन्य ।
स्वनमणेण यह सम्हरिक ।
सहजाहरण विद्वावित सासुर ।
सहजाहरण विद्वावित सासुर ।
सववावयन सुसंदि मणोहत ।
सेविज्यंतत सुरक्रमीयित ।
णवर सुस्वन्छर गढ़ वि णियंतत ।
आसन्द पुजात मह सामहि ।
णियमव सुमरण् एहु वे तामहि ।
उत्तारेवि जलहि सम्माणित ।
ववराह मि देवंगह वस्पह ।

मत्ता- जा संबंध प्रधासित ता पित्र भासित जें सुणहु वि सुरु जात हुहू । सो अक्टर मर्बासहिकतु धोइय कलिमलु भवि भनि सरणत होत महु ।(२१।।

(22)

पुणु णिवेण करमसमदसेनिणु जंमइँ अण्णाणें संतानिज भणित वणीसर शिक्षत करेनियु । विण् सञ्जेष प्रहारत सर्वित ।

- (20) i.b बहुयस सीसहं, 2.b तुन मंदिरि सहुं, b बाहियसिंह, b रित्तिहिं, 3.b तं वेलए, a संतरतेहें, b संतरितिहिं, b मिनज, b मंतिहिंहें, b. omiss पुरतिहिं and तान महिसाइय etc... to जीवाइय वि तेहि, 6.b क्लजहिं, 7.b तहं, b मुंजतहं तहं जिसियर, a जैवंत जि ण, b जैमंतहं लिक्खियहिं ण मीयर, 8,b एवसाइं, a दोसिंह, b जेमहूं, a ससिट्ठज, 9.b विरस्तहं, 10.b पयरतें for पत्त मह, a मज्में, 11.4 तो for ता, b महं छूरियहं, 12.a हज, a याएवि, b inter. हुन कार्य सुन ।
- (21) lb जानदिणहिं. b पुण्णहें, 2.0 कांह for बिज, 3.8 मद्द मि जब , 4.8 सु for तासु, a हुउ, a सुरबर, a विहसिय, 6.a हारमिविह, a व्यापिहिं, 7.a गीयहिं, a. after गाइक जैसे क explains in margin. सा रि म म प घ जी सरपत्तजं, b मटटु नियंत , 8 b. omits किण्णिर गीयहिं हाट . . to सावहिं, b साबद, 9.3 सम्बद्धि, b समर्थे एडु वि तामहिं, 10:b मद आणि , b सम्मानितिं, 110 मूसण प्रस्था अवराहिं, विवाद वस्प इं, 12.8 वित्य कि कि ना वित, b सुण्हें, b सुद्धु , 13.b सर्था ।

तं अवराहु खमेहि वणीसर तहो महिल तहि मि हक्कारेवि भणइ माइ चंडाणिल् वारिउ तुह पुण्णहो की मुणइ पमाणउ पाय पर्वति जाहि सुर सहरिस हारहो लोहें गिट्ठुर मासिउ तं मह खम करि माय महासइ एस भगेविगु वच्छाहरणइ

जेनकाए सभय अवणीसर । भतिए उच्चासणे बद्दसारेबि । तुह पुण्णें पिउ सायर तारिउ। 5 सुरविदिहि जहे यत्याहरणा । कवणु महणु किर तहि अम्हारिस । जं तुहु पहते अविणड पयासिस । विणएँ उत्तम कउ विणासङ् । दिण्ण पंचयण्ण रुइ हरणइ।

10

षस्ता- इय तें विणनीमाइउ स पिउ खमाविउ पुणु सह पियए समस्यें। परम अहिस प्यासण् पावपगासज् लइउ धम्मु परमत्ये ॥२२॥

(23)

लइउ जिणिदयम्मु जा राएँ साहु साहु अरिणिवकरिकेसरि आयण्णहि सुहि आयम् भण्णइ मोक्खमग्गु जिग्गंय वि माबइ सा सम्मत्तरयणस्यणायर एमह वोहि धम्मे दितु णरवड इय भासे विम् णिउ विग विग विय पुणु मणिमयहो रमिय वरविलयहो एकक पहर अणयमिय पहावहो तहि जो सबसकाल परिपालइ

भणिउ सुरेहि ताम अणुराएँ। तुइ सुद्रतरु सिचिउ धम्मसिरि । जो जिणदेख रिसि वि गुरु मण्णइ। धम्म् अहिसालन्सण् भावइ। अनव वि तासु करंति महायह। 5 धम्मे जीउ महुण्याई पावइ। जामि भणेविणु सुमहुव जंपिय। गउ संतुट्ठु अमर णिय णिलयहो । एरितउ फलु जहि अखलिय भावहो । तहो पुण्णहो को अंतु णिहालइ।

^{(22) 1,} b •सुरु करमउलेविणु, 2.a मइ, a महाबद पविज, 3.b एउ for तं, b समेहि, 4,b तहि जे, 5.b भणइं माइं, 6.b मुणइं पवाणउं सुरविदेहि, a. omits जहे, b बल्याहरणउं, 7.b गहणु, a तहि, 8.b हारहो, 9.a माए, b पयासइ, 10.a एव, b ० हरण इं दिण्ण इं, b हरण इं, 11.a पोमाविछ a सहं, a समस्ये।

^{(23) 1.} b सुरेण, 2.8 सुरतक, b घम्महो सरि, 3. b आयण्याहि, b जिणु देउ, b सम्पाद, 4.a जिन्मरेषु अमावह, 5.b असर, 6.a एवह वेद धम्मदिठू, a महुज्जह, 7.b इन, a मचीन for मणेविन, 8 b. omits गर संतुर्ठ् etc. . . to णिलयहो, 9.5 अणयमिय, 10.5 परिपासइं णिहालइं, ll.a परिवज्जह, b परिवज्जहं तं जि किज़रं, b सायम for जावम्, 12.b तेले, a गउ for बिजड, b हवेहं, a पावासिंड 1

घरता— मोणहो फासु पयडिज्जह तं जिह केज्जह सत्तिए बागमु भासित । तेणबहिसाजणणिहि जिणवरवाणिहि विवत हवेह पर्वासित ॥२३॥

(24)

तं तहो वयणि अभियहो सवण्ड तह् समलाण वि हवद पहाण्ड तर कुसुमद्द विस्लद्द अत्याण्ट इय वय पालणि माणव सम्महि पुणु सुणरत्तु सुरत्तु लहुंता इक्खुक्काइ वसु पावेष्पिणु सजमणियमथयह पालेविणु सुक्कज्ञाण्ड आऊरे विणु अप्पेणप्पाण्ड बुज्जेविणु सुरणरितिरियह धम्मु कहेविणु होंइ वयणु पीणियजणवयणतः ।
रायस्सा वि हु माणइ माणतः ।
सिन्ताम एयए जीवह थाणहः ।
उप्पञ्जिह मृजिय वरभोग्यहि ।
सवसत्तद्ठमिक्त हिंदंता ।
रयणस्यविसुद्धि भावेष्पणु ।
वज्सव्यंतह संगु मृएविणु ।
केवलणाणत उप्पाए विणु ।
सोयलोच वि णिलणु मृणेविणु ।
अंकिरिम साणें मोन्यु लहेविणु ।

5

5

घत्ता- तिहुवणजण अहिणंदिय पाणे णंदिय सुहु अणंतु घुउ सुंजहि । तित्यहो चायहि ण जम्महि मुक्का कम्महि सिद्धविसुद भणिण्जहि ॥२४॥

(25)

महएवे वंदिय गुरुपयाइ इयरेण वि कयइ सुउन्जलाइ ता मणिभित्तिह उज्जोइयाइ वेउव्वण कयकोलायराइ गइय सरिगमगधणीसराइ फुल्नहरभमिरमहुमरउनाइ ताँह थिय जामासे जंतर्जत धवलहर धुलिय व हुवइ जयंति लह्यह आयण्णेष्मिणु य वयाह । स्वयहो फलेण गानह जलाह । विज्ञहि जाणहि संजोहयह । घवधवधवंत वह धम्मराह ! मिणमयकणंत किकिणिसराह । टणटणटणंत चंटा उत्ताह । पुरन्यरमामपट्टणतणंत । विण्णि वि यत्ता पुरिवह सर्यति ।

यस्ता- सिक्क्सेचपयवंदिहि दुक्किज णिवहि जिम हरिसेणु अवंता । तिहि थिय ते खग सहयर कय धन्मायर विविहसुहह पावंता ॥२५॥ 10

(24) 1.b पाणियवाण समणज, 2.b मि हमई, b सामार, 3.b मुसुमई विल्लई सरवाणई, b जीवरवाणइ, 4.b पाल्य, तुंडिस बरकोसाहि, 5.b. omits सुरत्तु, 6.b इंक्सूक्लाई, b सरवेवियु, 7.b विवर्ध वयई, b बरकाव्यंतर, b सुप्रियु, 9.s. सप्पेन०, b क्ष्यापुरं, b सौवादीयओ णिचंगु, 10.b विरिस्हं, b मोगू for मोक्यू, 11.b नाक्षविय, 12.s जम्मीह !

दह नेपाण्येति जणसंजुति पायकरिवकुंगवारणहरि सासु पुत्यु परमानिस्तहरेक्व गोमक्ष्यु गामें उप्पण्याउ तहो गोयक्ष्मासु पिमसुष्ट्रम् साए जणिज हरिसेच गामें सुज सिरिचित्ताजकु नस्य सम्बद्धाः तहि जवालकाहमसाहिय जे मञ्जात्यमणुग सामण्याहि ते सम्मत्त जेण सस्य हिण्डाह

सिरिमोजनर निग्गम सम्बद्धालि ।
वान सनहि कुसुन् गामें हरि ।
गुगगगिषहि कुसम्मणस्मास्म ।
जो सम्मत्तरसमसंपुष्णान ।
जो सम्मत्तरसमसंपुष्णान ।
जो संजान हिन्दुस्कहिस्सुन ।
गन गियकनने विष्णाहि ।
सम्मपरिक्ष एह ने साहिष ।
ते मिक्टतमान स्वगण्णहि ।
केवलगाणु ताण जन्यन्जह ।

शता- तही पुणु केवलणाणही णैयपमाणहो जीन पएसएहि सुहडिउ । वाहारहिउ अर्णते अवस्यवंते मोस्ससुन्दफलु पयडिउ ॥२६॥

(27)

विश्वकर्मणिन परिवरित्यकालए इय उप्पन्ण भवियजणसुह्यर ते जंबहि जे जिहिहि जिहानहि जे पुणु के वि हु प्रस्ति प्रस्तिहि एयहो अत्यु के वि जे प्रस्तिहि जे णिसुजेवि प्रतिस्त्रार सन्तिए गयए वरिससह घउतालए। इंगरहिय धम्मासयसायर। ते गंदह जे भरितए आबृहि। ते गियपरदुदु दूरे सूहाबहि। ताण गिरंतर ओक्झोह सुहबहि। ते जुडजहि गिम्मस मह स्रतिए।

(25) 1.b मर केए शंकित मुख्यमाई लह्यई पुजापणित बेटाई, 2.b उपरेश जि कर्यई सुण्यसाद क्रम्यह्म, b जुलाई, 3.b उज्जोड्डमाई विश्वह जाणह संबोद्धमाई, 4.b ०म्र राई, b ०म्बन्यवर्गत टाट. to किकिणिसराई, 5.a ०किकिणि, 6.b • उलाई, 7.a ताहि, b चर्मत for तजंत, 9.a • बंदीह, b णिवाँह किंगु हरिसेणन्यता, 10.a तहि।

समलपाणिवस्याहो हुई हिस्स्वह परहित्यवरणिवहंडिय शहहो पर्याडिय वहु पद्माव अरिवारें धम्मपबस्तणेण दुहहारें

सोमसमिद्धिए सिंह सोहिज्जह । होड जिमस्तणु चरुविह संबहो । जंदन भूबई सहो परिकारें । जंदन पय बहु अइ बबहारें ।

पत्ता- संखए हुनह सुसाहिड सदरसु साहिउ इउ कहरपण समन्वाह । '10 जो हरिसेण धराधरउ वहि गयणिधर ताम जणाउ सुक्रसम्बह ॥२७॥

डय बम्मपरिश्वाए चडरवग्याहिद्डियाए (चित्ताए)। युहहरिसेण (कब्ब) कथाए एसारसमी संबी समस्वी ।।छ।।१६

मंथसंख्या २०१० ॥ छ ॥ छ ॥ मंगलं ददात ॥ छ ॥

* 女 *

^{(27) 1.}b परियत्तियं , b बरगाए for गयए (a सहसवंद ता) not found, 2.b उणगु for उपपण्ण, b संह for बंग (a सय सायह ते) not found, 3.b ते णयहुं जे, b लिहाबों हे ते णवहुं, 4.a ते जिंदहि जे मित्तए जे पुणु के जि, b पढावों है, b. omits ते नियपरदृष्ट् दूरे सुटाविह (a not found स्थु के वि जे प), b सुक्खह, b (a not found क्जाइ) (a not found क्जाइ जिम्मसमई, 7.b हिज्जाई (a not found क्जाइ) (a not found क्जाइ सीमसिंग) दिंद for जि, b सीहिजाई, 8.a परहियकर , a अहही, b होंदें जिणत्तेणु वदंविह, 9.b पयलिय, b मुनाई, 10 b अन्यपरत्तेणेश, b वहुबिह ववहारे, 11.b संखदुसहस्यसयाहिज्यस्त्रस्याहिज्य , b ववक्याहिज्याए, b वावकाहं, 12.b जा, b अवधरा, b गयनुझर, b सुट्टुं अक्बाई, 13.a अवक्याहिज्याए, b वावकाहिज्याए, 14.b. adds जित्ताए before बृहहरितेण, b एयारहुओ परिकाओ सम्मत्तो ।। श्रीव ।।११। इति व्यवपरिश्वा नाम सास्त्र समान्ते ।।छ।।

लेखक प्रशस्ति

।। मूलसंघे मट्टारक श्रीपधानंदिः तत्पट्टे भः शुभवंदः तत्पट्टे भः जिनचंदः तत्पट्टे भः प्रभाचंद्र, मंडलाचार्यं श्री रत्नकीर्ति, तत्थिष्य मंडलाचार्यं श्री त्रिभुवनकीर्ति, तदाम्नाये खंडेलवालाश्रये अजमेरागोत्रे सं. सुजू तत्पुत्रटेहक, भार्या लाजी तयोः पुत्र छीतर, भार्या सुना इः रक्षायां ज्ञानावरणीयकर्मक्षयं निमित्तं लिखाप्य ।।

मुनि देवनंदि योग्य दालव्यं ॥ शुभं भूपात् ॥

।। हा। हा। हा।

विशिष्ट शब्द-सूची

अइखण्ण ११.४ बद्दलज्जाविण् ५.५ अउम्ब ५.८ अक्टयजीण ७.१५ अवसार ११.१८ अकुडिलभावए २.१२ अकंपय मृणि ४.२ अग्गलं ८.२० अग्गिपरिगह १ १८ वगत्यणा ५.१-४ अगुरु रुमखवणु ३.९ अघडमाण ९.१८ अच्छर १.११ अच्छा २.२३ अच्छिह १.९ अच्छामि २.५ अच्छरित ३.५ अजयर १.१३-१४ अजिणंतु ८.७ अजिय ८.१४ बट्ठम ८.१२; २३ बद्ठिया २.२२ अडमेयसरिसु ४.६ अडवण्य ४.६; ६.९ अणल् ८५ वण्णारिसु ८.५ वण्ड्यम १०.१४ अण्णोण्ण १.८; ३.१३ अण्णोग्यविरोह ४.१ अणुराइयहो १.८ वणारिषु ८.११

अणिह्ठिय ५.४ बणुत्तउ ३.२ अणुविणु ५.५ वणुहवि ४.१८ अञ्चलिक ८.४ बद्ध बणयसंगीसिख २.१४ अवसिरीहर ९.२४ अदकोसु ११.२ बदोदी ८.१९ बप्पवियारा ६.१७ अप्पाणंड ७.७ अप्पाण् ४.९ मिप्त ३.१ अन्मत्यिउ ८.१६ अन्मत्थाण ५.१४ अभयवयण ११.१६ अम्हह २.२२ अम्हाण ४.५ बमरगुर ३.१५ अमरपह ८. १६ अमराउदि १.१० अमियाहार १.४ अमंगलगारत ११.१४ अयत्य ९.६ व्ययालि ३.३ अरिष्ट्रंत ५.१९ **अल्लवह १.९; ३.१८** वसिंउ ८.९ अभिविद्वरा ६.३ वलिय १.६ विषासित २.२३

अविवेद्य ३.३ ववंतीदेसु १.९ वसज्जवाहि २.१६ वसिपसवणंतर ६.२ वसुबाहार १०.१० वसुहरयी ७.१० अहस्स ९.४ वाइच्च ८.६ आइच्यणरेस ८.३ आकोसंति ९.३ वाढविंच ४.२०; ११.११ आढविव् ४.१३ माढल ४.११ आणयाई ६.१८ आणिज्जइ ५.१३ अाण्राइय ४.११ आवण्णहि ४.२ अायण्गिउ ७.१० आयण्णिओ ४.११ आराहण ९.८ बालावेण २.२; ८.१० वालोविउं १.१७ आसिगणु ५.३ कावनमी ११.१३ भावेवणु ९.२ आवेषिणु २.१७ आसासिय ८.१० बाहरण ३.११ बाहरणंड २.२४ बाहरलणा ४.१८ आहलू ५.६ बाहारवान ११.११

बाहीरदेसु २.७

बाहुद्ठ ४.१३

क्षंगर ४.१७; ८.१९; ९.८, ११

वंगुट्ठसमहु ५.१ अंधयविद्ठ ८.२ इक्खाइवंसि ९.१५ इंट्ठिए ३.१७ इंदणीलमणि १.३ इंदु ९.१४ इंदो ४.१८ उक्कोइय २.१२; ५.१ उगमिउ ११.७ उगालिय ४.२० जिम्मिलिय ४.२०-२१ चज्जलाइ ९.२३ उज्झइ १.३ उज्झाण ११.१ उज्ज्ञायणि २.२३ उज्जेणि १.१०; १०.१२ उट्ठब्र ५.१८ उट्ठंतपहंतहो ५.११ उद्गीण्हंसु ४.६ उण्णामिय ४.१३ उद्दास् ७.१६ सद्धरिय ७. ३ उद्गीलय ७.५ उप्पन्जइ ७.१८ उप्पज्जिहि ६.२ उक्मावह ७.८ विभट्ठगयवरं ५.१० उपराश्यिड ४.२२ उव्वरिय ४.१६, ७.२ उववणु १.११ उवयारणिमित्तु ७.१ उवसम्मु ४.२; ८.५ उवसमतु ७.६ उवसंतमणो ३.११ उवहसइ २.७

उस्सासु ६.१५ उंदूर ४.४ उंदुरे ३.१४ उंदुरा १.१४ उंबर १०.१४ एक्सगाहि २.२४ एक्कमेक्क् ४.२० एक्कहि ४.४ एक्कु ३.१; ३.२ एक्केक्काण ६.४ एत्यंतरे ७.४ एतहो २.१७ एयारिसंड १.२१; ९.८ ररिस २.१ एरिसिया ७.१२ एरिस् ५.२ एवं ४.६ एहावत्थ ८.२ कइणह ५.९ कच्छ महाकच्छ ८.१०, १२ कजजगइ ४. १९ कज्जपराइउ ८. १२ कज्जाकज्जु २.१५ कज्जे ४.१० कट्ठ ३.१० क्रवण ८.५ कण्णमूल ३.१८ कण्यास ४.५ कण्णाविवाह ७.१७ कणयमाल ११.५ कणयासण २.३ कत्तियाइ ९.२ कप्पवृदुम १०.२ कप्यतच १०.१ कप्यस्ति ५.२

कप्पूरसुरहितक २.१ कम्मबंध १.१४-१६ कमलासण् ४.१३ कमंडल १.१८ कयकिलेसु ३.१० कयत्यच ३.२२ कयद्यं ८.२० करलबनाइय ८.१० करयलाउ ३.१० करयविद्ठ ११.१९ करप्पिण् ८.४ करिरवणु ९.२२ करेप्पिण १.१२ मरेविण् ४.६ कलहंसइ १.२ कलेवर १.१४ कवणु ४.२२ कवाह ४.१२ कविट्ठतर ९.२ कविट्ठ १.१२ कहिम ५.१ काराविय २.१२ कालासुर १०.९ कासस्स तंबो १.१४ कावालि ४.१७ किकिणि १.४ किकिणिणरंत २.१ किक्किधपुरहो ८.२१ किकिकाजि ८.१६ किट्ठभिच्यु ४.६ किण्ह ११.११ किण्णरीहि १.३ कि बहुणा २.१५ कीलमाणु ५.९ कीलंतहो १.८

कुंटहंसगइ ३.१५ कुडिसंच १.१० कुंदिलभाव ४.१४ ष्ट्रंति ८.२; ९.१४ कुष्णियधम्मेण ९.१३ कुरियंच ९.१४ कुटहंसगइ ३.१५ कुबिनत्तु ९.१६ कुरंगी २.९ **夏朝 4.4** कुलकण्णह ७.१७ कुलदेवयाइ ८.१७ कुलदेवि ३.४ कुलणंदण २.१८ कुलयर २.१ कुसुमउरहो १.१९, २.१ क्रवसहि ११.१२ केरितच ५.६ केम ३.१ केसवासु ४.१२ कोइलतमाल ३.९ को उहलेण २.५ कोकहल २.९, ८.१० कोनकाविय ११.१७ कोडिउ ९.२४ कोडिणयरि २.१४ कोहव ३.९ कोवंडकाउ ६.१२ कोबंडवंडु ८.२१ कोवंडविहुसिय ४.३ कोवन्गिदिस् १०.६ कंकासबंख १०.९ कंषणमायणु ३.४ कंदभूलफस १०.३ कंठोद्ठणयरि १.१८

कंतिहस् ४.२४ कंसासु ४.१ कुंडियहो ५.१६ मुंभस्य ४.१४ कुंमीपायाणल ६.२ खइयह ६.२ खगबइसुएण ७.१ खज्जइ २.३ खणमित्तु ४.१७ खयरणाहु १.५ खयररायतणएण १.२० खरदूसण ८.१० खरमुहेण ४.१७ खःसिरु ५.७ खरसीसु ४.१७ खरि ३.१५ खसिकण ९.२ खिज्जइ/खिज्जउ ८.२१, ९.१२ खिल्लवेहिल ७.१७ खीरकहाण ३.४ बंह ५.१० खेयरो खेयर १.१६, ४.७ खंबिउ ३.१० खंदावारही २.१० खंधु गहवइ २.१६ खुंटें ९.७ गडरिय ४.७, ५.१ गउरियहरहं २.२२ गिगरिंगर ३.१८, ९.३ गुक्छमाणु ३.१३ गबुरसेणु ९.१ गदुरवग्यु ९.२ गडमरथें ७. ३ यंभासंड ७.७ गयरहु ३.६

गयाष्र इउ ८.६ गरमलक्जए ३.१८ मध्यसङ्बाए ७.२ गल्लफोडि ३.१९ गरलकण ३.३ गल्लु ३.१८ गलेणि ३.२ गविट्ठउ ९.२ गहिकण १.११ गहिरसर ४.७ गहोरिम ४.१४ गाउरेण १.४ गांधारिकुमारि ७.९ गिलिकण ५.१६ गीयझुणि ४.१३ गुजनरस्त ९.१ गुणवय १.७, १०.१४ गुणह्द ४.२२ गुणह्लियउ १.७ गुम्युमंति ११.२ गुरुवरणारिषद २,२३ गुरुभाइ ८.१८ गुरुविग्यु ७.२ गुल्गुलंतु ५.१० गेण्हेहि १.११ गोउर ३.१५ गोउल् ४.१० गोपुरमणि ४.१० गोयरविचित्त ११.४ गोरसु ३.४ गोवब्द्धण ११.२६ गोविए ४,१० गोबिदु ४.२४ गोविहि ४.१२ गोसीरिसमं १.११

नंगक्षणा ४.८ गंगाठईहे ७.१६ गंगायडि १.१८ गंजोल्लिड ५.१५ गंडमाल ३.१८ गंधारि ८.४ गंपिणु ५.८ घणवाहण ८.१४, १७ भयपोल्लियाउ ३.१६ वर २.९ घरदब्यु ३.६ घल्लह ३.१३ घल्लाविय ७.१७ घश्लिड/घल्लिय ९.२, ५ विप्पइ १.१३ घुट्ठउ ५.१३ घंटाज्यभेरी २.३ चउद्ग १.९ चउरव ४.१, ४.२४ चंख्यं रे.१७ चउवह ६.१ चउमुहं १.१ चउरासी सक्खाइ ६.४, ९.२४ चउवस्माहि ५.२० चलविष्यत ३.६ षउवीस ९.१७ चउसट्ठी ६.४ श्वतह्रमगग ११.४ मन्कवद् ४.१ यण्यरमोजर ३.१५ चक्करियचित्रर ४.३ षट्टबट्टपोत्ययसंगहणच ३.२० अमय २.८ चलारि मुक्खकहाण्ड ३,१२ वयारि १.१३, ८.१०

चार्चमका ३.८ चालीस ६.८ विकिच्छिय ७.८ विलाए ४.२४ बित्तंग/बित्तंगड ८.१ चिधी ८.१७ विद्वर २.२१ चीररहिड ५.११ चल्लीसमीवे ७.४ च्यकहाणच ३.१ चोरहि ३.१६ चंदवइ ७.१६ चंपापुर ३.१, ८.३ B 6.14 क्षकम्मरम १.१८ छक्काल ४.१ छण्जोयण ८.१५ छटठ ६.१९ छिड्डि ४.२१ छण्णवइ ९.२३ छलिउ ५.९ छहत्तरि ६.४ छाया २.१५, ४.८, ५.६ छिज्जह ५.१९ छिण्णु ५.४ छिस्तइ १.१० छिस्तणद्ठ ५.७ छिद्दणिवसण् ४.१२ छुट्ट ११.१० छहतन्हाइ ६.१८ छृहिएण ९ २ छोहारदीउ ३.४ छंगुल ६.११ छंवालंकार १.१, ११.२६ बहुच्छिणु ४.५

जगरामें १.१ जइसेष्ठर ५.२ **जज्जरित ४.१७** जजमाणेण ४.७, ५.४ जण्ण सुय २.१८ जगणिए ७.१६ जंजियाए ८.३ जणु वट्टु २.१८ जस्य १.११ जम्मवह ६.२ जमकीला २.१५ जमपासि ४.१९ जमहो ४.१८ जरसंघु ८.४, ९.९, ११.१५ जरियहो २.१३ जलणिहि पमाण ६.१३ जलकच्छ ६.१८ अस्वम ६.१६ जहणंसु ६.१४ जहिं १.२ जाण-पहाण ९.२४ जाचिक्जइ २.२, ४ जाणेवि ३.१९ जिजवरणदस्तओ ५.१९ जिणदेउ ९.१३ जिणधम्मु १.१४ जिणमंदिर ११.२ जिणिदधम्मु ११.२६ जिणु १.१ जियारि २.५ जीवावहार ४.१२ ज्हिट्ठल् ८.४ ज्हिद्ठलराए ५.१३ जेट्ठामुएण ५.६ जैमिण्डह १.१७ जो ४.६

जोइसह ६.१२ जोयम ८.७ जोयंतहो ७.१५ जोक्यणवह ११.२१ जोव्यण ८.२१ चंपिउ २.१७ जंवेविण् १०.९ जंबओ ४.१८ जंबवेण ८.२० जव्ञाहरम्ख ६.१० झरित १.११, ३.२, ९.१५ झल्लरिक्अ ६.१ झसइंघरायस्स १.१३ झाइज्जइ २.१६ भाणालंबिय ८.१२ झायंत ४.२ झिज्जइ ८.१ सुट्ठु २.२३ टिटामंदिर ९.७ डंघ ९.१५ डिम् ५.३, ५ ण्हाणकज्जे ८.६ ण्हाहिणि १.१८ णउस ४.२ णमेविण ३.१२ णरबराह २.१ णरणाह १.३ णव ४.१ णयर ९.७ णयणफल् ४.१५ णवर २.२, ३.१, ९.८ णरिसरिउ ५.११ णह्यलं १.९ णाणारयणाविल २.१ णामकेड ७.१७

णावसिरि ११.१३ णारिष्ठ ४.२४ णिडणभद्रष्टो २.१८ णिक्सल् ३.२२ णिविकटठ ८.१८ णिक्टिय ९.१९ णिगांध ३.१२ जिस्सम्पा ४.९ णिस्चावलोह ९.१५ णिट्ठूक ११ २२ णित्यरह ७.३ णिद्धांडिय ३.५ णिद्धिकार ४.११ **णिप्पीलिय** ७.११ णिक्सिष्छिअ २.९. १८ णिडमंत ५.१२ णिम्मलरयण २.१३ णिस्मियं ९.१२ गियच्छित ९.१० णियट्ठाण २.६ णियवस ५.१७ णियसाहण् ८.१३ णियंव ४.१६ णिवसेहरु ३.१ णिविउपेम्म ४.१६ णिविट्ठ ४.७ णिरंजण ३.२१ णिरिक्खइ १.९; २.७३ णिस्णिज्जद ७.१६ णिसिम्जण ११.३-१० णिसिभोयण् ११.८ षिसुणेबिण २.७, ११ पीलंजस १०.३ षीसरियं ५.१५, ९.११ श्रीवर ७.३

षंदगोट्ठे ३.२० णंद-सुणंद १०.२ णंदण १.७ तइआ/तइयो संधि १.११, १.२२ तक्कर ३.१६ तड ४.५ तणकट्ठमोडु २.२ तवसिसंघे ७.५ ता इंडजमाणको ५.९ तायाणाए ९.९ ताराहरणु ८.२२ तावसंख्य ७ १ तिस्थवताफस ४.८ तियक्खें ५.६ तियच्छ २.४ तियाद्विय ६.११ तिलयसोह १.३ तिलोत्तमा ४.१३ तिसद्ठि ८.१५ तिहत्य ६.११ तुच्छोयरिया ७.१२ त्रुम् ५.१० तुट्ठएणं ३.८ तुम्हह २.४ तुरंगु ३.७ तुल्लु १.१४ तेकलंसहि १-१४ तीयव ३.४ तंबोलविलेवणाई १.२० थक्क ४.२१ वनकहि ३.१५ मक्षु १.९; १०.६ विरगडमासे ७.१० चेवेविण् १०. ३ यंत्रिव ४.१०

वब्दुरियणासीह ११.६ दव्दुरेण ४.६ दट्ठगृह्ठच ७.४ दरदरिसिय ४.१३ दरिसिज्जइ ५.८ वहा ६.१ दहजस्म ४.१ बहुपुर्विधारि ५.७ बहुपुरिस २.९ वहबसकोडि ५.१३ वहयस्य ४.९ दहविह्मम्म ९.२० दहि ३.४ दहिम्हु ९.६, ९. दाणवईसहो ९.८ दाणुल्लं २.१६ वारेविणु ५.१३ वाहिणच पाउ ३.१५ विएहि ४.१ विट्ठम्बक्हा २.१६.१७ दिणार ३.१० दिणे दिणे २.२४ दिवट्ठसार ६.१२ विव्वहार ३.४, ५ दीवंती १.४ दुष्चरियञ २.९ दुष्जणु ३.१२ दुक्जोहण ८.४; ९.१४ वुट्ठ ४.२२ दुवह २.२४, ३.४ दुबबस ४.५ बुद्धघडित ४.५ दुब्ररसुक्क ९.१० दुणयण् ६.१५ दुविजवार ७. १५

दूतरी १.१४ दुपल्लु ६.११ बुट्डमूडच २.९ दुहियलक्खणभरिय ७.११ दुंदृहिसर ५.१९ दूरतरियं ९.११ देवलण् ४.१२ देवसंघाउ ४.१८ देवहम्मे वणे १.१७ दो पियाउ ३.१४ दोहिमि ८.२० दंडवोस २.८ दंमणमसेण ४.२० धनकडकुल ११.२६ धणलुद्धए ११.११ धणं ३.८ घणवइ ११-३ धम्मपरिक्खा १.१, ११.२६ धम्मपहाच ११.१० धम्ममोक्खत्यकाम ३.३ धम्मराइ ३.८ धम्म ९.१९.२० धम्मुफल ८१९.२३ धम्भेण १.१५ धय ३.४ धयरट्ठहो ७.९ धयरद्दू ८.१ वर्गिवही ८.१२ धीवरकुमारि ७.१४ धीयज्यम् १०.२ स्मध्यद ७.१५ धुमदार ४.२० पहद्ठ ४.१० पक्स १०.२ पगसिंच ५.१

पनोसइ २.२४ प्रचनस् ४.९ मक्बंतहं ९.२४ वज्यस्थाण १०.१० वच्युत्तर ३.४ पण्डलाव/पण्डुत्ताव ४.४, ३.१० पण्छण्य सरीव ४, २० पणमरिं ७.१६ पज्जलिउ ४.१२ पट्ठाणियाह ११.१३ पबहसर ३.११ पंच गमोकाराइ ११.१५ पंचमसर ४.१२ पंचम संधि ५.१, ५.२० पंचवीस ६.१ पंचसयाइं ५.७ पंचवहा ६.१ पंचाणणही ९.५ पंचाणुत्तर ६.६ पंचास १.३, २.१८ पंचितिहु मंतु ५,६ पंचढहा ६.२ पंचासह १.४, २.७ पंचाणुक्य १.७ पंडव ८.४ पंड ८.१ पंडियविज्जवियाणय ७.२० पश्चिक्रकण ४.३ पविच्छत ३.४ पश्चिमासुएव ४.१ पडिवमुण् ४.४ पडिमा ८.१२ पडिअंपइ ९.५ परिवरण् ७.१५ पश्चिमता ४.४

पडिवज्जइ ५,१६ पंडिवालइ ७.६ पहरतह ३.१४ पढमो संधि १.१; १.२० पद्मडिया १.१ पभणिञ्जहि ६.५ पमाणसंखा १.७ पयडमि ४.५ पयपन्यालण २,२ पयडिको १.१६ पयंडु ११.३, ५ पयंपंति १.१४ परकलत्तु ४.११ परतियलंपबु ४.१२ परवब्बहरण ६.२ नरमेट्ठि १०.३ यरवारकहा ४.११ परवंडही ९.८ परमप्पच ३.२२ परोवर ६.१४ परिक्षियद् ५.१९ परिषय ४.२३ परिषट्टणु ७.५ परिडंबिय ५.६ परियायणु ९.१ परियारकहा ४.११ परिदो ३.८ पल्लट्टेबि ४.२२ पलंबभ्या ६.३ पसोएमि ३.८ षलोएवि ४.२० बलोएह ९.४ क्लोयइ ४.१४ पनजेन्पिणु ३.४ पबणवेख १.८

पाएप्पिणु २.३ पाडलीडरन १ १७, १०.१३ पाण्डवकहा ८.४ षायच्छित्त १.२० पायज्यल् २.२०, २२ पायाजलज १.१९ पायाखलओ ३.१२ पायाललंक ८.२० पायारभित्ति १.४ पायारालंकिय ९.२३ पारदिय/पारदिएहि ८.९ पारासर ७.१४ पाविट्ठु ४.७ वासजिण १०.१० पिस्तदोसु ३.१ पित्तजरेण ३.११ पियगुणवद् ११.२६ पियगोरि ११.३ पिहुत्तर ५.८ विह्वपीण पउहर १.६ पिहुलरमणे ४.११ पुष्ण हीणउ ८.१८ पुण्णमेह ८.१३ पुण्जियत ४.२४ युरत १.१ पुष्फयंतु १.१ पुरिल्लियेण २.१०, ११ पुरोहित ९.२२ पुन्वमुणि ४.८ पुरुवमुणिवमुणिवयणु ७.५ युव्यक्तिय ५.१० पुरुवयालि ७.२ वूंदगंबेणि ७.१४ पेल्लिय ५.३ योक्सरवे ६.१०

वोडविणु ९.२ पोम्मूप्पक्जइ १.१८ पोमराय १.६ पोल्लिख २.८ कणसालिंगण ७.९ कासंगउ ९.८ फुड्ड ३.१४ फंड ४.२२ बम्हसाल ४.३ बलएव ४.१ बह्रधण्यो २.९ बहुरसरसोइ २.१२ बाह्यस्ली १.६ बीओ संधि २.१ बुह हरिषेण १.१ बोलिज्जह २.१४ बंभहो ४.१२ बंभवारि २.२१ बंभ २.४ भविखकण ३.२ भविखण्जद ११.४ भगगाणुराच ८.१९ भस्तिभारतृद्ठेण ९.८ भरितभाव १.१; २.४ भणिकण ३.११ भमर २.७ भयणीवइ ८ १६ भयतद्ठहो ४.२१ भरहखेल्यु १.१ भल्लह ३.१३ भवियम्ब ५.१२ भाइरहि ७.९ भागंडल ५.१९ भाषण् ८.६

भावम बरस १०.३

भाविण्जह ५.१९; ६.१ आसिज्जद् १.१ शिक्स ५.२ भिगारिय ५.११, १३ शिच्य भिच्यू ३.६, ४.५ भिडियंड ८.२१ भिल्ल ४.३ भिल्लपहे १.१३ भिल्लाहिउ ३.४ मिल्लेविण ७.८ भीमसेषु ८.४ मंजाविज ८-११ म्जिज्जइ २.१२, ११.३ भूंजेवि ३.४ भूलंतरे १०.१५ भ्यंगम १.१३ भूयंगुष्ययाउ २.६ भ्यमइ २-१८ भोयणपंतिहे ४.७ भोषाहिटि्ठउ ६.४ सक्कडहु ७.२ मश्मीविण २.१८ मगहामंडल ३.६ मज्जार ४.३, १.३ महयज्यस् २.१८ मच्छ६ २.१३ मच्छाण ६.१६ मच्छाच ४.३ मणमयणए ४.११ मणबेख १.६, २.१ मणहरखेयर १.२ सणिकस्य १.१५ सणिमजबहर २.१ मणिसेहर ३.११ मणुसुरतर ६.५

मणीज्जह १.१८ यणीरह १.७ मत्ता छंदो १.२१ महि ८.३ मनीमूढ कहा २.१८ मयचम्मधाएण ४.१८ मयणबाणावित ७.१४ मयपवाण् ४.१० मयणानल २.१९ मरणविहि ८.२१ मरुदेख १०.१ मलयायस १.११ मसाणु २.१६ महत्तर ६.८ महल्लच २.११ महस्वय ५.२० महुबिन्दु १.१४, १०.१७ महसुकको ६.८ महिलाउ ३.१५ महिलामइ २.१५ महरवक्तु ४.२० महरा २.१८ महुराउरिहे ३.११ माणबभु ८.१४ माणसबेउ १.११ माणिज्जइ १.१९, ९.७ मायामहेण ७.३ मास १०.२ मिच्छाविद्वह १.८, ६.१५, १६ मिन्छाभाव ११.२६ मियंकपुरतु ३.३ मिल्लाहि ५.१६ मिल्लेविण् १.१७ योगांसा १.१८ मुएप्पिण २.३

मुक्कु २.११ म्बुकुंदहि १.१२ मृहिम ८.३ महिंदस ८.१ मुंडियमुंडा ९.३ मुणइ ५.३ मुणिचंद १०.१३ मुणिज्जइ १०.१ म्ताहल ४.२३ मृत्तूण १.१७ मुणिसुक्वय १०.९ म्लग्ण १०.१४ मुसवहि ४.४ मेडियगमणु ९.३ मेल्लिड ७.७ मेवाड ११.१, २६ मेहालए १.४ मोक्खफर ९.१७ मोक्स सिला ६.६ मोड्ण ९.१ मोल्तपिया १०.८ मोत्सियहारसुत्ति २.१० मोल्लु ३.१० मोसेवकेण ७, ९ मंगालउ २.७ मंडबकोसिउ ४.७ मंचमतले ३.१७ मंजीरसरा ६.३ मंबिरसिंहर १.४ मंबोधरि ७.१८, ९.१७ मंदीयरिया ७.१२ संडवकोसिउ ४.७ मंड्एं ४.६ रइसुह ४.१५ रक्खस-विधी ८.१२, १७ रक्वसम्बद्ध ८.१५ रत्त्रभिक्यु ८.८ रतम्बक्हा २.९ रत्तुप्पस ४.२३ रस्तंबर जडधारणाइ ९.१३ रस्तंवह ८.८ रजवी छंद १.११ रयणवस्यु ३.४ रयणायराउ ४.६, ११ रवणपहणारहए ६.४ रमणभाव २.१८ रहणेउर ११.४ राम रात्रणकहा ८.१०, ९.४, १५ रिमयावसाणे ४.२० रामायण २.६ रामसुयमहिवहि ५.१३ रावणु ७.१३ रासयछंदु ५.१६ रासहरिसि ४.१६ रासहिंसद ५.७ रिक्छ ४.१७ रिाच्छका इ १५ रिसहजिण १०.२, ११ रिसिवल्ती ५.१ रहसंघिंह ४. १३ रुक्ष के.ह वहाइगुण ५.१ वसेविणु ५.३ वहिर १.१७ रंगावित ८.६ रंजेवि ४.१४ रंधेसमि ३.१७ सङ्ख्याह २.१७ सर्क्डमार २.५ सक्बड्ठावीस ६.७

सम्बंध ८.१० सच्छिणाह ३.२२ शक्तिसम् १०.४ सबहो १.१० लड ४.२ लायण्याच १११८ लिगगगइ ५.५ लिगम्महण्ड ३.२० स्यगस सिरई ९.५ लयाविय 4.३ लोयदिवदि ६.१ . लंकपदृद्ठ ८.१५ लंबड् ४,१२ वइजयंती १.४, ६.६ बद्साण्ड ९.१०, ४.२२ वश्कव २.२३ बन्खाणहि ७.७ वश्वाहरणइ ११.२२ वणजरह के १३ विजिज्जा ४.१५ बद्ध १.१८ वट्ट्रतण् १.१८ वडरुक्खे ५.१५ वणदहणु ३.९ बिषयवरी रे.११ वणीसर ३ ४ बलोस ४.१७ वयम ४.१० वसिबंधणकारण ४.२ बस्सिमेहे १.१७ वबहरिय १.१७ वहत्तारि ६.४ वाईसरि ७.१५ बाजवेग १.६ बाबरबीच ८.१६

वाणारसि ५.७ वामणख्येणं ३.२१ बायसाल ८.७ बारह वरिउ ३.६ बावर रे.९ वासूएव ४.१, ८.४, १०.९ वालि ८.१०, ९.१५-१७ वालिखील ५.१ बाबीस परीसह ८.५ वाबीजली १.१७ विउससिरोमणि ९.१३ विकामपुरि ८.८ विक्खायत ७.१ विविक्रणेवि ३.१० विषद्ध ३.१५ विच्छरिय ११६ विचित्तु ४. १ विज्जहि ३. १ विज्ञावल ८.१०-११ विज्जाहर ८. १६ विज्जुकुमारयाहं ६.१२ **বিজ্ঞা**णुवाउ विज्जाहर ८.१६, १८ विज्ञासमृह ५.७ विज्जमाला ९.९ विद्धंसिय ९.५ विदुष ८.१ विद्दुम पोमराय ६.७ विण्णि १०.२ विष्टु २.२२, ५.१५, १६ विण्णावित २.११, ३.९ विणडिय ५.३ विष्कृरिय ४.१७ विष्यक्षकम्मगुषा २.२२ विस्महमरित १.१९

विमलकिरित ८.१७ विम्हह ६.१ विमाणवत्यु १.१७ वियक्खण् ८.७ वियक्खणेण ८.१९ वियाणएण ७.६ वियारिज्जंतउ ४.२ वियाणेवि २.१५ विरावण १.१५ विविज्जिल / विविज्जिय ४.१; ६.४ विवास ३.१३ विविह्यममे २.५ विवाह महोच्छओ ११.९ विसालउ ३.१२ विष्ठहड् ८.२२ विहइए ८.१६ बीउ सिध २.२४ वीस ९.१७ बुव्ब बाउ ६.१८ व्य १०.१० वुड्ढी देवी ९.९ वृहद् २.१८ बेइंदियाण ६.१६ वेउम्बणाइ ९.१६ वेस्तासण ६.७ वेयब्द महीहर ७.२, ८.११ वेय वयणु ५.१६ वेयाल ११.६ बोदो १.१६ बोल्लह ५.३ बोल्लाविय ४.९ बोल्लाबंतिहे ३.१८ वोलिज्जइ १.१९, ७.१८ वंकुदास गहबइ २.१६ वंदियगरिट्ठ १०.५

वंभण १०.६ वभवास १.१८, २.३, ७.१ वंभमुत्तु ७. १५ वंभरणज ९.१९ वंभंडु ६.१८ बंभवारि दे १८ वंमहो ४.१२ वम्हाइयह ५.१ सक्कर ३.१ सच्छंदो ४.१७ सच्छाउ १.६ सज्जणचित्ताइ ११.२ सजलकुंभु २.१८ सत्त ४.२ सत्तावीस ९.२५ सत्यविज्ज ३.१९ सत्यवाउ ९.१ सत्तइहो ८.१७ सत्तट्ठहिं ६.१२ सस्तंगरज्जु ३ ७ सद्हइ ५.९ सहिट्ठिहे ६.१५ सद्ठि १ ३ सहण्णु ९.११ सप्पा १.१४ सम्मत्तराइउ १.१६ सम्मत्तरयण ४.७ सम्मासण्य ४.१८ समाहि १.९ समुप्राइक गं ९.४ सयणमगु ७.२ सयलमाव ४.५ सर्यभव १.१ सरायवयणु ४.११ सलक्षणाए ४.११

स्ववंग्यु ३.२२ सुव्वत्यसिद्धि ८.५ सब्धावपयासण ५.२० ब्रसिकिरणें ८.१९ सहएव ८.४ सहजाहरण ११.२१ सहसु ६.४ सहसक्ट ११.२ सहसबोण ९.१४ साकेयनयरिम्म ७.२ सामंतचक्खु १.५ सायग्गुण ४.६ सायरसिवातरण् ७.२ सायर ३.४ सालम्मलि ६.१० सावय १०.४ सावयवय १०.१४ सासुरयही ३.१७ साहंविण ३.१९ साहीणइं ८.९ सिक्कयत्यु ९.७ सिक्खावय १.७, १०.१५ सिविलइ ४.१४ सिद्धसेण १.१; ११.२४ सिद्धिसुहहो ४.१५ सियचामरा १.१५ सियाल ८.८ सिरिकट्ठा २.२ सिरिकंठ ८ १५-१६ सिरिपाल ११.३ सिरिफल् ८.१५ विरिचित्तकुडु ११.२ सिरिमत्तजो ९.६ सिरिमाणगहो ९.५ सिरिसिद्धणिवासु ६.१९

सिहिडण्हंतु ७.८ सिहिणसार ४.२६ सिहिणोवरि ११.२१ सीमंतिणिकुल १.२ सीय ८.१० सुक्रक्ताण् ८.५ सुकज्जवंग् ५.१ सुक्करसु ७.११ सुकुमालियाए ७.१२ सुग्गीव ८.१०, ९.१७, १८, १९ सुग्गीवाइ ८.११ सुगनो १०.११ मुद्धारमहीण ६.१५ सुद्धीयणाइ ९.१.३, १०.१० स्वृद्धि २.१६ सुषीमु ८.१४ सुरयगाहि ६.१७ सुलोयण ८.१३ सुवण्यदीव ११-१३ सुसाहित ११.२७ सुहभाषणु ३.५ सुहण्माण ३.५ सुहसत्बत्व ९.६ सुहिष्यु ७.३ सेणावह ९.२२ सेयंबर ९.१ सेसभुयंगी ७.३ सोच्छंद १.३ सोमपद्दी ८.१ सोमुलच्छी ६.६ सोमसमिद्धिए ११.२७ सोयाण लुम्हेज ४. १७

सोलह ४.७ सोलहमृद्ठि कहाणव २.६. ४.७ सोरट्ठि देस २.१६ सोष्ट्रगरूव ६.३ संतण् ८.१ संतुद्ठिचत्तु ११.१६ संपंडिच ४.१५ संफुल्सइ ५.१९ संलिहिय ४ १५ सुंदरि २.४, १२ हर्के ५.३ हक्कारिंड २.१० हक्कारेवि ७.९ हणुमंत १.८ ह्यास २.२३ **हर ५.३** हरि ४.१, ११.२६ हरिणाहिउ ६.१८ हरिमेहर णंदणु ३.६ हरिसेण ४.२४, ११.२६.२७ हरियंदण ४.१२ हरिहर ९.१८ हर ५.२ हरो ९.४ हवेसमि १.२ हसिकणं १.१९ हारियत ३.१६ डिबंतीए ९.९ हितासतासतानी २.१ ह्यासण ५.४ हेवाहेयहँ ३.५